ISSN : 2321-8037
जनवरी-फरवरी 2024
Vol. 12, Issue 1-2

गीना देवी शोध संस्थान

द्वारा श्रीगंगानगर, राजस्थान से प्रसारित

साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध का अंतर्राष्ट्रीय मासिक

Impact Factor : 6.632

Gina Shodh SANGAM

Peer Reviewed & Refereed Research Journal

International Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

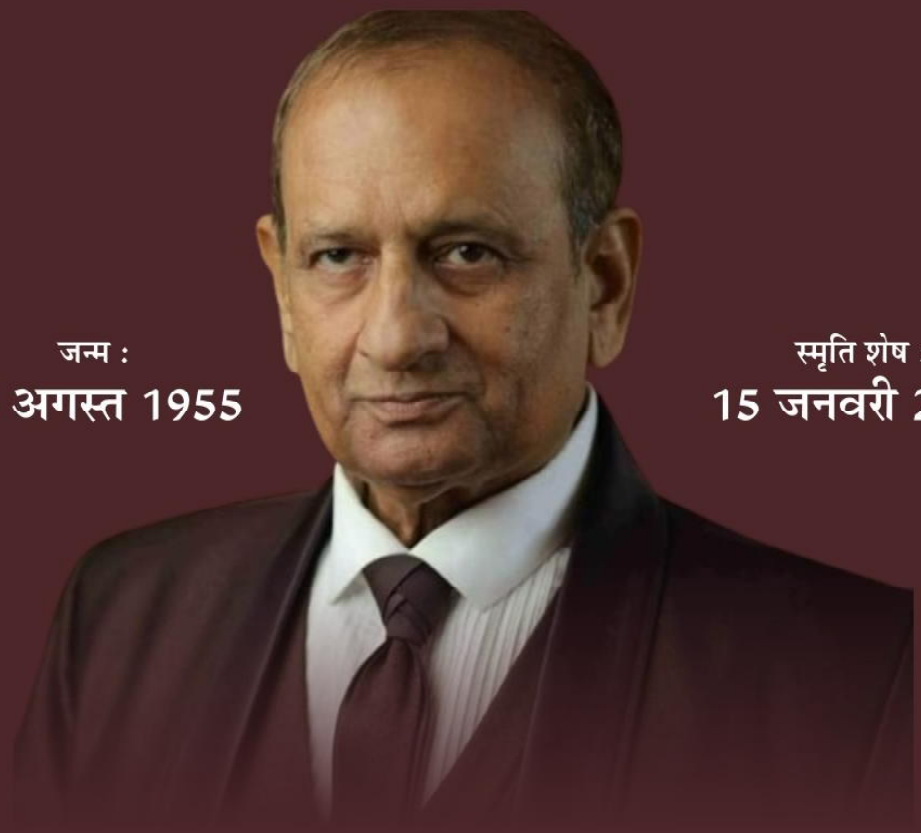

जन्म :
26 अगस्त 1955

स्मृति शेष :
15 जनवरी 2024

संपादक :
डॉ. रेखा सोनी

प्रधान सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

संस्थापक सम्पादिका :
स्मृति शेष
डॉ. विश्वकीर्ति

संगम SANGAM

साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक

A Peer Reviewed International Refereed Journal

www.ginajournal.com

संस्थापक संरक्षक :
स्मृति शेष
श्री हरविन्द्र कमल चौधरी

वर्ष : 12 अंक : 1–2 जनवरी–फरवरी : 2024 आईएसएसएन : 2321–8037

सम्पादक :
डॉ. रेखा सोनी
शिक्षा विभाग, टांटिया वि.वि.,
श्रीगंगानगर–335001 (राज.)

प्रधान सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
सचिव, गीनादेवी शोध संस्थान,
भिवानी (हरियाणा)

मार्गदर्शन :
डॉ. राजेन्द्र गोदारा
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

इन्जीनियर सृष्टि चौधरी
लेक्चरर, इलेक्ट्रानिक्स
एंड कम्युनिकेशन,
सरकारी पॉलिटेक्निक कॉलेज फॉर
गर्ल्स, पटियाला, पंजाब।

श्री श्रेष्ठ चौधरी,
सीनियर मैनेजर,
स्टेट बैंक ऑफ इंडिया,
साहिबजादा अजित सिंह नगर,
मोहाली, पंजाब।

कानूनी सलाहकार :
डॉ. रामफल दलाल एडवोकेट,
भिवानी (हरियाणा)
श्रीमती रूपिन्द्र कौर, एडवोकेट,
पटियाला (पंजाब)

सलाहाकार समिति (Advisory Committee)

डॉ. सुलक्षणा अहलावत
अंग्रेजी प्रवक्ता, शिक्षा विभाग
नूंह (हरियाणा)

डॉ. अरूणा अंचल
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
रोहतक (हरियाणा)

डॉ. सुशीला
चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय,
भिवानी (हरियाणा)

डॉ. अल्पना शर्मा
आईएएसई विश्वविद्यालय सरदारशहर
(राजस्थान)

डॉ. विजय महादेव गाडे
बाबा साहेब चितले महाविद्यालय
भिलवडी (महाराष्ट्र)

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कॉलेज
धारवाड़ (कर्नाटक)

डॉ. रीना कुमारी
दशमेश गर्ल्स कॉलेज,
अल्ला बक्श, मुकेरिया, पंजाब।

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

श्री हेमराज न्यौपाने
नेपाल।

डॉ. ममता तनेजा
अबोहर, पंजाब।

डॉ. प्रियंका खंडेलवाल
बराण, राजस्थान।

प्रो. मधुबाला
राजकीय महिला महाविद्यालय,
हिसार।

डॉ. पीयूष कुमार द्विवेदी
जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग
विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तरप्रदेश

डॉ. हवासिंह ढाका
राजकीय महाविद्यालय, हिन्दुमलकोट,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

डॉ. मानसिंह दहिया
संस्कृत प्रवक्ता, शिक्षा विभाग
तोशाम (हरियाणा)

डॉ. राजेश शर्मा
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

डॉ. मोहिनी दहिया
माती जीतोजी कन्या महाविद्यालय,
सूरतगढ़ (राजस्थान)

डॉ. मुकेश चंद
राजकीय महाविद्यालय, बाडी,
धौलपुर, राजस्थान।

डॉ. पवन ठाकुर
बरेली (उत्तर प्रदेश)

डॉ. मोरवे रोशन के.
यूनाईटिड किंगडम।

डॉ. अनुपमा, पूर्व प्रोफेसर,
अंकारा विश्वविधालय, अंकारा, टर्की

डॉ. आर.के विश्वास
अध्यक्ष होम्योपैथिक, टांटिया, वि.वि.

प्रकाशक, स्वामी एवं मुद्रक **डॉ. नरेश सिहाग,** एडवोकेट ने **मनभावन प्रिन्टर्ज,** पुराना बस स्टैण्ड रोड़, नया बाजार, भिवानी से छपवाकर 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी–127021 (हरियाणा) से जारी किया।

संगम SANGAM

साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक

A Peer Reviewed International Refereed Journal

(Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences)

सचिव :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,

भिवानी–127021 (हरियाणा)

Email : grngobwn@gmail.com

मो. 09466532152

संगम मासिक पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं/लेखों की मौलिकता का दायित्त्व स्वयं रचनाकारों/लेखकों का है। उससे सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्यायक्षेत्र केवल भिवानी (हरियाणा) होगा।
सम्पादन और प्रबंधन के सभी पद पूर्ण रूप से अवैतनिक हैं।

Published by :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board,

Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA

Email : grsbohal@gmail.com

Facebook.com/bohalshodhmanjusha

Website : www.bohalsm.blogspot.com

WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1300/-

Disclaimer :

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

ISSN : 2321-8037
Gina Shodh SANGAM
Peer Reviewed & Refereed Research Journal
International Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)
Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

तालिका– 2

शैक्षणिक / शोध अंक की गणना हेतु विश्वविद्यालय और महाविद्यालय के शिक्षकों के लिए कार्यप्रणाली

(आकलन शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों पर आधारित होना चाहिए, जैसे: प्रकाशनों की प्रति, परियोजना स्वीकृति पत्र, विश्वविद्यालय द्वारा जारी उपयोग तथा पूर्णता प्रमाण पत्र, पेटेंट दर्ज कराने संबंधी अभिस्वीकृति और स्वीकृति पत्र, विद्यार्थियों को पीएचडी उपाधि प्रदान किए जाने संबंधी पत्र इत्यादि।)

क्रम सं.	शैक्षणिक / शोध क्रियाकलाप	विज्ञान / अभियांत्रिकी / कृषि / चिकित्सा / पशु–चिकित्सा विज्ञान संकाय	भाषा / मानविकी / कला / सामाजिक विज्ञान / पुस्तकालय / शिक्षा / शारीरिक शिक्षा / वाणिज्य / प्रबंधन तथा अन्य संबंधित विधाएं
1	समकक्ष व्यक्ति समीक्षित अथवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा सूचीबद्ध पत्रों में शोध पत्र	08 प्रति पत्र	10 प्रति पत्र
2	प्रकाशन (शोध पत्रों के अतिरिक्त)		
	(क) लिखी गई पुस्तकें, जिन्हें निम्नवत के द्वारा प्रकाशित किया गया :		
	अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक	12	12
	राष्ट्रीय प्रकाशक	10	10
	संपादित पुस्तक में अध्याय	05	05
	अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक द्वारा पुस्तक का संपादक	10	10
	राष्ट्रीय प्रकाशक द्वारा पुस्तक का संपादक	08	08
	(ख) योग्य संकाय द्वारा भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद कार्य		
	अध्याय अथवा शोध पत्र	03	03
	पुस्तक	08	08
3	आईसीटी के माध्यम से शिक्षण ज्ञान– अर्जन, शिक्षण शास्त्र और विषयवस्तु का सृजन तथा नए और नवोन्मेषी पाठ्यक्रमों और पाठ्यचर्या का विकास		
	(क) नवोन्मेषी अध्यापन का विकास	05	05
	(ख) नई पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रमों को तैयार करना	02 प्रति पाठ्यचर्या / पाठ्यक्रम	02 प्रति पाठ्यचर्या / पाठ्यक्रम

अनुक्रमाणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. रेखा सोनी	6–6
2.	लेजर : परिचय एवं सेना में उपयोग	डॉ. सुभाष चन्द्र मौर्य	8–15
3.	**Analytical view of the Non-Aligned policy of India**	**Dr. Neetu Mehta**	**16-17**
4.	तमिलनाडु में हिन्दी : स्थिति और संभावनाएँ	**Dr. Rekha. G**	**18-22**
5.	समाज और नारी	डॉ. पूजा शर्मा	23–24
6.	अन्या से अनन्या : प्रभा खेतान के अपराध बोध का जीवंत दस्तावेज	नीलम कुमारी	25–30
7.	वृद्धावस्था विमर्श	जयकला	31–32
8.	छात्रजीवने कठोपनिषदस्य उपयोगिता	**Shrabani Manna**	**33-38**
9.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति और शिक्षकों की भूमिका	प्रो. वडगे वृषाली रंगनाथ	39–42
10.	गीना शोध संगम का 'समकालीन साहित्य और विमर्श' विशेषांक : एक विश्लेषण	डॉ. राजेश कुमार	43–49
11.	हिंदी के प्रचार प्रसार में 'गीना शोध संगम पत्रिका' का योगदान	डॉ. मीनू शर्मा	50–52
12.	बाल स्वतंत्रता को समर्पित 'मुन्नु की स्वतंत्रता'	डॉ. हरप्रीत कौर	53–54
13.	**Gender Disparities in Indian Education : An In-depth Analysis**	**Dr. Shefali Mendiratta**	**55-63**
14.	**Role of teacher in environment awareness and protection**	**Manju, Dr. Renu kansal**	**64-66**
15.	अंतरिक्ष वैज्ञानिक साहित्य में चन्द्रलोक	एम. सुब्रमण्यम	67–70
16.	हेनरी लुईस विवियन डिरोजियों के विचारों का उत्तरोत्तर विकास	सरिता, अपर्णा वत्स	71–80

17.	कालजयी स्त्रीवादी उपन्यास ''आवां''	डॉ. व्ही मणि	81–84
18.	बर्नआऊट : शिक्षकों में व्याप्त एक गंभीर समस्या	**Jyotsna**	**85-90**
19.	स्वामी विवेकानन्द जी का शिक्षा दर्शन : एक आदर्श	डॉ. के. पदमा रानी	91–95
20.	साहित्य और समाज के शुभचिंतक, मूल्य उपासक मुकेश कुमार 'ऋषि वर्मा'	डॉ. मीनू शर्मा	96–99
21.	**Study of the Emotional Intelligence of Boxing players of Haryana State and Rajasthan State**	**Lalit Singh Rajpoot, Dr. Anita Ranawat**	**100-104**
22.	मुकेश कुमार 'ऋषि वर्मा' के काव्य की मूल संवेदना	डॉ. दीप्ति धीर	105–108
23.	भारत में नगरीय शासन प्रणाली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. महेश कुमार	109–113
24.	**Study of effective method of circuit training for developing long jump athletes**	**Ms. Neetu Kanwar, Dr. Anita Ranawat**	**114-119**
25.	सांख्य दर्शन की सृष्टि रचना में अंतःकरण का महत्व	**RADHARANI RAJAK**	**120-122**
26.	'रश्मिरथी' में दलित-विमर्श	बी. वी. एन. उमा गायत्री	123–127
27.	वैश्विक परिप्रेक्ष में भारतीय भाषाएँ और नई शिक्षा नीति	प्रा. समद जमादार	128–130
28.	**Unveiling the Enigma : Exploring Sarat Chandra Chattopadhyay's Lalu**	**Bikramjit Sen**	**131-135**
29.	महिला आत्मकथाकारों का संघर्ष	प्रियंका पाठक	136–141
30.	आध्यात्मिक बुद्धि एवं शैक्षिक नेतृत्व	डॉ. अर्चना श्रीवास्तव, डॉ. अक्षय कुमार आचार्य,	142–145
31.	अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में भाषा के विविध रूप	सुरेश कुमार	146–147

सम्पादक की कलम से..

प्रिय पाठकों,

आज की दुनिया में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और समाज में हो रहे बदलाव न केवल तेजी से हो रहे हैं, बल्कि इनका प्रभाव भी हमारे जीवन के हर क्षेत्र में गहराई से महसूस हो रहा है। इसी संदर्भ में, हमारी पत्रिका 'गीना शोध संगम' ने विशेष ध्यान देते हुए समाज की सभी वर्गों के लिए जागरूकता बढ़ाने का संकल्प किया हुआ है।

आधुनिक युग में शोध और विज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका हमारे जीवन के हर पहलू को बदल रही है। हमारी पत्रिका इस महत्वपूर्ण संदेश को अपने पाठकों तक पहुंचाने का अवसर प्रदान करती है, ताकि हम सभी मिलकर वर्तमान युग में चुनौतियों का सामना कर सकें।

'गीना शोध संगम' का मंच एक समर्पित और विद्यार्थी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने का अवसर प्रदान करता है। जिसके तहत मार्च 2024 का नारी विशेषांक का सम्पादन कार्य हमने एक विद्यार्थी को ही सौंपा है जो पूरी लग्न और मेहनत से काम कर रहा है। यह विशेषांक शोध के क्षेत्र में एक मिल का पत्थर का साबित होगा, ऐसा हमारा विश्वास है। हमारे पाठकों को नवीनतम शोध और विज्ञान से जुड़ी सूचनाओं से अवगत कराकर हम उन्हें सकारात्मक दिशा में प्रेरित करने का प्रयास कर रहे हैं।

आज के संवेदनशील और विकसित समाज में शोध का महत्व बढ़ चुका है। हमारी पत्रिका इस उत्साह और उत्कृष्टता को बढ़ाने का प्रयास करती है, ताकि हम सभी मिलकर एक समृद्ध और विकसित समाज का निर्माण कर सकें। आज की दुनिया में, तकनीकी उन्नति और विज्ञान की तेजी से बढ़ती गति से, हमें अपने जीवन के हर क्षेत्र में सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक संदेहों के साथ खेलना होता है। हमारे समाज के मुद्दे और उनके समाधान को सोचने का समय है।

इस महत्वपूर्ण समय में, हमें विज्ञानिक सोच और तकनीकी ज्ञान को सामाजिक और नैतिक मूल्यों के साथ मिलाना होगा। विज्ञान और तकनीकी उन्नति का मतलब होना चाहिए कि हम समाज के हित में उन्नति करें, न कि उसे नुकसान पहुंचाएं। इस अंतर्निहित संघर्ष के बीच, हमें ध्यान रखना होगा कि हमारे वैज्ञानिक प्रगति का लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुंचे। विज्ञान और तकनीक को सामाजिक न्याय के साथ उपयोग करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। इस दिशा में, हम सभी को अपने सोच और कार्य को सामाजिक न्याय, विकास, और साझेदारी के साथ मिलाना होगा। संगम शोध पत्रिका के माध्यम से, हम इस संदेश को फैलाने का प्रयास करेंगे।

गीना शोध संगम पत्रिका में आप सभी शोधार्थियों, प्राध्यापकों और पाठकों का स्वागत है, जो किसी नवीन विषय पर विशेषांक या राष्ट्रीय/अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी आदि का आयोजन करना चाहे। यह माह हमारे लिए खुशियां लेकर आया है। आप सभी के सहयोग और प्रचार–प्रसार से पत्रिका का इम्पैक्ट फैक्टर 6.632 हो गया है। यह सब आप मित्रों की बदौलत ही संभव हो पाया है जिसके पत्रिका परिवार आप सभी का हृदयतल से धन्यवाद ज्ञापित करता है। यह अंक स्मृतिशेष श्री हरविन्द्र कमल जी को समर्पित है। **–डॉ. रेखा सोनी, संपादक**

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
Vol. 12, Issue 1-2
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
पृष्ठ : 8-15

लेजर : परिचय एवं सेना में उपयोग

डॉ. सुभाष चन्द्र मौर्य
असिस्टेंट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन (सैन्य विज्ञान) विभाग,
रानी सुषमा देवी महिला पी0जी0 कालेज, अमेठी, उ0प्र0

लेजर (एल.ए.एस.ई.आर.) : परिचय :-

यह एक प्रकार की लाल रंग की किरण होती है, जो सीधी रेखा में चलती है और भौतिक विज्ञान की देन है। इसका पूर्ण नाम होता है,– "लाइट एमप्लीफिकेशन बाई स्टिम्युलेटेड एमिशन ऑफ रेडिएशन"। लेजर का शाब्दिक अर्थ होता है, "विकिरण के उद्दीप्त उत्सर्जन के द्वारा प्रकाश का प्रवर्तन"। यह एक ऐसी युक्ति होती है जिसमें विकिरण ऊर्जा के उत्सर्जन के द्वारा एकवर्णी प्रकाश प्राप्त किया जाता है। वर्ष 1960 में इसका आविष्कार "अमेरिका" के "थियोडोर मैमन" ने किया था, इसके सिद्धान्तकार "एल्बर्ट आइनस्टीन" थे, जिन्होंने वर्ष 1917 में ही इस सिद्धांत को दे दिया था।

यह "अभिप्रेरित उत्सर्जन" के सिद्धांत पर कार्य करता है, और बिना शक्ति के यह उत्सर्जन संभव नहीं है। वर्ष 1960 में "एक्स" एवं "गामा" किरणों का उपयोग प्रारम्भ हुआ, "एक्स–रे" लेजर की सफल घोषणा 1972 में अमेरिका के "यूटा विश्वविद्यालय" द्वारा की गयी। शक्ति परीक्षण में लेजर विकिरण रेजर ब्लेड में छेद करते हुए पार कर सकती है, इसकी शक्ति को "जिलेट" में मापा जाता है। लेजर संरचना ठोस, द्रव, गैस या प्लाज्मा के रूप में भी हो सकता है।

लेजर के प्रकार :-

लेजर कुल 7 प्रकार के होते हैं :-

1. ठोस अवस्था लेजर
2. डाई लेजर
3. गैस लेजर
4. एक्साइमर लेजर
5. अर्धचालक लेजर
6. मुक्त इलेक्ट्रान लेजर
7. रासायनिक लेजर

इनमें प्रमुख ठोस, द्रव, गैस एवं अर्धचालक (सेमी कंडक्टर) लेजर होते हैं।

लेजर के आवश्यक तत्व :-

इसके प्रमुख तीन आवश्यक तत्व होते हैं, जो इस प्रकार हैं–

1. **लेजर मैटेरियल**– लेजर को बनाने वाले पदार्थ,
2. **आप्टिकल रिजोनेटर**– प्रकाशिक अनुनाद,

3. **पम्पिंग सोर्स**– शक्ति निर्मित करने वाला स्रोत।

लेजर का प्रमुख उपयोग :–

1. मैडिकल प्रयोग– रोगों के उपचार में।
2. बायलॉजिकल प्रयोग या औद्योगिक प्रयोग– बारकोडिंग के संबंध में, बारकोडिंग को पढ़ने में।
3. शोध कार्यों में।
4. खिलौनों के रूप में।
5. रक्षा के क्षेत्र में।
6. लेजर–शो के रूप में– रंगबिरंगी लाइटों के रूप में, मंचों की साजसज्जा में।
7. समय एवं लम्बी दूरी को शुद्धता से मापना।
8. सूचना एवं संप्रेषण की गति को बढ़ाना।
9. प्राकृतिक यूरेनियम को सस्ते में परिशोधित करना।
10. यूरेनियम एवं थोरियम भण्डारों की खोज करना।
11. मौसम जानकारी के यंत्र "लिडार" में "लेजर बीम" का प्रयोग किया जाता है, इसके द्वारा हवा एवं बादलों के बारे में भविष्यवाणी की जा सकती है।
12. समुद्र की आंतरिक व्यवस्था एवं गहराई का अध्ययन करना, सामुद्रिक तत्वों का पता लगाना, इसके द्वारा समुद्र भूकंप एवं सुनामी की भविष्यवाणी की जा सकती है।

लेजर विकिरण का युद्ध/सैन्य गतिविधियों में प्रयोग :–

लेजर विकिरण एक प्रकार से भौतिक विज्ञान की देन है। युद्ध के मैदान में एक प्रकार से अपने आप में पूर्ण एक आक्रामक एवं विस्फोटक हथियार के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। लेजर विकिरण की निर्देशन एवं तीव्रता ही यह निश्चित करती है कि, उसकी भेदन शक्ति कितनी अधिक है। जितने शक्तिशाली लक्ष्य को नष्ट करना होता है उतनी ही शक्तिशाली लेजर विकिरण का प्रयोग किया जाता है।

यह विद्युत चुम्बकीय विकिरण पर आधारित एवं निर्देशित ऊर्जा का हथियार होता है। युद्ध एवं सैनिक गतिविधियों में लेजर किरणों का प्रयोग अब सामान्य बात हो चुकी है। लेजर हथियार के रूप लेजर गन, गाइडेड बम, बारूदी सुरंगें एवं लेजर आधारित युद्ध के कई उपकरण बनाए जा चुके हैं। लेजर नागरिकों के लिए रचनात्मक, मेडिकल उपचारों के साथ–साथ विध्वंसात्मक कार्यों में भी प्रयोग हो रहा है।

लेजर निर्देशित चुम्बकीय विकिरण पर आधारित ऊर्जा हथियार है। दशकों तक अनुसंधान और विकास के बाद अभी तक अपने प्रायोगिक चरण में है, अभी इस पर बहुत अनुसंधान बाकी है। यह एक प्रकार के बहुउद्देश्यीय हथियार होते हैं, जो अपनी अपार एवं विभिन्न शक्तियों के कारण कई रूपों में प्रयोग किया जा सकता है।

लेजर बीम जहाँ मेडिकल में आपरेशन आदि कार्यों में प्रयोग करके एक व्यक्ति को नया जीवन प्रदान करती है वहीं इसका विस्फोटक स्वरूप सम्पूर्ण मानव जीवन की व्यवस्था को तहस–नहस करते हुए महाद्वीपों पर भी महाप्रलय ला सकता है। वर्तमान समय में प्रत्येक प्रकार के हथियारों, रक्षा उपकरणों के रूप में आक्रामक, विरोधी, एवं सृजनात्मक आदि सभी प्रकार के कार्यों में लेजर विकिरण का प्रयोग हो रहा है।

सैन्य गतिविधियों में लेजर किरणों का उपयोग अब सामान्य बात हो चुकी है, चाहे वह लेजर गाइडेड बम हों या बारूदी सुरंगों को ढूँढ़ने वाले उपकरण। अमेरिका एवं सोवियत संघ की हथियार कम्पनियां काफी समय से लेजर प्रणाली पर कार्यरत हैं। अमेरिका का "स्टारवार" कार्यक्रम लेजर तकनीक पर आधारित रही है। जबकि अभी तक किसी भी अमेरिकी कम्पनी ने ऐसी किसी भी प्रक्रिया या उपकरण प्रणाली का खुलासा नहीं किया है। फिलहाल अभी इसका प्रयोगात्मक चरण ही चल रहा है।

अमेरिका एवं इजराइल की कम्पनियों ने "टेक्निकल हाई एनर्जी लेजर" (टी0एच0ई0एल0) का विकास किया है, जिसे "ड्यूटीरियम फ्लोराइड लेजर" के नाम से भी जाना जाता है। इसके प्रयोग से आकाश में ही विमानों एवं प्रक्षेपास्त्रों को नष्ट करके गिराया जा सकता है। अमेरिका द्वारा अपनी "नेशनल मिसाइल डिफेंस" योजना के तहत लेजर हथियार को विकसित किया जा रहा है।

रक्षात्मक उपयोग– लेजर के रक्षात्मक उपयोग इस प्रकार हैं :–

– रक्षात्मक कार्यों में इसका प्रत्यक्ष उपयोग सामरिक रक्षा पहल (एस0डी0आई0) "स्टार वार्स" के कार्यक्रम में किया गया।

– आने वाले समय में लेजर का उपयोग अन्तर्महाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइलों (आई0सी0बी0एम0) को नष्ट करने में किया जाएगा।

– अमेरिका ने बैलिस्टिक मिसाइल रक्षा प्रणाली (बी0एम0डी0) के रूप में "एक्स–रे" लेजर प्रणाली पर अनुसंधान कार्यक्रम का प्रारम्भ किया, एक्स–रे की प्रभावी क्षमता हजारों किमी0 तक होती है।

इलेक्ट्रानिक युद्ध और लेजर/अन्य विकिरण :–

वर्तमान समय में युद्ध के तरीके बदल रहे हैं, हथियारों के स्वरूप भी बदल रहे हैं, अब गैर पारंपरिक हथियारों में एक नए प्रकार के हथियार का प्रवेश हो रहा है। अब दूर से हमला करने वाले हथियारों में एक नए हथियार का निर्माण किया जा रहा है। भविष्य में युद्ध अत्यधिक ऊर्जा वाले हथियारों से लड़ा जाएगा। इसे इलेक्ट्रानिक युद्ध (बीम युद्ध) की संज्ञा दी जाती है। "बीम युद्धों" में कोई आवाज नहीं होती। यह चुपचाप अपने लक्ष्य में छेद कर देती है या जलाकर राख कर देती है।

इलेक्ट्रानिक युद्ध के अंतर्गत विकिरणों पर आधारित युद्धकला या विकिरणों द्वारा आक्रमण करने की प्रक्रिया को हम "लेजर वार या विकिरणों की युद्धकला" कह सकते हैं। इलेक्ट्रानिक युद्धकला के अंतर्गत वे सभी विकिरणें आती हैं जो किसी न किसी प्रकार मानव को नुकसान पहुँचा सकती है और वर्तमान समय में बहुत सी किरणें ऐसी हैं जो खतरनाक एवं विस्फोटक हैं तथा मानव के लिए जीवनदायिनी भी हैं। वर्तमान समय में बहुत सी ऐसी किरणें हैं जो कई प्रकार से युद्ध में प्रयोग की जा सकती हैं।

स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक मोबाइल, टेलिविजन, ट्यूबलाइट, इंटरनेट, मोबाइल टावर एवं उसकी अलग क्षमता जैसे थ्री जी, फोर जी, फाइव जी, आदि से निकलने वाली किरणें मानव अंगों पर दुष्प्रभाव डालती हैं। उसकी तीव्रता कम होती है इसीलिए ये किरणें धीमी गति से मानव शरीर पर अपना प्रभाव डालती हैं जिससे धीरे–धीरे मानव अंग प्रभावित होता है। जिस प्रकार मोबाइल, कम्प्यूटर, टेलीविजन आदि की किरणें हमारी आंखों को धीरे–धीरे कमजोर कर देती हैं, उसी प्रकार से बहुत अधिक इन इलेक्ट्रानिक उपकरणों का प्रयोग करने से हमारी किडनी, फेफड़ों, हृदय आदि अंगों की क्षमता भी कम हो रही है। गिद्धों के लुप्त होने के पीछे कहीं न कहीं

इन्हीं विकिरणों का ही योगदान रहा है। मानव आयु कम होने तथा मानव अंगों के निष्प्रभावी होने के पीछे भी यही तकनीकी प्रगति का भी कहीं न कहीं योगदान अवश्य है। इन्हीं किरणों का केंद्रित एवं निर्देशित प्रयोग विनाशकारी भी हो रहा है, जो इलेक्ट्रानिक युद्ध के अतंर्गत किया जा रहा है।

अब प्रश्न उठता है कि विकिरणों की युद्धकला या युद्ध में किरणों का प्रयोग किस प्रकार किया जा सकता है, क्योंकि किरणें भी आक्रामक हो सकती हैं, इसको हम सरल भाषा में इस प्रकार समझ सकते हैं :–

जब सूर्य के प्रकाश को उत्तल लेंस की सहायता से केंद्रित करके किसी कागज पर डालते हैं तो वह जल जाता है। इसका अर्थ तो यही हुआ कि उन "किरणों में जलाने की शक्ति है", और हम लोग यह भी जानते हैं कि, सूर्य की किरणें सात रंगों से बनी होती हैं।

सौर ऊर्जा का प्रयोग वर्तमान समय में हो रहा है और सौर ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित किया जा सकता है। विद्युत ऊर्जा खतरनाक एवं जानलेवा भी होती हैं।

सूर्य से निकलने वाली किरणें इतनी खतरनाक होती हैं कि यदि बीच में 50–150 किमी0 ओजोन पर्त न होती तो सूर्य से सीधे इलेक्ट्रानिक आक्रमण होता। ओजोन पर्त ही सूर्य की खतरनाक किरणों को काउण्टर करने का कार्य करती हैं। इसके बाद भी धरती पर आने वाली किरणों में केंद्रित होकर जलाने एवं विद्युत पैदा करने की शक्ति होती है।

मात्र कुछ क्षण के लिए गिरने वाली आकाशीय विद्युत कितना विनाशकारी होती है यह हम लोग जानते हैं। आकाशीय बिजली जब केंद्रित होकर कहीं गिरती है तो, वहां पर तबाही मचा देती है, जानलेवा भी होती है। इस प्रकार की घटनाओं के पीछे केवल किरणों का ही इस्तेमाल होता है। इस प्रकार हम किरणों की खतरनाक अवस्था को नकार नहीं सकते।

टूटी हुई हड्डियों की जानकारी हम "एक्स रे" के द्वारा प्राप्त करते हैं, वहीं एक्स किरणें हमारे शरीर के अंदर तक प्रवेश करके हमारी हड्डियों की वास्तविक स्थिति को प्रकट करती है। इस स्थिति की जानकारी के लिए एक्स किरणों को बहुत ही सावधानी से साधारण एवं धीमी गति से प्रयोग किया जाता है, जबकि उन्हीं एक्स किरणों का बार–बार एवं तीव्रता बढ़ाकर प्रयोग मानव के लिए विनाशक भी हो जाता है। डाक्टर भी सलाह देते हैं कि बार–बार "एक्स रे" कराना खतरनाक भी होता है।

शरीर के अन्दर की मांसपेशियों, महत्वपूर्ण अंगों जैसे– हृदय, फेफड़े, किडनी, लीवर, तथा महिलाओं की गर्भावस्था आदि की स्थिति की जानकारी के लिए "अल्ट्रासाउण्ड" लिया जाता है। इस कार्य में शरीर के अंदर "गामा किरणों" को प्रवेश कराकर अन्दर की फोटो एवं आंतरिक स्थिति की जानकारी ली जाती है। इसके लिए "गामा किरणों" का धीमी गति एवं सावधानी से प्रयोग किया जाता है तथा इसके साथ ही साथ डाक्टर की भी हिदायत होती है कि बार–बार अल्ट्रासाउण्ट नहीं कराना चाहिए, अन्यथा शरीर के उपरोक्त अंगों एवं अन्य ऊतकों को वही गामा किरणें नुकसान पहुँचा सकती हैं।

लेंजर सर्जरी के अंतर्गत विद्युत चुम्बकीय तरंगों को निर्देशित करके एक किरण (बीम) के रूप में प्रयोग करके शरीर के अंदर की फालतू बीमारी युक्त चीजों जैसे– पथरी, अपेंडिक्स, कैंसर, एवं अन्य बहुत सी बीमारियों को तोड़कर/काटकर निकाल दिया जाता है। इससे यह समझा जा सकता है कि लेजर किरणों के केंद्रित प्रयोग से उनमें आक्रामक एवं विनाशकारी शक्ति आ जाती है।

उपरोक्त प्रभावों को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि, किरणों के केंद्रित प्रयोग से उनमें विनाशकारी शक्ति आ जाती है। यह आक्रामक क्षमता उसकी गति एवं तीव्रता पर निर्भर करती है। जिस प्रकार का विनाशक प्रयोग करना हो उसी प्रकार की आक्रामक शक्ति और निर्देश उन किरणों को प्रदान की जाती है। लेजर हथियारों की तीव्रता एवं गति किसी भी अवरोध पर आक्रमण करने में सक्षम होती है, जिसे निर्देशित एवं शक्तिशाली बनाने की आवश्यकता होती है। विभिन्न उपकरणों का निर्माण करके आक्रामक इलेक्ट्रानिक हथियारों का निर्माण किया जा रहा है, जिसे इलेक्ट्रानिक हथियार, लेजर हथियार, ऊर्जा हथियार, विकिरण हथियारों आदि के नामों से जाना जा सकता है।

रे-गन (Ray Gun) :-

यह एक विज्ञान आधारित निर्देशित ऊर्जा हथियार होता है, जो आमतौर पर विनाशकारी प्रभाव के साथ ऊर्जा उत्सर्जित करता है और कई नामों से जाना जाता है जैसे– रे–गन, डेथ रे, बीम गन, ब्लास्टर, लेजर गन, लेजर पिस्टल, फेजर, जैप गन, आदि, यह किरणें अत्यंत घातक होती हैं। यह जब मानव लक्ष्य से टकराती हैं तो विनाशकारी हो जाती हैं।

निर्देशित ऊर्जा हथियार :-

यह एक व्यापक हथियार होता है, जो लेजर, माइक्रोवेव, कण बीम, ध्वनि बीम सहित (ठोस प्रक्षेप्य के बिना) अत्यंत केंद्रित ऊर्जा के साथ अपने लक्ष्य को नुकसान पहुँचाता है।

माइक्रोवेव :-

यह विद्युत चुम्बकीय विकिरण का एक रूप होता है, जिसका तरंग दैर्ध्य लगभग एक मीटर से एक मिमी0 के बीच होता है।

कण बीम या कण किरण :-

यह आवेशित या तटस्थ कणों की एक धारा होती है, जो प्रकाश की गति से गति कर सकते हैं।

डेजलर या चकाचौंध करने वाला लेजर :-

यह बहुत घातक हथियार नहीं होता है। यह फ्लैस ब्लाइंडनेस के साथ अपने लक्ष्य को अस्थायी रूप से भटकाने के लिए निर्देशित विकिरण का प्रयोग करता है। यह मनुष्यों के विरुद्ध दृश्य प्रकाश का उत्सर्जन करते हैं। इससे आँखो की दीर्घकालीन क्षति नहीं होती।

लेजर सर्जरी :-

यह एक प्रकार की ऐसी सर्जरी होती है जो चिकित्सा उपकरणों की भागीदारी के बिना विशिष्ट प्रकाश किरणों के साथ उपचार करती है। मेडिकल क्षेत्र में सर्जरी के लिए उस लेजर का उपयोग नहीं किया जाता है, जिसका उपयोग स्टील को काटने या हीरे को आकार देने (तराशने) के लिए किया जाता है। लेजर सर्जरी में इस प्रकार की सावधानियां रखी जाती हैं कि आपरेशन स्थान के ऊतकों को लेजर किरण नुकसान न पहुंचाए। मेडिकल में निम्न स्तर (जो अधिक खतरनाक न हो) की लेजर बीम का उपयोग किया जाता है।

विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम :-

सामान्य रूप से यह भौतिक विज्ञान का भाग है। यह वह विद्युत चुम्बकीय बल है जो गुरुत्वाकर्षण, मजबूत और कमजोर, परमाणु बलों के साथ प्रकृति में चार मूलभूत अन्तःक्रियाओं से में से एक है।

– विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा को विकिरण के माध्यम से संप्रेषित किया जाता है, जो हवा, पानी जैसे माध्यम के बिना ऊर्जा को स्थानान्तरित करता है।

– विद्युत चुम्बकीय तरंगें प्रकाश की गति से यात्रा करती हैं। इसमें विद्युत एवं चुम्बकीय दोनों घटक शामिल रहते हैं।

– विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम विद्युत चुम्बकीय तरंगों की एक पूरी श्रृंखला होती है। इसमें शामिल होते हैं– ऊर्जा स्तरों के आरोही क्रम में रेडियो तरंगें और माइक्रोवेब, अवरक्त दृश्यमान और पराबैगनी प्रकाश, एक्स किरणें, गामा किरणें आदि।

युद्ध में विद्युत चुम्बकत्व (इलेक्ट्रानिक उपकरण) के उपयोग –

युद्ध में विद्युत चुम्बकत्व के असंख्य उपयोग हैं :–

1. दुश्मन के यांत्रिक और विद्युत चुम्बकीय प्रणालियों को बाधित करना।
2. इलेक्ट्रानिक बमों या "ई–बमों" के उपयोग हेतु।
3. नेविगेशन के लिए जैसे लक्ष्य का पता लगाना, जासूसी एवं खोजबीन का कार्य, आदि के लिए उपयोग करना।
4. दुश्मन को भ्रमित करने एवं धोखा देने के लिए।
5. रडार जैमिंग (रडार की कार्यवाही को बाधित करना) एवं भ्रामक संकेतों की जानकारी देने हेतु।
6. राष्ट्र के आधारभूत ढांचे को अक्षम बनाने के लिए सीधे इलेक्ट्रानिक हमला करना।

इलेक्ट्रानिक युद्धकला के भारत के उपकरण :–

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी0आर0डी0ओ0) ने इलेक्ट्रानिक युद्ध कला उपक्रम हेतु "रक्षा वैमानिकी अनुसंधान प्रतिश्ठान" (डी0ए0आर0ई0) की स्थापना की है।

(1) रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी0आर0डी0ओ0) ने भारतीय नौसेना के लिए 5 प्रकार की इलेक्ट्रानिक युद्ध प्रणालियों की परिकल्पना की :–

1. पतंग।
2. गरुण।
3. होमी ई0एस0एम0।
4. पोर पोईस ई0एस0एम0।
5. ई0डब्ल्यू0 सुइट एलोरा।

(2) संयुक्ता :–

यह रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन द्वारा निर्मित भारतीय सेना के बीच एक संयुक्त इलेक्ट्रानिक कार्यक्रम है।

इसके प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं–

1. संचार और रडार सिग्नलों की निगरानी करना।
2. संचार और रडार सिग्नलों को अवरोधित करना।
3. दिशाओं को खोजना एवं जाम करना।

भारत ने लगभग 100 किमी0 के क्षेत्र में तैनाती हेतु लगभग 145 वाहनों पर इसे तैनात किया है।

(3) हिम शक्ति :-

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी0आर0डी0ओ0) ने हल्के लड़ाकू विमान "तेजस पी0वी0^{1}" पर उन्नत इलेक्ट्रानिक युद्धकला का सफल परीक्षण किया।

काली (के.ए.एल.आई.) 5000 :-

- पूर्ण नाम : "किलो एम्पियर लीनियर इंजेक्टर"।
- वर्ष 1985 में भाभा एटामिक रिसर्च सेंटर (बी0ए0आर0सी0) के डायरेक्टर आर0 चिदंबरम ने इस प्रस्ताव को लाया और वर्ष 1989 पर इस तकनीक पर कार्य प्रारम्भ हो गया।
- यह भारत का अति गोपनीय "निर्देशित ऊर्जा हथियार" है, यह भारत का एक प्रकार से अदृश्य तरंगों वाला "ब्रम्हास्त्र" है।
- यह भारत का अदृश्य लेजर हथियार है जिससे अदृश्य लेजर बीम के द्वारा भात्रु के हथियारों को हवा में ही नष्ट किया जा सकता है।
- यह शत्रु के टैंक, लड़ाकू विमानों, मिसाइलों, ड्रोन और यहाँ तक कि उपग्रहों को भी नष्ट करने में सक्षम है।
- इसे भाभा रिसर्च एटामिक सेंटर (बी0ए0आर0सी0) और रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डी0आर0डी0ओ0) दोनों ने मिलकर बनाया है।
- आने वाले समय में इस तकनीक के जरिए अंतरिक्ष में जासूसी की जा सकेगी तथा दुश्मन के संचार, राकेट, प्रक्षेपास्त्र तंत्र को रोका जा सकेगा।
- वर्ष 2004 में काली 5000 को भारतीय सेना में शामिल कर लिया गया है।
- प्रारम्भ में औद्योगिक कार्यों में प्रयोग हेतु विकसित किया गया लेकिन बाद में रक्षा क्षेत्र में भी इसके उपयोग सामने आए।

पहले शुरुआत क्रमशः काली 80, काली 200, काली 1000, काली 5000 पर हुई। इसकी प्राथमिक इलेक्ट्रान बीम की शक्ति "40 गीगा वाट (जी0डब्ल्यू)" थी जो कि क्रमशः बाद के संस्करणों हेतु बढ़ती चली गई।

दुर्गा- 2 (डी.यू.आर.जी.ए.- 2)

- यह अभी प्रायोगिक चरण में है।
- दुर्गा का पूर्ण नाम : "डाइरेक्शनली अन रिस्ट्रक्टेड रे–गन ऐरे"। इसे अन्य नाम "वार एक्सपर्ट द्वारा तबाही" के रूप में भी जाना जाता है।
- इसे "डी0आर0डी0ओ0" के अंतर्गत "लेजर साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी सेंटर दिल्ली" द्वारा बनाया गया है। यह भारत का हल्का "डायरेक्ट एनर्जी वीपन" (डी0ई0डब्ल्यू0) है। इसकी क्षमता 100 किलोवाट है।
- इसे जल, थल एवं वायु तीनों पर आधारित रखकर बनाया जाएगा। यह परियोजना अभी चल रही है और जल्द ही इसे निर्मित कर इसे सेना को सौंप दिया जाएगा।
- यह किसी ड्रोन जैसे लक्ष्य को मात्र 1 से 2 किमी0 की ऊँचाई पर ही नष्ट कर देगा, यह ड्रोन को खोजने, पहचानने और नश्ट करने में सक्षम होगी।
- यह लेजर और माइक्रोवेब पर आधरित होगी। इसकी गति 3 लाख किमी0 प्रति सेकंड होती है जिसे

इच्छानुसार कम या अधिक किया जा सकता है।

इसमें फाइवर और रासायनिक लेजर का प्रयोग हुआ है। 25 किलोवाट क्षमता के लेजर हथियार बैलिस्टिक प्रक्षेपास्त्रों को मात्र 5 किमी0 में नष्ट कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. श्रीवास्तव, डॉ0 जे0एम0 : आधुनिक राज्य का रक्षातंत्र, ए0एस0आर0 पब्लिकेशन लखनऊ।
2. सिंह, डॉ0 ए0के0 : राष्ट्रीय सुरक्षा, प्रकाश बुक डिपो, बरेली।
3. सिंह, डॉ0 ए0के0 : राष्ट्रीय रक्षा एवं सुरक्षा, प्रयाग पुस्तक सदन, प्रयागराज।
4. सिंह, डॉ0 लल्लनजी : आधुनिक राज्य का रक्षातंत्र, प्रकाश बुक डिपो, बरेली।
5. सिंह, डॉ0 लल्लनजी : राष्ट्रीय रक्षा और सुरक्षा, प्रकाश बुक डिपो, बरेली।
6. वेंकटेश्वरन, ए0एल0 : भारत का रक्षा संगठन, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ एकेडमी।
7. राय, डॉ0 सुरेन्द्र नाथ : आधुनिक भारतीय सशस्त्र सेनाएं, चंद्र प्रकाश एण्ड ब्रदर्स, हापुड़।
8. मिश्र, डॉ0 सुरेन्द्र एवं माया : भारतीय सैन्य संगठन, माडर्न पब्लिशर्स, जालन्धर।
9. पटवारी, अरुण : विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं राष्ट्रीय प्रतिरक्षा, प्रकाश बुक डिपो, बरेली।

पता : ग्राम– भवानीपुर, पोस्ट– अटरामपुर (उल्दा), जिला : प्रयागराज, उ.प्र., पिन– 229412,

ईमेल : shubhashbhavanipur@gmail.com

मोबाइल एवं व्हाट्सएप : 9956331228

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
Vol. 12, Issue 1-2
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
पृष्ठ : 16-17

Analytical view of the Non-Aligned policy of India

Dr. Neetu Mehta
Assistant Professor Political Science, Swami Vivekanandnagar College Gothda Bundi, Rajasthan.

The Non-Aligned Movement (NAM) is a policy that was adopted by India, among other nations, during the Cold War era. The NAM was a response to the bipolar division of the world into two major camps, the United States-led capitalist bloc and the Soviet-led socialist bloc. India, under the leadership of Prime Minister Jawaharlal Nehru, played a significant role in the formation and growth of the NAM.

The Non-Aligned policy of India aimed at maintaining India's independence and autonomy in foreign policy. India, being a developing country, had limited resources to expend on defence, and therefore it was important for India to maintain friendly relations with both the superpowers, USA and USSR.

India's non-aligned policy was based on several principles, including mutual respect for sovereignty and territorial integrity, non-interference in the internal affairs of other countries, peaceful co-existence, and opposition to colonialism and imperialism.

India's non-aligned policy was primarily aimed at creating a world order that would promote peace, stability, and economic development. India believed that the existing international system was biased towards the superpowers and the developed countries and that the developing countries needed to have a voice in shaping the global agenda.

India played a leading role in the NAM and hosted the first Non-Aligned Summit in 1961 in New Delhi. India also played an active role in promoting the NAM's agenda at various international forums, including the United Nations.

However, critics of India's non-aligned policy argue that it was unrealistic and that India should have chosen a side in the Cold War. They argue that India's non-aligned policy failed to address the security concerns of the country and that it made India vulnerable to external threats.

Despite the criticism, India's non-aligned policy played a significant role in shaping the global agenda during the Cold War era. It provided a voice to the developing countries and ensured that their

concerns were heard on the global stage. It also helped India to maintain its independence and autonomy in foreign policy and to promote its economic and social development.

Main Ideas :-

India's non-aligned policy was formulated after its independence in 1947 with the aim of maintaining its strategic autonomy and promoting peace and stability in the world. Here are some key points on India's non-aligned policy :

- **Non-alignment :** India's non-aligned policy was based on the principle of non-alignment, which meant that India would not align itself with any of the two superpowers during the Cold War. India aimed to maintain its independence, sovereignty and integrity by not joining any military bloc or alliance.
- **Promotion of peace :** India's non-aligned policy aimed to promote peace and stability in the world. India believed that conflicts could be resolved through peaceful means, and therefore, it played an active role in promoting dialogue and negotiations between conflicting parties.
- **Development :** India's non-aligned policy also focused on promoting economic development and self-reliance. India believed that economic development was essential for achieving political independence and social justice. Therefore, India focused on promoting economic cooperation among developing countries.
- **Nuclear disarmament :** India's non-aligned policy emphasized the need for nuclear disarmament and the abolition of nuclear weapons. India believed that the existence of nuclear weapons posed a grave threat to humanity and that their use would be catastrophic.
- **Third World solidarity :** India's non-aligned policy also aimed to promote solidarity among developing countries. India believed that developing countries needed to unite to confront the challenges of underdevelopment and poverty. India played an active role in promoting the interests of the Third World in various international forums.
- **Criticism of imperialism :** India's non-aligned policy was critical of imperialism and colonialism. India believed that imperialism and colonialism had caused immense suffering and injustice to people around the world. India supported national liberation movements and the struggle against colonialism.

In summary, India's non-aligned policy was based on the principles of non-alignment, promotion of peace, development, nuclear disarmament, Third World solidarity, and criticism of imperialism. India played an active role in promoting these principles in various international forums.

9660530006, pehchaanngokota@gmail.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 18-22

तमिलनाडु में हिन्दी : स्थिति और संभावनाएँ

Dr. Rekha. G
Assistant Professor, Loyola College (Autonomous) Chennai-600034

'एक राष्ट्रभाषा हिंदी हो,
एक हृदय हो भारत जननी'।

दक्षिण में हिंदी प्रचार का उद्देश्य प्रथमतरू दक्षिणवासियों को हिंदी भाषा सीखने, लिखने और बोलने का प्रशिक्षण देना, उसकी समुचित जानकारी प्राप्त करके विभिन्न भाषा–भाषी लोगों के साथ संपर्क बढ़ाना, राष्ट्रीय चेतना का दृढ करना, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक आदान–प्रदान करना आदि रहा। इसके लिए सभा ने समय–समय पर कार्यक्रम तथा योजनाएँ बनाकर उन्हें कार्यान्वित किया और दक्षिण में हिंदी के विकास के लिए आवश्यक भूमिका निभायी।

हिंदी के विकास के कारण को क्रमबद्ध योजनाएँ बनाकर सफल व संपन्न करने के कारण केंद्र सरकार ने सभा की सेवाओं से संतुष्ट होकर, संसद के अधिनियम के द्वारा सभा को राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया और उसे हिंदी में स्नातकोत्तर परीक्षाएँ चलाने की अनुमति दी। इससे सभा का कार्य–विस्तार हुआ और हिंदी का विकास व्यापक बना।

आज से 105 वर्ष पूर्व राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा निर्मित यह लघु संस्था बहु आयामी योजनाओं को कार्यान्वित करके हिंदी के विकास में योगदान देते हुए एक बृहत्, मंजूल, अखिल भारतीय भावना का प्रचार करनेवाली एक स्वयंसेवी संस्था के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के विकास कार्य में लगी अन्य संस्थाएँ इस संस्था को तीर्थ स्थान समझती हैं और दक्षिण की यात्रा पर आते समय इस संस्था का संदर्शन किये बिना नहीं जाते।

सभा की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम की विशेषता है कि सभा ने परीक्षा पाठ्यक्रम में प्रादेशिक भाषाओं को भी स्थान दिया है। प्रारंभिक परीक्षाओं के प्रश्न पत्र के प्रादेशिक भाषा से हिंदी में और हिंदी से प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद करने के प्रश्न होते हैं।उच्च परीक्षाओं में तो प्रादेशिक भाषाओं के अलग प्रश्न–पत्र ही हैं। इससे स्पष्ट है कि प्रादेशिक भाषा की जानकारी हिंदी सीखनेवालों के लिए आवश्यक है। इस व्यवस्था से उच्च परीक्षाएँ लिखनेवालों को प्रादेशिक भाषा और हिंदी के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करने की प्रेरणा मिलती है। साहित्यिक समन्वय की दृष्टि से सभा की यह योजना दोनों भाषाओं के विकास के लिए महत्वपूर्ण साबित हुई है।

दक्षिण भारत में प्रचार के लिए 1918 में राष्ट्रीय एकता तथा स्वातंत्र भावना के संदेश को देश के जन

साधरण तक पहुँचाने के साथ–साथ देशभक्ति व भाषा प्रेम को उद्‌बुद्ध करने के पवित्र संकल्प से राष्ट्रपिता पूज्य महात्मा गाँधीजी ने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की। प्रथम प्रचारक के रूप में देवदास गाँधी दक्षिण भारत आए। थियोसॉफिकल सोसाइटी की संस्थापिका डॉ. एनीबेसन्ट के सहयोग से हिन्दी भाषा धीरे–धीरे पल्लवित व पुष्पित हुई।

सन् 1922 में हिन्दी प्रचारक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रथम वर्ग का आरम्भ ई.वे.रा पेरियार के घर में हुआ। प्रचारक प्रशिक्षण पाकर समर्पित सेवा भाव से गाँवों के हर कोणों में जाकर प्रचार कार्य में लगे। फलस्वरूप मद्रास शहर में मात्र दस हजार से ज्यादा सक्रिय प्रचारक आज है जो सरकारी विद्यालयों में हिन्दी अध्यापक के रूप में तथा बैंक एवं सरकारी तथा गैर सरकारी कार्यालयों में हिन्दी विभागों मे अधिकारीयों के रूप मे सेवाएं प्रदान किए हैं।

तमिलनाडु में सन् 1937 में श्री राजाजी ने त्रिभाषा सूत्र को अपनाया। तदुपरान्त तमिलनाडु में दूसरी भाषा के रूप मे शिक्षण के लिए हिन्दी रखी गई है। जगह–जगह परहिन्दी माध्यम के विद्यालय भी खोले गए।

सन् 1964 में संसद में पारित अधिनियम संख्या 14 के अनुसार सभा को हिन्दी में स्नातकोत्तर स्तर की परीक्षाएँ चलाने और उपाधियाँ प्रदान करने का अधिकार मिला है। इसी के अन्तर्गत सभा के उच्च शिक्षा और शोध संस्थान का शुभारंभ किया गया। इस संस्थान द्वारा हिन्दी में स्नातकोत्तर स्तर पर प्रयोजनमूलक पाठ्यक्रम का आयोजन चार केन्द्रों में किया गया है– मद्रास, हैदराबाद, धारवाड और एरणाकुलम। इन केन्द्रों में एम.ए., एम. फिल., पाठ्यक्रमों के संचालन के अलावा पीएच.डी तथा डी.लिट., के लिए शोध कार्य भी संपन्न हो रहा हैं अभी तक हजारों विद्यार्थी एम.ए., की उपाधि और सैकड़ों शोधार्थी पीएच.डी. उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। कई वर्षों से स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा और हिन्दी पत्रकारिता, डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी संस्थान द्वारा सफलतापूर्वक चलाया जा रहा है। संस्थान हिन्दी शिक्षक तैयार करने की दृष्टि से बी.एड., प्रचारक प्रशिक्षण एवं शिक्षा स्नातक के कॉलेज भी चला रहा है एवं एम.एड (सिर्फ धारवाड़ में) कॉलेज भी चला रहा है। शिक्षा शास्त्र विषय में एम.फिल. एवं पीएच.डी. शोध कार्य भी संपन्न हो रहा है। हाल ही राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा सभा का मूल्यांकन भी हो चुका है और सभा को सम्मान जनक बी–श्रेणी प्राप्त हुई है। यह सचमुच इस ऐतिहासिक संस्था के लिए एक गौरव की बात है।

संस्थान आज तक की शैक्षिक गतिविधियों में दूरस्थ शिक्षा के महत्व को देखते हुए शिक्षा निदेशालय का शुभारंभ चेन्नई में किया। शैक्षिक वर्ष 2002–2003 से बी.ए., एम.ए (हिन्दी) तथा स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लमा का पाठ्यक्रम दूरस्त शिक्षा निदेशालय द्वारा आरंभ किया गया है। छात्र–छात्राओं के लाभार्थ संपर्क–सह–भाषण–माला कार्यक्रम का आयोजन भी सर्वाधिक रूप से किया जा रहा है। उक्त कार्यक्रम के दौरान दक्षिण के लगभग सभी विश्वविद्यालयों के अनुभवी प्रोफेसर एवं प्राध्यापकों के द्वारा भाषण की व्यवस्था की जाती है। चेन्नई, हैदराबाद, विजयवाडा, धारवाड, एरणाकुलम और तिरुच्चि केन्द्रों में यह व्यवस्था की गयी है।

नई सदी के द्वितिय दशक के उत्तरार्द्ध में हिन्दी भाषा तंग गलियों से प्रचार प्रसार के द्वारा आसानी से निकलकर जन मानस में अपने लिए एक अलग स्थान हासिल करते हुए जन–जीवन के विविध क्षेत्र में एक अहम भूमिका निभा रही है।

हिन्दी की व्यापकता व उसका भाषिक ढांचा बदलता हुआ नजर आ रहा है। भारतीय भाषाओं के साथ

हिन्दी भाषा का सम्बन्ध अनुवादों के द्वारा अति निकट पहुँचा है। अनेकता में एकता उसका चरित्र लक्षण है। भारतीय भाषा प्रेमी है। देशी भाषा हो या विदेशी भाषा, वे सभी को समान रूप से प्यार करते है। भारतीय साहित्य एक होते हुए भी अपनी भाषिक विशिष्टताओं के कारण अनेक रूप से दृष्टिगोचर होता है। आज मौलिक लेखन करनेवाले तमिलनाडु में अत्याधिक मात्रा में है। अनुवादकों की कमी भी नही है। सर्वत्र हिन्दी का बोलबाला किसी न किसी रूप से है। अब तक तमिल, तेलुगु, कन्नड,मलयालम आदि दक्षिण भारतीय भाषाओं के साहित्य का अनुवाद हिन्दी में तथा हिन्दी से अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद कार्य पर्याप्त मात्रा में सम्पन्न हो चुका है।

देश की एकता और उन्नति के लिए हिन्दी को लाने में सभा अपनी अहम भूमिका निभा रही है। सभा का उद्देश्य–पूर्ति में हिन्दी प्रचारक एवं हिन्दी प्रेमियों का सहयोग है। सभा से प्रेरणा पाकर आज दक्षिण में क्रमशः सभी विश्वविद्यालयों के प्रयोजनमूलक हिन्दी को अनिवार्य कर दिया गया है। सभी संस्थाओं ने अलग–अलग पाठ्य–सामग्री तैयार की है।

केन्द्र सरकार के केंद्रीय हिन्दी निदेशालय के अंतर्गत हिन्दीतर क्षेत्र में हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत निःशुल्क हिन्दी वर्गों की स्थापना से दक्षिण भारत के कोने–कोने में प्रचार–प्रसार कार्य में जोर पकडी। जो भावी पीढ़ियों के लिए हिन्दी भाषा व साहित्य का स्वरूप निर्धारण करने में तथा महत्व को समझाने में उपयोगी रहा है।

दक्षिण भारत के धार्मिक, सामाजिक , राजनैतिक तथा साहित्यिक संस्थाओं का योगदान जनता में राष्ट्रीय चेतना को गतिशील करने के साथ हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान हासिल कराने में अहम भूमिका निभायी है। आज हमारे दक्षिण भारत के विश्वविद्यालयों ने मौलिक लेखकों की कमी दूर की है। मौलिक लेखक व अनुवाद करनेवाले दक्षिण भारत में ज्यादा है। दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रमों से विद्यार्थी ज्यादा लाभान्वित हुए है। हिन्दी दिवस, हिन्दी पखवाडा, हिन्दी माह सभी कार्यालयों में मनाकर भारत सरकार की भाषा नीति के कार्यान्वयन में सफलता हासिल की है। समय–समय पर हिन्दी कार्यशाला व शिबिर का आयोजन कर दैनिक जीवन में आनेवाली प्रायोगिक कठिनाइयों को दूर करने व समस्या दृ समाधान का उपाय निकालने में सफलता पाई है। सरकारी कार्यालय अपनी अलग एक मासिक पत्रिका प्रकाशित कर हिन्दी की विकास यात्रा को रेखांकित करने में सफल हुई है।

सहस्राब्दी वर्ष में सभा ने हिन्दी माध्यम से होमियोपति व आर्युवेद तथा विधि कालेज की स्थापना कर दक्षिण भारतीयों को ज्ञान हासिल कराने की दिशा में लाभान्वित किया है। दक्षिणी भाषाओं के साहित्यकारों एवं शिक्षा विदों तथा वरिष्ठ प्रचारकों का उनकी उल्लेखनीय साहित्यिक सेवाओं के लिए पदवीदान समारोह के अवसर पर सम्मान कर स्वयं सभा गौरवान्वित हुई है।

दक्षिण भारत में जनमानस के हृदय में हिन्दी का दीप प्रज्वलित करने में सभी संस्थाएँ ऑनलाइन शिक्षण की होड़ में लगी है। आज विश्व मंच पर हिदी को सर्वोच्च स्थान दिलाने में दक्षिण भारत की संस्थाओं का कार्य सदा स्मरणीय रहेगा।

प्रांतीय सरकार की नीति भले ही अपने प्रांतीय भाषाओं को प्राथमिकता देने के द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी को तीसरी भाषा का दर्जा देने में सक्षम हो फिर भी हिन्दी तीसरी भाषा के रूप में रहकर भी अपनी मजबूत नींव से क्रमशः प्रांतीय भाषाओं को प्रप्रथम बिठाने का श्रेष्ठतम कार्य दासानुदास बन अपनी सेवा में लगी है।

हर प्रान्तवाले यह समझे की हिन्दी हमारी मातृभाषा या प्रांतीय भाषा को हानि नहीं पहुँचाती बल्कि प्रांतीय भाषा के विकास की मजबूत कड़ी बनेगी। हिन्दी की समृद्धि तथा संपन्नता भारतीय संस्कृति, सभ्यता तथा सारी भाषाओं को अपने साथ आगे ले चलने में है। सभी भाषाओं को समान अवसर देने में, व्यक्तियों की सोच में परिवर्तन लाने में है। हमें याद रखना होगा कि कभी भी हिन्दी न किसी दब–दबाव में पड़ेगी और न ही अन्य भाषा को दबाएगी।

यदि सरकार की नीति भाषा भेद को दूर करने का कदम उठाने में लगेंगी तो हिन्दी जगत् में अन्य भाषाओं में विस्तरित होने के साथ–साथ अवश्य ही सिर्फ भारतीय भाषाओं के मात्र ही नहीं विदेशी भाषाओं को भी अपनी मजबूत कड़ी के जरिए पुष्पित व पल्लवित करेगी।

ज्ञातव्य है कि भाषा ज्ञान सबको गौरवान्वित व गर्वान्वित महसूस कराने का साहस करा चुकी है। एक जमाना था लोग अंग्रेजी में बोलना गौरव की बात समझते थे, लेकिन आज सब कुछ उल्टा हो गया है। हिन्दी में बोलना ही अपना गौरव समझते हैं।

सभा हिन्दी शब्द सागर, वैज्ञानिक व तकनिकी शब्दावली प्रयोजनमूलक स्वरूप को दृष्टिगत रख व्यावहारिक हिन्दी पुस्तिका का प्रकाशन कर राष्ट्रभाषा व राजभाषा के दैनिक प्रयोजन की कठिनाइयों के लिए समाधान ढूंढने में सफल रहा।

हिन्दी प्रेमियों का संगम हिन्दी के हिमायती राजर्षि टंडन के नेतृत्व में आयोजित सम्मेलन हिन्दी के प्रचार–प्रसार में एक नयी दिशा दी। हिन्दी को सरलीकृत बनाने के प्रयास में जुड महात्माओं का अथक परिश्रम का फल दक्षिण में हिन्दी की गतिविधियों में एक स्फूर्ति मिली।

सभा ने वर्ष 2018 में अपना शतमनोत्सव का उद्घाटन नई दिल्ली के विज्ञान भवन में माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद के कर कमलों से हुआ। वर्ष 2019 हमारी केन्द्र सभा के परिसर नवनिर्मानित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा का भी अनावरण माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद के करकमलों से सम्पन्न हुआ। पूज्य बापू की 150 वीं जन्म शताब्दी एवं सभा की शताब्दी वर्ष दक्षिण भारत भर जगह–जगह पर चारों राज्यों के विभिन्न केन्द्रों में प्रचारक एवं हिंदी प्रेमियों की उपस्थिति में बहुत ही सुन्दर ढंग से सम्पन्न हुआ। शताब्दी वर्ष की साहित्यिक उपलब्धि तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम के साहित्याकदमी द्वारा पुरस्कृत वरीष्ठ साहित्यकारों की रचनाओं का हिंदी में अनुदित कर प्रकाशित भी किया गया। राष्ट्र भर में फैली 23 स्वैच्छिक संस्थाओं में प्रमुख हमारी संस्था द्वारा संचालित परिचय से प्रवीण तक की परीक्षाओं में दक्षिण भारत में कुल आठ लाख के करीब छात्र प्रतिवर्ष विभिन्न केन्द्रों में परीक्षा देकर उत्तीर्ण हुए हैं। वर्ष 2020 हमारी जैसी इन 23 संस्थाओं के प्रचार–कार्य में बाधायें करोना–19 के कारण कुछ समय तक अवश्य आई है। इस समस्या से जूझने हमने आनलाईन द्वारा परीक्षापयोगी पाठन–माला का कार्यक्रम आयोजित कर कुछ हद तक संभाल पा लिए है। मद्रास शहर में ही मात्र करीब 500 परीक्षा केंद्रों की व्यवस्था करनी है। दक्षिण भारत भर मैं कुल 5000 से ज्यादा केन्द्रों की परीक्षा–संचालन के लिए आवश्यकता है। सोसियल–मीडिया दूरी–अन्तराल आदि को देख केन्द्रों को संख्याओं की आवश्यकता अनुसार बढाने की भी योजना हमारी रही है लाकडाउन के खुलने के बाद पुनः शिक्षण के पठन–पाठन में नई दिशा स्फूर्ति प्राप्त हुई है। सारी परीक्षाऐं एसेसमेंट जैसा ही हो गया है। बोलचाल कम हो गया है, उच्चारण आदि सुनने का समय नहीं रहा है।

वर्तमान शिक्षा स्थिति आन–लाईन के जरिए ही संभव हो सफल होती आ रही है। सरकार की नीति एवं प्रशासन के आदेशों का पालन परिस्थिति के अनुसार चलाते हैं। समय–समय पर शिक्षा विद् एवं प्रचारकों से सम्पर्क कर इस समस्या का समाधान पा रहे हैं।

हिंदी की प्राथमिकता हम जैसी स्वैच्छिक संस्थाओं के सिवाय अन्य कोई संस्था जिम्मेदारी से कर पा रहा हैं। विद्यालय पाठ्यक्रमों के अलावा छात्र–छात्रा आज तक समय निकालकर अलग तौर से विशेष कोर्स से पढ़ रहे थे। पूर्व प्रचारक–छात्र के बीच सम्पर्कता होने के कारण पठन–पाठन में किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं रहीं थी। कार्यालय में दूरी–अंतराल स्थापना भाव आदि के कारण कोरोना–19 में हिन्दी प्रचार को गति को मात्र नहीं शिक्षा प्रक्रिया मंद हो रहीहै। सभा द्वारा संचालित सी.बी.एस.ई कि महात्मा गांधी विद्यालय आन–लाइन वर्ग चलाकर अपनी जिम्मेदारी निभाने में सफल हो रही है।

उच्च शिक्षा, शोध संस्थान द्वारा संचलित एम.ए., एम.फिल, पीएच.डी., डी.लिट् आदि पाठ्क्रमों को संचालित आन लाईन शिक्षा द्वारा दी जाने की परम्पर, अपना लिए हैं।

प्रचारक प्रशिक्षण, बी.एड, एम.एड का आनलाईन द्वारा वर्ग चलाना मुश्किल हो रहा है। फिर भी प्रशिक्षणार्थियों का रोका समाधान यू.टूयूब, व्हाट्सप्प और आनलाईन द्वारा समय–समय पर करने की व्यवस्था कर चलाते आ रहे हैं।

शिक्षण–प्रशिक्षण प्रशासन आदि में कोरोना–19 की चुनौती विश्व भर की संस्थाओं की रही हैं। कोरोना–19 रूपी महाचक्रव्या के जाल से बहुत जल्दी ही छूट जाएगे। महामारी–योग के लिए अवस्थ हमारे चिकित्सक रोग दका टूंढ लाए हैं। कुछ समय के लिए हमारे लिए अग्नी परीक्षा रहेगी फिल भी इस परीक्षा में उतर हर कामयाब होंगे आर्थिक, शैक्षिक, व्यावसायिक आदि सभी क्षेत्रों में अवश्य पूर्वक्त से भी ज्यादासशक्त बनेंगे।

हमें करोना–19 ने अनेकता में एकता का पाठ–पढाकर सबको चिरजींव एवं अनन्य स्वरूप बाहुबली बना दिये है। प्रेम और सौहार्द्ध कोरोना–19 की देन है। कोरोना–19 के दौर में शिक्षण, प्रशिक्षण, प्रशासन में आयोजित संगोष्टियाँ सभी संस्थाओं के लिए मार्गदर्शिका बनी रहेगी।

पत्रचार पाठ्यक्रम दूरस्त शिक्षा, आनलाईन शिक्षा, जूम ऐप, गूगल मीट, वेदान्तु गूगल कक्ष के द्वारा समयोजित समायोजन कर सफल हुआ है। कक्षा शिक्षण शिक्षक–छात्र सम्पर्क आदि निकट भविष्य के लिए कल्पना मात्र ही रहेगा। कोरोना–19–20 का फासला कम होने के बाद हम अपनी पुनः आदर्शवाद शिक्षा पद्धति की ओर मुड़ेंगे।

मेरा मानना है कि दक्षिण भारत में खासकर तमिलनाडु में हिंदी की स्थिति और संभावनाएँ आशाजनक एवं प्रकाशमान है। वर्तमान में ना ही विरोधाभास हिंदी सीखने वालों के लिए हो रहा है, ना ही भविष्य में होगा। हिंदी सीखने वालों की संख्या हर प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है। हिंदी सबके मन परिवर्तन का कारण बनकर राष्ट्रभाषा के अपने महत्व को हिंदीतर राज्यों में पनपाएगा।

आप लोगों की शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद भाषा प्रेम के प्रति सदा रहे। हम मिलकर भाषाई एकता के द्वारा देश को उन्नत पहुँचाने में काम आए यही मेरी प्रार्थना है।

Mobile 9790777433, 9445600456
E-mail- sagarrekhasps1984@gmail.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 23-24

समाज और नारी

डॉ. पूजा शर्मा
प्रवक्ता, विद्युत कन्या इंटर कॉलेज, कासिमपुर अलीगढ़।

समाज में नारी की स्थिति :-

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में उस राष्ट्र की आधी आबादी स्त्री की भूमिका की महत्वा को इनकार नहीं किया जा सकता। आधी आबादी किसी भी कारण से निष्क्रिय रहती है तो उस राष्ट्र की समुचित एवं उल्लेखनीय प्रगति के बारे में कल्पना भी नहीं की जा सकती लेकिन भारतीय समाज में उत्तर वैदिक काल से महिलाओं की स्थिति निम्न होती गई और मध्यकाल तक आते–आते समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों के कारण ही स्त्रियों की स्थिति और भी निम्न स्तर की हो गई।

समाज सुधार में नारी का योगदान :-

आधुनिकता के आगमन एवं शिक्षा के प्रचार–प्रसार ने महिलाओं की स्थिति में सुधार लाना प्रारंभ किया जिसका परिणाम राष्ट्र की समुचित प्रगति के पथ पर उनका निरंतर अग्रसर होने के रूप में सामने हैं। आधुनिक युग में स्वाधीनता संग्राम के दौरान रानी लक्ष्मीबाई, विजया लक्ष्मी पंडित, सरोजिनी नायडू, सुचेता कृपलानी, कमला नेहरू, मणि बेन पटेल, अमृत कौर आदि स्त्रियों ने आगे बढ़कर के पूरी क्षमता एवं उत्साह के साथ देश सेवा के कार्यों में भाग लिया। भारत के उत्थान हेतु समर्पित विदेशी नारियों में श्रीमती एनी बेसेंट, मैडम कामा, सिस्टर निवेदिता इन लोगों के द्वारा भी यहां की नारियों को अत्यधिक प्रेरणा मिली।

राजनीति व्यवस्था में नारी का योगदान :-

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारतीय स्त्रियों ने सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था में अपनी स्थिति को नियंत्रण सुदृढ़ किया 'श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित' विश्व की पहली महिला थी जो संयुक्त राष्ट्र संघ सभा की अध्यक्ष बनी। स्वतंत्र भारत की पहली महिला राज्यपाल सरोजिनी नायडू थी। जबकि भारत की प्रथम मुख्यमंत्री सुचेता कृपलानी थी। और श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा राष्ट्र को दिए जाने वाले योगदान को भला कौन भूल सकता है जो लंबे समय तक भारत की प्रधानमंत्री रहीं। विभिन्न क्षेत्रों में नारी का योगदान आज के दौर में देखा जाए तो, चाहे वह चिकित्सा का क्षेत्र हो या इंजीनियरिंग का, सिविल सेवा का क्षेत्र हो या बैंक का, पुलिस हो या फौज, विज्ञान हो या व्यवसाय प्रत्येक क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण पदों पर स्त्रियां सम्मान के साथ कार्यरत हैं। स्वरूपों में पुरुषों के जीवन के साथ अत्यंत आत्मिक रूप से संबंधित है।

कवि गोपाल दास 'नीरज 'ने मानव जीवन में नारी की महत्ता को इन शब्दों में व्यक्त किया है :–

"अर्ध सत्य तुम, अर्ध स्वपन तुम, अर्ध निराशा–आशा,
अर्ध अजित– जित, अर्थ तृप्ति तुम, अर्ध अतृप्ति– पिपासा,
आधी काया आग तुम्हारी, अधिक काया पानी,
अर्धांगिनी नारी ! तुम जीवन की आधी परिभाषा।"

संदर्भ सूची :–

1. https://rightinfoclub.in/bhartiya&samaj&me&nari&ki&sthiti&par&nibandh/
2. https://www.netexplanations-com/essay&on&place&of&women&in&society&in&hindi/
3. https://mycoaching.in/bhartiya&samaj&me&nari&ka&sthan

जवाहर नगर सुरक्षा विहार जीटी रोड अलीगढ़

Contact - 7906542530

Email - pari74sharma@gmail.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 25-30

अन्या से अनन्या : प्रभा खेतान के अपराध बोध का जीवंत दस्तावेज

नीलम कुमारी, शोधार्थी,
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।

शोध सार :-

'अन्या से अनन्या' डॉ० प्रभा खेतान की आत्मकथा जो सन 2007 में राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुई थी, उनके अपराध बोध का जीवंत दस्तावेज है। आत्मकथा लिखना कोई सरल एवं सहज कार्य नहीं है। अपने जीवन के अच्छे और कटु अनुभवों को शब्दों में पिरोना, यह सोचे बिना कि लोग उनके बारे में क्या कहेंगे, बड़ा जटिल कार्य है। अपनी गलतियों और कटु अनुभवों को आत्मकथा में वर्णित करना बड़े साहस का काम होता है। सन् 1970 के दशक में विभिन्न स्त्रीवादी लेखिकाओं ने समाज गत नैतिक संहिताओं की दृष्टि में एक तरह का दुस्साहस किया। ऐसा ही एक नाम हिंदी साहित्य जगत में ख्याति प्राप्त लेखिका प्रभा खेतान जी का है। अपनी आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' को लेकर वह काफी चर्चित रही है। अपने ही जीवन को प्याज के छिलकों की तरह परत–दर–परत उधेडने का काम प्रभा जी ने बड़ी ईमानदारी से किया है। स्वजनों के कुकृत्यों को शब्दबद्ध करना हर किसी के बस की बात नहीं है। प्रभा जी के समस्त लेखन में नारी विभिन्न परिस्थितियों से जूझती हुई नजर आती हैं। भारतवर्ष में ही नहीं विदेशी पृष्ठभूमि में भी नारी अनेक यंत्रणाओं को सहन करती हुई अपने अस्तित्व को ढूंढती नजर आती है। कुछ साहसी लेखिकाओं ने स्त्री विमर्श को नए दृष्टिकोण से परिभाषित किया है। स्त्रीजीवन और उनके संघर्ष को पुरुष उतनी सजीवता से अंकित नहीं कर पाए जिस सजीविता से लेखिकाओं ने अपने साहित्य में उसे उकेरा है। डॉ० प्रभा खेतान भी जन्म से उपेक्षा का शिकार रही है। संपूर्ण जीवन उपेक्षित होते हुए भी उन्होंने अन्या से अनन्या तक का सफर बहुत ही साहस के साथ तय किया है। उनकी आत्मकथा से झलकता अपराध बोध हमें अनेक स्थानों पर दिखाई देता है बावजूद इसके प्रभा जी ने अपने जीवन में नित नई ऊंचाइयों को छुआ है।

बीज शब्द :- अपराध बोध, यंत्रणा, मानसिक आघात, आत्मनिर्भर, अनैतिक संबंध आदि।

मूल आलेख :-

'अन्या से अनन्या 'लेखिका के संपूर्ण जीवन में आए उतार–चढ़ाव और विपरीत परिस्थितियों में लिए गए सही–गलत फैसलों और उनके परिणामों से उत्पन्न कुंठा से उपजी आत्मग्लानि व अपराध बोध का जीवंत दस्तावेज है। भारतीय परिवेश में स्त्री व पुरुष के आचरण के पैमाने हमेशा असमान रहे हैं।

इसका प्रारंभ लेखिका के जन्म के साथ ही हो जाता है। प्रभा जी जन्म से उपेक्षा का शिकार रही क्योंकि वह अपने घर में उत्पन्न होने वाली पांचवीं संतान के रूप में लड़की थी। लड़की होने और सांवले रंग के कारण उनकी मां ने उन्हें कभी अपनी छाती से नहीं लगाया और हमेशा दूत्कारती रही। आत्मकथा में प्रभा जी कहती हैं कि, ''कैसा अनाथ बचपन था। अम्मा ने कभी मुझे गोद में लेकर चूमा नहीं। मैं चुपचाप घंटों उनके कमरे के दरवाजे पर खड़ी रहती। शायद अम्मा मुझे भीतर बुला ले। शायद..... हां, शायद अपनी रजाई में सुला ले। मगर नहीं, एक शाश्वत दूरी बनी रही हमेशा हम दोनों के बीच।''[1]

साढ़े नौ वर्ष की उम्र में पिता की मृत्यु के उपरांत अपने ही बड़े भाई द्वारा बलात्कार का शिकार हुई। अपने भाई– बहनों और मां के द्वारा हमेशा बोकी, भाटा माई, मिलिट्री घोड़ा, पत्थर, गधी, भंगन आदि उपाधियों से विभूषित करते रहें। विवाहित पुरुष का अनैतिक आचरण कभी भी समाज में विवादित नहीं होता लेकिन वही आचरण स्त्री के लिए सारी उम्र आरोप –प्रत्यारोप सहने का कारण बन जाता है। इस समाज में एक पढ़ी–लिखी आत्मनिर्भर स्त्री अपने व्यक्तिगत निर्णय की वजह से समस्त जीवन अपमानित होकर मानसिक आघातों को सहते हुए कुंठित जीवन व्यतीत करने को बाध्य हो जाती है। लेखिका स्वयं मानती है की जन्म से ही उपेक्षित होने के कारण जब पहली बार डॉक्टर सर्राफ ने प्रभा जी से कहा कि,'' इतनी सुंदर आंखें मैंनें आज तक नहीं देखी। पहली बार किसी पुरुष ने प्यार से मुझे अपनी हथेलियों में भरा और पहली बार कोई पुरुष मुझे कह रहा था 'तुम कितनी आकर्षक हो'। लाज से आरक्त चेहरा उसके सीने से लग गया था।''[2] डॉक्टर सर्राफ कहते हैं ''क्या तुम्हें नहीं पता कि मेरे जैसे पुरुष कैसे जानवर होते हैं। हां, मुझे जानवर ही कहो जो अपनी भूख मिटाने किसी का भी शिकार कर बैठता है।''[3] किसी के आचरण को परखने के लिए क्या इतना कम था जो लेखिका उनके साथ अस्वीकृत रिश्ता बनती है। वह बाईस वर्ष की अविवाहित लड़की और वह चालीस वर्ष का पांच बच्चों का पिता,कहां से मेल था। लेकिन 'सार्त्र 'और 'बरटेंड रसैल' को पढ़ने वाली लेखिका विवाह जैसी संस्था को सिरे से नकारती हुई कहती है, ''मेरी राय में विवाह एक ओवररेटेड संस्था है। मैं इस संस्था को ज्यादा तरजीह देने से इंकार करती हूं फिर जो कुछ भी है वह मेरे और डॉक्टर साहब के बीच है बिल्कुल हमारा निजी कोना।''[4]

डॉक्टर सर्राफ और उनके परिचितों द्वारा जब लेखिका को जीवन भर प्रताड़ित और लांछित किया जाता है तब लेखिका स्वयं कहती है कि, ''मैं प्रभा खेतान.....मैं कौन हूँ? क्या मेरी कोई पहचान नहीं है?मैं सधवा नहीं, क्योंकि मेरी शादी नहीं हुई है, मैं विधवा नहीं .....क्योंकि कोई दिवंगत पति नहीं है।''[5] लेखिका अपने किए निर्णय पर पछताने लगती है और क्योंकि सबके द्वारा अपेक्षित किए जाने और डॉक्टर सर्राफ के परिचितों द्वारा उन्हें पैसे देकर डॉक्टर सर्राफ का पीछा छोड़ने को कहा जाता है, तब डॉक्टर सर्राफ चुप्पी साध लेते हैं तो लेखिका को बहुत बुरा लगता है। लेखिका कहती है ऐसी परिस्थिति में, ''मैं अपने ही बाल नोचने लगती, चप्पलों से अपना सिर पीटने लगती थी। उस वक्त मुझे अपने आपसे इतनी घृणा होती कि अपनी चिंदी –चिंदी बिखेर देना चाहती। ऐसी स्थिति में डॉक्टर साहब कभी मुझसे प्यार करते, कभी नाराज होते, कभी समझाते। आखिर तुम इतनी हिस्ट्रीक क्यों हो जाती हो? क्या शादी ही सब कुछ है? बिना शादी के क्या तुम्हारा कोई अस्तित्व नहीं? तुम्हारी पढ़ाई–लिखाई, तुम्हारा व्यापार, तुम्हारी साहित्यिक कृतियां, तुम कुछ नहीं?

नहीं, मैं कुछ नहीं .....मेरी कोई पहचान नहीं''[6]

इन परिस्थितियों में लेखिका स्वयं को सामाजिक नैतिकता की बेड़ियों में जकड़े हुए अनुभव करती है।

लेखिका के मन में प्रेम व देहाकर्षण को लेकर जीवन भर उलझन बनी रही। ''अपराधबोध से मैं गलती रहती, फिर भी मैं और डॉक्टर साहब एक दूसरे को छोड़ नहीं पाते। क्या यह देह का आकर्षण था? नहीं, देह के लिए भला इतनी बड़ी कीमत देने की क्या जरूरत। देह तो हर जगह उपलब्ध है। तब क्या मन का लगाव था ? इसे प्रेम कहा जाए, हां .....नहीं।''[7]

क्या स्त्री पुरुष के संबंध देह से संचालित होते हैं? यदि डॉक्टर सर्राफ और लेखिका का संबंध का आधार यदि देह नहीं है और ना ही यह दोनों इसे अनैतिक मानते हैं तो फिर लेखिका स्वयं को असुरक्षित व अपूर्ण क्यों समझने लगी थी। क्या सामाजिक मान्यताएँ और नियम इतने कठोर होते हैं कि इसके चलते प्रेम में लिए निर्णय से उत्पन्न हुई परिस्थितियों को व्यक्ति चाह कर भी अपनी इच्छा अनुसार प्रयुक्त नहीं कर पाता। डॉक्टर सर्राफ के वहशीपन और लेखिका की जिद के कारण उनका संबंध शुरू तो हो गया लेकिन इसके परिणाम लेखिका के लिए असहनीय रहे। सामान्य परिस्थितियों में मनुष्य जिन नैतिक सिद्धांतों में विश्वास रखता है उनकी सही परख विपरीत परिस्थितियों में ही होती है। यही सब लेखिका के साथ हुआ जब वह गर्भवती हो गई।

लेखिका कहती है कि, ''गर्भपात, भ्रूण हत्या, प्रजनन का अधिकार स्त्री जीवन में जाने कितने मुद्दों पर लिखती रही हूँ मगर उस दिन अविवाहित मातृत्व की कल्पना मात्र से मेरा सर्वांग सिहर उठा था। बस किसी तरह इससे मुक्ति मिले, नहीं तो घर वाले मुझे फांसी के तख्ते पर लटका देंगे।''[8] गर्भपात करवाना लेखिका की विवशता थी लेकिन जीवन में कभी मां न बनने की टीस उम्र भर सताती रही थी। लेखिका आत्मनिर्भर थी। स्वयं का व्यापार था लेकिन फिर भी अपने मन से कभी खर्च नहीं कर पाई। लेखिका का सारा हिसाब किताब डॉक्टर सर्राफ रखते थे। लेखिका ने न्यूयॉर्क से जब ढाई सौ डॉलर का पर्स खरीदा तो डॉक्टर सर्राफ नाराज हो गए और कहने लगे, ''तुम्हारे पास बुद्धि नाम की चीज भी है? गुस्से में उनका चेहरा लाल होता जा रहा था– तुम अपने आप को समझती क्या हो? लेखिका ने जब कहा कि, ''डॉक्टर साहब मेरे पास पैसे हैं, अपनी खर्च के लिए जो हैं उनसे दे दूंगी।

तुम्हारा यह मालिकाना तेवर मैं सहन नहीं कर सकता।''[9]

डॉक्टर साहब इतने अधिक नाराज हो गए थे कि उन्होंने लेखिका को जैक्सन हाइट की सड़कों पर अकेला छोड़ दिया था। लेखिका कहती है कि, ''डॉक्टर साहब ने मेरे हाथ का पैकेट छीन कर फुटपाथ पर दे मारा था। और कहा था – तुम यही पड़ी रहो। और डॉक्टर साहब टैक्सी में बैठकर चले गए साथ में मेरा पासपोर्ट और वॉलेट भी लेते गए।''[10]

लेखिका जब फुटपाथ पर बैठकर रोने लगती है तब एक अमेरिकी महिला पुरुषों के आचरण को बताती हुई कहती है कि, ''वैसे जानती हो, मर्द हमेशा औरत को रुलाता है, ऑल मेन आर बास्टर्ड। वैसे इन मर्दों को पैदा हम औरतों ने ही किया है, नौ मिनट का सुख .....और नौ महीने का पेट .....।''[11]

अमेरिका में आइलिन प्रभा जी से कहती है की,'' देखो लड़की, तुम अभी नादान हो। बस इतना समझ लो कि पुरुष ने अपने स्वार्थ में धर्म, समाज और कानून बनाया है। औरत ने तो बस अभी–अभी अपने अधिकारों के बारे में बोलना शुरू किया है।''[12]

ये उदाहरण हमें सोचने पर विवश कर देते हैं कि यह कैसा समाज है जहां पर आरोपित व लांछित सिर्फ औरत को किया जाता है जबकि पुरुष भी उस अनैतिकता का सहभागी है।

लेखिका की बढ़ती आत्मनिर्भरता डॉक्टर सर्राफ को सहन नहीं होती और वह इसका परिणाम लेखिका को रोज नए–नए आरोपों के रूप में सुनने को मिलता है। लेखिका के व्यापारी मित्रों के फोन या पत्र आते तो पहले डॉक्टर साहब उनको देखते फिर भी लेखिका को मानसिक प्रताड़ना देना ने भूलते। लेखिका से उनके मित्र दवा मंगवाते हैं तो डॉक्टर सर्राफ कहते हैं, ''दवा तो एक बहाना है उसे तुम्हारी आवाज जो सुननी थी ....। तुम इस हद तक गिरी हुई हो मैं सोच भी नहीं सकता था। कहो और कितने यार हैं तुम्हारे? ओर कितने चक्कर चलाओगी तुम?''[13]

लेखिका डॉक्टर सर्राफ के तानों से परेशान हो चुकी थी। एक दिन लेखिका खीझकर कह देती है कि,'' जैसे सड़क पर चलने वाली हर औरत वैश्या नहीं होती, वैसे हर मर्द औरत को देखते ही लार नहीं टपकाने लगता। अच्छा तो अब तुम्हें मर्दों का वर्गीकरण भी आ गया, पर लग गए हमारी सोन चिरैया के।''[14]

विवाहित पुरुष के साथ जुड़कर लेखिका उम्र भर मानसिक प्रताड़ना झेलती रही, वहीं लेखिका के साथ जुड़कर डॉक्टर सर्राफ सबके बीच पूजनीय बने रहे।लेखिका कहती है कि, ''शादी नहीं होने का मुझे उतना दुख नहीं। मेरा सबसे बड़ा दुख है कि एक विवाहित पुरुष से मेरे नाम का जुड़ा होना, लोग मुझे आपकी रखैल कहते है।''[15] लेखिका सारी उम्र अपराध बोध में डॉक्टर सर्राफ की पत्नी और बच्चों की सेवा करती रही। बिना विवाह किए ही डॉक्टर सर्राफ के घर और बच्चों की जिम्मेदारी उम्र भर निभाती रही। लेखिका के व्यापार और पैसों पर अधिकार जमाते हुए डॉक्टर सर्राफ कहते हैं कि उनके छोटे बेटे को वह गोद ले ले। वह तो यहां तक कहते हैं कि उन्होंने लेखिका को पैसा कमाना सीखा कर गलती की। यह तक कह देते हैं कि, ''मेरी जगह यदि कोई और होता तो कब का तुम्हारा छमियाकरण हो जाता।''[16]

लेखिका डॉक्टर सर्राफ के उनके लिए आने वाले फोन को दूसरे फोन से सुनने और दुर्व्यवहार से तंग आकर एक दिन कह देती है कि, '' मुझे यह बन्दीघर अच्छा नहीं लगता, आप हर बात की खोज– खबर रखते है, कौन आया, कौन गया। डॉक्टर साहब चिढ़ गये थे,'' तो तुम रंडीखाना खोल लो। मैं भी चीख रही थी ..... स्वतंत्र स्त्री का क्या यही अर्थ हुआ कि उसे वैश्या का दर्जा दे दिया जाए? मुझे आपसे और आपकी गार्जियनशिप से मुक्ति चाहिए।''[17] लेखिका की सफलता देखकर वह कूढने लगे थे और लेखिका के साथ उनका व्यवहार नित प्रतिदिन क्रूरतम होता जा रहा था। लेखिका कहती है कि, ''पुरुष कमजोर स्त्री से ही क्यों प्यार करता है और सबल स्त्री से चिढ़ता क्यों है।''[18]

उम्र भर लेखिका एकाकीपन और उपेक्षा का शिकार रही थी। डॉक्टर सर्राफ के संबंध और प्रताड़ना से दुखी होकर लेखिका कहती है कि, ''कोई एक अपना .....बेहद अपना जो मेरे लिए सिर्फ मेरे लिए जिए। औरत जैसे पुरुष के लिए जीती है पुरुष भी क्यों नहीं औरत के लिए जी पाता।''[19]

लेखिका सारी जिंदगी डॉक्टर सर्राफ का साथ व प्रेम पाने के लिए अपने आत्मसम्मान व स्वाभिमान के साथ समझौता करती रही। लेखिका कहती है कि, ''मैं हमेशा भयग्रस्त रहती, समाज के ताने बोली का भय, डॉक्टर साहब के विमुख होने का भय, उनके परिवार में बाहरी व्यक्ति ही बनकर न रह जाए इसका भय, भय मेरा स्थाई स्वभाव बन गया।''[20]

लेखिका सारी उमर अपने प्रेम को पाने के लिए प्रयासरत रही। समाज में परिचितों द्वारा हर बार उनका मनोबल तोड़ा गया और सब के द्वारा उनको हेय दृष्टि से देखा गया। डॉ सर्राफ के अंतिम दर्शन के लिए भी

उन्हें लोगों के ताने और उपेक्षा का शिकार होना पड़ा। अंत में लेखिका को भी अपने लिए गए निर्णय पर पश्चाताप होने लगा था क्योंकि कुछ भी तो नहीं मिला था इस संबंध से उन्हें सिवाय दुख और प्रताड़ना के। सभी की नजरों में वह अपराधी जो बन गई थी।

निष्कर्ष :-

'अन्या से अनन्या' पढ़ते हुए आत्मकथा कम और लेखिका का अपराध बोध अधिक अनुभव होता है। आत्मकथा में लेखिका के संपूर्ण जीवन संघर्ष में लिए गए दुस्साहस पूर्ण निर्णय का अपराध बोध ही झलकता है। अपना अपराध बोध उन्होंने आत्मकथा में अनेक जगह व्यक्त किया है। जो कभी उनका था ही नहीं उसकी लालसा में उन्होंने अपने आत्मसम्मान तक को दांव पर लगा दिया था। जब सब कुछ उनके सहन से परे हो जाता है तब उन्हें अपने किए गए निर्णयों और उसके परिणामों पर पश्चाताप होता है और वह इस अवांछित बंधन से आजाद होना चाहती है, लेकिन कभी ऐसा कर नहीं पाती। भारतीय समाज की पुरुष वादी नैतिकता जिसमें सिर्फ स्त्री को ही दोषी ठहराया जाता है और पुरुष सभी अनैतिक कार्य करके भी हमेशा निरपराध रहा है। लेखिका कहती है कि, ''महादेवी जी ने ठीक कहा है – अंगार बनो। और अंगारा बनने के लिए तपस्या की जरूरत पड़ती है। आधुनिक स्त्री की तपस्या, पार्वती की तपस्या से भिन्न है। वह प्रार्थना करती है, उस प्रार्थना में वह सब कुछ मांगती है क्योंकि आज की पार्वती के लिए केवल पति ही काफी नहीं। पुरुष ने शिव के अलावा सत्य और सुंदर को चाहा तो स्त्री क्यों नहीं अपने जीवन में इसकी मांग करें? स्त्री भी न्याय और औचित्य की मांग करेगी। इस नए सर्जित संसार में प्रगति का प्रशस्त मार्ग, घर की देहरी से निकलकर पृथ्वी के अनंत छोर तक जाता है। स्त्री को यह समझना होगा।''[21] लेखिका की आत्मकथा हमें यही संदेश देती है कि जहां कहीं भी भावनात्मक या क्षणात्मक रूप से कमजोर पढ़कर समझौते के बल पर गलत निर्णय से गलत रिश्ते को निभाने का तिरस्कार सहना पड़े तो उसी क्षण उस रिश्ते को विराम देकर, जीवन भर की कुंठा से मुक्ति पाई जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. अन्या से अनन्या – प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन पृष्ठ – 31
2. वही – पृष्ठ– 66
3. वही – पृष्ठ –69
4. वही – पृष्ठ–85
5. वही – पृष्ठ–12
6. वही – पृष्ठ – 13
7. वही – पृष्ठ– 14
8. वही – पृष्ठ– 95, 96
9. वही – पृष्ठ– 6, 7
10. वही – पृष्ठ– 6, 7
11. वही – पृष्ठ– 10

12. वही – पृष्ठ– 141
13. वही – 164
14. वही – पृष्ठ– 169
15. वही – पृष्ठ– 179
16. वही – पृष्ठ– 214
17. वही – पृष्ठ– 180
18. वही – पृष्ठ –214
19. वही –पृष्ठ–223
20. वही – पृष्ठ– 174
21. वही – पृष्ठ – 258

Neelam kumari, research scholar, Baba Mastnath University Asthal Bohar, Rohtak
neelampanwar286@gmail.com
Ph. No. 94667 29987

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
Vol. 12, Issue 1-2
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
पृष्ठ : 31-32

वृद्धावस्था विमर्श

जयकला
शोधार्थी

प्रस्तावना :-

'विमर्श' शब्द का साधारण अर्थ विचार, विवेचन तथा परीक्षण के रूप में लिया जाता है विमर्श संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है समीक्षा या विचार। सामान्यतः विमर्श से तात्पर्य है चर्चा परिचर्चा विवाद, तर्क–वितर्क आदि। जब व्यक्ति किसी समूह में किसी विषय पर चिंतन करता है तो उसे विमर्श कहा जाता है। दूसरे शब्दों में व्यक्ति किसी विषय को लेकर गहन, चिंतन मनन करके समूह में जाकर उस विषय पर तर्क वितर्क करता है उसे विमर्श कहते हैं। हिंदी साहित्य में दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, किन्नर विमर्श के बाद वृद्ध विमर्श की चर्चा जोरों पर है। वृद्धावस्था जिसे सामान्यतः 'बुढ़ापा', 'वरिष्ठ', 'बुजुर्ग' और 'सेवानिवृति के आयु रूप में जाना जाता है। वृद्धावस्था मानव के शारीरिक प्रक्रिया का एक स्वाभाविक हिस्सा है जिस में शारीरिक, मानसिक, और सामाजिक पहलुओं में बदलाव आता है। वृद्धावस्था की कोई सटीक उम्र नहीं है, लेकिन सामाजिक संदर्भ के आधार पर वृद्धावस्था को 60–65 साल की उम्र के आसपास शुरू माना जाता है। यह समय मानव जीवन काल के अंतिम चरण को संदर्भित करता है। यह व्यक्ति के जीवन का एक महत्वपूर्ण और परिवर्तनात्मक दौर है। यह सफर अनगिनत अनुभवों, सीखों और अवसरों के साथ भरा होता है।

भारतीय समाज में प्राचीन समय से बुजुर्गों का स्थान पूजनीय रहा है। उनकी सेवा करने वाले व्यक्ति की आयु और कीर्ति में वृद्धि होती है। और बुजुर्गों के आशीर्वाद से व्यक्ति को सफल मार्गदर्शन प्राप्त होता है। बुजुर्गों को परिवार और समाज में उचित मान–सम्मान दिया जाता था। संयुक्त परिवार में पूरे परिवार की भाग–दौड़ परिवार के बुजुर्गों के हाथ में होती थी। परिवार का कोई भी फैसला उनकी सलाह से ही लिया जाता था। परिवार में बड़े बुजुर्गों की देखरेख से ही संयुक्त परिवार चलता था। उनकी सेवा परिवार के छोटे सदस्य का प्रिय कार्य रही है।

परिवर्तन प्रकृति का तत्व है। समय के साथ–साथ मानव प्रवृत्ति में भी बदलाव आता गया। आधुनिकता एवं नगरीकरण के कारण परिवार में अनेक परिवर्तन हुए। आधुनिक समाज वैश्वीकरण, औद्योगीकरण, और पाश्चात्य सभ्यता की ओर तेजी से बढ़ता जा रहा है। इसलिए समाज में संयुक्त परिवार का विघटन होता जा रहा है। जैसे–जैसे समाज में संयुक्त परिवारों का पतन हो रहा है वैसे–वैसे परिवार के बुजुर्गों के लिए परिवार में जगह दिनों दिन सीमित होते जाने की समस्या महानगरों में ही नहीं गाँवों और कस्बों में भी फैल रहा है।

वृद्धावस्था मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण परिवर्तनात्मक दौर है जो अनगिनत अनुभवों से भरा है। उम्र

बढ़ना एक सार्वभौतिक प्रक्रिया है जैसे बचपन, युवावस्था और वृद्धवस्था। जब व्यक्ति वृद्धावस्था में प्रवेश करता है वह शारीरिक रूप से कई बार कमजोर होता है। जैसे उच्च रक्तचाप ,डायबिटीज, आँखों की समस्या आदि।

इस अवस्था में अधिक ध्यान और देखभाल की आवश्यकता होती है। लेकिन एक स्वस्थ जीवन शैली और नियमित चिकित्सा से इन समस्याओं को कम करने में मदद हो सकता है। बुढ़ापा भी जीवन का काफी सुखदायी क्षण होता है। जब व्यक्ति अपनी सारी जिंदगी जी चुका होता है। अपने जीवन में काफी मेहनत करने के बाद उसे एक संतुष्टिजनक मुकाम मिल जाता है। तब वह अपनी बची हुई जिंदगी को आराम से गुजारने को इच्छुक होता है। इस अवस्था में वे अपनी आनेवाली पीढ़ी को अपने सारे उतरदायित्व सौप देने को तत्पर रहते है।

जिस देश को याद करते ही वहां की संस्कृति और संस्कार का ध्यान सब के मन में छा जाता है उसी देश में वृद्धाश्रम की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। जिन माता–पिता ने जन्म दिया, पालन–पोषण किया और आज जब वे ही बच्चे बड़े हो जाते है तो उन्हें अपने बुजुर्ग माता–पिता बोझ लगने लगते है। आज भौतिक सुविधाएं बढ़ जाने से लोग सहज आवश्यकता की ओर झुकने लगे है और स्वार्थी हो गए हैं। उनकी दुनिया केवल अपने तक ही सीमित हो गयी है। बुजुर्गों को पुरानी व अनुपयोगी वस्तु के समान छोड़ते जा रहे है।

वृद्धावस्था विमर्श जो वृद्धावस्था प्राप्त हुए व्यक्तियों की जीवन गाथा, परिस्थितियां, एवं घटनाओं आदि का चिंतन करने तथा उनकी दयनीय स्थिति से उन्हें उबारने के लिए समाधान प्रस्तुत करना है। आज का समाज जाने–अनजाने में विनाश की ओर अग्रसर होता जा रहा है। इसका मूल कारण कहीं न कहीं नैतिक पतन और मूल्यों की अवहेलना है। इसलिए आज के युग में वृद्ध विमर्श अत्यंत आवश्यक है।

निष्कर्ष :-

आज के इस भौतिकवादी युग में बुजुर्गों की जो अवहेलना हो रही है, वह भावी पीढ़ी के लिए पतन का मार्ग प्रशस्त कर रही है। अतः आज जरूरत है युवा पीढ़ी को अपनी संकीर्णता की परिधि से बाहर आने की, सहारा देने की, जिससे वे सुरक्षित महसूस कर सके। आज की युवा पीढ़ी को बुजुर्गों की भावनावों को समज कर उनका खयाल रखना चाहिए। युवा पीढ़ी अपनी स्वार्थ परता के लिए बेझिझक उनसे मदद ले लेती है लेकिन जब बात उनकी जरूरतों की होती है तो पीछे हट जाती है, ऐसा नहीं करना चाहिए। उन्हें भी वो प्यार, सम्मान एवं अधिकार मिलना चाहिए जिसके वे हकदार है।

पता : Kotekani 1st cross, Urwastore, Mangalore-575006
ईमेल : jayeshwr@gmail.com
मोबाइल 9902738147

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 33-38

छात्रजीवने कठोपनिषदस्य उपयोगिता

Shrabani Manna
Research Scholar, Binod Bihari Mahto Koylanchal University

उपनिषदः भारतीयसंस्कृतेः सभ्यतायाः च पूर्ववर्तीः सन्ति। भारतस्य सर्वे धर्माः, धर्माचाराः, उत्सवाः, दार्शनिक सिद्धान्ताः च भारतस्य सर्वेषां योगिनां, साधूनां, साधूनां च जीवनं वचनं च उपनिषदेषु मूलभूताः सन्ति। अधिकांशोपनिषदानां विषयः मानवव्यक्तित्वस्य आविष्कारः, तस्य संरचना उत्कृष्टता च, ईश्वरत्वस्य परमरूपं, यस्मिन् जगति वयं जीवामः तस्य आविष्कारः अस्ति। उपनिषदेषु दर्शितं यत् गहनध्यानस्थः ऋषिः यदा शाश्वतं मिलति तदा सः उत्थाय सम्पूर्णं जगत् सम्बोध्य कथयति। –'हे अमृतपुत्राः दिव्याधामस्थिताः च शृणुत – आदिमं पुरुषं मया ज्ञातं सूर्यवत् स्वव्यक्तं अगोचरं ज्ञात्वा सर्वे अमरः भविष्यन्ति। मनुष्यस्य एषः ईश्वरीयता उपनिषदानां महत्त्वपूर्णसन्देशेषु अन्यतमः अस्ति। मनुष्यः न पापः, किन्तु स्वभावतः दिव्यः। उपनिषदाः अधिकांशछात्राणां कृते अज्ञाताः इति अतीव सत्यं तथ्यं, तस्य विस्तारस्य आवश्यकता नास्ति। केचन कतिपयानां लोकप्रियोपनिषदानां नामानि श्रुतवन्तः, केचन तु उपनिषदानां मन्त्रद्वयं वा विच्छिन्नतया पठितवन्तः स्यात्। परन्तु अद्यत्वे उपनिषदानां कोऽपि प्रासंगिकता नास्ति इति अधिकांशः छात्राः मन्यन्ते। आधुनिकस्य आग्रही जगतः जटिलसमस्यासु दबावेषु च जीवन्तः छात्राः पृच्छन्ति यत्, 'उपनिषदानां किम् अर्थः किं च अस्मान् उपदिशितुं शक्नुवन्ति?' अपि च वर्तमान शिक्षा व्यवस्थायां छात्रान् उपनिषदानां अद्भुतसन्देशैः परिचितं कर्तुं कोऽपि तन्त्रः नास्ति। अधुना आधुनिकछात्राः ये मोबाईलफोनादिविद्युत्यन्त्राणां उपयोगं कर्तुं अभ्यस्ताः सन्ति, ते निरन्तरं अनेकानाम् आन्तरिकबाह्यचुनौत्यानां सामनां कुर्वन्ति। अनन्तविक्षेपाणां मध्ये अध्ययनेषु परीक्षणेषु च एकाग्रतां स्थापयितुं असमर्थता एकः प्रमुखः बाह्यहानिः अस्ति। तथा, 'भविष्यस्य लक्ष्यस्य' अभावः, 'मनसः एकाग्रता', 'तीव्रदबावस्य प्रतिरोधस्य क्षमता' इत्यादीनां अभावः उपभोक्तृजीवनस्य स्वार्थजीवनशैल्याः च मोहः आन्तरिकसमस्याः जनयति। फलतः तेषु सत्यता, ईमानदारी, परोपकारः, कृतज्ञता, आत्मसंयमः, आत्मत्यागः, आत्म–अनुशासनम् इत्यादीनां मूलमूल्यानां अभावः भवति–एते गुणाः एकस्य सुरुचिपूर्णस्य, दृढस्य च व्यक्तित्वस्य आधारं भवन्ति न केवलं मातापितरः आचार्याः वा, अपितु बुद्धिमान् छात्राः अपि दुःखिताः कुण्ठिताः च भवन्ति। उपनिषदेषु युवानां कृते बहु किमपि अस्ति। उपनिषदः न केवलं गहनदार्शनिकचिन्तनस्य पुस्तकानि, अपितु शक्तिप्रज्ञायाः स्रोतः अपि सन्ति। उपनिषदानां प्रयत्नपूर्वकं अध्ययनं छात्रं सफलं जीवने सुनागरिकं च कर्तुं शक्नोति।

कठोपनिषदः परिचयम् – कठोपनिषदे छात्रस्य आचार्यस्य च – युवा नचिकेतस्य ज्ञानी यमराजस्य च संवादद्वारा बलं दत्तम् अस्ति। नचिकेता आत्मसंयमस्य एकचित्तसत्यस्य च प्रतीकम् अस्तिय द्य यमः च मृत्युदेवः आत्मज्ञानेन उज्ज्वलःय जीवनमरणरहस्यं प्रविश्य प्रज्ञां शान्तिं च लब्धवान्। तस्य नाम एव आत्मसंयमं नैतिकसुधारं

च सूचयति। सत्यार्थं प्रयत्नशीलानाम् अनुग्रहं करोति। शङ्करः अस्य उपनिषदस्य भाष्यस्य आरम्भं यम–नचिकेतयोः श्रद्धापूर्वकं श्रद्धांजलिम् अकरोत्– ऊँ नमो भगवत वैवस्वताय मृत्यवे ब्रह्मविद्याचार्य नचिकेतसे च––ऊँ नमो मृत्युदेवाय महाभागाय विवस्वतपुत्राय ब्रह्मविद्याय च। (धर्मशास्त्रस्य) आचार्य, आर नचिकेता अपि। अयं उपनिषदः यमः नचिकेतस्य सत्यविषये यत् उपदेशं दत्तवान् तत् प्रदातुं प्रवर्तते। ब्रह्मविद्यायाः उत्तमः विषयः – ईश्वरविज्ञानं वा आत्मविज्ञानं वा अस्य प्रवचनस्य विषयः अस्तिय नित्यमृत्युरहस्यद्वारा प्रकरणं प्रकाशितं भवति। न कश्चित् दर्शनं गभीरं गन्तुं शक्नोति यत् मृत्युः किम् अर्थः, तस्य महत्त्वं किम् इति भावः विना। यत् उपनिषदैः धर्मत्वेन गम्यते तत् न रहस्यं न वा 'वञ्चनम्', न कस्मिन् अपि अर्थे पंथः–न च तेन सह संकुचितः मुक्तिव्यवस्था–तत् विज्ञान–आध्यात्मिक– विज्ञानं यत् आदान–प्रदानं, प्रमाणीकरणं च कर्तुं शक्यते, अन्येषां इव। विज्ञाने भवति। अस्याः उपनिषदस्य षष्ठे अन्तिमे वा अध्याये––प्रवचनसमाप्ते––नचिकेता यमपरामर्शं प्रत्यय मोक्षं लब्ध इति न उच्यते––तत् सत्यं साक्षात्कृत्य स्वयं मुक्तोऽभवत्, अन्ये च इति अपि तथैव कर्तुं शक्नोति। अत्र ईश्वरः आत्मा च रहस्यम् इति उच्यते, परन्तु आधुनिकविज्ञाने जगतः गहनतरवस्तूनाम् वर्णने रहस्यस्य स्थानं तावत् एव अस्य रहस्यस्य प्रवेशाय उपनिषदैः साधकस्य रुचिः कृता यथासम्भवं साहाय्यं कुर्वन्तु। सर्वेषु उपनिषदेषु काठोपनिषद् एव विशेषवर्गे अन्तर्भवति। तस्मिन् मिश्रितं काव्यस्य माधुर्यं, दर्शनस्य दृढता, मीमांसकसन्तस्य गभीरता चय अस्मिन् वेदान्तस्य आध्यात्मिकभावनानां अधिकं एकीकृता अभिव्यक्तिः अस्ति, या अन्यस्मिन् उपनिषदे न दृश्यते। अस्य आकर्षणं द्वयोः पात्रयोः संवादे अधिकं भवतिकृयुवकः नचिकेता, दिग्गजः यमः च। अस्य उपनिषदस्य षट् अध्यायाः क्रमेण एकस्य युवानस्य, स्पन्दनशीलस्य जीवनस्य आकर्षकं चित्रं उद्घाटयन्ति यत् सः जिज्ञासुरूपेण भयङ्करस्य मृत्युद्वारे अभयेन छूरेण प्रहारं करोतिकृतस्मात् च जीवनमरणयोः ज्ञानं हरति। अस्य उपनिषदस्य प्रथमाध्याये वर्णितस्य मानवीयपरिदृश्यस्य परिवेशे शेषेषु अध्यायेषु मुख्यदर्शनं प्रस्तुतम् अस्ति। प्रथमं कथाद्वारा कथितं नचिकेता यमं त्रीणि प्रश्नानि पृष्टवान् पृष्ट उत्तरं गहनं तत्वमीमांसस्य आध्यात्मिकता च विषये आसीत्। द्वितीयम् अस्य तृतीयप्रश्नस्य आधारेण अग्रिमपञ्चसु अध्यायेषु एकं दर्शनं व्याख्यातं यस्मिन् सर्वोपनिषदानां आध्यात्मिकशिक्षायाः सारः अस्ति।

कठोपनिषदस्य उपयोगिता–

१) ज्ञानोन्मेशं शिक्षाः –

ऊँ सहनाववतुय सहनौ भुनक्तुय
सहवीर्यं करवावहै
तेजस्वीनावधीतमस्तु
मा विद्विषावहै।
ऊँ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः।

अहो। ब्रह्मा नोभयं पातु (आचार्यश्च शिष्यश्च)। ब्रह्मा नोभ्यां (ज्ञानं) पोषणं करोतु! वयं द्वौ अपि (अस्य ज्ञानस्य लाभं प्राप्तुं) समर्थौ भवेम! वयं द्वौ ज्ञानं प्राप्नुमः (अस्य ज्ञानस्य फलस्वरूपम्)! वयमोस्मि यथा परस्परं न द्वेष्टि, अहो! शान्तिः! शान्तिः! शान्तिः!'

अस्मिन् शान्तिपाठे बहवः सुन्दराः शब्दाः सन्तिकृएतानि शब्दाः सहस्रवर्षेभ्यः भारतस्य सांस्कृतिक–आध्यात्मिक–शिक्षां प्रेरयन्ति। शिक्षणव्यवस्था ज्ञानस्य चरित्रोत्कर्षस्य च अनुसन्धानं कुर्वतां गुरुशिष्ययोः विषये

भवति। एषः शिष्यस्य आचार्यस्य च सहकारिप्रयत्नः अस्ति। आचार्यशिष्ययोः समन्वयात्मकसम्बन्धस्य दृष्ट्या बोधः चरित्रसुधारः च शान्तिपथद्वारा प्रकटिता शिक्षा–भवरूपेण भवतिय तेषां निकटसम्बन्धः अस्ति। जनान् नूतनं कर्तुं ज्ञानप्रदानं ग्रहणं च तादृशस्य गुरुशिष्यसम्बन्धस्य उत्तेजनस्य उपरि निर्भरं भवति। आचार्यस्य उपदेशः, शिष्यस्य च तस्य स्वीकारः कतिपयेषु विचारेषु तथ्येषु च सीमितः नास्तिकृप्रेरणया सह भवति। यथार्थशिक्षायां सर्वेषु सन्दर्भेषु आचार्यः छात्रश्च न केवलं एकः व्यक्तिः, अपितु ते एकः व्यक्तित्वः अपि सन्ति। भारतीयर्षिणां मते एकस्य दीपस्य अन्यस्य दीपस्य प्रज्वलनम् एव शिक्षा।

अस्मिन् शान्तिपाठे प्रतिबिम्बितः अस्ति। सहबिर्यङ्ग कर्बाभाई–श्वयं द्वौ (अन अध्ययनेन) प्रकाशयितुं शक्नुमः!' पूर्वं केनोपनिषद् इदम् उक्तम्– आत्मनः विन्दते वीर्यं आत्माद्वारा मनुष्यः कान्तिं प्राप्नोति।' एषा तेजः–आत्मज्ञानद्वारा प्राप्ताकृकर्मचरितकुशलत्वेन प्रकटिता भवति। किन्तु सर्वं कौशलं बन्धनजालयोः अन्ते भवितुम् अर्हति, यावत् हृदयस्य प्रज्ञायाः पोषितं न भवति। अतः मन्त्रे इदमपि अन्तर्भवति– तेजस्विनावधितमस्त–'अस्मिन् अध्ययनेन ज्ञानं प्राप्नुमः।'

भारतीयचिन्तने एषः महान् विचारः अस्ति। शिक्षा न तु केचन विचाराः मस्तिष्के स्थापयितुं, अपितु प्रबुद्धं मनः हृदयं च बोधयितुंय यत् अन्धकारम् आसीत् तत् प्रकाशयितुं। एतदर्थमेव मनुष्यः ज्ञानं अन्वेषयतिय इति अन्धकारात् प्रकाशं प्रति यात्राय परन्तु तत् अन्धकारं वा अज्ञानं वा आध्यात्मिकं अन्धता, न केवलं बौद्धिकप्रमादः। तस्मिन् अर्थे अशुभात् शुभयात्रा अपि। अतः मन्त्रोऽपि कथयति– मा विद्विशभाई – 'मा वयं परस्परं द्वेष्टुम्!' सर्वेषां नैतिकदोषाणां प्राथमिकः स्रोतः कामः, क्रोधः च अस्तिकृयत् तस्यैव दुष्टस्य विपरीतम् अस्ति। क्रोधदमनं न सम्भवति काममतिक्रम्य विना।

आदरः – पिता यत् कार्यं कुर्वन् आसीत् तत् पुत्रस्य मनसि गहनचिन्तनं जनयति स्म, यद्यपि पुत्रः अद्यापि स्वस्य कुमारित्वं पूर्णपौरुषं न व्यतीतवान् आसीत्। श्राद्धं तं अभिभूतवान्। अस्य श्रद्धांजलिस्य सटीकं आङ्ग्लसमतुल्यं नास्तिय प्रायः श्रद्धाशब्दस्य अनुवादः श्राद्धस्य अनुवादेन एव समाप्तः भवतिय किन्तु एषा श्रद्धा न कस्मिन् अपि अर्थे विश्वासः, अपितु आत्मनः प्रति विश्वासः, प्रत्येकस्य जीवस्य हृदये निहितस्य अनन्तशक्तेः विश्वासःय अयं प्रत्ययः सत्यस्य प्रामाणिकस्य च प्रत्ययः, जगतः परमार्थप्रत्ययः। शंकरः तस्य परिभाषां करोति यत्–सकारात्मक दृष्टिकोणस्य अथवा आस्तिकबुद्धेः सिद्धिः। विज्ञानजगति धर्मजगति च तस्य शोधकार्य्ये चरित्र उत्कृष्टतां, नागरिककर्तव्यं, सामाजिकहितं च विकसितुं मनुष्यस्य कठिनप्रयत्नस्य पृष्ठतः एषा नित्यं वर्तमानं प्रेरकशक्तिः अस्ति हृदयात् सर्वथा अन्तर्धानं जातम् अस्ति पूर्णदोषदृष्टेः चिह्नम्।

नचिकेता बालकः मनसि चिन्तितवान्। तस्य चिन्तनदिशा अग्रिमे तृतीये मन्त्रे सूचिता अस्ति।

पितोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियारूय

आनन्द नाम ते लोकारू तान् स गच्जति ता ददत्। (१/१/३)

–'सत्यं ते दुःखिताः जनाः गच्छन्ति, ये तादृशं यानं दानं कुर्वन्ति – गावः येषां अन्तिमजलं, तृणं, दुग्धं च दानं कृतम्, तेषां प्रसवः न भवति।' स्पष्टतया पितुः एव गम्भीररुचिः नासीत् यत् सः यत् यज्ञं कर्तुं प्रवृत्तः आसीत् तत् कर्तुं यत् किमपि कर्तुं प्रवृत्तः आसीत्। अस्मिन् यज्ञे सर्वं दानं कर्तुं कल्प्यते। व्यवहारे सः वृद्धानि निष्प्रयोजनगवः दानं कुर्वन् अस्ति। अयं वञ्चना न आनन्दमयस्वर्गमार्गः, अपितु निरनन्दनरकमार्गः। सत्यसन्धस्य पुत्रः हृदये तत् समायोजयितुं न शक्तवान्। अतः चतुर्थे मन्त्रे वयं पश्यामः यत् सः शान्ततयाकृकिन्तु दृढतयाकृसमस्यायाः समाधानार्थं

अग्रे गच्छति–

स होबाच पितरं, तत कस्मै मां दास्यसीतिय

द्वितीयं तृतीयं च, तं होबाच, मृत्युवे तां ददामीति। (१/१/४)

–'सः पितरम् अवदत्– 'पिता, कस्मै मां न्यस्यसि?' इति द्वितीयवारं तृतीयवारं उक्तवान्। (क्रुद्धः सन्) पिता अवदत्– 'मया त्वां मृत्युं दत्तम्' इति।

पुत्रः पितरं स्मारयति स्म यत् सर्वं दानं तस्य कार्यम् अस्ति, तस्य पुत्रत्वेन सः अपि दानस्य विषयः अस्ति, अतः सः ज्ञातुम् इच्छति यत् पिता कस्मै दास्यति इति मन्यते। एतत् प्रश्नं पृष्ट्वा सः स्वस्य सहजं आदरजन्यं निर्भयं शौर्यं च दर्शितवान्। तस्य पितुः प्रति गहनः प्रेम आसीत्, परन्तु सत्यस्य न्यायस्य च प्रेम्णः गहनतरः आसीत्। तस्य अखण्डता स्थिरात् सक्रियपर्यन्तं गता। पितुः प्रति तस्य प्रेम, पुनः सत्यप्रेमः सक्रियरूपेण व्यक्तः आसीत्–पितरं सत्यमार्गे आनेतुं प्रयत्नतः। पिता पुत्रप्रश्नं उपेक्षते अतः पुत्रः द्वितीयतृतीयवारं पितरं पृच्छति। तदा पिता एतत् स्वपुत्रस्य साहसस्य सूचकम् इति मत्वा स्वस्य क्रोधं नियन्त्रयितुं न शक्नोति स्म, सः अवदत् यत् अहं त्वां मृत्युं दत्तवान्।

निर्भयः सत्यप्रेम–

नचिकेता पितुः क्रुद्धवचनेन न बाधितःय सः पित्रे न क्रुद्धः आसीत्। सदा सतप्रीत्यर्थं किमपि कर्तुं वा कुत्रापि गन्तुं वा सज्जः आसीत्। सः मनसि चिन्तितवान् यत् परस्मिन् पञ्चमे मन्त्रे उक्तम्–

बहुणाम् एमि प्रथमो बहुनाम् एमि मध्यमःय

किं स्विद् यमस्य कर्तव्यं यन्मयाऽद्य करिष्यती। (१/१/५)

–'अहं बहुषु (तस्य बालकेषु शिष्येषु वा) अग्रणी अस्मिय बहूनां (पुनः) अहम् मध्यमःय (किन्तु कदापि सर्वथा नीचः न)। (किन्तु पिता किमर्थम् अवदत्, अहं त्वां मृत्युं दत्तवान्?) किं यमस्य कार्यं मां यमदानेन सिद्धं भविष्यति?

तावत् पितुः सान्निध्यं पुनः आगत्य सः हठिवचनं पश्चातापं कृतवान्। सः स्ववचनं पुनः ग्रहीतुं इच्छति स्म। परन्तु नचिकेता स्वपितुः वचनं प्रतिग्रहीतुं इच्छायाः आदरं कर्तुं न शक्तवान्। नचिकेता मन्यते स्म यत् पिता सत्ये स्थिरः भवेत्, स्वविचार–वचन–कर्मणि च सामञ्जस्यं आनेतव्यम् इति। सत्याय सर्वं त्यागं कर्तव्यं यतः केवलं सत्यमेव शाश्वतं भवति। अतः अग्रिमे षष्ठे मन्त्रे नचिकेतः पितरं भर्त्सयन् दृश्यते–

अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपस्य तथाऽपरेय

सस्यमिब मर्त्य पच्यते सस्यामिबाजायते पुनः। (१/१/६)

पुराणानां प्रयोगं स्मर्यताम्य नवीनानाम् अपि विषये। जनाः धान्यवत् जीर्णाः भवन्ति भवति (पतति च) धान्यवत् पुनर्जन्म भवति।'

नचिकेता पितरं स्मारयति यत् कथं पूर्वजाः मृत्युभयेऽपि सत्यमार्गं न त्यक्तवन्तःय कथं स्वकाले अपि महापुरुषाः सत्यमार्गात् न व्यभिचरन्ति स्म। किन्तु तस्य पिता पुत्रः यमगृहं प्रेषणभयात् किमर्थं व्रतं भङ्गयेत्। कथं क्षणिकं मानवजीवनं कियत्कालं च सत्यस्य धनम्। किं पूर्वस्य कृते उत्तरस्य त्यागः बुद्धिमान्? यत् सत्यं मानवजीवने धर्मरूपेण प्रकटितं भवति तत् नित्यमूल्यं भवति। मानवीयसुविधानुसारं तस्य अनुकूलनं कर्तुं न शक्यते। अपितु कस्यचित् आवश्यकता सत्यस्य साचे ढालनीया। सत्यप्रेमस्य कारणेन नचिकेतस्य मनः हृदयं च निर्भयम् अभवत्। मृत्युः अपि तं न भयभीतं कृतवान्। सः प्राचीनस्य अथवा आधुनिकस्य मानवसमाजस्य दीप्तिमत् उदाहरणम् अस्ति।

प्रलोभनं निराकरोतु

एतैः सरलैः शब्दैः यमः प्रभावितः अभवत्। सः युवानः अद्वितीयस्य प्रामाणिकतायाः प्रशंसाम् अकरोत्। सत्या भक्तिः, अशिक्षितः, बहादुरीयाः आडम्बरः वा इति परीक्षितुम् इच्छति स्म। अतः सः तस्य किञ्चित् अधिकं परीक्षणं कर्तुं निश्चितवान्। अग्रिमेषु ३०, ४०, ५० मन्त्रेषु वयं यमस्य नचिकेतस्य प्रलोभनं कुर्वन्तः पश्यामः–

शतयुषः पुत्रपौत्रान् विणीष,
बहुन् पशुन् हस्तिहिरण्यमश्वान्य
भूमेमहादायतनं बिणीष,
स्वयं च जीव शारदो जाबदिच्छसी। (१/१/२३)

– 'भवन्तः शतशः पुत्रपौत्रान् प्रार्थयन्ति, बहुपशून् गजान् अश्वान् (किमपि) स्वर्गं च प्रार्थयन्तिय लोके बहवः भूमिः यावन्तः शरदः च इच्छसि तावत् प्रार्थयतु।'

एतत् तुल्यं यदि मनसे वरं
बृणिष, बित्तं चिरजीविकां चय
महाभूमौ नचिकेतत्वमेधि
कामनां त्वा कामभाजं करोमी। (१/१/२४)

–'अन्यं वरं तत्समं याचस्व यथाकाम– (यथा) धनं दीर्घायुः–। हे नचिकेत ! त्वं विशालस्य जगतः (राजा) असि। सवैः विलासैः सह त्वां तस्य लाभप्रदं करिष्यामि।

ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके
सर्वान् कामान् छन्दतः प्रार्थयस्वय
इमा रामाः सरथाः सतूर्याःय
न हीदृशा लम्भनीया मनुष्यौः
आभिर्मत्प्रत्ताभिः परिचारयस्थ
नचिकेतो मरणं माहनुप्राक्षीः। (१/१/२५)

–'यत् वस्तूनि अस्मिन् मर्त्यलोके सुलभतया न लभ्यन्ते, भवन्तः सर्वं यत् रोचन्ते तत् अन्वेषयन्तिय अग्रे रथयुक्ताः सुन्दराः कन्याः सन्ति, ये न मनुष्यभक्षकाःय मया दत्तैः सर्वैः सह त्वां सेवस्वय किन्तु हे नचिकेत! मृत्युविषये मां मा पृच्छतु।'

यमः स्वस्य स्थितिं यथाशक्ति दृढतया व्याख्यातवान्। यदि नचिकेता साधारणः अपरिपक्वः युवा आसीत् तर्हि तस्य रहस्यमयः आत्मदृष्टिः स्यात्कृनित्यपवित्रः, नित्यं उज्ज्वलः, नित्यं मुक्तः, अमृतमनुष्यात्मनः विषये परामर्शः करणं तस्य दम्भः स्यात्। बालकस्य दृष्ट्या एषः उपदेशः तुच्छवार्ताभ्यः अधिकं किमपि न स्यात्य यथा शङ्करः अस्मिन् मन्त्रभाष्ये वदति, कार्यं काकदन्तपरीक्षा इव स्यात्– "काकदन्तपरीक्षा" तृतीयप्रश्नस्य प्रश्नकर्ता वयसि युवा अपि प्रौढः इति यमस्य प्रथमं तृप्तिः भवितुमर्हति मनः हृदयं चकृपुण्यः, सजगः, संवेदनशीलः, दृढनिश्चयः च। उद्देश्येन च दृढः।

नचिकेता यमस्य प्रलोभनैः सर्वथा प्रभावितः नासीत्। तस्य मनः सत्यं अन्विषत्कृप्रमाणिकतायाः अतिरिक्तं किमपि नासीत्य न लाभाय, न आरामाय, न भोगायय तस्य च प्रत्ययः आसीत्, न तु केवलं मतं वा श्रुतं वा। अस्य

मन्त्रस्य शङ्करव्याख्यातभाष्ये महाह्रदवतक्षोभ्यमन् : 'विशालसरोवरवत् निर्दोषचित्तेन'कृनचिकेता मृदु, सौम्य तथापि दृढस्वरेण यमस्य उत्तरं दत्तवान्कृअस्य अध्यायस्य अन्तिमाः चत्वारः षोडशः भागाः – नवत्रिंशत्तमे मन्त्रे :

'वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत्
सर्वेन्द्रियानां जरयन्ति तेजः,
अपि सर्वं जीवितम् अल्पमेव
तबैव बाहास्तव नृत्यगीते। (१/१/२६)

– 'हे यम ! (भवता उक्ताः भोगाः) सर्वे क्षणिकाः ते मर्त्यपुरुषस्य सर्वेषां इन्द्रियाणां च तेजः जडयन्ति। अपि च सर्वं जीवनं (दीर्घं वा सीमितं वा) (मनसदृष्टौ) सम्नाम अर्थात् अल्पम्। तव रथं नृत्यं च गीतं भवता सह एव भवतु।'

अस्मिन् लघु उद्धरणे नचिकेता सर्वान् स्वावलम्बी आनन्दविष्टदर्शनानां मूल्याङ्कनं करोति। मानवजीवनस्य उद्देश्यं ज्ञानं न तु सुखम् इति भारतीयमनसि सः तत्सदृशैः अन्यैः सह प्रभावितं कृतवान्। सुखं दुःखं च अस्माकं शरीरस्य आकस्मिकं भवतिय पशवः केवलं तस्मिन् स्तरे एव जीवन्ति, परन्तु मनुष्यस्य क्षमता, अवसरः अस्ति यत् सः तत् स्तरं अतिक्रम्य बौद्धिकज्ञानं, नैतिकसुधारं, सौन्दर्यसुखं, आध्यात्मिकसिद्धिः च प्राप्नोति। कर्तुं यद्यपि मनुष्यः सीमितकालं यावत् जीवति, स्वकार्यं च करोति, तथापि अनन्तकाङ्क्षां अनुभवति नानाप्रकारेण प्राप्तुं शक्नोति। एतेभ्यः ज्ञायते यत् छात्रजीवने कठोपनिषदस्य ज्ञानं माहात्म्यं च अपारम् अस्ति। वर्तमान पीढी कठोपनिषत् पठित्वा एव प्रगतिमार्गे स्वं उन्नतिं कर्तुं समर्था भविष्यति।

उपसंहार –

कठोपनिषदस्य यम–नचिकेता–संवादे उल्लिखितानां निर्लोभ–शास्त्रज्ञानयोः अद्यत्वे युवानां बहु आवश्यकता वर्तते। अधुना युवानः अनैतिककर्मणां अधिकं व्यसनं प्राप्नुवन्ति यस्य परिणामेण ते जीवने स्वलक्ष्यं प्राप्तुं असमर्थाः भवन्ति। हृदयात् लोभं कामं च मुक्तुं मार्गः कथोपनिषद्वारा एव भवति। कठोपनिषद् अस्माकं मनसि तटस्थभावनाम् आनेतुं साहाय्यं करोति। कठोपनिषदस्य ज्ञानं सर्वविधदुष्टाचार–राग–द्वेषेभ्यः हृदयस्य शुद्धयर्थम् आवश्यकम्।

ग्रन्थ सूची –

१. उपनिषद् : गीताप्रेस, गोरक्षपुर।
२. उपनिषद् ग्रन्थावली : स्वामी गम्भीरानन्द– उद्बोधन कार्यालय।
३. कठोपनिषद्– अनुवादक स्वामी जुष्टानन्द – उद्बोधन कार्यालय।
४. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति – डॉः कपिलदेव द्विवेदी।

8013751508
Shrabanimanna20@gmail.com
Santragachi, dharmatala, khanyerbagan,
Howrah-711104, West Bengal.

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
Vol. 12, Issue 1-2
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
पृष्ठ : 39-42

राष्ट्रीय शिक्षा नीति और शिक्षकों की भूमिका

प्रो. वडगे वृषाली रंगनाथ
हिंदी विभाग, महाराजा सयाजीराव गायकवाड कला,
विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मालेगांव, कैम्प, जि. नासिक

प्रस्तावना :-

२०२० में घोषित नई शिक्षा नीति कोई क्रांति नहीं बल्कि एक विकास है। समय के अलग–अलग पड़ावों पर अलग–अलग लोगों को एक साथ आकर शिक्षा के क्षेत्र में कुछ अच्छा करना चाहिए। अलग–अलग नीतियां तय कीं, जब दुनिया समाज के उत्थान के लिए एक वैश्विक गांव बन रही है, हम शिक्षा नीति का स्वागत करते हैं। आत्मनिर्भर भारत के लिए, नवप्रवर्तन के लिए अगली पीढ़ी शिक्षा क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, २०२० तैयारियों की दिशा में एक कदम है। इस वर्ष की राष्ट्रीय शिक्षा नीति बहुत महत्वपूर्ण नीति मानी जा रही है। शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ती जरूरतों को देखते हुए इसके लिए उपाय किए जा रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा यह नीति छात्रों की रचनात्मकता पर अधिक जोर देती है। इस नीति में विभिन्न प्रकार के छात्र गुणवत्ता, समझ, तर्क और समस्या समाधान कौशल पर जोर दिया जाता है। आज यह कक्षा तक ही सीमित नहीं है, बल्कि चारदीवारी से आगे की शिक्षा बन गई है। आज छात्र आप सिर्फ कक्षा में बैठकर पढ़ाई नहीं कर सकते। कोरोना काल में पाठशाला, महाविद्यालय बंद होने के बावजूद शिक्षकों ने आभासी (ऑनलाइन) और इंटरनेट से पढ़ाकर विद्यार्थियों की पढ़ाई का नुकसान नहीं होने दिया। साथ ही, छात्रों को इस कोरोना वायरस की गंभीर स्थिति से कैसे निपटना है, इसका पाठ भी दिया गया। इसलिए शिक्षकों के इसी उल्लेखनीय कार्य के कारण इस नीति में शिक्षकों पर विचार किया गया है। प्रत्येक शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में शिक्षकों की अहम भूमिका होती है। शिक्षक एक कारक है विद्यार्थी जीवन में कितने महत्वपूर्ण हैं, शिक्षक छात्रों और समाज का भविष्य बनाते हैं सक्षम नागरिक बनाते हैं, राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निभाते हैं। एक सक्षम राष्ट्र ही इस नीति में वे विचार दिए गए हैं जो केवल एक शिक्षक ही कर सकता है। इस नीति में शिक्षकों को शिक्षा प्रक्रिया को पावर हाउस कहा गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के दृष्टिगत शिक्षकों की भूमिका :-

शिक्षक शिक्षा नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। एक शिक्षक पाठ्यक्रम विकसित करता है, किताबें लिखता है, नई तकनीकों का उपयोग करता है, छात्रों का मार्गदर्शन करता है और व्यापक मूल्यांकन करता है। आज तक हम शिक्षा को परंपरागत तरीके से देखते आये हैं। शुरुआती दिनों में कपिंग पर अधिक जोर दिया जाता था, लेकिन २१वीं सदी में केवल इसी पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय अनुभव जोड़ना जरूरी है। इस शिक्षा नीति में प्रोजेक्ट पद्धति से सीखने की प्रवृत्ति को अधिक बढ़ावा दिया जा रहा है। किसी विषय से संबंधित प्रश्नावली

तैयार करना, विशेषज्ञों से मार्गदर्शन लेना, सीधे दौरा करना और विभिन्न समस्याओं के समाधान की योजना बनाना, छात्रों को सूचना स्रोत और उपकरण प्रदान करना आदि। शिक्षक उन्हें प्रोत्साहन देने का कार्य करता है।

नवीनतम विद्याशाखीय दृष्टिकोण :-

इक्कीसवीं सदी में छात्रों की क्षमताओं और कौशल की जरूरतों और आवश्यकताओं को समझना महत्वपूर्ण है। २०२० के अनुसार गणित, अर्थशास्त्र, कला, भाषाविज्ञान, समाजशास्त्र आदि घटकों का एक साथ अध्ययन करना समय की मांग है। विभिन्न विषयों का अध्ययन करते समय छात्रों को विषयों से परे सोचने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षकों को एक सर्व–समावेशी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। आज शिक्षकों को उपलब्ध सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों, शिक्षक प्रशिक्षण, उच्च शिक्षा संस्थानों में संदर्भ पाठ्यक्रमों और शिक्षा में बदलते रुझानों के साथ खुद को अद्यतन रखने के लिए पहल करने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों में अनुसंधान की प्रवृत्ति विकसित करना। एक अच्छा शिक्षक छात्रों में जिज्ञासु रवैया पैदा करके तकनीकी सोच कौशल को बढ़ावा देता है। आज के विद्यार्थियों के लिए इंटरनेट और टेक्नो सेवी होना बहुत जरूरी है। आज के विद्यार्थियों में नई जानकारी और ज्ञान को वैज्ञानिक स्तर पर आत्मसात करने की प्रवृत्ति विकसित करना शिक्षक का दायित्व है। विद्यार्थियों के मन में विभिन्न ज्ञान के बारे में प्रश्न उठने चाहिए और वे प्रश्न का नैदानिक ढंग से अध्ययन कर उत्तर ढूंढने में सक्षम हों। इसके लिए विद्यार्थियों में शोध कौशल विकसित करना जरूरी है।

नई शिक्षा नीति महत्वपूर्ण मुद्दे :-

शिक्षा प्रणाली में संस्थागत परिवर्तन राष्ट्रीय शिक्षा नीति, विदेश में भारतीय उच्च शिक्षा विश्वविद्यालयों को खोलने, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद को समाप्त करने सहित व्यापक बदलावों का सुझाव दिया गया है। एक आदर्श बदलाव भारतीय उच्च शिक्षा आयोग (एचईसीआई) की स्थापना है जो एकल नियामक के रूप में कार्य करेगा और मान्यता, वित्त पोषण और शैक्षिक मानक सेटिंग सहित कई कार्य करेगा। इसके अलावा, संरचनात्मक परिवर्तनों में एक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा का निर्माण शामिल है जो पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्र और अन्य सामग्री आवश्यकताओं में परिवर्तन लागू करेगा। यह नीति शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए शिक्षा और प्रौद्योगिकी के बीच अंतर को पाटने का प्रयास करती है।

वर्तमान महामारी की स्थिति ने स्कूली शिक्षा के पारंपरिक तरीके को बदलने के लिए आभासी शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया है और शिक्षकों और छात्रों को सीखने और शिक्षण तकनीकों की फिर से कल्पना करने के लिए मजबूर किया है। इस नीति के तहत, एक राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी फोरम की स्थापना की जाएगी, जो स्कूल और उच्च शिक्षा के लिए सीखने, मूल्यांकन योजना और प्रशासन को बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग पर विचारों के खुले आदान–प्रदान के लिए एक मंच के रूप में कार्य करेगा। एक राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र बनाकर और शैक्षिक परिणामों की उपलब्धता की निगरानी के लिए प्रदर्शन मूल्यांकन समीक्षा और समग्र विकास के लिए ज्ञान का विश्लेषण (PARAKH) जैसी प्रणाली विकसित करके रचनात्मक मूल्यांकन और मूल्यांकन की सहकर्मी समीक्षा प्रणालियों को प्रोत्साहित करने और शिक्षा बोर्डों का मार्गदर्शन करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। शिक्षा को अधिक समसामयिक एवं भविष्य की आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त बनाना।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, २०२० मौजूदा प्रणाली में संपूर्ण बदलाव के माध्यम से शिक्षा प्रणाली में एक आदर्श

बदलाव की परिकल्पना करता है।

स्कूल पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र :-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के तहत, स्कूल पाठ्यक्रम की १०+२ संरचना को ५+३+३+४ से प्रतिस्थापित किया जाएगा, जिसमें १२ साल की स्कूली शिक्षा होगी और उसके बाद तीन साल की प्री–स्कूल शिक्षा होगी। यह नीति सुधार के चार प्रमुख क्षेत्रों पर केंद्रित है। मजबूत, मूलभूत कौशल बनाने, शिक्षा के सभी स्तरों पर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, मूल्यांकन विधियों में बदलाव और प्रणालीगत परिवर्तन की आवश्यकता के लिए पाठ्यक्रम में बदलाव नीति एक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शैक्षिक ढांचे के निर्माण पर जोर देती है, जो योग्यता–आधारित, समावेशी और अभिनव है और बच्चों के समग्र विकास पर केंद्रित है। पाठ्यक्रम छात्रों को २१वी सदी के कौशल, गणितीय और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से लैस करके उनके समग्र विकास पर जोर देगा। आवश्यक शिक्षा और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने के लिए पाठ्यक्रम में कटौती पर भी जोर दिया गया है। इसमें आगे कहा गया है कि व्यावसायिक शिक्षा को कक्षा ६ से स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा और प्रत्येक बच्चा कम से कम एक व्यावसायिक कौशल सीखेगा और २०२५ तक स्कूल और उच्च शिक्षा में ५० प्रतिशत छात्र व्यावसायिक होंगे। छात्र कला, मानविकी विज्ञान, खेल और व्यावसायिक विषयों जैसी विभिन्न धाराओं में से कोई भी विषय चुन सकते हैं। मुख्य जोर असाइनमेंट, परियोजनाओं, वास्तविक समय सीखने के अनुभव, बातचीत और कौशल में सुधार के माध्यम से अनुभवात्मक शिक्षा पर है। नीति में एक व्यापक संरचनात्मक शामिल है पाठ्यक्रम का पुनर्गठन, और इसे प्रभावी ढंग से वितरित करने के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों की तत्काल आवश्यकता है, जो नई शिक्षा प्रणाली में सुचारु परिवर्तन के लिए शैक्षणिक आवश्यकताओं को समझते हैं। इसके अलावा, प्रणाली को केंद्रित शिक्षा को बढ़ाना है इस मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इस रणनीति में २०३० तक लगभग २५० मिलियन छात्रों को स्कूल में वापस लाना शामिल है, इसलिए इतनी छात्र आबादी को संभालने के लिए लगभग ७ मिलियन अतिरिक्त शिक्षकों की आवश्यकता होगी।

निष्कर्ष :-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० का लक्ष्य भारत की शिक्षा प्रणाली में विभिन्न कमियों को दूर करना है। इस नीति के माध्यम से भारत ने समावेशिता और समानता के लिए २०३० सतत विकास लक्ष्य निर्धारित किए हैं। शिक्षा सुनिश्चित करने से ही प्राप्ति की आशा की जाती है। हालाँकि, एक नई प्रस्तावित संस्था की स्थापना स्कूलों और राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० सहित विभिन्न नियमों और विनियमों को परिभाषित करना योजनाओं और कानूनों का अभिसरण स्थापित करने के लिए राज्य और केंद्र की नीतियां अधिकारियों के बीच तत्काल सहयोग की आवश्यकता है। जनशक्ति की कमी को दूर करना, शिक्षकों में कौशल विकास हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम, संकाय सदस्यों का प्रशिक्षण देने के लिए डिजाइन किया जाना चाहिए। सकल घरेलू उत्पाद का ६ प्रतिशत सार्वजनिक और निजी निवेश के माध्यम से जैसा कि निवेश रणनीति का लक्ष्य है, यह सुझाव दिया गया है कि ब्लॉक चेन, ए आई और भविष्य कहनेवाला विश्लेषण उद्योग में उद्योग भागीदारों के साथ अनुसंधान में उद्योग की भागीदारी, अल्पावधि डिलीवरी की आवश्यकता है। कौशल प्रमाणपत्र और ऑनलाइन विश्वविद्यालय सृजन में सह–साझेदारी। गुणवत्ता वृद्धि के लिए शैक्षणिक और प्रशासनिक स्वायत्तता में वृद्धि के माध्यम से HEIS में विस्तार की गुंजाइश है। इसके अलावा, HEIS के साथ व्यावसायिक कार्यक्रम विकसित हुए ऐसा करने की गुंजाइश है, जो

रोजगारोन्मुखी और किफायती हो सकता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि, विभिन्न भाषाओं में पाठ्यपुस्तकें, शैक्षिक सामग्री आदि विकसित करने के लिए सरकारी धन आरक्षित किया जाना चाहिए. हालाँकि, सिस्टम में भ्रम पैदा करने के बजाय भाषाओं की सूची को ठीक करना यह जरूरी है, क्योंकि इसके लिए हर स्कूल में संपूर्ण बुनियादी ढांचे, भाषा शिक्षकों की जरूरत है मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा के अनुसार पाठ्यक्रम निर्धारित और समायोजित करने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, २०२० अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप शिक्षा प्रणाली में सुधार करेगा। नीति के सफल कार्यान्वयन के लिए राज्य अवसर प्रदान करते हुए समर्थन के बिना, कई बुनियादी ढांचे और संगठनात्मक पुनर्गठन की आवश्यकता होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

१. शिक्षण संक्रमण–महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडळ, पुणे (डिसेंबर 2022)

२. शिक्षण संक्रमण – महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडळ, पुणे।

3. विद्यापीठाच्या बातम्या, उच्च शिक्षणाचे साप्ताहिक जर्नल, भारतीय विद्यापीठांची संघटना, फेब्रुवारी 14–20, 2022

4. https://www.nitinsir.in/new&national&education&policy&2020/

5. https://www.google.com/url\sa/t&source/web&rct/j&url/ https://www.ijsr.net/archive/v10i11/SR211115122335.pdf&ved/2ahUKEwjH8PH&3Zr& AhUtiFYBHStTB1sQFnoECBIQAQ&usg/AOvVaw3otCwkeSljeKL9KYEzSdCb

मोबाईल नंबर. ९१५६०७३४४५

E-mail - vrushaliwadge@gmail.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 43-49

गीना शोध संगम का 'समकालीन साहित्य और विमर्श' विशेषांक : एक विश्लेषण

डॉ. राजेश कुमार
सहायक प्रोफेसर हिंदी विभाग, राजकीय स्नातकोतर महिला महाविद्यालय, रोहतक।

शोध सार :-

गीना शोध संगम कला, साहित्य, संस्कृति और सामाजिक विज्ञान के विषयों से सम्बद्ध एक प्रतिष्ठित सहकर्मी समीक्षित एवं संदर्भित पत्रिका है। अप्रैल 2023 में इस पत्रिका ने 'समकालीन हिंदी साहित्य और विमर्श' विषय पर विशेषांक का प्रकाशन किया। इस विशेषांक में हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, किन्नर विमर्श, आदिवासी विमर्श, दिव्यांग विमर्श, वृद्ध विमर्श आदि पर केंद्रित शोध पत्र प्रकाशित हुए। इनमें समाज में नारी की स्थिति, दलित शोषण एवं उत्पीड़न, किन्नर समाज की विडम्बनापूर्ण जीवन स्थिति, जल, जंगल, जमीन के साथ–साथ अपनी संस्कृति की रक्षा हेतु प्रयत्नशील आदिवासियों का संघर्ष, दिव्यांगजनों का जीवन संघर्ष व उनके प्रति सामाजिक दृष्टिकोण तथा वृद्ध जनों का एकाकीपन एवं अलगाव–बोध आदि की साहित्यिक अभिव्यक्ति को उजागर किया गया है। इसके अतिरिक्त शोध–पत्रों में पर्यावरण, पत्रकारिता, मुस्लिम समाज, दिव्यांग जन, देश–प्रेम, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, बाल मनोविज्ञान, किशोर जीवन, पुरुष उत्पीड़न आदि विषयों के साहित्यिक चित्रण को भी समकालीन परिप्रेक्ष्य में उद्घाटित किया गया।

इस प्रकार विशेषांक में प्रकाशित शोध–पत्रों में पर्याप्त विषय–वैविध्य विद्यमान है। शोध–पत्र लेखकों ने अध्ययन–मनन के उपरांत समाज के विभिन्न वर्गों से संबंधित साहित्यिक चित्रण को दर्शाने का प्रयास किया है। अधिकांश शोध–पत्रों की शब्द सीमा दो हजार तक है। प्रस्तुत शोध–पत्र में विभिन्न विमर्शों के संदर्भ में प्रकाशित इन्हीं शोध–पत्रों का विश्लेषण किया गया है।

बीज-शब्द :- समकालीनता, समाज, साहित्य, विमर्श, अभिव्यक्ति, विसंगति, जीवन संघर्ष, विश्लेषण।

शोध-व्याख्या :-

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित 'गीना शोध संगम' पत्रिका कला, साहित्य, संस्कृति और सामाजिक विज्ञान विषयों से सम्बद्ध शोध के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण पत्रिका के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है। सहकर्मी समीक्षित एवं संदर्भित यह पत्रिका नियमित अंकों के अतिरिक्त समय–समय पर विशेषांकों का भी प्रकाशन करती है। अप्रैल 2023 में पत्रिका के 'समकालीन हिंदी साहित्य और विमर्श' शीर्षक से एक विशेषांक का प्रकाशन किया गया। इस विशेषांक के प्रधान संपादक डॉ. नरेश सिहाग, संपादक डॉ. रेखा सोनी तथा विशेषांक संपादक मंडल में डॉ.नीतू

चावला, डॉ. अंशु बत्रा तथा डॉ. आंचल कुमारी है। प्रस्तुत शोध–पत्र में इस विशेषांक में प्रकाशित शोध–पत्रों का विश्लेषण किया गया है। विवेच्य विशेषांक 807 पृष्ठ का एक विशालकाय विशेषांक है। इस विशेषांक में 115 शोध–पत्र प्रकाशित किए गए हैं जो साहित्य एवं समाज के विभिन्न विमर्शों पर केंद्रित हैं। अध्ययन–विश्लेषण की दृष्टि से इन सभी शोध–पत्रों का निम्न प्रकार से वर्गीकरण किया जा सकता है :–

क्र.सं.	विमर्श का नाम	समकालीन साहित्य में	उपन्यासों में	कहानियों में	काव्य में	नाटकों में	आत्मकथा में	समाज में	कुल योग
1.	स्त्री विमर्श	12	14	6	2	4	1	––	39
2.	दलित विमर्श	13	3	2	2	2	––	1	23
3.	किन्नर विमर्श	1	3	––	1	––	––	2	07
4.	आदिवासी विमर्श	2	2	1	1	––	––	––	06
5.	वृद्ध विमर्श	1	1	4	––	––	––	––	06
6.	पर्यावरण विमर्श	3	––	1	––	––	––	––	04
7.	आर्थिक विमर्श	3	––	––	––	––	1	––	04
8.	किसान विमर्श	––	2	1	––	––	––	––	03
9.	पत्रकारिता विमर्श	––	––	––	––	––	––	2	02
10.	पुरुष विमर्श	––	––	1	––	––	––	––	01
11.	किशोर विमर्श	––	1	––	––	––	––	––	01
12.	बाल विमर्श	––	––	1	––	––	––	––	01
13.	मुस्लिम विमर्श	––	––	1	––	––	––	––	01
14.	दिव्यांग विमर्श	––	––	1	––	––	––	––	01
15.	सौंदर्य विमर्श	1	––	––	––	––	––	––	01
16.	सांस्कृतिक विमर्श	1	––	––	––	––	––	01	
17.	स्वास्थ्य विमर्श	––	1	––	––	––	––	––	01
18.	आधुनिक विमर्श	––	––	1	––	––	––	––	01
19.	अन्य विषय	––	––	––	––	––	––	12	12
20.	कुल योग	37	27	20	06	06	02	17	115

स्रोत : शिक्षा, देश–प्रेम, भाषा, जीवन–मूल्य।

उपर्युक्त वर्गीकरण से स्पष्ट है कि इस विशेषांक में सर्वाधिक शोध–पत्र स्त्री विमर्श पर केंद्रित रहे हैं। इसके पश्चात् दलित, किन्नर, आदिवासी, वृद्ध आदि विमर्शों का अध्ययन–विश्लेषण किया गया है। इनके अतिरिक्त शोध–पत्रों में पर्यावरण, पत्रकारिता, मुस्लिम समाज, दिव्यांग जन, देश–प्रेम, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, बाल मनोविज्ञान, किशोर जीवन, पुरुष उत्पीड़न आदि विषयों को भी समाज एवं साहित्य के परिप्रेक्ष्य में उद्घाटित

किया गया है। स्पष्ट है कि इस विशेषांक के शोध–पत्रों में पर्याप्त विषय–वैविध्य विद्यमान है। प्रस्तुत शोध–पत्र की शब्द–सीमा को ध्यान में रखते हुए इन शोध–पत्रों का विश्लेषण इस प्रकार है :–

विमर्श का अर्थ एवं अवधारणा :-

गीना शोध संगम पत्रिका के इस विशेषांक के कुछ शोध–पत्रों में विमर्श का अर्थ एवं अवधारणा स्पष्ट की गई है। सर्वाधिक उपयुक्त स्पष्टीकरण डॉ. पायल लिल्हारे ने अपने शोध–पत्र 'हिंदी साहित्य में समकालीन आधुनिक विमर्श' में किया है। सामान्य अर्थ में विमर्श दो वक्ताओं के बीच संवाद, बहस अथवा सार्वजनिक चर्चा या जीवंत बहस को कह सकते हैं। 'विमर्श' शब्द का सामान्य अर्थ है– दो वक्ताओं के बीच संवाद या बहस अथवा सार्वजनिक चर्चा। आक्सफोर्ड अंग्रेजी कोश में भी 'डिस्कोर्स' (Discourse) शब्द का अर्थ भाषण या बातचीत ही है। सभी कोशों में 'विमर्श' शब्द का अर्थ किसी न किसी प्रकार बातचीत या विचार विवेचन से ही जुड़ा है। 'विमर्श' शब्द में जहाँ बातचीत और वार्तालाप इत्यादि अर्थ सामने आते हैं वही साहित्यिक रूप में इसका अर्थ किसी गंभीर विषय का गहन विवेचन–विश्लेषण और अंततः तर्कसंगत निर्णय पर पहुँचने का प्रयत्न है। किसी भी समस्या या स्थिति को एक कोण से न देखकर भिन्न मानसिकताओं, दृष्टियों, संस्कारों और वैचारिक प्रतिबद्धताओं का समाहार करते हुए उलट–पुलट कर देखना, उसे समग्रता से समझने की कोशिश करना और फिर मानवीय संदर्भों में निष्कर्ष प्राप्ति की चेष्टा करना ही विमर्श है।'[1], विशेषांक में संकलित शोध–पत्रों में विमर्श को प्रायरू इसी अर्थ में ग्रहण करके साहित्य में प्रचलित विभिन्न विमर्शों का विश्लेषण किया गया है।

स्त्री विमर्श विषयक शोध-पत्र :-

विवेच्य विशेषांक में 39 शोध पत्रों में साहित्य में स्त्री विमर्श को उद्घाटित करने का यथा सामर्थ्य प्रयास किया गया है। इसमें सुश्री विभा रानी, लता अग्रवाल, कुसुम अंसल, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, मालती जोशी, रजनी तिलक, उषा प्रियवंदा, गीतांजलि श्री, पद्मा शर्मा, ममता कालिया, अनामिका, नादिरा जहीर बब्बर, अर्चना पैन्यूली आदि महिला साहित्यकारो के साथ–साथ शंकर शेष, डॉ. तारा शंकर शर्मा पांडे, रामदरशमिश्र, अमरकांत, शैलेश मटियानी जैसे पुरुष साहित्यकारों की कृतियों में भी स्त्री विमर्श काअन्वेषण–विश्लेषण किया गया है।

स्त्री विमर्श केंद्रित शोध–पत्रों में साहित्य में चित्रित पितृसत्तात्मक समाज में नारी की स्थिति को बहुविध उद्घाटित किया गया है। इनमें स्त्री की दुर्दशा, नियति से लड़ने की उसकी जिजीविषा, आत्म–सार्थकता हेतु उसकी तलाश एवं जीवन मूल्यों के प्रति उसकी जागरूकता तथाअन्याय के विरुद्ध उसकी प्रतिरोध की भावना को तलाशा गया है। शोध–पत्रों में बलात्कार से लेकर प्रसव–वेदना तक स्त्री जीवन की सभी पीड़ाजनक स्थितियों के चित्रण को साहित्य में ढूंढा गया है। अधिकांश शोध–पत्रों में निष्कर्ष निकाला गया है कि जनमानस में स्त्री के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास स्त्री–विमर्श विषयक साहित्य ने किया है, इसीलिए शोधार्थी समाज में नई चेतना एवं स्त्री के प्रति परिवर्तित होते हुए दृष्टिकोण के लिए इस साहित्य को महत्वपूर्ण मानते हैं– "हम आश्वस्त हो सकते हैं कि एक ऐसी पीढ़ी का उदय हो रहा है जो पूर्व धारणाओं को उखाड़ फेंकना चाहती है। टूटे जीवन मूल्यों में बिखरती नैतिकता के बीच वह आत्मनिर्भर हो कर एवं आत्मसम्मान से रहकर अपने अस्तित्व को बनाए रखना चाहती है। ऐसा नारी विमर्श की सैद्धांतिक और सृजनात्मक उपलब्धियों के कारण हुआ है।"[2] स्त्री विमर्श विषयक शोध–पत्रों के विषय में यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि इस विमर्श पर केंद्रित 39 शोध –पत्रों में से 35 शोध–पत्र महिला शोधार्थियों द्वारा लिखे गए हैं।

दलित विमर्श विषयक शोध-पत्र :-

स्त्री विमर्श के उपरांत जिस विमर्श पर शोधार्थियों ने सर्वाधिक लिखा है, वह है– दलित विमर्श। विशेषांक में 23 शोध–पत्र साहित्य में दलित विमर्श पर केंद्रित हैं। इन शोध–पत्रों में साहित्य में दलित चेतना के उदय को रेखांकित किया गया है। हिंदी साहित्य में दलित विमर्श पिछले सदी के आठवें दशक से अधिक चर्चा में आया जब कमलेश्वर ने सारिका के दो दलित विशेषांक निकले। दलित केंद्रित साहित्य में दलित जीवन का यथार्थ चित्रण करते हुए वर्ग भेद का खंडन एवं दलित समाज को एकजुटता के साथ शोषण के विरुद्ध संघर्ष हेतु प्रेरित किया गया है। साहित्य में दलित चित्रण के विषय में इस धारणा को स्थापित किया गया है कि दलित साहित्य यातनाओं की त्रासदी से उत्पन्न एक साहित्यिक हस्तक्षेप है जो संपूर्ण जड़वादी समाज को हिलाने का सामर्थ्य रखता है। शोधार्थियों को दलित साहित्य में दलितों के भविष्य के सुधार की अनेक संभावनाएं नजर आती हैं। साहित्य में दलित विमर्श के चित्रण को उजागर करने हेतु शोधार्थियों ने ओमप्रकाश वाल्मीकि, जयप्रकाश कर्दम, सूरजपाल चौव्हान, प्रेम कपाड़िया, रमेश जालौनिया, कुसुम वियोगी, सत्य प्रकाश, सुशीला टाकभौरे, मेघ सिंह 'बादल', शंकर शेष, मोहदास नैमिषराय, विपिन बिहारी, देवेंद्र दीपक, रजनी तिलक, सुखबीर सिंह माता प्रसाद आदि दलित गैर–दलित साहित्यकारों की रचनाओं को आधार बनाया है। दलित साहित्य यदि स्वानुभूत यातनाओं की त्रासदी से उपजा साहित्य है तो गैर दलित साहित्यकारों द्वारा रचित दलित विषयक साहित्य इसकी सीमा से स्वतः बाहर हो जाता है। एक शोध–पत्र में प्रतिस्थापित किया गया है कि "प्रेमचंद के अतिरिक्त शायद ही कोई अन्य गैर–दलित साहित्यकार होगा जिसने दलितों की स्थिति को उजागर किया हो।"[3]

शोधार्थी की यह अवधारणा समुचित नहीं है। प्रेमचंद के अतिरिक्त जयशंकर प्रसाद, राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह, महादेवी वर्मा, निराला, फणीश्वरनाथ रेणु, नागार्जुन, चित्रा मुद्गल, श्रीलाल शुक्ल, हरिशंकर परसाई आदि अनेक उच्च कोटि के गैर–दलित साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में दलित समाज व जीवन की दयनीय स्थिति का मार्मिक उद्घाटन किया है। शोधार्थियों को ऐसे गैर–दलित साहित्यकारों की रचनाओं का भी अध्ययन हेतु चयन करना चाहिए।

किन्नर विमर्श विषयक शोध-पत्र :-

पिछले कुछ वर्षों से साहित्य में 'किन्नर विमर्श' नाम से एक अलग विमर्श आरंभ हो गया है। "वर्तमान में किन्नर विषय पर साहित्य लिखा जा रहा है। जिसमें हमें उनके जीवन, उनके दुखों एवं समाज का उनके प्रति दृष्टिकोण देखने को मिलता है।"[4] विवेच्य विशेषांक में सात शोधार्थियों ने साहित्य में किन्नर विमर्श पर लिखा है। इसके लिए उन्होंने प्रायः नीरजा माधव, नीना शर्मा 'हरेश', महेंद्र भीष्म, सुभाष अखिल, डॉ. मोनिका शर्मा, मनोबी बंदोपाध्याय, लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी, कादंबरी मेहरा एवं डॉ राही मासूम रजा जैसे साहित्यकारों की रचनाओं को आधार बनाया है। डॉ. सीमा कुरियन ने अपने शोध पत्र में 'में द्विलिंगी' कविता की जिन पंक्तियों को उद्धृत किया है, उनमें किन्नर–जीवन का सार समाहित है – "मैं द्विलिंगी, समाज पृथक/प्रताड़ित शोषित, तिरस्कृत/सुविधाओं से वंचित हूं।/ अपमानों से सिंचित हूं।/जनमानस का हॅसी पात्र/बिन गिनती बस जीवमात्र/ आधी मादा / आधा नर।"[5] शोध–पत्रों में किन्नरों की कुल आबादी, उनकी साक्षरता दर आदि का संदर्भ देते हुए साहित्य में चित्रित किन्नर समाज की वेदना एवं संघर्ष के साथ उनकी विसंगति पूर्ण नैसर्गिक स्थिति को दर्शाया गया है।

आदिवासी विमर्श विषयक शोध-पत्र :-

शोध संगम के इस विशेषांक में आदिवासी विमर्श पर भी पर्याप्त मात्रा में लिखा गया है। इस विषय पर प्रकाशित छह शोध–पत्रों में प्रमुखतः आदिवासी विमर्श की अवधारणा, स्वरूप एवं परंपरा का उल्लेख करते हुए समकालीन हिंदी साहित्य में अभिव्यक्त आदिवासी जीवन के स्वरूपका विवेचन किया गया है। आदिवासी जीवन को अपने लेखन का विषय बनाने वाले हरिराम मीणा, महादेव टोप्पो, निर्मला पुतुल, वंदना टेटे, ज्योति लाकड़ा, रणिंदर, तेजिंदर, पीटर पॉल एक्का, प्रभु नारायण मीणा, रामदयाल मुंडा, मंजू ज्योत्सना आदि के साथ–साथ शानी, श्रीप्रकाश मिश्र, संजीव एवं मैत्रेयी पुष्पा की तद्विषयक रचनाओं पर शोध–पत्र लिखे गए हैं। आदिवासी लेखन से स्पष्ट होता है कि आदिवासी, जो देश के मूल निवासी हैं, उपनिवेशवाद की स्थापना के बाद से ही निरंतर शोषण का शिकार रहे हैं। वैश्वीकरण एवं औद्योगिकरण की शुरुआत के बाद से तो उनकी संस्कृति ही संकटापन्न स्थिति में आ गई है। आदिवासी स्त्रियों का जीवन तो और भी अधिक संघर्षमय है। इनके विस्थापन की अनकही पीड़ा को दर्शाने हेतु सिम्ना. एन प्रभु नारायण की कविता का उदाहरण प्रस्तुत करते है– "औद्योगिकरण व विकास के नाम पर / विस्थापन तेरा हुआ / जल, जंगल, जमीन गई / तू मूल निवासी बेसहारा हुआ / क्यों न पसीजा कलेजा इनका / आया न आंसू आंख में।"[6] शोधार्थियों ने प्रतिपादित किया है कि आदिवासी साहित्य का महत्व इस बात में है कि यह व्यापक समाज को उपेक्षित एवं तिरस्कृतत आदिवासी समाज से परिचित कराता है।

वृद्ध विमर्श विषयक शोध-पत्र :-

समकालीन साहित्य के विविध विमर्शों पर आधारित इस विशेषांक में छह शोध–पत्र वृद्ध विमर्श पर केंद्रित हैं। इन शोध–पत्रों में काशीनाथ सिंह के उपन्यास 'रेहन पर रघु', सुरेंद्र वर्मा के उपन्यास 'मुझे चांद चाहिए' एवं चित्रा मुद्गल के उपन्यास 'गिल्लिगड्डु' के अतिरिक्त नासिरा शर्मा की कहानी 'कागज की नाव', चित्रा मुद्गल की कहानी 'गेंद', उषा प्रियवंदा की कहानी 'वापसी', भीष्म साहनी की कहानी 'चीफ की दावत', मिथिलेश्वर की कहानी 'हरिहर काका', हृदयेश की कहानी 'चार दरवेश' तथा कृष्णा अग्निहोत्री की विभिन्न कहानियों में अभिव्यक्त वृद्धजीवन की विवेचना की गई है। इनमें वृद्ध–जीवन में एकाकीपन, हताशा का भाव, संबंधों की निरर्थकता का बोध, राग–विराग का द्वंद्व, पराएपन एवं अलगाव का बोध आदि स्थितियों दर्शाया गया है।[7] इन शोध–पत्रों की स्थापना है कि वृद्ध जनों की दुर्दशा का प्रमुख कारण समाज का नैतिक पतन व मूल्य हीनता है। जब समाज में नैतिक मूल्यों की पुर्नथापना होगी तभी वृद्ध जन सम्मान पा सकेंगे।

अन्य विमर्शों पर आधारित शोध-पत्र :-

पर्यावरण, पत्रकारिता, मुस्लिम समाज, दिव्यांग जन,देश–प्रेम, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, बाल मनोविज्ञान, किशोर जीवन, पुरुष उत्पीड़न जैसे विषयों पर भी इस अंक में शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं। साहित्य में पर्यावरण की महत्ता के चित्रण को दर्शाने के लिए शोधार्थियों ने तुलसी के 'रामचरितमानस' से लेकर हजारी प्रसाद द्विवेदी के 'कुटज' तक से उद्धरण लिए हैं तथा साहित्य में चित्रित पारिस्थितिकीय समस्याओं एवं साहित्य व पर्यावरण के अंतर्संबंधों का उद्घाटन किया है। हिंदी साहित्य में चित्रित आर्थिक सरोकारों के उद्घाटन हेतु शोधार्थियों ने नागार्जुन एवं उदयप्रकाश प्रभृति साहित्यकारों की रचनाओं से सर्वहारा वर्ग केचित्रण को दर्शाया है।

कृषक वर्ग की दयनीय दशा का उद्घाटन करने हेतु शोधार्थियों ने प्रेमचंद, हजारी प्रसाद द्विवेदी, नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेनू, रामदरश मिश्र, जगदीश चंद्र, मिथिलेश्वर, विवेकी राय, कुमेंदु शिशिर, सुनील चतुर्वेदी,

शिवमूर्ति, भीमसेन त्यागी, जयनंदन, राजू शर्मा, पंकज सुबीर, संजीव आदि की साहित्यिक रचनाओं को लिया है। इनमें कृषि का पिछड़ापन, प्राकृतिक आपदाएं एवं ऋण का भार किसानों को खेती–बाड़ी छोड़कर शहर की तरफ पलायन करने के प्रमुख कारण के रूप में उभर कर आए हैं।

इस संदर्भ में 'छोटा किसान' शीर्षक कहानी से निम्न पंक्तियां उद्धृत की गई हैं–"अब खेती–बाड़ी में हम छोटे किसानों के लिए कुछ नहीं रखा है बाऊ,. . . घर–खेत बेचकर हमें शहर जाना ही होगा।"[8] मीडिया विमर्श आधारित शोध–पत्रों में मीडिया के अर्थ व स्वरूप को स्पष्ट करते हुए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मीडिया के व्यापक प्रभाव का उद्घाटन किया गया है तथा मीडिया को परिवर्तन का ब्रह्मास्त्र स्वीकार किया गया है।[9] इन शोध–पत्रों में मीडिया के विभिन्न माध्यमों में हिंदी भाषा के स्वरूप को भी दर्शाया गया है।

पुरुष विमर्श के अंतर्गत सुदर्शन प्रियदर्शिनी की कहानियों में पुरुष उत्पीड़न के प्रसंगों का विश्लेषण किया गया है। रजनी गुप्त के उपन्यास 'कुल जमा बीस' के आधार पर किशोर जीवन के द्वंद्व, उनमें एकाधिकार की भावना तथा सोशल मीडिया एवं प्रेम संबंधों के बीच उनके जीवन की विभिन्न समस्याओं का अध्ययन किया गया है। बाल विमर्श पर आधारित शोध–पत्र में साहित्य अकादमी द्वारा अनूदित हरिकृष्ण देवसरे, जयप्रकाश भारती, प्रकाश उपाध्याय, हंस एंडरसन एवं तस्वीर भुल्लर की रचनाओं की बाल मनोवैज्ञानिकता, नीतिपरकता, उपदेशात्मकता एवं सरसता की दृष्टि से समीक्षा की गई है। एक अन्य शोध–पत्र में हिंदी कहानियों में चित्रित मुस्लिम समाज की बेरोजगारी को उजागर किया गया है। शोधार्थी ने मुस्लिम समाज में शिक्षा के अभाव को बेरोजगारी के प्रमुख कारण के रूप में चित्रित पाया है। दिव्यांग विमर्श पर केंद्रित शोध–पत्र में मन्नू भंडारी की कहानी 'खोटे सिक्के' में वर्गीय असमानता से जूझने वाले दिव्यांग मजदूरों के चित्रण का मूल्यांकन किया गया है।[10]

इसके अतिरिक्त कई शोध–पत्र किसी विशेष विमर्श को केंद्र मेंन रखकर सामान्य साहित्यिक विषयों पर लिखे गए है। इनमें आजादी के पूर्व साहित्य में देशभक्ति की भावना एवं जीवन मूल्यय भारतेंदु हरिश्चंद्र, बंकिमचंद्र चटर्जी, डॉ. रामविलास शर्मा आदि की प्रगतिशील दृष्टि अपराध, नियम वन्याय की संकल्पनाओं के आधार पर स्वदेश दीपक के नाटक 'कोर्ट मार्शल' की समीक्षा, विद्यालयों में प्रचलित लैंगिक असमानता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में प्रौढ़ एवं जीवन पर्यंत शिक्षा तथा भाषा आधारित शिक्षा आदि से संबंधित शोध–पत्र उल्लेखनीय है। एकाध शोध–पत्र में अपेक्षित विश्लेषण का अभाव है तथा उनकी विषय वस्तु भी बेमेल है। विशेषांक में संकलित अधिकांश शोध–पत्र लगभग दो हजार शब्दों तक सीमित है।

निष्कर्ष :-

गिना शोध संगम के 'समकालीन हिंदी साहित्य और विमर्श' विशेषांक के सम्यक् विश्लेषण के पश्चात् हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत विशेषांक समकालीन हिंदी साहित्य में विविध विमर्शों को अत्यंत सशक्त ढंग से उजागर करने की दिशा में एक सार्थक प्रयास है। इसमें संकलित शोध–पत्र मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों दृष्टियों से उल्लेखनीय हैं। इतने अधिक शोध–पत्रों का विषय वैविध्य के साथ प्रकाशन स्वयं में एक अन्यतम उपलब्धि है।

संदर्भ-संकेत :-

1. हिंदी साहित्य में समकालीन आधुनिक विमर्श, लेखक डॉ. पायल लिल्हारे, संकलित गीना शोध संगम, समकालीन विमर्श विशेषांक – अप्रैल 2023, प्र. गीना शोध संस्थान श्रीगंगानगर, पृ. सं. 726.

2. समकालीन साहित्य में नारी विमर्श, लेखिका अनिता कुमारी, संकलित उपर्युक्त, पृ. सं. 256.
3. हिंदी साहित्य में दलित चेतना का उद्‌भव, लेखिका भारती, संकलित उपर्युक्त, पृ. सं. 673.
4. किन्नर विमर्श : एक दृष्टि लेखिका रश्मि गुप्ता, संकलित उपर्युक्त, पृ. सं. 446–447.
5. समकालीन हिंदी कविता में किन्नर विमर्श, लेखिका डॉ. सीमा कुरियन, संकलित उपर्युक्त, पृ. सं. 380.
6. समकालीन हिंदी कविता में चित्रित आदिवासियों का विस्थापन, लेखिका सिम्ना. एन, संकलित उपर्युक्त, पृ. सं. 612.
7. हिंदी कहानियों में चित्रित वृद्धावस्था जनित एकाकीपन, लेखक उज्जवल सिंह, संकलित उपर्युक्त, पृ. सं. 712–720.
8. 'छोटा किसान' : किसान जीवन यथार्थ का दस्तावेज, लेखिका अंजू, संकलित उपर्युक्त, पृ.सं. 79.
9. मीडिया विमर्श के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक – सांस्कृतिक बदलाव, लेखक –लिबिल जैकब, संकलित उपर्युक्त, पृ.सं. 644.
10. वर्गीय असमानता में जूझने वाले दिव्यांग मजदूर : 'खोटे सिक्के' के परिप्रेक्ष्य में, लेखक टिनु अलेक्स. के, पृ. सं. 619–623.

डॉ. राजेश कुमार डाक का पता :–
डॉ. राजेश कुमार सुपुत्र श्री जय नारायण
सहायक प्रोफेसर
गांव व डाकघर – डीघल हिंदी विभाग पान्ना
कौशिक नगर राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, रोहतक, जिला झज्जर (हरियाणा) कोड–124107
Email : drrajeshgautam2020@gmail.comfiu
मो. 9896321474

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 50-52

हिंदी के प्रचार प्रसार में 'गीना शोध संगम पत्रिका' का योगदान

डॉ. मीनू शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
श्री माधव कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड टेक्नोलॉजी, मोदीनगर रोड, केशव नगर, हापुड़ 245101

पत्रिका और साहित्य समाज के सकारात्मक पक्ष के अक्षय कोष रहे हैं। पत्रिकाओं के माध्यम से समाज का दृष्टिकोण उसका परिवर्तन सामाजिक समस्याएं परिलक्षित होती हैं, पत्रिका एक ऐसा माध्यम है, जो ज्वलंत प्रश्नों को समाज, भाषा जगत से जुड़े साहित्यकारों भाषा विषय से संबंधित विभिन्न पहलुओं को शिक्षाविदों के शोध–पत्र साहित्य के विभिन्न संदर्भ में प्रकाशित किए जाते हैं। पत्रिका माध्यम से साहित्य को पाठक और श्रोतागण जिज्ञासु छात्रों तक पहुंचाने का सुदृढ़ माध्यम है। यह पत्रिकाएं सिर्फ विचारों को ही जन्म नहीं देती उनके समाधान के लिए मार्ग प्रशस्त भी करती हैं। गीना शोध संगम पत्रिका समाज को नवगति, नव दिशा, नव्य पथ प्रदान करने की पक्षधर है। साहित्य समाज का दर्पण होता है और पत्रिका साहित्य और समाज का दर्पण है। यह जिज्ञासा को शांत करने का स्रोत है जो हमें अनेक साहित्यकारों के विषयों को लेकर उत्पन्न होती है आधुनिक परिपेक्ष में पत्रिकाओं का क्षेत्र अत्यंत व्यापक हो गया है। हिंदी भाषा के क्षेत्र में इस पत्रिका का अतुलनीय योगदान है।

यह पत्रिका समाज तक प्रभावी ढंग से सकारात्मक पक्षों को, विचारणीय प्रश्नों को अपनी भाषा में जनहित की भावना, कल्याण की भावना से योगदान दे रही है। अपने अरुणोदय कल से ही इस पत्रिका के सभी प्रकाशनों का उद्देश्य जन जागरण कर समाज सुधार करना तथा जान को नव्य संदेश प्रदान करना रहा है। शिक्षाविदों को निरंतर इस पत्रिका के माध्यम से विषयों के मर्म की अभिव्यक्ति का पूर्ण अवसर प्राप्त हुआ है और आगे भी होता रहेगा। पत्रिका माध्यम से आलेख शोध पत्र आदि रचनात्मक क्षेत्र में लेखन माध्यम से शिक्षा वेद अपने शीर्षकों को परिभाषित करता है। साहित्य, शिक्षा संस्कृति एवं शोध से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों को अहम स्थान देने वाली यह गीना शोध पत्रिका सभी का मार्गदर्शन करती परिलक्षित हो रही है। हिंदी गद्य विधाओं के लेखकों की साहित्यिक रचनाओं उससे जुड़े विषयों उनके दर्शन समाज के प्रति उनके विचारों का प्रदर्शन उनकी समस्या समाधान सभी के लिए द्वार खोलती है, गीना शोध पत्रिका लेखन का उत्तम मंच है। इस पत्रिका ने हम सभी को यह मंच सस्नेह प्रदान किया है। कुछ पंक्तियों के माध्यम से इस पत्रिका की विशेषताओं को परिभाषित कर रही हूं :–

मानव मूल्यों से संबंधित पत्रिका,
हिंदी को प्रस्तुत करती पत्रिका।
शोध का अनुपम पाठ है, पत्रिका,
उत्तमता से परिपूर्ण पत्रिका।
जन–जन को आप्यायीत करती,
नव संदेश, नव दिशा की वाहक,
अनमोल अनुपम अनोखी पत्रिका,
गीना शोध पत्रिका नाम है।
इससे लेखन कलम में प्राण हैं,
इसका अतुलनीय योगदान है।

भावी शोधार्थियों के लिए इस पत्रिका द्वारा यह योगदान सराहनीय है, देश–विदेश के सभी हिंदी साहित्य प्रेमियों व शिक्षाविदों के शोधलेखों के माध्यम से हमें विषय से संबंधित जानकारी प्राप्त होती है, जो अत्यंत दुर्लभ है, क्योंकि लेखन कार्य के लिए यह पत्रिका हमें प्रेरित करती है। एक साथ उत्तम विचारों का संग्रह, उत्तम लेख और विषय विशेषज्ञों द्वारा लिखा गया शोध पत्र विषय की स्पष्टता को परिभाषित करता है। इस पत्रिका माध्यम से अमूल्य शब्द ज्ञान कोष विषय की विस्तृत जानकारी इस पत्रिका से संभव प्रतीत होती है। बहुत सारे साहित्यकार उनका साहित्य जगत में योगदान इस शोध पत्रिका की पृष्ठभूमि पर अछूते शीर्षकों को जानने और समझने का अवसर इस पत्रिका द्वारा पूर्ण हुआ है। साहित्यकारों की अनुभूतियों उनकी आत्मगत पीड़ाएं, आशा, निराशा, प्रसन्नता आदि भावनाओं को सहजता से हम जान पाते हैं। संपूर्ण समाज का यथार्थ चित्रण साहित्य में भरा पड़ा है। शोध पत्रिका के साधन रूप में हमारे मध्य उपस्थित है ,जो अनभिज्ञ शीर्षकों समाज को नव संरचना, नव लेखन, नवगती प्रदान करने में अपनी अहम भूमिका का निर्वाह करते हुए निर्बाध गति से प्रस्थान कर रही है और हिंदी जगत के लिए असीमित रास्ते प्रदान कर रही है, हिंदी गगन में परिसरण का असीम अवसर हमें यह 'गीना शोध पत्रिका' पुरस्कार रूप में प्रदान कर रही है। इस पत्रिका का अभिदान हिंदी के लिए प्रशंसनीय और सराहनीय है। हिंदी भाषा का प्रचार–प्रसार भाषा की लोकप्रियता को जीवंत रखता है उसमें अहम भूमिका शोध पत्रिका कर रही है। हिंदी भाषा से सुभाषित संदेशों से पूर्ण हिंदी में अनुसंधान की गतिविधियों के प्रोत्साहन हेतु हिंदी भाषा का महत्व भाषा के प्रति प्रेम उसके प्रति जो लक्ष्य निर्धारित किए हैं, वह सार्थक परिलक्षित है। इन समस्त सराहनीय कार्यों के लिए पहल करने वाले शिक्षाविदों का हृदय से मैं आभार व्यक्त करती हूँ।

हिंदी का वर्चस्व बढ़ाने की दिशा में प्रशंसा की पात्र पत्रिका :-

हिंदी का वर्चस्व बढ़ने की दिशा में यह पत्रिका अपने कदम निरंतर बढ़ा रही है। हिंदी प्रवासी साहित्य दशा और दिशा विषय पर गहन विचारों से शोध पत्र लिखने के लिए आग्रह करती है। शोध शोधार्थियों के लिए शोध आलेख का बीजारोपण इस पत्रिका माध्यम से आरंभ हुआ है, उनका लेखन मंच इस पत्रिका ने ही प्रदान, किया है हिंदी के प्रचार प्रसार में उसके विकास हिंदी का इतिहास उद्‌गम, वैश्विक फलक पर हिंदी भाषा की भूमिका आदि संदर्भ में शोध जगत के स्थान को विस्तृत करके हिंदी भाषा को सम्मान दिया है। 'समकालीन हिंदी साहित्य में सामाजिक विमर्श' में प्रकाशनार्थ हेतु आलेखन आमंत्रित कर हिंदी भाषी शिक्षाविदों को रास्ता दिया

समकालीन साहित्य में दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, नारी विमर्श, नैतिक विमर्श, किन्नर विमर्श, पुरुष विमर्श, वृद्धि विमर्श, आदि समकालीन साहित्य में अन्य विमर्श पर आलेख प्रस्तुत करने का आग्रह किया इसके अंतर्गत उत्तम कोटि के लेख शोध पत्रों को सम्मान दिया गया इस पत्रिका ने साहित्य के विविध विमर्शों को अपनी पत्रिका में आत्मसात किया जिन शोध संगम पत्रिका हिंदी विषय के गहन प्रश्नों के साथ–साथ हिंदी भाषा को लेकर प्रवासी साहित्यकारों का योगदान उनकी हिंदी जगत में भूमिका हिंदी के विस्तारीकरण में असीमित योगदान देते हुए यह पत्रिका अपनी अलग पहचान बना रही है।

मातृभाषा को लेकर आगे बढ़ाना सभी हिंदी प्रेमियों का कर्तव्य है, लेकिन वास्तविक शिक्षित मंच पर इसको प्रस्तुत करने का कार्य यह पत्रिका कर रही है। मातृभाषा के प्रति आदर सम्मान और उसकी विशेषता इन पत्रिकाओं के माध्यम से जीवंत परिलक्षित होती है। प्रत्येक शोध पत्रिकाओं के अपनी मानक निर्धारण हैं, उनके अनुरूप वह शोध पत्र प्रकाशित करते हैं।

हिंदी साहित्य में महिला स्त्री जीवन के नव प्रश्न महिला लेखन संदर्भ में लेख प्रस्तुत करने की शैली सभी शिक्षाविदों की भिन्न–भिन्न है, जो हमारे दृष्टिकोण का विस्तारीकरण करने में सक्षम है, सेमिनार के माध्यम से भी विश्व में हिंदी के वास्तविक अर्थ को उसकी प्रासंगिकता को नींव से मजबूत करने का प्रयास किया है। यह पत्रिका सृजनात्मकता को बढ़ावा देती है। यह पत्रिका हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार के लिए देवनागरी लिपि के सम्मान के लिए अहम भूमिका निभा रही है। हिंदी भाषा के अछूते विषयों को इस पत्रिका माध्यम से हमारे संज्ञान में लाया गया है।

इस शोध पत्रिका ने हिंदी और आजादी के 75 वर्ष विशेषांक निकाला जिसमें हिंदी उद्‌भव और विकास हिंदी भाषा का विदेशी विस्तार, हिंदी सेवी संस्थाएं हिंदी सेवी व्यक्ति, हिंदी जन–जन की भाषा हिंदी शोध हिंदी पत्रकारिता हिंदी मीडिया, हिंदी शिक्षा और शिक्षक, हिंदी और नई शिक्षा नीति का योगदान, हिंदी के प्रचार प्रसार में योगदान आदि महत्वपूर्ण शिक्षकों द्वारा हिंदी का प्रसार किया है। देवनागरी लिपि का प्रचार प्रसार, सम्मान हिंदी का वास्तविक स्थान इन पत्रिकाओं के माध्यम से जीवंत परिलक्षित होता है। आपके द्वारा किए गए इन अथक प्रयासों की मैं प्रशंसा करती हूं।

मो. 7895525766
mAnakshA1984sharma@gmail.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 53-54

बाल स्वतंत्रता को समर्पित 'मुन्नु की स्वतंत्रता'

डॉ. हरप्रीत कौर
56, सेंट्रल टाउन, बैकसाईड सम्राट टाइल फैक्ट्री, थ्रीके रोड, लुधियाना–142022

आधुनिक युग में विज्ञान के प्रभाव से मनुष्य की जीवनशैली में परिवर्तन आना स्वाभाविक है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के साथ–साथ मनुष्य के बाह्य तथा आंतरिक जीवन की सभी बातों से क्रांति का सूत्रपात भी हुआ। वह वैज्ञानिक प्रभाव ही है, जिससे एक बालक के जन्म से लेकर उसके बड़े होने तक की प्रक्रिया में भी काफी अंतर आया है। आज का बालक इतना समझदार व तीव्र प्रवृत्ति का हो गया है कि वे तो अपने जीवन की प्रक्रिया के चक्र को भी तीव्र गति से घुमाता है। बालक आधुनिक समय में अपनी उम्र से अधिक प्राप्त करने की दौड़ में लगा हुआ है पुनः चाहे उसकी कोई भी कीमत उसे क्यों न चुकानी पड़े। लेकिन वह तो इस वैज्ञानिक रफ्तार भरी जिन्दगी में बस दौड़ रहा है। प्रसिद्ध लेखक लाल्टू इस सन्दर्भ में लिखते हैं कि आज यह माना जाता है कि भ्रूण की अवस्था से ही मानव प्रकृति और स्वयं के बारे में सीखना शुरू करता है। जन्म के तुरन्त बाद दो आँखों से देखते और दो कानों से आवाज सुनकर सोत के स्वरूप और उसकी दूरी की पहचान, वस्तुओं के आकार इत्यादि सीखने के साथ ही भाषा सीखने और उसे पुख्ता करने की प्रक्रियाएँ भी शुरु हो जाती हैं। शुरूआती दो–चार महीनों के बाद करवट लेने, रेंगने आदि के साथ शब्द–निर्माण की ओर बढ़ता चलता है। इस स्थिति में लगभग दो वर्ष की उम तक चंदा–सूरज जैसी, पुरानी लोरियाँ, आज भी बच्चों को भाती हैं। पर दो वर्ष की उम्र होने तक आज बच्चे टेलीफोन, मोबाइल, कम्प्यूटर आदि यंत्रों में रुचि लेने लगते हैं और जहाँ ये हर वक्त उपलब्ध हों, चार वर्ष की उम्र तक उनका उपयोग करना भी शुरू हो जाता है। ऐसी स्थिति में पुरानी किस्म को तुकबंदी और राजा–रानी की कहानियाँ बच्चों की संतुष्ठ नहीं कर सकतीं।'

अभिप्राय यह है कि आज के बालक बहुत समझदार हैं। विज्ञान ने बालकों को उम्र से पहले ही बड़ा बना दिया है। वे बड़ों ने जो भी कहा हो, उसे आँख बंद करके नहीं मानते। बालकों की सोच, भावनाएँ, समस्याएँ आदि बड़ों से भिन्न होती हैं। वे अकसर अपने तरीके से ही प्रत्येक बात को समझते हैं न कि जैसा कोई बड़ा उन्हें कहता है वैसा ही वे करते हैं। यदि वे बड़ों की बात मान भी ले, तो उसमें भी उनकी कोई रुचि नहीं होती क्योंकि उनकी अपनी एक छोटी सी दुनियाँ है, जिसमें वे किसी का भी हस्ताक्षेप पसंद नहीं करते। उनको कुछ कहना मानो उनकी स्वतंत्रता भंग करना है।

हरिशंकर परसाई की कहानी में मुन्नु कहता है, माँ तुम तो कहती हो कि हमें स्वतंत्रता मिल गई। पर मैं जब आज भैया के कोट से फाउंटेन पेन निकालकर फर्श पर लिखने लगा तब तुम नाराज हो गई और कलम छीन ली। और, रात को जब मैंने गरम दूध न पिया तब तुमने डांटकर कहा : 'पी, नहीं तो एक तमाचा लगेगा।'

और कटोरा मुँह से लगा दिया। भाव बालकों को अगर किसी बात से रोका भी जायें तो उन्हें कभी भी अच्छा नहीं लगता। वे छोटी सी छोटी बात को भी प्रश्न का रूप देकर आपके सामने खड़ी कर देंगे।

मुन्नु फिर अपनी माँ को कहता है कि 'जब मैं सवेरे सड़क पर खेलने चला गया तो तुमने नौकर से पकड़ मंगवाया और कहाः सड़क पर खेलने गया तो टांग तोड़ दूंगी। भला यह भी कोई स्वतंत्रता है? और जब मैंने पिता जी की दावात की स्याही से अपनी कमीज रंगकर झंडा बनाने लगा तो तुमने तो तमाचे जड़ दिये और रोने लगा तो, बोली : रोएगा तो एक तमाचा और लगाऊँगी।' क्या मुझे रोने की भी स्वतंत्रता नहीं है?? अकसर बड़े अपनी ही चलाते हैं, वे कभी भी बच्चे के चंचल मन को पढ़ ही नहीं पाते हैं। अंत में मुन्नु देश के प्रधानमंत्री को चिट्ठी लिखकर अपनी स्वतंत्रता की बात रखने की बात अपनी माँ को कहता है।

कहानी छोटी सी है लेकिन हजारों स्वाल खड़ी कर देती है। बड़ों का गुस्सा जब बाकलों पर भारी पड़ने लगता है, तो उनके प्रश्न कब गुस्से से तनाव में बदल जाते हैं, पता ही नहीं चलता। आज आधुनिक दौर में माता–पिता दोनों की किसी न किसी व्यवसाय में लगे होते हैं, जो उनकी नजर में अपने बच्चों के सुनहरी भविष्य का आधार है। लेकिन जब भविष्य की नींव कमजोर होगी तो इमारत कैसे मजबूत होगी। भाव जब बालक खुलकर बचपन जियेगा ही नहीं तो भला आगे का भविष्य किसने देखा है। शायद इसी कारण आज के बालक भावनात्मक तौर पर कमजोर हैं, क्योंकि उन्हें सुनने वाला कोई नहीं बल्कि जब वे स्वतंत्रता से कुछ करना चाहते हैं तो उन्हें रोका जाता है। अगर देश के भविष्य कहे जाने वाले बालकों को देश की भाग–दौड़ संभालनी है, तो उनको उनकी स्वतंत्रता देनी होगी। तभी तो वे खुलकर इस खुले आकाश में उड़ेंगे और अपनी सृजनात्मकता में रंग भरेंगे।

संदर्भ सूची :–

1. पाण्डेय, अनुज, रेखा (संपादक), :बाल साहित्य और आलोचना', नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2016, पृ. 295
2. देवसरे, हरिकृष्ण, 'बच्चों की 100 कहानियाँ', दिल्ली : शकुन प्रकाशन, 2017, पृ. 100

दूरभाष : 98725–05975

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 55-63

Gender Disparities in Indian Education : An In-depth Analysis

Dr. Shefali Mendiratta
Assistant Professor (Education), Suresh Gyan Vihar University, Jaipur (Rajasthan)

Abstract :-

This research paper delves into the multifaceted landscape of gender disparities within the Indian education system. Recognizing the pivotal role education plays in fostering societal development, the study aims to scrutinize and understand the persistent gaps in educational opportunities, achievements, and access experienced by girls and women across different regions of India.

Furthermore, the paper explores the underlying socio-cultural and economic factors contributing to the perpetuation of gender disparities in education. It examines societal norms, discriminatory practices, and systemic barriers that impede the educational progress of girls and women. In doing so, the research seeks to provide insights into the root causes of these disparities, aiming to inform policies and interventions that can effectively address the challenges faced by female students.

The findings of this analysis are expected to contribute to the ongoing discourse on gender disparities in education in India and provide valuable recommendations for policymakers, educators, and stakeholders working towards creating an inclusive and equitable educational environment for all. Ultimately, the research aims to stimulate dialogue and action, fostering positive change in the pursuit of gender equality within the Indian education system.

Key words : Gender disparities, Education, Social, Cultural, Economic factors.

Introduction :

Education serves as a cornerstone for societal progress, empowering individuals to contribute meaningfully to their communities and fostering economic development. In the context of India, a nation with a rich tapestry of diversity and heritage, the issue of gender disparities in education emerges as a critical concern. Despite strides made in recent decades, a deep-rooted imbalance persists,

hindering the full realization of educational potential for both genders.

This in-depth analysis aims to unravel the complex web of factors contributing to gender disparities in Indian education. By delving into historical, socio-cultural, and institutional dimensions, we seek to understand the multifaceted nature of this challenge. While India has witnessed commendable advancements in education, the gap between male and female enrollment, retention, and achievement remains substantial, posing significant hurdles to the nation's aspiration for inclusive and equitable development.

Socio-Cultural Factors :

The socio-cultural environment of Indian society plays a pivotal role in shaping educational outcomes. Social norms, stereotypes, and cultural expectations influence decisions regarding education, often disadvantaging one gender over the other. Gender disparity in education is often influenced by a variety of socio-cultural factors. These factors can vary across different societies and regions, but some common elements include :

Traditional Gender Roles : Societal expectations and traditional gender roles can play a significant role in shaping educational opportunities. In many cultures, girls may be expected to prioritize domestic responsibilities over education, limiting their access to schooling.

Cultural Norms and Attitudes : Prevailing cultural norms and attitudes toward the roles of men and women in society can impact the value placed on education for each gender. Societies that perceive men as primary breadwinners and women as homemakers may prioritize the education of boys over girls.

Early Marriage and Parenthood : In some cultures, early marriage and parenthood, particularly for girls, can interrupt their education. Societies that encourage or tolerate early marriages may inadvertently contribute to lower educational attainment among girls.

Access to Resources : Unequal access to resources, such as financial resources and educational infrastructure, can contribute to gender disparities. Families facing economic challenges may prioritize the education of male children, perceiving them as future providers.

Discrimination and Bias : Explicit or implicit biases and discrimination against one gender can affect educational opportunities. This discrimination can occur within schools, where teachers may unconsciously treat boys and girls differently, impacting their learning experiences.

Safety and Security Concerns : In some regions, concerns about the safety and security of girls on their way to school or within educational institutions can be a barrier to their education. Fear of harassment or violence may lead parents to keep their daughters at home.

Lack of Female Role Models : The absence of visible and successful female role models in

various professions may limit girls' aspirations and confidence in pursuing education and certain careers. The lack of representation can reinforce gender stereotypes. Religious and Cultural Beliefs: Religious and cultural beliefs may influence attitudes toward gender roles and education. Some interpretations of religious texts or cultural traditions may perpetuate gender inequalities in educational opportunities.

Policy and Legal Frameworks : The absence or inadequacy of policies and legal frameworks promoting gender equality in education can contribute to disparities. Conversely, strong policies and legal measures can help address and mitigate gender-based educational inequalities.

Media Influence : Media representations and portrayals of gender roles can shape societal perceptions and expectations. Negative stereotypes or biased representations can contribute to reinforcing traditional gender norms and expectations.

Institutional Challenges : Beyond cultural influences, institutional structures contribute significantly to gender disparities. Inadequate infrastructure, biased curricula, and insufficient support systems perpetuate inequalities within the educational system. An examination of these institutional challenges will uncover opportunities for reform and policy intervention to create a more inclusive learning environment.

Factors Influencing Gender Disparities :

- Cultural and societal norms affecting gender roles in education.
- Economic factors, such as poverty and accessibility to educational resources.
- Discrimination and bias within educational institutions.
- Role of family and community in shaping educational opportunities for boys and girls.
- Government Policies and Initiatives:
- Analyze the effectiveness of government policies aimed at reducing gender disparities in education.

Impact of Gender Disparities :

Gender disparities in education have far-reaching implications, contributing to broader issues such as economic inequality and social injustice. Here are some ways in which these disparities manifest and impact society :

Limited Economic Opportunities :

Occupational Segregation : Gender disparities in education often translate into occupational segregation, where women are concentrated in lower-paying jobs and industries. This perpetuates economic inequality as men dominate higher-paying professions.

Income Disparities : Women who face limited educational opportunities may end up with

lower levels of income, contributing to overall economic gender inequality. This income gap further extends into retirement savings, social security benefits, and overall financial well-being.

Cycle of Poverty :

Inter-generational Impact : When women have restricted access to education, they are more likely to live in poverty. This poverty, in turn, affects the educational opportunities of their children, creating a cycle of poverty that persists across generations.

Reduced Investment in Human Capital : The underutilization of female talent due to limited educational opportunities represents a loss of human capital. This not only hampers the economic development of the individual but also deprives society of the full range of skills and contributions that women could make.

Political and Social Marginalization :

Limited Representation : Education is a key factor in political participation. When women are denied education, they are less likely to be represented in decision-making processes, leading to policies that may not address their needs adequately.

Cultural and Legal Discrimination : Gender disparities in education often reflect broader cultural biases and discriminatory legal frameworks. These reinforce traditional gender roles and contribute to the perpetuation of social injustices, limiting women's agency and autonomy.

Health Disparities :

Limited Access to Healthcare Education : Educational disparities can affect health outcomes. Women with limited education may have less access to information about healthcare, leading to poorer health outcomes for themselves and their families.

Reproductive Rights : Limited education can contribute to a lack of awareness about reproductive rights and family planning, impacting women's ability to make informed choices about their health and family size.

Long-term Economic Impact :

Innovation and Economic Growth : Excluding a significant portion of the population from education stifles innovation and economic growth. When women are educated and given equal opportunities, they contribute significantly to the workforce and economic development.

Global Competitiveness : Countries that neglect gender disparities in education risk falling behind in the global economy. Closing the gender gap in education enhances a nation's competitiveness by tapping into the full potential of its population.

Challenges and obstacles in addressing gender disparities :

Addressing gender disparities in education is not only a matter of social justice but also an

essential step toward building a more equitable, prosperous, and innovative society. Efforts to promote equal access to education for all genders can yield significant long-term benefits. It is a complex task that involves addressing deep-rooted societal, cultural, economic, and institutional challenges. Here are some key challenges and obstacles :

Traditional Gender Roles : Societal expectations and norms often dictate specific roles for men and women, limiting opportunities for individuals to pursue their interests and careers freely. Gender Stereotypes: Preconceived notions about the capabilities and characteristics of men and women can result in biased judgments and discrimination.

Limited Educational Opportunities : In many places, girls and women may face barriers in accessing quality education, leading to a lack of skills and knowledge necessary for economic empowerment.

Gender Bias in Education : Gender bias in curriculum, teaching methods, and school environments can perpetuate stereotypes and limit educational outcomes.

Workplace Discrimination : Women often earn less than their male counterparts for similar work, reflecting systemic issues such as occupational segregation and discrimination.

Glass Ceiling : Women may encounter barriers to career progression and leadership positions, limiting their representation in decision-making roles.

Unequal Economic Opportunities : Limited access to financial resources, credit, and economic opportunities can hinder women's ability to start or expand businesses.

Occupational Segregation : Certain industries and professions may be dominated by one gender, limiting choices and perpetuating disparities.

Violence and Harassment : Violence against women is a pervasive issue globally and can be a significant barrier to their well-being and economic participation. Workplace Harassment and discrimination in the workplace can create hostile environments and limit career advancement.

Inadequate Legal Frameworks : Weak enforcement of existing laws and the absence of comprehensive legislation can contribute to the perpetuation of gender disparities.

Lack of Maternity and Paternity Support : Insufficient family-friendly policies can impact women's ability to balance family and career responsibilities.

Underrepresentation in Politics : Women may be underrepresented in political leadership positions, limiting their influence in shaping policies that address gender disparities.

Limited Participation in Peacebuilding : In conflict and post-conflict settings, women's voices may be marginalized, affecting the inclusivity of peacebuilding processes.

Digital Gender Divide : Unequal access to digital technologies can exacerbate existing

disparities, hindering women's access to information, education, and economic opportunities.

Compounding Disadvantages : The intersection of gender with other factors such as race, ethnicity, class, and sexual orientation can create unique challenges and exacerbate disparities.

Addressing these challenges requires a multifaceted approach that involves changes at the individual, community, institutional, and policy levels. Advocacy, education, legal reforms, and targeted interventions are essential components of efforts to achieve gender equality.

Strategies for future action and improvement of gender disparities in education :-

Addressing gender disparities in education requires a multifaceted and comprehensive approach that encompasses policies, cultural changes, and targeted interventions. Here are some strategies for future action and improvement :

Policy Reforms : It advocates for and implements policies that promote gender equality in education, including equal access to quality education for all genders. Ensure that policies address issues such as enrollment, retention, and completion rates for both girls and boys. Monitor and enforce policies to ensure compliance at all levels of the education system.

Investment in Infrastructure : Allocate resources to improve educational infrastructure, particularly in areas where there are disparities. Provide schools with adequate facilities, resources, and qualified teachers to create a conducive learning environment for all students.

Teacher Training and Sensitization : Conduct gender-sensitive training programs for teachers to raise awareness about unconscious biases and promote inclusive teaching practices. Encourage the development of teaching materials that challenge stereotypes and promote gender equality.

Promotion of STEM Education for Girls : Encourage and support girls' participation in science, technology, engineering, and mathematics (STEM) fields. Implement programs that highlight successful women in STEM to serve as role models and inspire girls to pursue these fields.

Community Involvement : Engage communities in conversations about the importance of education for all genders. Collaborate with local leaders, parents, and community members to address cultural and social barriers that may hinder girls' education.

Financial Incentives and Scholarships : Provide financial incentives, such as scholarships or grants, to encourage families to prioritize education for all their children, regardless of gender. Create targeted scholarship programs to support girls in pursuing higher education.

Safe and Inclusive Learning Spaces : Ensure that schools provide a safe and inclusive environment for all students, free from discrimination and violence. Implement measures to address issues like gender-based violence and harassment within educational institutions.

Data Collection and Monitoring : Establish comprehensive data collection systems to

monitor gender disparities in education. Use data to identify specific challenges and measure the impact of interventions, allowing for evidence-based decision-making.

Media and Awareness Campaigns : Launch media campaigns that challenge gender stereotypes and promote the value of education for all. Leverage various media platforms to disseminate information about the benefits of gender equality in education.

Collaboration and Partnerships : Foster collaboration among government agencies, NGOs, international organizations, and the private sector to pool resources and expertise. Share best practices and lessons learned to enhance the effectiveness of interventions.

By combining these strategies and tailoring them to specific contexts, societies can work towards achieving gender equality in education and fostering an environment where all individuals have equal opportunities to learn and succeed.

Recommendations :

Based on an in-depth analysis of gender disparities in Indian education, here are some recommendations that policymakers, educators, and stakeholders might consider to address and alleviate these disparities :

Enhance Access to Education : Implement measures to improve physical access to schools, particularly in rural and remote areas, to ensure that both girls and boys have equal opportunities to attend. Establish safe transportation options for girls, addressing concerns related to safety during travel to and from schools.

Community Engagement and Awareness : Develop and implement community outreach programs to raise awareness about the importance of education for both genders. Challenge cultural norms and stereotypes through community-based initiatives that promote gender equality in education. Financial Support: Provide financial incentives or scholarships specifically targeted at girls to encourage their enrollment and retention in schools. Address economic barriers by offering support for uniforms, books, and other educational expenses.

Teacher Training and Sensitization : Conduct training programs for teachers to sensitize them to gender-related issues and equip them with effective strategies for fostering a gender-inclusive learning environment. Encourage the recruitment and training of female teachers to serve as role models for girls.

Curriculum Revision : Review and revise the curriculum to ensure that it is free from gender biases and promotes equality. Include content that reflects diverse role models and career options for both genders.

Empowerment Programs : Implement empowerment programs for girls that go beyond

academics, focusing on life skills, leadership, and confidence-building. Collaborate with NGOs and community organizations to provide mentorship and support for girls in their educational journey.

Addressing Early Marriage : Advocate for and enforce policies that rise the legal age of marriage to ensure that girls have the opportunity to complete their education before getting married. Implement awareness campaigns highlighting the detrimental effects of early marriage on girls' education.

Monitoring and Evaluation : Establish a robust monitoring and evaluation system to track progress in reducing gender disparities in education. Regularly assess the impact of policies and interventions to make data-driven adjustments.

Technology Integration : Leverage technology to provide educational resources, especially in areas with limited access to traditional schooling. Introduce digital literacy programs that empower both girls and boys with essential skills for the modern world.

Collaboration and Partnerships : Foster collaboration between government agencies, non-governmental organizations, and community leaders to create a comprehensive and sustainable approach to addressing gender disparities in education.

These recommendations should be adapted to the specific cultural, social, and economic contexts of different regions in India. A multi-dimensional and collaborative approach involving various stakeholders is crucial for creating lasting change in the educational landscape.

In conclusion, addressing gender disparities in Indian education requires a multi-faceted approach that involves policy changes, community engagement, and a commitment to providing quality education for all. The empowerment of women through education is not only a matter of social justice but also a key driver for sustainable development and progress in the nation.

References :-

1. Farzaneh Roudi-Fahimi; Valentine M. Moghadam. "Empowering Women, Developing Society: Female Education in the Middle East and North Africa". Population Reference Bureau. Archived from the original on 2011-10-25. Retrieved October 29, 2011.
2. Herz, Barbara; Subbarao, K.; Habib, Masooma; Raney, Laura (1991-09-30). "Letting girls learn". World Bank Discussion Papers. doi:10.1596/0-8213-1937-x. ISBN 978-0-8213-1937-6. ISSN 0259-210X.
3. Jain U, et al. How much of the female disadvantage in late-life cognition in India can be explained by education and gender inequality. Scientific Reports. 2022;12(1):5684. doi:10.1038/s41598-022-09641-8.

4. Khoja-Moolji, Shenila (20 April 2015). "Suturing Together Girls and Education: An Investigation Into the Social (Re)Production of Girls' Education as a Hegemonic Ideology". Diaspora, Indigenous, and Minority Education. 9 (2): 87–107. doi:10.1080/15595692.2015.1010640. S2CID 143790091.
5. Osler, Audrey; Vincent, Kerry (2003-12-16). Girls and Exclusion. doi:10.4324/9780203465202. ISBN 9781134412839.
6. Osman, Abdal Monium Khidir (November 2002). "Challenges for integrating gender into poverty alleviation programmes: Lessons from Sudan". Gender & Development. 10 (3): 22–30.

+91 992854 99000
Shefali.mendiratta@mygyanvihar.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 64-66

Role of teacher in environment awareness and protection

Manju, Research Scholar
Dr. Renu kansal, Assistant professor
Department of education , Baba Mastnath University, Asthal Bohar (Rohtak)

Abstract :-

Environment plays an important role in healthy living and existence of life on earth. It consists of plants, animals, food, natural resources and so on. Ancient human lived in a natural environment and hence led a healthy life. But in recent times, the environment has been harmed due to human selfishness. Due to this many plants and animals species going towards in danger zone because of our mindless behaviour. To prevent further damage, we must control pollution , preserve natural resources , plants and reduce the use of harmful chemicals. To create awareness about this , " World Environment Day" is celebrated every year on june 5.

A teacher can play a important role in providing environment awareness among students. With the help of teachers , students gets knowlege and skills to solve issues related to environment.

Keywords - Teacher , Environment, Awareness, Protection.

Introduction :-

Environment awareness teaches the humans to respect and protect their natural environment and its resources. In this we recognize the importance of our environment, it's challenges and actions wee can take to protect it. Environmental awareness goes hand in hand with education. Teachers develop programs and motivate the students for environment awareness and protection.

According to UNESCO (1976) :-

Environmental education is a learning process that increases people's knowledge and awareness about the environment and associated challenges , develops the necessary skills and expertise to address the challenges and fosters attitudes motivations and commitments to make informed decisions and take responsible actions.

According to IUCN -

"Environmental education is the process of recognizing values and clarifying concepts in order to develop skills and attitudes necessary to understand and appreciate the interrelatedness among man , his culture and bio - physical surrounding. It also entails practices in decision making and self - formulating of a code of behaviour about issues concerning environmental quality."

Misha (1993) Environmental education appears to be a process that equips human beings with awareness, knowledge, skill and comitment to improve environment.

R.A Sharma (1996) says Environmental education refers to the awareness of physical and cultural environment and perceive its rolevance for real life situation.

Teacher's role is to transfer knowledge and act like a faciliator or a role model for students. Role of teacher in fostering environment awareness is multi facted and shaping the attitude, behaviour of students towards the environment. In present, environment issues are increasing rapidly , educators play a role in instilling a sense of responsibility and ecological conciousness.

1. Teachers have responsibility to informed students about current environmental issues by attending conferences, workshops etc. and collaborating with other teachers for develop their knowledge and skills.
2. In classroom, teacher make a discussion on environment resources , global warming , climate change to help students understand their role as global citizens with responsibility.
3. Teachers should guide students , the impact of human activities on environment with their real life examples.
4. Teachers can build environmental literacy by adding relevant content and develop critical thinking skills which are needed to evaluate environmental information and make a positive decision.
5. Teachers have responsible for integrating environmental education into school curriculum. Due to this teacher can develop students holistic understanding of the environment.
6. Teacher should promoting sustainable practices within school environment. By conducting recycling programe, decomposing waste material etc. to give hands on experience to students.
7. Teachers help students to analyzing and evaluating the form of pollution in physical , social and psychological form of environment.
8. In order to study positive and negative aspects of human activities on environment, students can get help from the teacher of his respective subject.
9. Teachers should conduct field visits to industries and other local areas to fuel the need and importance of environmental protection.

10. Teachers can arrange a motivational lectures for students to develop hygenic condition and health principles.
11. Teachers should create awareness on renewable and non renewable resources.
12. Teachers develop through practice that links the studenst with community , attitudes and values.
13. Teachers - Students could collaborate with local NGO's to organizing small cleaning events of natural areas.

Conclusion -

The duties and responsibilities of teachers on environmental awareness are diverse and impactful. The goal is not only to impart knowledge in students but also develop values , attitudes and positive behaviours that inspire them lifelong. Due to this students become a responsible global citizens, protect and conserve the environmental resources for future generations. So teachers must educate students and motivate them to develop the skills of solving environmental problems systematically.

References :-

1. Role of Teacher Educators in Environment Education. Wgbis.ces.iisc.erent.in
2. Environmental Awareness Through Education Shaikshik (An International Journal of Education) SPIJE, ISSN, 2231-2323) print 2231-2404 (online), Vol.4, No. 2, July,204, IP-9-13
3. Sustainable Development- Role of Teacher to Protect Environment. Indian Journal of Educational Studies: An interdisciplinary journal 2015, Vol.2 NO. 1, ISSN No. 2349-6908.
4. Mohan J. Environmental pollution and management. Ashish Publishing House, New Delhi.
5. NCERT. Environmental orientation to school education: NCERT new Delhi, 2006
6. Sailaja S. " Role of Teachers in Environmental Education" : University News, new Delhi. Vol. 44 no. 12, march 2006.
7. Daniel J. (2007). Education for Sustainable Development: Reaching the Masses. Fourth International Conference on Environmental Education, Ahemdabad, India.
8. Kaur, R. & M. (2009) Environmental awareness of secondary and senior secondary students. Journal of All India Association for Educational Studies, 21 (1), 83-86.

Name- Manju
Designation - Research scholar, Department of Education
Address - V. P. O. Kathura, Tehsil - Gohana, State- Haryana
Email- 7236manju.manju@gmail.com
Mobile No. – 7404357236

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 67-70

अंतरिक्ष वैज्ञानिक साहित्य में चन्द्रलोक

एम. सुब्रमण्यम
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम, आंध्र प्रदेश–530003

प्रस्तावना :-

आज का वैज्ञानिक मानव धरती के सारे रहस्य पा लेने के बाद, उसकी सीमा से ऊब अब अंतरिक्ष में विचरण करने लगा है। हमारा देश भी इस दिशा में पीछे नहीं। विकासशील देश होते हुए भी अंतरिक्ष–विज्ञान के क्षेत्र में कुछ अदभुत करिश्में दिखाकर भारत ने विश्व के समुन्नत देशों को भी कई बार चकित–विस्मित कर दिया है। रूस और अमेरिका के बाद भारत ही इस क्षेत्र में विशेष चमत्कार दिखा सका है। यह अवश्य है कि ये चमत्कार दिखाने के लिए भारत को उपर्युक्त दोनों देशों से थोड़ी–बहुत सहायता अवश्य लेनी पड़ी है, फिर भी यह सत्य है कि अंतरिक्ष–विज्ञान के क्षेत्र में भारतीय वैज्ञानिकों ने अपनी अदभुत प्रतिभा और कार्य–क्षमता का परिचय देकर इस देश की वैज्ञानिक परंपराओं को विकास का नया आयाम प्रदान किया है।

भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम 61 साल पहले 1962 में डॉ. विक्रम ए. साराभाई के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति (INCOSPAR) की स्थापना के साथ प्रारंभ हुआ था। इसी वर्ष तिरुवनंतपुरम के पास थुम्बा इक्वेटोरियल रॉकेट लॉन्चिंग स्टेशन भी स्थापित किया गया। भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम दुनिया के सबसे पुराने अंतरिक्ष कार्यक्रमों में से एक है और इसने राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत ने अब तक 125 अंतरिक्ष यान मिशनों को सफलतापूर्वक पूरा किया हैं, जिनमें तीन नैनो उपग्रह और एक माइक्रो उपग्रह, 94 प्रक्षेपण मिशन, दो पुनः प्रवेश मिशन, 34 देशों के 431 विदेशी उपग्रह, विद्यार्थियों के 15 उपग्रह और भारतीय निजी कंपनियों द्वारा निर्मित तीन उपग्रह शामिल हैं। इनमें अलग–अलग पृथ्वी की निचली कक्षाओं (LEO) और भूतुल्यकालिक पृथ्वी कक्षाओं (GEO) में 53 भारतीय उपग्रह शामिल हैं।

भारत ने मंगल और चंद्रमा के लिए भी मिशन शुरू किए हैं। हाल ही में भारत ने चंद्रयान–3 को सफलतापूर्वक लॉन्च किया है और चंद्रमा की सतह पर उतरने वाला दुनिया का चौथा देश और चंद्रमा के दक्षिणी ध्रूव के पास 'विक्रम' लैंडर और 'प्रज्ञान' रोवर को उतारने वाला पहला देश बन गया है। इसके अलावा 2 सितंबर 2023 को भारत ने सूर्य का अध्ययन करने के लिए आदित्य–एल–1 मिशन लॉन्च किया। उम्मीद है कि यह उपग्रह जनवरी 2024 में किसी समय सूर्य और पृथ्वी के बीच स्थिर रहने के लिए अपने निर्धारित स्थान, लैग्रेंज–1 (एल–1) पर पहुँच जाएगा। भारत जल्द ही एक भारतीय नागरिक को 2023 के अंत में या 2024 की शुरुआत में पृथ्वी की निचली कक्षाओं (LEO) में भेजने की योजना बना रहा है। इस मिशन को 'गगनयान' के नाम से जाना जाता है।

चंद्र अभियान :–

भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम बहुत कम कीमत पर मिशन लॉन्च करने में अपनी विशेषज्ञता के लिए भी जाना जाता है। हम यहाँ चन्द्रमा पर किये गए वैज्ञानिक अभियानों की पकड़ को समय के अनुरूप देखते हैं–

चंद्रयान–1 : भारत का पहला चंद्र अभियान 22 अक्तूबर, 2008 को सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, श्रीहरिकोटा से चंद्रयान–1 सफलता पूर्वक प्रक्षेपित किया गया। यह अंतरिक्ष यान 100 km की ऊँचाई पर एक कक्षा में चंद्रमा की परिक्रमा करता रहा जो चंद्र सतह के रासायनिक, खनिज और फोटो–भूगर्भिक मानचित्रण जैसे महत्वपूर्ण कार्यों का संचालन करता है। अंतरिक्ष यान में 11 वैज्ञानिक उपकरण लगे हुए थे, जिसमें भारत सहित संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, स्वीडन और बुल्गारिया ने योगदान दिया था। इस अभियान में प्रयुक्त मून इम्पैक्ट प्रोब (एम.आई.पी.) ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के आसपास पानी की उपस्थिति के संकेत प्रदान किए। इस शोध ने भारत के चंद्र अभियान को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। अभियान ने एक वर्ष के अतंर्गत अपने अधिकांश लक्ष्यों को प्राप्त किया। मई 2009, में इसकी कक्षा को 200 km तक बढ़ा दिया गया था। 29 अगस्त, 2009 को अंतरिक्ष यान के साथ संचार खोने के बाद मिशन को समाप्त मान लिया गया।

चंद्रयान–2 एक तकनीकी सफलता : चंद्रयान–1 अभियान की उल्लेखनीय सफलता के बाद भारत चंद्र अन्वेषण में आगे बढ़ा। चंद्रयान–2 वर्ष 2019 में प्रक्षेपित किया गया जिसमें इसरो और अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष संस्था के पिछले अभियानों की तुलना में एक महत्वपूर्ण तकनीकी सफलता को इस अर्थ में दर्शाया गया कि इसका उद्देश्य चंद्रमा के दक्षिणी ध्रूव पर सॉफ्ट लैंडिंग और वैज्ञानिक अन्वेषण क्षमताओं का प्रदर्शन करना था। इसमें एक ऑर्बिटर, लैंडर विक्रम और रोवर प्रज्ञान शामिल थे, जिसका लक्ष्य चंद्रमा के न केवल एक क्षेत्र बल्कि सभी क्षेत्रों की खोज करना था जिसमें चंद्रमा के एक्सोस्फीयर, सतह और उप–सतह को जोड़ना और साथ ही एक ही मिशन में इन विट्रो अवलोकनों के माध्यम से चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव का अध्ययन करना था। चंद्रमा की उत्पत्ति और विकास का पता लगाने के लिए चंद्रमा की सतह का व्यापक मानचित्रण आवश्यक था। इसके अतिरिक्त चंद्रयान–1 द्वारा खोजे गए जल के अणुओं के चंद्र सतह पर खनिजों की खोज के लिए चंद्रमा का मानचित्रण करता चंद्रयान–2 का ऑर्बिटर साक्ष्य के लिए सतह पर, सतह के नीचे और सूक्ष्म चंद्र वातारण में जल के अणुओं के वितरण के अध्ययन की आवश्यकता थी। 22 जुलाई, 2019 को इसरो ने अपने सबसे शक्तिशाली लॉन्च वाहन रॉकेट, जी.एस.एल.वी.– एम.के.3–एम.के.1 को चंद्रयान–2 को अपनी प्रारंभिक पृथ्वी की कक्षा में प्रक्षेपित किया।

इसके पश्चात इसके प्रक्षेपवक्र को ऊँचा करने के लिए पूर्वाभ्यास की एक श्रृंखला निष्पादित की गई। 14 अगस्त 2019 को ट्रांस लूनर इंसर्शन (टी.एल.आई.) के बाद अंतरिक्ष यान पृथ्वी की कक्षा से अलग हो गया और एक प्रक्षेपक्र पर चला गया जो इसे चंद्रमा की ओर ले गया। चंद्रयान–2, 20 अगस्त 2019 तक सफलतापूर्वक चंद्र कक्षा में पहुँच गया था जहाँ इसने 100 ाउ की ऊँचाई पर चंद्रमा का चक्कर लगाया था। इसकी चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग की तैयारी में 2 सितंबर 2019 को विक्रम लैंडर को ऑर्बिटर से अलग कर दिया गया था। इसके बाद लैंडर विक्रम के लिए अपनी कक्षा को समायोजित करने और इसे चंद्रमा के चारों ओर एक गोलाकार पथ में स्थित करने के लिए दो डी–ऑर्बिट पूर्वाभ्यास किए गए जिसमें 100 किलोमीटर से 35 किलोमीटर तक की ऊँचाई बनाए रखी गई। लैंडर विक्रम की लैंडिंग योजना के अनुसार 7 सितंबर 2019 को सुबह–सुबह हुई। पूरा देश इस ऐतिहासिक घटना का इंतजार कर रहा था। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी

और अंतरिक्ष विज्ञान और अनुसंधान के अनेक गणमान्य व्यक्ति बेंगलुरु में इसरो टेलीमेट्री ट्रैकिंग एंड कमांड नेटवर्क (आई.एस.टी.आर.ए.सी.) केंद्र में इंतजार कर रहे थे। लैंडर विक्रम 2.1 km की ऊँचाई तक पहुँचने तक सामान्य रूप से प्रदर्शन कर रहा था। दुर्भाग्य से, इसी बिंदु पर लैंडर और बेंगलुरु में ग्राउंड स्टेशनों के बीच संचार कट गया और लैंडर संभवतरू बहुत तेजी से चंद्र सतह पर टकराया। यह भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम में एक ऐतिहासिक बिंदु था। माननीय प्रधानमंत्री ने इस पर भी इसरो वैज्ञानिकों को अभियान में उनके प्रयासों के लिए बधाई दी और उन्हें प्रोत्साहित किया और चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग और अन्य आगामी अभियानों के लिए भारत सरकार की ओर से पूर्ण समर्थन का भरोसा दिया। इस बीच ऑर्बिटर, जिसे उसकी निर्धारित चंद्र कक्षा में रखा गया था, ने चंद्रमा के इतिहास के बारे में हमारे ज्ञान का विस्तार करने और चंद्रमा के ध्रुवीय क्षेत्रों में खनिजों और पानी के अणुओं के वितरण का मानचित्रण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आठ उन्नत वैज्ञानिक उपकरणों से सुसज्जित ऑर्बिटर का कैमरा आज तक के किसी भी चंद्र अभियान का उच्चतम–विभेदन कैमरा (0.3 मीटर के विभेदन के साथ) होने के नाते विशिष्ट है। आशा है कि इस कैमरे के उच्च गुणवत्ता वाले छायाचित्र वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय के लिए बहुमूल्य होंगे। ऑर्बिटर को मूल रूप से एक साल के अभियान के लिए योजनाबद्ध किया गया था लेकिन इसरो के सटीक प्रक्षेपण और अभियान प्रबंधन के कारण ऑर्बिटर अभी भी परिचालन में है (सितंबर 2023) और अब इसका परिचालन संबंधी जीवनकाल 2026 तक बढ़ा दिया गया है।

चंद्रयान- 3 प्रोन्नत चंद्र अन्वेषण : चंद्रयान–3 मिशन की सफलता के बाद इसरो अब चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित लैंडिंग और घूमने की अपनी एंड–टू–एंड क्षमता का प्रदर्शन करने में सफल हो गया है। इस अंतरिक्ष यान को 14 जुलाई 2023 को एस.डी.एस.सी. शार से भारत के सबसे भारी रॉकेट, एल.वी. एम–3, एम–4 पर लॉन्च किया गया। पूर्ववर्ती अभियान से सीखते हुए इस अभियान की सफलता सुनिश्चित करने के लिए इसे विफलता आधारित कार्यनीतियों पर ध्यान केंद्रित करने की क्षमता के साथ निर्मित किया गया। ऑर्बिटर के रूप में चंद्रयान–2 अभी भी संचालन में है। चंद्रयान–3 मिशन में कोई ऑर्बिटर नहीं है; इसके बजाय इसमें पूर्ववर्ती ऑर्बिटर से प्राप्त आँकड़ों का उपयोग किया गया। इसमें केवल दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट–लैंडिंग के लिए एक लैंडर और चंद्रमा की सतह का अध्ययन करने के लिए एक रोवर है। लैंडिंग क्षेत्र का विस्तार किया गया जिससे लैंडर को 4 कि.मी. x 2 कि.मी. के क्षेत्र के अंदर सुरक्षित रूप से छूने की अनुमति मिली, पूर्ववर्ती मामले के विपरीत, जहाँ यह 500 मीटर x 500 मीटर था।

चंद्रयान- 3 पेलोड : चंद्रयान–3 में एक स्वदेशी प्रणोदन मॉड्यूल, एक लैंडर मॉड्यूल और एक रोवर शामिल है जिसका उद्देश्य इंटरप्लेनेटरी अभियानों के लिए आवश्यक नई प्रौद्योगिकियों का विकास और प्रदर्शन करना था। प्रणोदन मॉड्यूल ने लैंडर और रोवर विन्यास को 153 कि.मी. x 163 कि.मी. की चंद्र कक्षा में पहुँचाया द्य यह एक बॉक्स जैसी संरचना है जिसमें एक बड़ा सौर पैनल और एक इंटरमॉड्यूलर एडाप्टर शंकु है जो लैंडर के लिए एक माउंटिंग संरचना के रूप में काम करता है। इसके अलावा प्रणोदन मॉड्यूल ने एक 'शेप' पेलोड भी ले लिया। विक्रम लैंडर मॉड्यूल को चंद्रमा की सतह पर सॉफ्ट–लैंडिंग के लिए निर्मित किया गया। इसमें चार लैंडिंग पैरों और चार लैंडिंग थ्रस्टर्स के साथ एक बॉक्स जैसी संरचना भी। यह साइट पर विश्लेषण के लिए प्रज्ञान रोवर और विभिन्न वैज्ञानिक उपकरणों को ले गया।

उपसंहार : चंद्रयान–3 की सफलता और इसरो की उपलब्धियों से उत्साहित प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने

दक्षिण अफ्रीका और ग्रीस की दो देशों की यात्रा के बाद स्वदेश लौटते समय इसरो के वैज्ञानिकों से व्यक्तिगत रूप से मिलने के लिए पहले बेंगलुरु जाने का फैसला किया। उन्होंने इससे जुड़े सभी लोगों को बधाई दी और आगामी गगनयान मिशन एवं सौर मिशन आदित्य–एल–1 के लिए सरकार की तरफ से पूर्ण समर्थन का भरोसा दिया। इसरो के वैज्ञानिकों के साथ अपनी बैठक के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने 23 अगस्त को 'राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस' घोषित किया। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रूव पर विक्रम लैंडर की सफल सॉफ्ट लैंडिंग के उपलक्ष्य में हर साल इसे मनाया जाएगा।

माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आई. एस. टी. आर. ए. सी. की अपनी यात्रा के दौरान उस स्थल को 'शिव शक्ति पॉइंट' नाम दिया जहाँ विक्रम लैंडर (चंद्रयान–3 मिशन) ने 23 अगस्त, 2023 को अपनी सॉफ्ट लैंडिंग के बाद चंद्रमा की सतह को छुआ था। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि जिस क्षेत्र में दुर्भाग्य से चंद्रयान–2 लैंडर 6 सितंबर, 2019 को दुर्घटनाग्रस्त हो गया था, उसे अब 'तिरंगा पॉइंट' के नाम से जाना जाएगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. दा टाइम्स ऑफ़ इंडिया, 15 सितम्बर, 2020
2. दा वायर, 14 नवम्बर, 2019
3. अंतरिक्ष में बढ़ते कदम, राकेश शुक्ला।
4. विज्ञान–बिज्ञान–अंतरिक्ष, जयवंत ठाकुर।

दूरभाष संख्या – 7075553228

ई मेल – mangipudisiri1986@gmail.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
Vol. 12, Issue 1-2
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
पृष्ठ : 71-80

हेनरी लुईस विवियन डिरोजियों के विचारों का उत्तरोत्तर विकास

सरिता, शोध छात्रा,
अपर्णा वत्स (एसोसिएट प्रोफेसर)
इतिहास विभाग, रघुनाथ गर्ल्स डिग्री कॉलिज, मेरठ।

हेनरी लुईस विवियन डिरोजियो एक सर्वश्रेष्ठ अध्यापक थे। हिन्दू कॉलेज में उन्होंने कम उम्र में एक महान सफलता अर्जित की। अपने शिष्यों को उन्होंने स्वतंत्र चिंतन की जो विरासत प्रदान की वह आगे चलकर बंगाल पुनजार्गरण के क्षेत्र में मील का पत्थर सिद्ध हुई और बंगाल में एक अतिवादी विचारधारा का जन्म हुआ। लेकिन बंगाली समाज का तत्कालीन प्रजा इन विचारों को सहज स्वीकार करने को उद्धत नहीं थी परिणामस्वरूप उन्हें कॉलेज से त्याग–पत्र देना पड़ा। उनके शिष्यों ने उनकी विचारधारा को और अग्रसरित किया। उनके कुछ प्रमुख शिष्य तत्कालीन समाज में डिरोजियन्स के नाम से प्रसिद्ध थे। उनके विचारों एवं उनके योगदान के रूप में हम हेनरी लुईस विवियन डिरोजियो के विचारों का उत्तरोत्तर विकास देखते हैं :–

कृष्ण मोहन बनर्जी :–

कृष्ण मोहन बनर्जी जो उम्र में डिरोजियो से बड़े थे प्रत्यक्ष रूप से डिरोजियो के शिष्य नहीं थे। लेकिन कृष्ण मोहन डिरोजियो की विचारधारा एवं स्वतंत्र चिंतन से बहुत प्रभावित थे। कृष्ण मोहन स्वयं दर्शनशास्त्र एवं साहित्य में सिद्धहस्त थे। साथ ही वे हिन्दू लिपियों एवं संस्कृत भाषा के ज्ञाता भी थे। वे पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान, दर्शन के विभिन्न आयामों द्वारा भारतीय समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता, अंधविश्वास का अन्त करने के प्रबल समर्थक थे। उनका कहना था;–

''ब्राह्मणवाद के वर्तमान ढुलमुल रवैय्ये को यूरोपीय ज्ञान के प्रसार के माध्यम से ही समाप्त किया जा सकता। यह दर्शाता है कि शताब्दियों के अथक प्रयासों से जो ताना–बाना बुना गया उस पर कुठराघात है, जिससे यह कभी उभर नही सकता। इससे जल्द या देर से एक क्रान्ति का जन्म होगा जिससे मनु और व्यास की व्यवस्थाएँ टूटेगी एवं गौतम कपिल के दर्शन को स्वीकृति मिलेगी।''[1]

कृष्ण मोहन बनर्जी का मानना था कि ना केवल यूरोपीय शिक्षा प्रणाली के द्वारा बल्कि भारतीय समाज में उभरी स्वतंत्र विचारधारा के द्वारा भी परम्परावादी भारतीय समाज में परिवर्तन आएगा। उन्होंने लिखा;– ''इसके स्वीकृत अधिकारों पर प्रश्न चिह्न लगाया जाता है, इसके प्रतिबंधों का उपहास किया जाता है, इसका दर्शन विकृत है, अर्थ व्यवस्था उन्नत नहीं, इनके निषेधों का सामान्य रूप से उपहास किया जाता है।''[2]

कृष्ण मोहन बनर्जी जैसा कि यूरोपीय पुनर्जागरण के अन्य विद्वान विभिन्न भाषाओं में पारंगत थे बांग्ला, हिन्दी, उड़ीया, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी भाषा के ज्ञाता थे। यद्यपि डिरोजियो के विचारों में उनकी गहरी आस्था थी लेकिन वे पुरातन साहित्य एवं विचारों में गहन रूचि लेते थे एवं उनका अध्ययन करते थे।

''उदारवादी अंग्रेजी शिक्षा विज्ञान इतिहास व दर्शन के मध्य संस्कृत का अध्ययन संस्कृत के दार्शनिक तत्वों पुरातन साहित्य के संरक्षण, मातृ भाषा में संशोधन के लिए किया जाता है। आपके पास यूरोप एवं एशिया के विद्वान हैं जो बंगाल के युवाओं को प्रशिक्षण देते थे ताकि भास्कर एवं शंकराचार्य पर भी चिंतन किया जा सके, तकि भारत का पुरातन ज्ञान विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध हो व पुरातन ज्ञान मींसासा का वे भी अध्ययन कर सके तथा वे अरस्तू व प्लेटो से उनकी तुलना करते हैं, और बेकन के दर्शन व न्यूटन के सिद्धान्तों के द्वारा उन्हें संशोधित करते हैं। ब्रिटिश भारत के कॉलिजिएट प्रणाली में यह संस्कृत व प्राच्य भाषाओं के अध्ययन के लिए अति उत्तम व्यवस्था है।..... शिक्षा का अर्थ केवल पाणिनी या अमारसी या 'हेमचन्द्र' को कंठस्थ करना या पूर्व के दार्शनिकों की चर्चा मात्र नही है। यह सभी निसंदेह अपने समय में उच्चकोटि का मूल्य रखते थे और हमारे सामाजिक संस्थान में स्थान रखते थे। फिर भी यह सब उन्नीसवीं शताब्दी की ब्रिटिश शिक्षा व्यवस्था के सबसे उत्तम भाग का समावेशन नहीं करती।''[3]

यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि ऐसे ही विचार बंगाल के प्रसिद्ध शिक्षाविदों के भी रहे जिनमें राजा राम मोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर भी शामिल हैं। कृष्ण मोहन ने अपने पत्र ''देशीय स्त्री की शिक्षा'' (1840) में स्त्रियों को शिक्षा देने, उनके, अधिकारों एवं स्वतंत्रता के लिए आग्रह किया। उन्हें उस पत्र के लिए सम्मानित किया गया।

कृष्ण मोहन बनर्जी एक राष्ट्रभक्त व्यक्ति थे, उन्हें भारत के प्राचीन गौरव एवं संस्कृति पर बहुत गर्व था। जब 'इंडियन एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन ऑफ साइंस' की स्थापना महेन्द्र लाल सरकार ने की तो बनर्जी ने अत्यन्त प्रसन्नता दर्शायी व लिखा; ''यदि वैज्ञानिक सत्य की खोज में जो अब तक संसार में अज्ञात थे यह योजना सफल रही तो सर्वाधिक प्रसन्नता मुझे होगी। यदि यह योजना भारतीय गैलिलियों, भारतीय न्यूटन, भारतीय 'हर्शेल' को जन्म दे सके और नई खोजों को जो भारतीयों के नाम से जानी जाए भाषाविदों द्वारा नए सिद्धान्त जोड़े जाए भारतीय भाषाओं में नए आयाम जोड़े जाए तो उस दिन सर्वाधिक प्रसन्न होने वाला व्यक्ति मैं स्वयं होऊंगा।''[4]

उनके शिक्षा संबंधी विचार उनके पत्र व जरनल 'द एनक्वारर' में प्रकट होते हैं। डिरोजियो के सभी अनुयायी सत्य की खोज, दार्शनिक तत्वों को जनमानस के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए सदैव प्रयासरत रहते थे। वे प्राचीन ग्रन्थों के माध्यम से देशवासियों को सत्य से परिचित कराते थे जिससे वे आत्म उन्नति कर सके। इसके लिए उन्होंने बहुत से ग्रन्थों का अनुवाद किया, टीकाएँ लिखी। कृष्ण मोहन बनर्जी की साहित्यिक उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं :–

1. 'दि परस्क्यूटिड''–1831 में प्रकाशित होने वाले पंचअंकीय नाटक।
2. दि नेटिव फीमेल एजुकेशन–1841 में यह पत्र प्रकाशित हुआ। इसके लिए उन्हें सम्मानित किया गया।
3. विद्याकल्पद्रुम–द्विभाषिक विश्वकोष यह 13 अंकीय विश्वकोष था। इसमें पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान एवं शिक्षा का सरल भाषा में प्रस्तुतीकरण किया गया ताकि जनमानस लाभान्वित हो सके।

शरददर्शन संवाद–1867 में प्रकाशित इसमें छः दार्शनिकों के दर्शन का विवेचन है।

कृष्ण मोहन बनर्जी द्वारा संपादित संस्कृत पुस्तकों का विवरण इस प्रकार है

पुराण संकलन–1) प्रथम अंक मार्कण्ये पुराण का अंग्रेजी अनुवाद 1851

(ii) श्री नारद पंचरात्रंग–संस्कृत ग्रन्थों का अंग्रेजी अनुवाद।

7. ऋग्वेद संहिता–अंग्रेजी में व्याख्या प्रस्तुत की।

8. हिन्दू दर्शन पर संवाद–न्याय, सांरण्य व वेदान्त दर्शन का अंग्रेजी अनुवाद, 1861 वेदों से संबद्ध टिप्पणियाँ प्रस्तुत की।

9. एरियन विटनेस 1875 वेदों व बाइबिल में एकेश्वरवादी दर्शन पर लेख।

इस प्रकार कृष्ण मोहन बनर्जी अपने लेखन के माध्यम से समाज में चेतना जाग्रत करना चाहते थे।

कृष्ण मोहन बनर्जी जिन संस्थानों से संबद्ध थे उनका विवरण इस प्रकार है –

1. 1829 में हिन्दू कॉलेज से उत्तीर्ण होकर निकले।
2. पातालदेश में हेयर स्कूल में बतौर एक शिक्षक कार्यरत थे यहाँ वे हेनरी डेरोजियो के सिद्धान्तों से छात्रों को अवगत कराते थे।
3. क्राइस्ट चर्च में रेवरेण्ड थे –1852
4. बेथ्यून सोसाइटी में उपाध्यक्ष 1852–1885
5. बिशप कॉलेज में शिक्षक 1852–1867
6. फेमली लिटरेरी सोसाइटी के संस्थापक
7. बंगाल एशियाटिक सोसाइटी के सदस्य
8. कलकत्ता विश्वविद्यालय की सीनेट के सदस्य 1858
9. कला संकाय में डीन 1867–68
10. डॉक्टरेट ऑफ लॉ 1876
11. ऑक्स्फोर्ड यूनीवर्सिटी में प्रोफेसर के लिए नियुक्त लेकिन उन्होंने नियुक्ति नही ली।
12. रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, 1864 से संबद्ध
13. भारत सभा के अध्यक्ष, 1878–1855

ताराचंद चक्रवर्ती :-

ताराचंद चक्रवर्ती 1822 में हिन्दू कॉलेज में पढ़े। ये भी उम्र में डिरोजियों से बड़े थे। अंग्रेजी भाषा में ताराचंद सिद्धहस्त थे। 'कौमुद्री' व 'चंद्रिका' का अनुवाद करने हेतु वे 'कलकत्ता जनरल' में संपादक नियुक्त हुए। एच0 एच0 विल्सन के साथ इन्होंने कार्य करना शुरू किया ताकि वे पुरातन भारतीय ग्रंथों का अनुवाद प्रकाशित कर सके। जोन्स के साथ मिलकर इन्होंने मनुस्मृति के अंग्रेजी अनुवाद संपादित किए।

1827 में इन्होंने अंग्रेजी–बांग्ला शब्दकोश भी तैयार किया। इस शब्दकोश का स्थानीय जनता के लिए विशेषकर विद्यार्थियों के लिए अति महत्व था। वे पातालदंग के 'हेयर स्कूल' में अध्यापक भी नियुक्त हुए। वे एकेडेमिक एसोसिएशन के सक्रिय सदस्य भी थे जहाँ उन्होंने डिरोजियो के दर्शन को आत्मसात किया। उन्होंने सरकारी पद भी ग्रहण किया। उन्होंने एक मुंशी के रूप में कार्य किया लेकिन जल्द ही इस पद से त्यागपत्र दे

दिया। 1828 में स्थापित ब्रह्म समाज के ताराचंद प्रथम सचिव बने। 1843 में उन्होंने 'द कुली' नामक जनरल का संपादन किया। इसमें बहुत से विद्ववत्तापूर्ण लेखों का प्रकाशन होता था। 'कुली', 'बंगाल स्पेक्टेटर', 'हिन्दू पायनियर' के लिए उन्होंने बहुत से लेखों का संपादन किया। उन्होंने तत्कालीन बंगाल समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, कुरीतियों, रूढ़िवादिता पर अपने लेख लिखे वे जनता को जागरूक कर सके।

ताराचंद एक शिक्षाविद भी थे उनका मानना था कि शिक्षा पर सरकारी नियंत्रण होना चाहिए जिससे कि शिक्षा का प्रसार हो सके। उनका मानना था कि प्रबुद्ध सरकार ही उचित शिक्षा अपनी प्रजा को प्रदान कर सकती है। शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करती है। शिक्षा आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। सांख्यिकी का प्रयोग करते हुए ताराचंद ने अपने लेखों में लिखा कि शिक्षा एवं अपराध का महत्वपूर्ण सम्बन्ध है। शिक्षा के प्रसार ने अपराधों में कमी की। शिक्षित व्यक्ति की मानसिकता बिलकुल भिन्न होती है वह तथ्यों पर तर्क करता है।

ताराचंद चक्रवर्ती का मानना था कि शिक्षा व्यक्ति के समग्र विकास का साधन है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य का आध्यात्मिक विकास होता है। शिक्षा का लक्ष्य नागरिकों का चरित्र निर्माण करना है। और सरकार का भी यह लक्ष्य होना चाहिए कि वे अपने नागरिकों की उचित शिक्षा व्यवस्था करे। इस सम्बन्ध में वे लिखते हैं–

जब फ्रांस के पेरिस में स्थापित बहुशिल्पी विद्यालयों व अन्य संस्थाओं में दो यांत्रिक कला, कृषि, साहित्य, मनोरम दृश्य जो कला का भाग है दी जाने वाली व्यवहारिक वे सैद्धान्तिक शिक्षा नेविगेशन किलेबन्दी और सभी विषय जो व्यवसाय व मनुष्य के लाभ के लिए उपयोगी है का स्मरण कराते हैं तो हमें शिक्षा का महत्व नजर आता है।''[5]

डिरोजियो भी ना केवल आर्ट्स या साइंस में शिक्षा के पक्षधर नहीं थे बल्कि व व्यवसायिक शिक्षा पर भी जोर देते थे। इसलिए उनके शिष्यों को निजी प्रयासों से 'मेकेनिकल इंस्टीट्यूट' की स्थापना 1839 में की ताकि व्यवहारिक व व्यवसायिक शिक्षा प्रदान की जा सके। पाठशालाओं की दयनीय स्थिति को सुधारा जाना अति आवश्यक है। और प्रत्येक गाँव में बांग्ला भाषी विद्यालयों की स्थापना की जानी चाहिए।[6]

ताराचंद का विचार था कि भारतीय युवाओं के लिए 'पाठ्यक्रम में आधुनिक विज्ञान व दर्शन का समावेशन होना चाहिए, क्योंकि प्राचीन ज्ञान का जो सागर है अब वह दूषित हो गया, इसे पुनर्जीवित किया जाना चाहिए। यद्यपि ताराचंद एक डिरोजियन थे तब भी वे हिन्दू कॉलेज के पाठ्यक्रम से पुरातन नैतिक दर्शन के पूर्णतया निषेध के विरोधी थे। वे लिखते हैंः–

''वह जो मन मस्तिष्क के ऊपर विराजमान है,? वह पृथ्वी पर सच्चा और वैध है, वह भगवान का सहयोगी शिक्षक कहलाता है।[7]

उनका विश्वास था कि एक प्रभावी शिक्षक बनने के लिए जीवनभर एक विद्यार्थी बने रहना चाहिए। एक व्यक्ति जिसने कुछ नया नहीं सीखा, उससे आगे बढ़ना व विकास करना भी छोड़ देना चाहिए। एक शिक्षक विद्यार्थी बनकर नवीन ज्ञान ग्रहण करें और उसे ज्ञन से वह अपने छात्रों को लाभान्वित कर सकता है। इसके लिए समय–समय पर शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण स्थापित किये जाए। साथ ही स्वाध्याय के द्वारा भी शिक्षक नवीन विचारों एवं तथ्यों से अवगत हो सकता है।

जो दीपक जलता नही वह रोशनी भी प्रदान नही कर सकता। ताराचंद के अनुसार एक शिक्षक विद्यार्थियों

के मस्तिष्क को जाग्रत, निर्देशित व प्रकाशित कर सकता है उनके आध्यात्मिक गुणों का विकास कर सकता है। और उन्हें विचार व भावाभिव्यक्ति के नए संसार के लिए तैयार कर सकता है।''[8]

ताराचंद चक्रवर्ती एक अध्यापक के गुणों से परिचित थे। उनका मानना था कि विषय के प्रति गहन समझ व समपर्ण एक शिक्षक के आवश्यक गुण है। लेकिन तत्कालीन बंगाल में विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी वे मुश्किल से ही दो वक्त का खाना खा पाते थे। ऐसी स्थिति में उनका मानना कि विद्यार्थियों को शिक्षा, ज्ञान–विज्ञान व तकनीकी की शिक्षा देना व्यर्थ हो सकता है। इसलिए वे विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति के पक्षधर और इसके लिए सरकारी कोष के सृजन का सुझाव देते हैं। ताराचंद उन्नीसवीं शताब्दी के बंगाल में शिक्षण प्रशिक्षण में आने वाली कठिनाईयों से अवगत थे। ताराचंद चक्रवर्ती एक शिक्षाविद थे उन्होंने डिरोजियो के विचारों को अपनाया व प्रसारित किया।

राजा दक्षिणरंजन मुखर्जी :-

राजा दक्षिणरंजन एक प्रबुद्ध डिरोजियन थे और उन्नीसवीं शताब्दी के अतिवादी विचारकों में प्रमुख थे। राजा दक्षिणरंजन मुखर्जी फ्रांस की क्रान्ति से उत्पन्न प्रबुद्ध विचारों से बहुत अधिक प्रभावित थे। डिरोजियो की भांति राजा दक्षिणरंजन अंग्रेजी शिक्षा को महत्व देते थे। वे स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। विभिन्न विचारकों की भांति राजा दक्षिणरंजन भी तत्कालीन हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरोधी थे। फ्रांस की क्रान्ति के सिद्धान्त जैसे स्वतंत्रता, बंधुत्व, समानता के सिद्धान्त राजा दक्षिणरंजन की राज्य की उत्पत्ति व उद्देश्य के सिद्धान्त में दिखाई देते हैं।

राजा दक्षिणरंजन मुखर्जी एक महान शिक्षक थे। वे अपने देशवासियों के बीच शिक्षा का प्रचार–प्रसार करना चाहते थे। इस हेतु उन्होंने अति महत्वपूर्ण कार्य भी किए। स्वामी विवेकानन्द की भांति राजा दक्षिणरंजन मुखर्जी स्त्री शिक्षा की वकालत करते थे। उनका मानना था कि स्त्री शिक्षा के बिना कोई भी राष्ट्र उन्नति नही कर सकता। जब कलकत्ता में स्त्रियों के लिए अलग से शैक्षणिक संस्थान खोले जा रहे थे तब राजा दक्षिणरंजन मुखर्जी ने बढ़–चढ़ कर इसमें भाग लिया। श्री बेथ्यून ने जब कलकत्ता में स्त्रियों के लिए शैक्षणिक संस्था की स्थापना की तब राजा दक्षिणरंजन ने इस हेतु सहायता प्रदान की। यह विद्यालय 1848 में स्थपित किया गया था। श्री बेथ्यून भारत गवर्नर जनरल की काउंसिल में विधि सदस्य नियुक्त किए गए थे। वे शैक्षिक समिति के अध्यक्ष थे। बेथ्यून महोदय एक उत्तम शिक्षाविद थे।

श्री बेथ्यून ने भारतवर्ष में शैक्षणिक संस्था स्थापित करने का अति महत्वपूर्ण कार्य किया। वे एक ऐसे विद्यालय की स्थापना करना चाहते थे जिसमें धार्मिक शिक्षा के लिए जगह ना हो अपितु विज्ञान, इतिहास, भूगोल साहित्य की शिक्षा प्रदान की जाए। यह सुनकर राजा दक्षिणरंजन मुखर्जी अत्यन्त उत्साहित हुए। उनके साथ ही राम गोपाल घोष जो गवर्नर की काउंसिल में सदस्य थे, ने अपना पुस्तकालय कॉलेज को दान स्वरूप प्रदान किया। यह विद्यालय राजा दक्षिणरंजन मुखर्जी के घर ही खोला गया जिसमें उस वक्त 21 महिलाएँ नामंकित थी। (इस समय यह 56, सुकिया स्ट्रीट कलकत्ता पर स्थापित थी।) इस विद्यालय के लिए उन्होंने बदले में कोई किराया भी नही लिया। मिर्जापुर कलकत्ता में 2 एकड़ जमीन भी दान दी जिससे स्कूल की इमारत बन सकें। 7 मई 1849 को स्कूल संचालित हो सका। बाद में सरकार ने भी भू–दान किया।

'कार्नवालिस स्कावयर' के साथ नए विद्यालय की नींव रखी गई जिसका नाम ''हिन्दू कन्या स्कूल'' रखा

गया।[9] श्री बेथ्यून की मृत्योपरान्त इसका नाम ''बेथ्यून स्कूल'' कर दिया गया। 1879 में इस स्कूल का विकास बेथ्यून कॉलेज के रूप में हुआ। श्री बेथ्यून ने बंगाल में स्त्री शिक्षा का जो सराहनीय कार्य किया। यह प्रथम स्त्री कॉलेज था और बेथ्यून स्कूल एशिया में स्थापित प्रथम स्कूल था। इस विद्यालय के विषय मे इतिहासकारों ने विवरण दिया। एक प्रशस्ति जो कि राजा दक्षिणरंजन मुखर्जी की स्मृति में विद्यालय में लगायी गई इस प्रकार वर्णित है– ''बंगाल में बालिका शिक्षा के लिए स्व० राजा दक्षिणरंजन मुखर्जी ने अत्यन्त उत्साह व निःस्वार्थ भाव से कार्य किया।''

राजा दक्षिणरंजन मुखर्जी सामाजिक समस्याओं से भी अवगत थे। वे ''सोसाइटी फॉर इक्वीजीशन ऑफ जनरल नॉलेज'' के सक्रिय सदस्य भी थे। उन्होंने इस सोसाइटी में पत्र पढ़ा जिसका शीर्षक था; 'एस्से ऑन प्रजेन्ट कनडीशन ऑफ द ईस्ट इण्डिया कम्पनीज कोर्टस ऑफ जूडीकेचर एण्ड पोलिसी अंडर द बंगाल प्रजीडेन्सी'। यह पत्र बंगाल हरकारू में मार्च द्वितीय 1843 को प्रकाशित हुआ। राजा दक्षिणरंजन मुखर्जी जब विद्यार्थी थे तब उन्होंने ज्ञानान्वेषण 1831 में प्रकाशित की। सरकार द्वारा समाचार पत्रों पर लगाए गए प्रतिबन्धों की इसमें कटु आलोचना की गई है। ये समाचार पत्रों के प्रकाशन पर बहुत सजग थे। 'बंगाल स्पेक्टेटर' के प्रकाशन के लिए वे योगदान भी देते थे। ब्रिटिश इण्डियन एसोसिएशन की स्थापना में भी उनका प्रमुख योगदान रहा। कलकत्ता म्युनसीपिलटी में क्लेक्टर के पद पर नियुक्त होने वाले वे प्रथम भारतीय थे। वे मुर्शीदाबाद के दीवान भी बने। वे स्त्री शिक्षा के एवं विधवा पुनर्विवाह का पुरजोर समर्थन करते थे। बर्दवान के महाराजा तेज चंद्र राय की मृत्यु पश्चात् जब किसी कारण से उनके घर गए तब उनकी अष्टम विधवा स्त्री को देखकर अत्यन्त दुःखी हुए।

उन्होंने बसन्त कुमारी (महाराजा तेज चंद्र रॉय की विधवा) से विवाह कर लिया और उनके इस कार्य से बंगाल में खलबली मच गई। इस कारण इन दोनों को बंगाल हमेशा के लिए छोड़ देना पड़ा और लखनऊ रहने लगे। 1857 की क्रान्ति में हालांकि उन्होंने ब्रिटिश सरकार का समर्थन किया जिस कारण उन्हें अवध का कमीश्नर बनाया गया। उन्होंने लखनऊ में 'लखनऊ टाइम्स' 'समाचार हिन्दुस्तानी', 'भारत पत्रिका' का प्रकाशन भी किया। कैनिंग कॉलेज की स्थापना करना उनका प्रमुख कार्य था उन्हें लॉर्ड मेयो ने राजा की उपाधि प्रदान की।

राजा दक्षिणरंजन मुखर्जी एक प्रमुख डिरोजियन थे। वे उदात्त शिक्षक, व संपादक थे। स्त्री शिक्षा के पुरजोर पुरोधा थे। 15 जुलाई 1878 को लखनऊ में इनकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार भारत के विकास के लिए उन्होंने सराहनीय कार्य किया। शिक्षा के विकास में सक्रिय योगदान दिया। स्वयं के खर्च पर भी उन्होंने शैक्षणिक संस्थानों को दान भी दिया। भारत के शैक्षणिक विकास में उनका योगदान अविस्मरणीय है।

रसिक कृष्ण मलिक :-

रसिक कृष्ण मलिक भी एक प्रसिद्ध डिरोजियन थे। वे अपने कृत–कार्यों में कठोर राजनैतिक कार्यवाही के लिए जाने जाते हैं। हालांकि रसिक कृष्ण मलिक प्रत्यक्ष रूप से श्री डिरोजियो के शिष्य नहीं थे। वे एक प्रख्यात वक्ता के रूप में प्रसिद्ध थे इसके साथ ही वे एकेडेमिक ऐसोसिएशन के वक्ता के रूप में भी ख्याति लब्ध थे। हिन्दू पेट्रिएट' (समाचार पत्र) के अनुसार–''उनकी वाग्मिता ने एकेडेमिक एसोसिएशन में उनके लिए प्रशंसनीय स्थान बनाया।''[10]

रसिक कृष्ण मलिक एक प्रख्यात पत्रकार, समाज सुधारक, शिक्षाविद थे। वे यंग बंगाल समूह के एक

सक्रिय सदस्य थे। वे नाभा किशोर मलिक के पुत्र थे। उनका जन्म 1810 में सिन्दूरपट्टी कलकत्ता में हुआ था। उनके पिता एक व्यापारी थे। गोन्दिपुर नाम एक समृद्ध गाँव में उनका पुश्तैनी निवास था। उनके परिवार का समाज में एक समृद्ध स्थान था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर सम्पन्न हुई। बाद में उन्होंने हिन्दू कॉलेज में प्रवेश पा लिया। वहाँ पर उन्होंने धार्मिक कट्टरपन का विरोध किया। यहाँ तक कि वे गंगा की पवित्रता में विश्वास नहीं करते थे। उन्होंने हिन्दू कॉलेज में वस्तुनिष्ठता वैज्ञानिकता एवं स्वतंत्र चिंतन की विचारधारा सीखी। रसिक डिरोजियो की भांति एक प्रबुद्ध व्यक्ति थे। उन्होंने पुरातन अंधविश्वासों एवं परम्पराओं का खुलकर विरोध किया। जब रसिक कृष्ण मलिक विद्यार्थी थे तब किसी मुकदमे में गवाह बनने के लिए कलकत्ता के सुप्रीम कोर्ट में उपस्थित हुए तब उन्होंने तत्कालीन समाज में गवाही देने से पूर्व शपथ (गंगा जल हाथ में लेकर तुलसी के पत्ते उसमें डालकर उसे हाथ में लेकर शपथ ग्रहण करना) लेने से मना कर दिया। तब सभी लोग यह सुनकर आश्चर्यचकित रह गए कि आखिर किस प्रकार कोई गंगा की पवित्रता से इंकार कर सकता है। जिस गंगा को हजारों वर्षों से हिन्दुओं ने पवित्र मानकर माता का दर्जा दिया, आज एक नवयुवक उसकी पवित्रता पर किस प्रकार प्रश्न चिह्न लगा सकता है। इसी कारण उन्हें परिवार से निकाल दिया गया एवं वाराणसी भेज दिया गया। ताकि वे वाराणसी के पवित्र स्थल पर आत्मचिन्तन करें व धार्मिकता ग्रहण करें।

लेकिन रसिक अपनी विचारधारा पर अडिग रहे और वहाँ से भाग निकले। उन्होंने हेयर स्कूल में कुछ समय के लिए कार्य किया।[15] कुछ समय पश्चात् उन्हें बर्दवान जिले में डिप्टी कलेक्टर का पद दिया गया। वे अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह निर्भिकता से करते थे।

डिरोजियो और उनके छात्रों द्वारा प्रकाशित जरनल 'पार्थेनान' में रसिक प्रबंधक की भूमिका निभा रहे थे। रसिक हिन्दू कॉलेज के एक प्रख्यात विद्यार्थी थे उन्होंने उत्कृष्टता के प्रमाणपत्र के साथ कॉलेज से विदाई ली। वे हिन्दू कॉलेज के एक होनहार विद्यार्थी थे। कॉलेज ऐसे विद्यार्थियों पर गर्व महसूस करता हे। हिन्दू कॉलेज के उनके अनुयायी छात्र रसिक कृष्ण मलिक को ज्ञान का भण्डार मानते थे।

पंडित शिवनाथ शास्त्री ने रसिक कृष्ण मलिक एवं रामतुन लाहिड़ी की मित्रता का विवरण दिया। रामतुन लाहिड़ी एक उच्च जातिय ब्राह्मण परिवार से सम्बद्ध थे। वे रसिक को अपना मित्र, दार्शनिक मानते थे। किसी भी विवाद में रामतुन, रसिक कृष्ण मलिक की विचारधारा का सम्मान करते थे एवं उनके निर्णय को सर्वश्रेष्ठ एवं अन्तिम मानते थे। रसिक कृष्ण मलिक एक उत्तम सलाहकार होने के साथ–साथ एक उत्तम व्यक्ति भी थे। वे जाति–बन्धन में विश्वास नहीं करते थे तथा बहुत से उच्च जातिय व्यक्ति जैसे दक्षिणनिरंजन मुखर्जी, रामतनु आदि रसिक कृष्ण मलिक का बहुत सम्मान करते थे यही पाश्चात्य शिक्षा एवं डिरोजियो के उदार विचारों का प्रभाव भी है।

अन्य डिरोजियन्स यथा ताराचंद चक्रवर्ती, कृष्ण मोहन बनर्जी, दक्षिणनिरंजन की भांति ही रसिक भी नवयुवकों के उत्थान के लिए पाश्चात्य शिक्षा को अनिवार्य मानते थे। रसिक कृष्ण मलिक एक प्रबुद्ध व्यक्ति थे। वे नवयुवकों की शिक्षा के लिए कार्य करने में अग्रणी रहते थे। उन्होंने 'हिन्दू फ्री स्कूल' की स्थापना की। सैकड़ों विद्यार्थियों ने वहाँ दाखिला लिया। वे विद्यार्थियों बहुत कम शुल्क में अधिक ज्ञानार्जन करते थे। तत्कालीन समाचार पत्र/पत्रिकाएँ उनके कार्यों की सराहना करते थे। ऐसी ही एक थी संवाद कौमुदी। संवाद कौमुदी में रसिक मलिक के लिए लिखा गया, ''हिन्दू कॉलेज के छात्र रसिक व अन्य छात्र जब पाश्चात्य शिक्षा में पारंगत

हुए तब उन्होंने बांग्ला युवाओं के लिए वही शिक्षा फैलाने का कार्य परिश्रमपूर्वक किया।''[11] ये छात्र अपने अध्यापकों से शिक्षा ग्रहण कर उसे आने वाली पीढ़ी को हस्तान्तरित करते थे। इस प्रकार डेरोजियन्स ने बंगाल में शिक्षा प्रसार करने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

कृष्ण मोहन बनर्जी के सहकर्मी के रूप में रसिक मलिक ने पातालदंग से हेयर स्कूल' में अध्यापन कार्य किया। दोनों ही महान व्याख्यता एवं महान परिश्रमी, कर्मठ एवं प्रबुद्ध अध्यापक थे। लेकिन रसिक मलिक भी डिरोजियो की भांति अपने विद्यार्थियों को स्वतंत्र चिंतन, सत्य की खोज के लिए प्रोत्साहित करते थे। पुरातन विचारों, परम्पराओं ने भारतवासियों के मस्तिष्क में एक गहरी छाप छोड़ी थी, ब्राह्मणवाद, जातिवाद, अशिक्षा जैसी बुराईयों ने समाज की प्रगति अवरूद्ध की। ऐसे वातावरण में शिक्षा को बढ़ावा देना एवं प्राचीन परम्पराओं पर कठुराघात करना एक चुनौती थी। रसिक मलिक को इसी कारण हेयर कॉलेज से निकाल दिया गया, क्योंकि कॉलेज प्रबन्धन पर तथाकथित उच्च जातीय हिन्दुओं का दबाव था। यहाँ तह कि उन्हें उनके परिवार एवं पुश्तैनी घर को भी छोड़कर एक शरणार्थी जीवन व्यतीत करना पड़ा। इस मुश्किल घड़ी में उनका साथ उनके मित्र दक्षिणरंजन ने दिया।

रसिक कृष्ण मलिक का मानना था कि एक मात्र शिक्षा के माध्यम से नागरिकों का चरित्र निर्माण किया जा सकता है। उन्होंने कहा भी कि ''यह हमारी सरकार का परम कर्त्तव्य है कि वह अपनी जनता के लिए संसाधन व्यय किए बिना मूल निवासियों को शिक्षित करें। हम भी बहुत अधिक उम्मीद ना करें। किन्तु जो अपार राजस्व भारत से उत्पन्न होता है उसके बदले हम भारत के पतित पुत्रों के बौद्धिक सुधार के लिए अनुरोध कर सकते हैं।''

अन्य बौद्धिक व्यक्तियों यथा ताराचंद की भांति रसिक कृष्ण मलिक भी स्थानीय मातृभाषा के माध्यम से नवयुवकों को शिक्षित करने के पक्षधर थे। नवयुवकों को शिक्षित करने के लिए रसिक कृष्ण मलिक सरकार से मुफ्त या बहुत कम पैसों में शिक्षा की व्यवस्था करने का अनुरोध करते हैं। जिससे जनता को शिक्षा दी जा सके। वे राज्य के माध्यम से शिक्षा का प्रसार चाहते थे।

स्थानीय भाषा के माध्यम से जनता का बौद्धिक विकास किया जा सकता है। विदेशी भाषा के माध्यम से दी गई शिक्षा के कारण शिक्षा का मूल उद्देश्य धूमिल हो जाएगा। विदेशी शिक्षा के माध्यम से दी गई शिक्षा नौकरशाह वर्ग के लिए उपयोगी है बनिस्पत इसके कि वह समाज के कमजोर वर्ग के लिए उपयोगी हो।

शिक्षा के द्वारा जातीयता एवं उच्चता की भावना का अंत होगा जो समाज के लिए घातक है। और इससे शोषण की प्रवृत्ति बढ़ेगी। रसिक जानते थे कि विज्ञान जैसे विषय पर पर्याप्त पुस्तकें उपलब्ध ना होने के कारण समस्या उत्पन्न हो सकती है। अतः उन्होंने सुझाया कि योरोपीय विज्ञान को इस प्रकार प्रयोग में लाया जाना चाहिए कि भारतीय जन इससे लाभान्वित हो सके। सबसे अधिक वांछनीय यह है कि ऐसी संस्थाओं का गठन किया जाए जोकि बांग्ला में वैज्ञानिक पुस्तकें प्रकाशित कर सके।[12] ये पुस्तकें युरोपीय लेखकों की पहल पर लिखी गई पुस्तकों के समरूप होनी चाहिए, ताकि भारतीय समाज यूरोपीय ज्ञान की वैज्ञानिकता एवं वस्तुनिष्ठता से लाभान्वित हो सके। वो आगे कहते हैं कि न्यायालय में प्रयुक्त की जाने वाली भाषा स्थानीय मातृभाषा हो।'' रसिक कृष्ण मलिक प्रबुद्ध व्यक्ति थे। वे बंगाल एवं भारत को प्रभावित करने वाले प्रत्येक नियमों पर विचार प्रकट करते थे। वे 1833 के चार्टर एक्ट के समालोचक थे। क्योंकि यही वह नियम था जिसके द्वारा भारतीय शिक्षा

व्यवस्था में आमूल–चूल परिवर्तन किया जाना था। मैकाले के घोषणा–पत्र को इसमें विशेष स्थान दिया गया है। साहित्य का पुनर्जीवन भारतीयों को शिक्षित करने के लिए प्रेरणा देना, पाश्चात्य साहित्य व विज्ञान का प्रचार प्रसार करना 1833 के एक्ट का मुख्य उद्देश्य था। हालांकि अपने उद्देश्य में यह उत्तम था लेकिन इसमें किसी भी प्रकार के साधनों का उल्लेख नहीं किया गया।

यह विवाद यही रूकने वाला नहीं था। अंग्रेज विद्वतजन भी इससे असहमत थे। कुछ अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा के पक्षधर थे कुछ स्थानीय भाषाओं के माध्यम से। यही से विख्यात प्राच्य–पाश्चात्य विवाद उत्पन्न हुआ। कुछ विद्वान प्राच्यवादी और कुछ पाश्चात्यवादी कहलाए। कुछ अंग्रेज अधिकारी प्राच्य विद्या में पारंगत थे और उनकी यह इच्छा थी कि भारतीय भाषाओं को बढ़ावा दिया जाए। कुछ पाश्चात्यवादी यह चाहते थे कि अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम हो इसमें हेनरी विवियन डिरोजियो भी अंग्रेजी स्थानीय भाषाओं के पक्षकार थे। डिरोजियन्स जिसमें रसिक कृष्ण मलिक, कृष्ण मोहन प्रमुख थे इन दोनों ही समूहों के विरूद्ध थे जब भारतीय विद्वान इस चर्चा में शामिल हुए। तब रसिक कृष्ण मलिक ने सुझाया कि प्राचीन भारतीय भाषाओं के बजाए सरकार अंग्रेजी व स्थानीय भाषाओं का विकास करे। यह प्रस्ताव लॉर्ड विलयम बेंटिक के पास प्रेषित किया। लेकिन अंततः अंग्रेजी माध्यम को स्वीकार किया गया। मैकाले ने भारतीयों को अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से शिक्षित करने की वकालत की। वे चाहते थे कि भारतीय बेकन, लॉक मिल्टन का साहित्य पढ़े और अंततः लॉर्ड बेटिक द्वरा यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया।

रसिक बंगाल में चल रहे सुधारवादी आन्दोलन के पुरजोर पुरोधा थे। वे ईश्वर चंद्र विद्यासागर द्वारा विधवाा विवाह व स्त्री शिक्षा के समर्थक के। बंगाल में शिक्षा के लिए कार्य करने वाले विद्वानों में से वे एक प्रमुख व्यक्ति थे। उन्होंने कहा;–

(क) प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों में एकत्व व समानता हो।

(ख) सामान्य व विशेष शिक्षा समान रूप से सभी के लिए उपलब्ध हो।

(ग) सभी स्तरों पर राष्ट्रजनों के लिए एकसमान असवर हो ताकि जनता की शैक्षिक आवश्यकता को पूर्ण किया जा सके। इसलिए हम सभी को उन लोगों की मदद करनी चाहिए जो देशवासियों के लिए कार्य करते हैं एवं लेख प्रकाशित करते हैं।[14]

रसिक का यह दृढ़ विश्वास था कि बंगाल की सामाजिक स्थिति में बहुत मितव्ययी शिक्षा होनी चाहिए। यह कार्य करने के लिए वे बारम्बार सरकार से अनुरोध करते हैं। वे निजी संस्थाओं द्वारा शिक्षा प्रदान करने के विरोधी थे।

सन्दर्भ सूची :–

1. चितरंजन घोष, डिरोजियों पृष्ठ सं० 68।
2. वही।
3. वही।
4. वही।
5. द बंगाल स्पेक्टेटर, जनवरी 1842 का अंक।

6. द बंगाल स्पेक्टेटर, अगस्त 1843 का अंक।
7. द बंगाल स्पेक्टेटर, दिसम्बर 1843 का अंक।
8. वही।
9. जोशेश चन्द्र बंगाल हिस्ट्री ऑफ द बेथ्यून स्कूल एड कॉलेज (1849)।
10. बेथ्यून कॉलेज की पट्ट तालिका से पृष्ठ सं० 15–16।
11. सुबोध चंद एवं बोस व सेनगुप्ता–संसद बंगाली चरित्र भूषण, जिल्द–1 पृष्ठ सं० 202।
12. बी०पी० मुखर्जी – History studies in the Bengal हिस्ट्री, स्टडीज इन द बंगाल रेनेसां, कलकत्ता, पृष्ठ सं० 132।
13. ज्ञानान्वेषण 1838 फरवरी का अंक।
14. कलकत्ता रिव्यू, 1911, अगस्त माह का अंक।

Email-Id:saritabuddhist@gmail.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 71-80

कालजयी स्त्रीवादी उपन्यास "आवां"

डॉ. व्ही मणि
एस.जी.एस. आर्ट्स कॉलेज हिन्दी व्याख्याता तिरुपति, आंध्र प्रदेश।

हिंदी साहित्य में महिला उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय नारी की विभिन्न समस्याओं को समाज के सामने प्रस्तुत किया है। वे पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था में हो रहे स्त्री शोषण को उकेरती हुई, उसे मिटाना चाहती हैं। अपने स्वत्व के लिए संघर्षरत स्त्री सफलता प्राप्त करना चाहती है। अनेक महिलाओं ने अपने लेख और अपनी रचनाओं के माध्यम से शोषित महिला पात्रों को चित्रित किया हैं। शोषित स्त्री के प्रति सहानुभूति दिखाते हुए, परंपरागत ढांचे को बदलना चाहती है। अपने हक को हासिल कर पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहती है। स्त्री शब्द का अर्थ मात्र पुरुषों का विरोध नहीं बल्कि अपने पूर्ण अधिकारों के साथ स्त्री पुनः स्थापित होना चाहती है। खुद को कमजोर मानकर नहीं अपने लिए कुछ नहीं मांग रही, बल्कि खुद की शक्ति को मौका देना चाहती है।

इतनी प्रगति होने के बाद भी हर क्षेत्र में स्त्रियों के प्रति असम्मान का भाव व्याप्त है। अत्याचार आज ही नहीं आदिकाल से होते आ रहे हैं। पर आज जितना ही स्त्रियां शिक्षित होती जा रही हैं, उनके प्रति होने वाले शोषण के तरीके भी अलग–अलग और क्रूर होते जा रहे हैं। स्त्रियां इन्हें समझ नहीं पा रही हैं। आज किसी भी कार्य क्षेत्र में स्त्रियों को फंसाने की सोच बढ़ रही है। उन्हें अपने मोह पाश में बांधकर उनका शारीरिक शोषण किया जा रहा है। स्त्रियां संवेदनशील होती हैं। यही कारण है कि कुछ स्त्रियां छोटी से कठिन स्थिति में निराश हो जाती हैं। इस स्थिति में किसी पुरुष के सामने कुछ भी अपने जीवन की कठिन स्थिति के बारे बारे में कह देती है तो वह उसे सहारा देने के बहाने उसका शोषण करने लगता है। किसी भी पुरुष की चिकनी चुपड़ी बातों से आकर्षित हो जाती हैं और पुरुष आकर्षण का फायदा उठाकर उन्हें अपने भोग का शिकार बनाते हैं। आजकल के युग में तरह के कामी और धोखे बाजों से बचाने की सूझ बूझ स्त्रियों में होनी चाहिए।

स्त्री विमर्श की शुरुआत होने के बाद स्त्रियां साहित्य कृतियों को पढ़कर सजग होने लगी हैं, इसके कारण स्त्रियों के प्रति शोषण थोड़ा बहुत कम हुआ है। लेकिन पुरुष जो लोग अति अमानवीय होते हैं, उनको स्त्री सिर्फ भोग की वस्तु दिखती है और क्रूर पुरुष अपने आसपास की स्त्रियों को चोट पहुंचाने की योजना बनाते रहता है,जिसके कारण आज बलात्कार और छेड़छाड़ की दुर्घटनाएं बहुत अधिक हो रही हैं। ऐसी स्थिति में स्त्रियों को मजबूत होना होगा। कामी पुरुष की नीचता को परखना होगा। उससे दूर रहना होगा और उसको दंड देने के प्रयत्न करने होंगे।

स्त्री विमर्श के संबंध में क्षमा शर्मा लिखती है "मैं सामाजिक तौर पर एक मजबूत स्त्री को देखना चाहती

हूँ जिससे कोई यह कहने को हिम्मत न जुटा पाए की औरत हो औरत की तरह करो, जहां स्त्री का जन्म लेना है उसका अपराध न हो जाए।"[1]

आजादी के बाद देश की अनेक महिला उपन्यासकारों ने सशक्त स्त्री पात्रों को अपनी रचनाओं के माध्यम से गढ़ने का प्रयास किया है। नारी को प्रेरणा देने वाली प्रमुख महिला लेखिखाएं हैं – कृष्णा सोबती, सूर्यबाला, मृदुला गर्ग, मालती जोशी, प्रभा खेतान, नासिरा शर्मा, चित्रा मुद्गल आदि।

इनमें से एक लोकप्रिय लेखिका चित्रा मुद्गल जी का प्रख्यात उपन्यास "आवां" जो कटु सत्य पर प्रहार करता हुआ स्त्री विमर्श पर लिखा गया कालजयी उपन्यास है, जिसे सन 2003 में प्रतिष्ठित व्यास सम्मान पुरस्कृत किया गया था।

लेखिका चित्रा मुद्गल आवां उपन्यास में दिखाया है, स्त्री का हर स्थान पर हो रहा शोषण, चाहे वह घर हो या घर से बाहर, स्त्री शिक्षित हो या अशिक्षित हो। 'आवां' उपन्यास में नारी के दुःख–दर्द और नारी मुक्ति के सवाल को केंद्र में रखा है और साथ ही साथ दलित विमर्श, मजदूरों का संघर्ष, हिंदू मुस्लिम संघर्ष विराट उपन्यास में दिखाया गया है। ट्रेड यूनियन के मजदूरों की मांगों तथा उनके ऊपर हो रहे हैं आर्थिक, मानसिक और शारीरिक शोषण पर भी दृष्टि डाला गया है।

उपन्यास की कथा नायिका नमिता पांडे है जो एक मध्यम दर्जे की ब्राह्मण लड़की है। नमिता पांडे मजदूर नेता देवी शंकर पांडे की बेटी है। उन पर जानलेवा हमला हुआ, जिससे वह अपाहिज बने, परिवार की सारी जिम्मेदारी ममता पर आ गई। ममता की माँ उर्मिला पांडे अत्यंत कर्कश और क्रूर प्रवृत्ति की महिला है, जो पति को ही नहीं बेटी नंदा को भी हमेशा ही जली कटी सुनाती रहती है। नमिता अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़कर, दिन माँ के साथ शानबेन की संस्था में पापड़ बेलने के काम करती हुई गृहस्थी चलाने में मन को मदद करती है। कुछ दिनों के बाद पिता के मित्र अन्ना साहब कामगार आघाडी में नौकरी देते हैं। वहां अन्ना साहब उसे अपने जाल में फसाने का करते हैं और नमिता को समझाते हुए कहते हैं, 'देखो दोस्त की बेटी हो, बेटी नहीं हो, पिता समान हूँ तुम्हारे पिता नहीं हूं! रिश्ते के इस गहन अंतर सूक्ष्मता को समझ जाओगी तो संबंध से स्वयं को शोषित अनुभव नहीं करोगी।'[2] इस प्रकार कहकर यौन सुख प्राप्त करने के लिए कहते हैं कि –'पिता नहीं, पिता जैसा हूँ। तुम्हारे देह से कोई खिलवाड़ नहीं करूंगा। अपने देह को तो कर सकता हूँ। अपना हाथ मेरे हाथ में दे दो तो मैं यह भी हूँ। इस सच से जब तुम्हारा साक्षात्कार हो गया है तो उसे मान लेने में आपत्ति।'[3]

इस पंक्ति स्पष्ट बहुत हो रहा है कि पुरुष अच्छा ही क्यों न हो है, वह वृद्धि ही क्यों ना हो, अकेली स्त्री देखकर उसे पर लार टपकाने की कोशिश करता है। इस प्रकार के अत्याचार से तंग आकर नमिता आघाडी की नौकरी छोड़ती है। लेकिन पिता को इलाज करवाने के लिए पैसे की आवश्यकता थी पर उसके पास नहीं थे। ऐसे में एक रोज ट्रेन में नमिता की मुलाकात आभूषण व्यापार करने वाली अंजना वासवानी से होती है। वासवानी नमिता को साढ़े तीन हजार की नौकरी पर अपने यहाँ रख लेते हैं। लेकिन यहाँ से शुरू होता है ममता के जीवन का वह मोड जो उसे तोड़ देता है। धीरे–धीरे और उसका पता उसे अंत में चलता है। मैडम वासवानी नौकरी पर रखने के बाद उसे उसके जन्मदिन पर महंगे उपहार प्रदान कर नमिता को अपनी ओर आकर्षित करती है और षड्यंत्र से आभूषण डिजाइनिंग के विशेष पाठ्यक्रम के लिए वासवानी हैदराबाद भेजती है।

हैदराबाद जाने से पहले ही नमिता के पिता की मृत्यु हो जाती है। नमिता पूरी तरह से टूट जाती है,

जिसके लिए वह इतना दौड़ धूपकर रही थी, अंततः उसे छोड़कर चला गया। पिता की मृत्यु पर शोकातुर तो होते हैं मगर अपने पिता की मुखाग्नि स्वयं देने के लिए आगे बढ़ती है। सब लोग विरोध करने पर भी उसकी थाई उसको समाधान करते हुए कहती है, 'जब कभी हुआ नहीं, वह नहीं हो सकता, जरूरी नहीं, रूढ़ि टूटनी ही चाहिए। बाल विवाह हुआ करते थे पहले, लड़कियां घर में होती ही नहीं थी। ऊपर से उन्हें पराया मान लिया जाता था, कमजोर भी। बस हो गया स्त्रियों के लिए मुखाग्नि वर्जित। शास्त्रीय ने लिखा दिया। पोंगा पंथियों ने लगा दिया ठप्पा। इतना ही हो सकता है, विधि विधान में छोटे भाई के संग बड़ी बहन खड़ी रहे या उसमें भी आपत्ति है पंडितजी?'[4]

नमिता के पिताजी की मृत्यु को भी राजनीतिक मुद्दा बनाया जाता है। जिसमें पवार जैसे कार्य करता शामिल होते हैं। पावर दलित और श्रमिक नेता की तरह उभरता है, जो नमिता को विवाह कर खुद को अन्ना साहब के समान बड़ा नेता बनाने का सपना पालने लगता है। नमिता भी पवार को पसंद करती है, लेकिन जब पवार की साजिश का पता चलता है तब नमिता पवार से दूरी बनाए रखती है।

नमिता का परिचय आभूषण व्यापारी संजय कनोई से होता है। अहमदाबाद उनके करोड़ों का व्यापार होता है। वे विवाहित हैं पर वे निस्संतान हैं। उनकी पत्नी निर्मला कनोई अपने पिता के बड़े व्यापार में व्यस्त रहते हैं और संतान के लिए वह बच्चा गोद लेने को तैयार है। लेकिन संजय सिर्फ अपना बच्चा चाहता है। जब संजय मिलता है तो वह उसके प्रति आसक्त हो जाता है और उसे अपने पुरुषत्व को सिद्ध करने का एक जरिया मिल जाता है। संजय नमिता का सानिध्य पाने के लिए, उससे दिखाने के लिए अपनी पत्नी की हजार बुराइयां करता है और नमिता से झूठा प्यार जताता है। संजय की झूठी स्नेहिल और सम्मान पूर्ण व्यवहार से भोली भाली नमिता अस्वस्थ हो जाती है। जब मैडम वासवानी प्रशिक्षण के लिए नमिता को हैदराबाद भेजते हैं तब वहां संजय कनाई उसे मिलने आता है और दोनों एक दूसरे को चाहने लगते हैं तथा संजय ममता से शारीरिक संबंध भी स्थापित करता है। कुछ महीनो के बाद नमिता गर्भवती बनती है। जब नमिता को यह मालूम होता है तब उसके शरीर पर पहाड़ गिर जाता है। वह गर्भपात करवाना चाहती है, संजय उसे न करवाने देता है।

तो नमिता कहती है ——'वैसे आधुनिक नही हूँ कि बिना ब्याह के अवैध संतान पैदा कर छद्म क्रांति जिऊँ मेरे लिए सामाजिक जिम्मेदारी है। वह उंगली नहीं उठा सकता वह मेरी ओर कि मैंने उसे उस तरह क्यों पैदा किया जिस तरह से वह जन्मना नहीं चाहता था।'[5] तब संजय कहता है कि——'मैं तुम मेरे बच्चे को हाथ नहीं लगाओगी तेरह साल, बाद तेरह साल बाद मैं आप बना हूँ'।[6] संजय अपनी पत्नी को तलाक देकर नमिता को विवाह करने का झूठा वादा भी करता है, क्योंकि किसी भी हाल में वह अपना बच्चा चाहता है। यहाँ भी पुरुष तंत्र है स्त्री की कोख पर नियंत्रण। मजबूरी में नमिता गर्भपात न करवा लेती रखैल बनाकर न रहना चाहती। इसी बीच में एक दिन पवार ममता को अन्ना साहब की हत्या का समाचार सुनाता है, इसे सुनकर नमिता का दिल दहल जाता है और सदमे में उसका गर्भपात हो जाता है। जब संजय को गर्भपात की बताता हैं। तब संजय बौखला जाता है और कहता है, 'झूठी.. प्राण ले लूंगा तुम्हारे.... मुझे मेरा बच्चा चाहिए... बच्चा बच्चा।—जानती हो? बाप बनने के लिए मैंने तुम्हारे ऊपर कितना खर्च किया? उसे मामूली औरत अंजना वासवानी की औकात है कि तुम्हारे ऊपर पैसा पानी की तरह बहा सके? उसका जिम्मा सिर्फ इतना— भर था कि वह मेरे पिता बनने में मेरी मदद करें और सौदे के मुताबिक अपना कमीशन खाएं। वह ऐसी 50 साल लड़कियों को परोस सकती थी, जो

मुझसे यौन संबंध कायम कर केवल 75000 में मुझे आप बना सकती थी... 'मैं रंडियों से बाप नहीं बनना चाहता था, जिनके लिए बच्चा पैदा करना महज सौदा भर हो और जो आने कौन से सौदा कर चुकी हो––मुझे नहीं गवारा थी ऐसी किराए की कोख। मुझे सिर्फ उसे लड़की से औलाद चाहिए थी जो पेशेवर ना हो... पवित्र हो, जो मुझसे प्रेम कर सके। सिर्फ मेरे लिए माँ बने! सिर्फ मुझे सहवास करें.... हमारा मिशन सफल रहा.... 13 साल बाद मैं बाप बना...अपने बच्चे का बाप। उसे औरत से जिसे मैं सचमुच प्यार करने लगा। उसी ने ... मुझे धोखा दिया? मेरे बच्चे की जान ले ली।'[7]

संजय की असलियत सुन नमिता की आंखें हाथ में आ जाती है। पूरी तरह से आहत होकर सीधे हैदराबाद से सीधा कामगार आघाडी में लौटकर श्रमिकों की सेवा करने का निर्णय लेती है।

आखिर नमिता समझ जाती है कि किसी भी पुरुष पर जल्दी विश्वास नहीं करना चाहिए। संजय के साथ–साथ यहाँ अंजना वासवानी स्त्रियों का भी सच उजागर होता है। जो गरीब लड़कियों को मदद का बहाना बनाकर सपने दिखाकर किसी अमीर के बिस्तर पर पहुंचा देती है।

कुल मिलाकर यह उपन्यास स्त्री विमर्श के क्षेत्र में बड़ा प्रयास है, जिसे पढ़ने के बाद हमें यह सोचने के लिए विवश हो जाते हैं कि हम कैसे समझ में रह रहे? लेखिका स्त्रियों को दर्द, पीडा ऊपर उठकर अपने संघर्ष को अपने कंधे पर लेने की बात कहती है। लेखिका भूमिका में कहती है श्स्त्री की क्षमता उसकी देह के ऊपर उठकर स्वीकार न करने वाले रूढ, रुग्ण समाज को बोध कराना आखिर किन कंधों का दायित्व होगा?'[8]

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. स्त्रीत्ववादी विमर्श समाज और साहित्य : क्षमा शर्मा–पृ. सं 27
2. आवां (उपन्यास) : चित्रा मुद्गल– पृ.सं –136.
3. वहीं : पृ. सं–141.
4. वहीं : पृ. सं–400.
5. वहीं : पृ. सं–523.
6. वहीं : पृ. सं–523.
7. वहीं : पृ. सं–539.
8. वहीं : भूमिका में चित्रा मुद्गल।

vadlamani1978@gmail.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
Vol. 12, Issue 1-2
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
पृष्ठ : 85-90

बर्नआऊट : शिक्षकों में व्याप्त एक गंभीर समस्या

Jyotsna
Assistant Professor, Swami Vivekanad College of Technology and Management, Haldwani (Nainital)

सार :-

शिक्षण एक सभ्रांत व्यवसाय है, जिसे अन्य सभी व्यवसायों की जननी कहा गया है। शिक्षण एक प्रकार की खेती है, जहाँ एक शिक्षक निस्वार्थ ज्ञान की खेती करता है। यह एक ऐसा कार्य है जहाँ शिक्षक बालक को एक व्यवस्थित, सुचारु ज्ञान प्रदान करता है। हेनरी ब्रुक्स एडम ने कहा कि मैं अपने पिता का आभारी हूँ कि उन्होने मुझे जीवन दिया लेकिन अच्छी तरह जीवन यापन करने के लिये मैं अपने शिक्षक का आभारी हूँ। शिक्षण व्यवसाय अधिक तनावपूर्ण व्यवसायों मे से एक है। इसमें शिक्षक भावनात्मक रुप से थकान, अपने कार्य उपलब्धि में कमी व छात्रों के प्रति नकारात्मक भावना जैसे लक्षण महसूस करता है. मास्चाल एंड जैक्सन ने इन भावनाओ का अनुभव करने वाले लोगों को बर्नआउट से पीड़ित के रुप मे वर्णन किया। यह व्यक्ति की रचनात्मकता व प्रभावशीलता के साथ ही उनकी ऊर्जा को भी कम करता है, जिससे व्यक्ति असहाय, क्रोध व निराशा आदि महसूस करता है। शिक्षकों के बीच बर्नआउट को समझना विशेष रुप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि शिक्षक के बर्नआउट का न केवल शिक्षक के स्वास्थ, कार्य संतुष्टी, प्रेरणा पर अपितु छात्र के व्यवहार व अधिगम पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया है। अतः प्रस्तुत शोध लेख में बर्नआउट के आरम्भिक लक्षणों की पहचान व उनसे बचने के उपायों को समझने का प्रयास किया गया है।

की-वर्ड :- शिक्षा, शिक्षक, बर्नआऊट, व्यक्तित्वलोप, भावनात्मक थकावट, व्यक्तिगत उपलब्धि में कमी।

प्रस्तावना :-

शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है, जो बालक में न सिर्फ कौशल का निर्माण करती है अपितु बालक का वाह्य व आंतरिक विकास भी करती है। बुद्धि सभी जीवों में होती है किंतु उस बुद्धि या ज्ञान का सही उपयोग शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। शिक्षा व्यवस्था द्वारा बालक का विकास करने वाला घटक शिक्षक है अर्थात् शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण है। प्रशिद्ध शिक्षाशास्त्री जान डिवी ने शिक्षा को परिभाषित करते हुये इसे त्रिध्रूवी प्रक्रिया कहा जिसमें शिक्षक, पाठ्यक्रम तथा विद्यार्थी, 3 ध्रूवों पर विध्यमान होते हैं। शिक्षा के इस स्वरूप के अनुसार शिक्षक शैक्षिक प्रणाली में महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जिस पर शैक्षिक कार्यक्रम की सफलता का दारोमदार होता है। एक स्कूल में उच्च कोटि के संसाधन (पुस्तकालय, प्रयोगशाला, उपकरण, भवन आदि) होने के बाद भी यदि अच्छे शिक्षक ना हो या वे अपनी जिम्मेदारियों के प्रति इमानदार ना हो तो पुरी शिक्षा व्यवस्था व उपलब्ध सभी साधन सामग्री व्यर्थ है।

अतः यह माना जाता है कि शिक्षा प्रणाली का वर्चस्व काफी हद तक शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करता है, अर्थात शिक्षा के उच्च विकास हेतु एक प्रभावी शिक्षक का होना आवश्यक है। शिक्षण के सम्बन्ध में प्रभावी शिक्षक से तात्पर्य एक एसे व्यक्तित्व से है जो छात्र का उचित मार्गदर्शन करे. अपनी कक्षा को इस तरह व्यवस्थित करें की छात्र कक्षा में सक्रिय रहे, छात्र को सीखने के लिये तैयार करे, उनमे आत्मविश्वास को बढाये तथा अधिगम के प्रति रुचि उत्पन्न करे। किंतु शिक्षकों के बढ़ते कर्तव्यों व कक्षा–कक्षों की वास्तविक स्थितियों ने शिक्षक के कार्य को तनावपूर्ण बना दिया है, उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे शिक्षण कार्य के अतिरिक्त कामों के साथ, अभिभावकों, सहकर्मियों, प्रधानाचार्य व अन्य मनोवैज्ञानिक व सामाजिक कारकों का सामना करते हुये अपने छात्र को उच्च भविष्य के लिये तैयार करे, जिसके परिणाम स्वरुप कई शिक्षक अपने व्यवसाय व छात्रो के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण प्रदर्शित करते हैं जो शिक्षकों में तनाव को प्रदर्शित करता है। वैसे सामान्यतया देखा जाये तो तनाव जीवन में होने वाली एक सामान्य घटना है। किंतु वर्तमान में तनाव ने शिक्षा व्यवस्था में मुख्य स्थान बना लिया है। **जानसान एट आल (2005)** ने 26 व्यवसायों में तुलनात्मक अध्ययन कर पाया कि शिक्षक अपने दैनिक कार्य में अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक तनाव का सामना करते है। अतः उन्होने निष्कर्ष दिया कि शिक्षण व्यवसाय अधिक तनावपूर्ण व्यवसायों मे से एक है। इसमें शिक्षक भावनात्मक रुप से थकान, अपने कार्य उपलब्धि में कमी व छात्रों के प्रति नकारात्मक भावना जैसे लक्षण महसूस करता है। **मास्चाल एंड जैक्सन (1981)** ने इन भावनाओ का अनुभव करने वाले लोगों को बर्नआउट से पीड़ित के रुप मे वर्णन किया। यह व्यक्ति की रचनात्मकता व प्रभावशीलता के साथ ही उसकी ऊर्जा को भी कम करता है, जिससे व्यक्ति असहाय, क्रोध व निराशा आदि महसूस करता है।

बर्नआउट :– आखिर क्या है बर्नआउट?

कई बार ज्यादा थकान के कारण लोगो के व्यवहार में बहुत चिड़चिड़ापन आ जाता है और इससे उनकी कार्य क्षमता भी घटने लगती है, सिर्फ प्रोफेशनल ही नहीं पर्सनल लाइफ पर भी इसका असर पड़ने लगता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस मनोदशा की पहचान तनाव की वजह से पैदा होने वाली मनोवैज्ञानिक समस्या के रुप में की है, जिसके लिये बर्नआउट सिंड्रोम नाम दिया गया है। यह व्यक्ति मे अत्यधिक थकान, काम से उबना, कार्य क्षमता और आत्मविश्वास में कमी के रुप में नजर आता है जो उनकी निजी व प्रोफेशनल लाइफ पर बुरा प्रभाव डालती है। साइकालाजी टुडे, बर्नआउट को पुराने तनाव की एक स्थिति के रुप में वर्णित करता है जो शारीरिक और भावनात्मक थकावट, अप्रभाविता, उपलब्धि में कमी आदि भावनाओ को जन्म देती है। बर्नआउट शब्द का प्रयोग सबसे पहले सन् 1961 में ग्राहम ग्रीन द्वारा अपने उपन्यास ए बर्नआउट केश में किया गया, जो एक शिल्पकार के विषय में था, कि वह अपने कार्य से थक चुका था तथा उसके प्रति प्रेरणा खो चुका था। उसकी जिंदगी में न किसी बात की खुशी थी और न हीं किसी बात का गम। सन् 1974 में फ्यूडेनबर्ग नामक मनोवैज्ञानिक ने शैक्षिक क्षेत्र में सर्वप्रथम बर्नआउट शब्द का सूत्रपात किया था, जब वे सेंटमार्क फ्री क्लिनिक में स्वयम् सेवकों के तनाव पर अध्ययन कर रहे थे, अपने लेख स्टाफ बर्नआउट में फ्यूडेनबर्ग ने इस शब्द का प्रयोग धीरे–धीरे शारीरिक, भावनात्मकता और रचनात्मकता में कमी का वर्णन करने के लिये किया। उन्होने बताया कि अत्यधिक तनाव की स्थिति व्यक्ति को बर्नआउट की ओर ले जाती है।

उन्होने बर्नआउट के विभिन्न चरणों का वर्णन अपनी पुस्तक बर्नआउट : द कास्ट आफ हाई अचीवमेंट

(1980) में किया। फ्युडेनबर्ग ने बर्नआउट को असफलता की भावना के रुप में परिभाषित किया जबकि 1982 में मास्लच ने बर्नआउट को भावनात्माक थकावट, अवसाद और उपलब्धि को कम करने वाले सिंड्रोम के रुप में व्यक्त किया। बर्नआउट एक ऐसी स्थिति है जो थकान और काम दोनो के परिणाम स्वरुप होती है इसे मोटे तौर पर स्वासथ्य कर्मियों, पुलिस कर्मियों तथा बैंक कर्मियों जैसे मददगार व्यवसायों के बीच पाया जाता था। वर्तमान में बर्नआउट ने शिक्षण पेशे तक भी अपने पैर पसार लिये है।

हेंड्रिक्स एट एल (2000) ने बर्नआउट को क्रोनिक तनाव कि अवस्था बताया। यदि शिक्षण व्यवसाय की बात करें तो इसमें एक निश्चित मात्रा में तनाव होना स्वाभाविक है किंतु ये कई कारणों से गम्भीर रुप ले लेता है। बर्नआउट शारीरिक, भावनात्मक व अभिव्रतिक तनाव है जो बैचौनी से शुरु होता है और धीरे–धीरे शिक्षण की खुशी को समाप्त कर देता है **(कार्टर 1994)**। बर्नआउट किसी व्यक्ति के बार–बार असफल होने के कारण या अत्यधिक मेहनत के बाद भी अच्छा परिणाम प्राप्त न कर पाने के कारण उत्पन्न होता है। मनोविज्ञान की माने तो जाब बर्नआउट किसी व्यक्ति के अपने कार्य में रुचि न ले पाने के कारण काम में थकान महसूस करना है, यह थकान मानसिक व भावनात्मक दोनों प्रकार की हो सकती है जिससे व्यक्ति के कार्य प्रदर्शन में कमी आती है। बहुत से युवा अपने किशोरावस्था से ही शिक्षक बनने का सपना देखते हैं तथा इसे पूर्ण करने हेतु 2 या 4 साल की औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त कर शिक्षक बनते हैं, साथ ही शिक्षकों को सप्ताहंत तथा गर्मी व सर्दी की छुट्टियाँ जैसी सुविधाये भी प्राप्त है फिर भी वर्तमान में बड़ी संख्या में अध्यापक अपने व्यवसाय को छोड़ना चाहते है।

यह आज नही पिछले कई दशकों से देखने मिल रहा है। ग्रीनबर्ग ने स्पष्ट किया कि शिक्षक व्यवसाय एक आकर्षक व्यवसाय नहीं रह गया है, क्योंकि एक शोध कार्य में एक तिहाई शिक्षकों ने यह स्पष्ट किया कि यदि उन्हे अपने व्यवसाय को पुनः चुनने का अवसर मिले तो वे शिक्षण को नहीं चुनेगे। अतः विद्वानों ने शिक्षक बर्नआउट को तनाव के नकारात्मक परिणामों से जोड़ा जिसमें शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, व्यवहारिक से लेकर भावनात्मक समस्याओं जैसे– थकान, बिमारी, कार्य प्रदर्शन में कमी, अनुपस्थिति, कार्य असंतुष्टि और बर्नआउट आदि प्रमुख हैं। तनाव शिक्षक दिनचर्या का हिस्सा बन गया है शिक्षक लम्बे समय तक काम के तनाव से जुझते हैं जो उनके जीवन में बर्नआउट के रुप में प्रदर्शित होता है। प्रत्येक वर्ष स्कूल नये नियमों के रुप में नई चुनौतियों के समूह लेकर आता है जैसे 2020–21 में शिक्षण पद्धति में भारी बदलाव आये।

कोविड–19 वायरस के कारण पुरे विश्व को एक वैश्विक महामारी का सामना करना पड़ा था। जिसका असर सामान्य जन जीवन के साथ ही शिक्षा पर भी पड़ा, लाकडाऊन के चलते स्कूल लम्बे समय के लिये बंद रहे ऐसे में छात्रों की शिक्षा जारी रखने के लिये विश्वभर में शिक्षा तकनीकी के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा का प्रावधान किया गया, जिसे हम आनलाइन शिक्षण के नाम से सम्बोधित करते हैं। नई शिक्षण पद्धति शिक्षण में नई चुनौतियाँ लेकर आई जैसे घर के कामों के साथ पूरे दिन शिक्षण, कम वेतन आदि. परिणामस्वरुप कोविड 19 के बाद शिक्षण कार्य छोड़ने वाले शिक्षकों की संख्या 19 से 30 प्रतिशत हो गई है। जबकि महामारी से पहले यह दर लगभग 8 प्रतिशत थी (प्रेसली, 2021)। अध्धयन से पता चलता है, कि बर्नआउट के लक्षण हर किसी में अलग दिखते हैं। बर्नआउट भावनात्मक और शारीरिक परेशानियाँ हो सकती है। यह शिक्षक को इस हद तक प्रभावित कर सकता है कि वह उस पेशे को छोड़ने के लिये प्रेरित हो जाते हैं, जिसे वे कभी पसंद करते थे।

बर्नआउट के लक्षण :-

बर्नआउट की अवधारणा 1970 के दशक में उभरी और वर्तमान समय में भी व्याप्त है। ह्युशेंक, 2007, इगंरशोल और स्मिथ, 2003 ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया कि शिक्षण व्यवसाय अत्यधिक तनावपूर्ण व्यवसाय है। किंतु ये कई कारणों से गम्भीर रुप ले लेता है, तथा शिक्षकों के इसे छोड़ने का दर चिंताजनक है। इससे व्यक्ति कि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव हो सकता है। इसलिये बर्नआउट के कारणों व इन्हें रोकने के उपायों कों समझना आवश्यक है।

बर्नआउट के तीन आयाम :-

क्रिस्टीना मैस्लाच ने शोध में बर्नआउट के तीन आयामों की पहचान की जो भावनात्मक थकावट, प्रतिरूपण और व्यक्तिगत उपलब्धि में कमी के रुप में प्रकट हो सकते हैं।

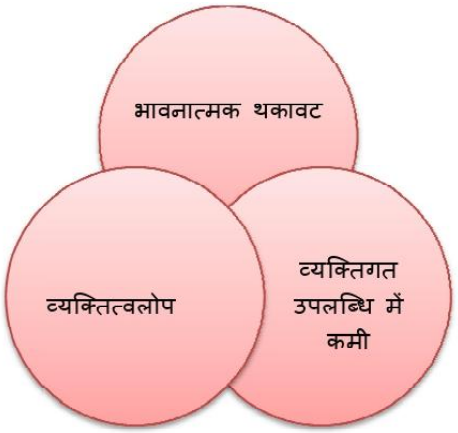

बर्नआउट के आयाम

बर्नआउट के आयाम :-

भावनात्मक थकावट में व्यक्ति अक्सर खुद को थका हुआ, कार्य करने में असमर्थ व भावनात्मक रुप से कमजोर व ऊर्जा में कमी महसूस करने लगते हैं।

यह व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। इसमें व्यक्ति अपने सहकर्मियों व अपने कार्य के प्रति नकारात्मक व्यवहार प्रदर्शित करता है। जिसके परिणाम स्वरुप छात्रों व सहकर्मियों के प्रति प्रेम व सकारात्मक भावना कम हो सकती है। उनमें सबसे दूर व अलग रहने की भावना आ जाती है।

व्यक्तिगत उपलब्धि में कमी से तात्पर्य है कि व्यक्ति के काम करने की क्षमता व उपलब्धि में कमी आई है। अर्थात वह अपने कार्य व उसके परिणामों से संतुष्ट नहीं हैं फिर चाहे वह कितना ही काम क्यों ना कर ले, या वह यह अनुभव करता है कि उसने जितनी मेहनत व लगन से काम किया उसे उसके अनुरुप परिणाम प्राप्त नहीं हो पा रहे हैं जो उसके आत्मविश्वास में कमी लाता है जिस कारण व्यक्ति के बर्नआउट दर में वृद्धि होती है।

बर्नआउट के ये तीनों आयाम आपस में अंतर्सम्बंधित होते हैं, और एक दुसरे में शामिल होते हैं। व्यक्तिगत उपलब्धि में कमी के कारण व्यक्ति में भावनात्मक थकान उत्पन्न होती है जो व्यक्तित्वलोप को जन्म देती है। ये तीनों आयाम व्यक्ति में निम्न लक्षणों के रुप में व्यक्त होते हैं।

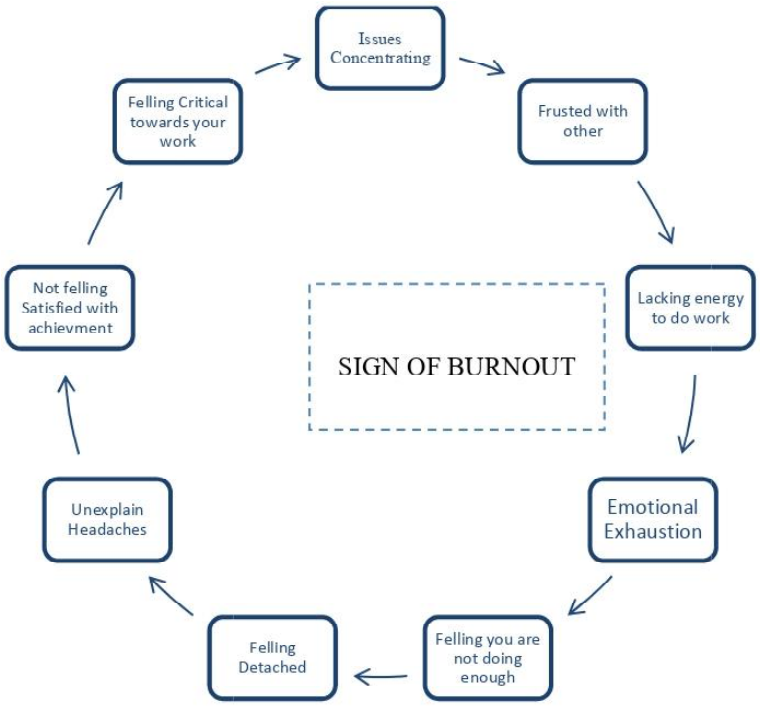

बर्नआउट से बचने के उपाय :-

बर्नआउट वर्तमान समय में एक महामारी सा प्रतीत होता है पिछले कुछ सालों में इसमें तेजी आई है, और कई शिक्षक इससे पीड़ित हैं। हालाँकि शिक्षक बर्नआउट एक ऐसी चीज है जिससे आसानी से बचा जा सकता है, यदि शिक्षक आरम्भ में उन संकेतों को पहचान लें तो बर्नआउट से बचाव के उपाय करना आसान है। मनोवैज्ञानिक फ्रायडेनबर्गर और गेल नार्थ ने बर्नआउट सिंड्रोम के 12 घटकों की पहचान की है जो इस प्रकार से हैं।

1. महत्वाकांक्षा।
2. खुद को अधिक काम हेतु प्रेरित करना।
3. अपनी आवश्यकताओं की उपेक्षा करना।
4. संघर्ष करना।
5. कार्य के अलावा अन्य को महत्व ना देना।
6. इन्कार करना।
7. अलगाव।
8. व्यवहार परिवर्तन।
9. वैयक्तिकरण।
10. शक्तिहीनता।
11. निराशा।
12. मानसिक और शारीरिक थकान।

तनाव प्रत्येक व्यक्ति में अलग–अलग तरह से प्रकट होता है जितनी जल्द व्यक्ति इनके लक्षणों को पहचान कर उपाय शुरु करेगा बर्नआउट से बचाव सम्भव है। नियमित रुप से सैर पर जाना, अपने विचारो को डायरी में लिखना, परिवार, दोस्तों व सहकर्मियों के साथ समय व्यतीत करना मनोरंजक कार्यों मे भाग लेना तनाव को बर्नआउट में परिवर्तीत होने से रोकने में मदद करता है।

1. **कार्य व व्यक्तिगत जीवन में संतुलन बनाये रखें :-** अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में संतुलन बनाये रखने से व्यक्ति दोनों को बिना किसी समझौते के प्रबंधित रख सकता है जिससे उसके कार्य संतुष्टी में वृद्धि होती है।

2. **स्वयम् की देखभाल को प्राथमिकता :–** प्रत्येक कार्य से पहले स्वयम को प्राथमिकता देनी चाहिये। व्यक्ति को स्वयम कि मानसिक, शारीरिक आत्म संतुष्टी वाले कार्य पहले करने चाहिये अन्य बाद में जैसे– संतुलित भोजन, हाइड्रेट रहें, प्रयाप्त नींद लें, किताबे पढ़ें आदि।

3. **मानसिक व शारीरिक व्यायाम (योगा) :–** नियमित रुप से दिन की शुरुआत योगा या ध्यान से करें। योग हमे तनाव से मुक्त रखता है तथा शक्ति प्रदान करता है और ध्यान हमारी एकाग्रता को बढ़ाता है।

4. **काम से ब्रेक लें :–** काम के बीच में ब्रेक लें, आराम करें मस्तिष्क व शरीर में उर्जा भरने वाले वर्कआउट करें साल में या महिने में कुछ दिन का व्यक्तिगत अवकाश लें।

5. **सहयोग भावना रखें :–** अपने आस–पास दोस्तों, परिवार तथा सहकर्मियों के साथ सहयोग का रिश्ता बनाये रखें। वक्त आने पर जिनके साथ अपने अच्छे व बुरे अनुभव सांझा किये जा सके।

7. **समय का प्रबंधन :–** समय का सही प्रबंधन करें। जिसमें व्यावसायिक कार्यों के साथ ही अपने व्यक्तिगत कार्यों को भी महत्व दें। प्रभावी समय प्रबंधन कार्य को उपयुक्त समय पर पूर्ण करनें में सहायक होता है, जिससे तनाव कम होता है और कार्य संतुष्टी में सुधार होता है।

8. **स्वयम् पर विश्वास रखें :–** बर्नआउट से ग्रसित व्यक्ति आत्मविश्वास में कमी महसूस करते है उन्हे लगता है कि उनमें कोई भी कार्य करने की क्षमता नहीं है। स्वयम् पर विश्वास रखें कि में कुछ भी कर सकता/सकती हूँ।

उपसंहार :– शिक्षक बर्नआउट एक मनोवैज्ञानिक स्थिति है जो थकावट, अवसाद, उपलब्धि में कमी और आत्मसम्मान में कमी की ओर ले जाता है (रेंस 2011)। वर्तमान शोध लेख में शिक्षकों में व्याप्त बर्नआउट के बारे में समझने का प्रयास किया गया है कि बर्नआउट किस प्रकार शिक्षण जगत में पैर पसार रहा है, इसके आरम्भिक संकेत जो शरीरिक व मानसिक विकार के रुप मे नजर आते हैं उनकी पहचान कैसे करें तथा इसे बढ़ने से कैसे रोकें ताकि उनका तनाव बर्नआउट की अवस्था को न प्राप्त करें।

Refrences :-

1. Anonynus: Jagran https://www.jagaran.comlifestyle.health.
2. Anonynus: www.Indiatoday.in/information./story/whatisburnout2022-12-28
3. Freudenberger, H. J. (1974), Staff burn-out. Journal of social issues, 30(1), 159-165.
4. Gupta, M; & Rani, S. (2014), Burnout: a serious problem prevalent among teachers in the present times. Journal of education & research, 4(1).
5. Hanushek, E. A. (2007), The single salary schedule and other issues of teacher pay. Peabody Journal of Education, 82(4), 574-586.
6. Hendrix, A. E; Acevedo, E. O; & Hebert, E. (2000). An examination of stress and burnout incertified athletic trainers at Division IA universities. Journal of athletic training, 35(2), 139.
7. Ingersoll, R. M; & Smith, T. M. (2003). The wrong solution to the teacher shortage. Educational leadership, 60(8), 30-33.
8. Johnson, S; Cooper, C; Cartwright, S; Donald. I; Taylor, P; & Millet, C. (2005). The experience of work-related stress across occupations. Journal of managerial psychology, 20(2), 178-187.
9. Maslach, C. (1982). Understanding burnout : Definitional issues in analyzing a complex phenomenon. Job stress and burnout. a Complex Phenomenon : Job Stress and Burnout, (January 1982).
10. Pressley, T. (2021). Factors contributing to teacher burnout during COVID-19. Educational Researcher, 50(5), 325-327.
11. Positivepsychology.com; teachers burnout: 4warningsigns-how to prevent it.13dec2023.

Mail address : jyotshna0185@gmail.com, Ph. 9639912987

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 91-95

स्वामी विवेकानन्द जी का शिक्षा दर्शन : एक आदर्श

डॉ. के. पदमा रानी
सहायक आचार्य हिन्दी विभाग, शासकीय महिला महाविद्यालय, खम्मम, तेलंगाना।

शिक्षा के महत्व को दृष्टि में रखकर कहा जा सकता है कि शैक्षिक सिद्धांतों और प्रक्रियाओं का पुनः परिशीलन होता रहना अनिवार्य है। इसलिए प्राचीन युग से लेकर आज तक शिक्षा दर्शन से जुड़े विचार विमर्श और प्रणालियों की निर्माण–प्रक्रिया सतत सक्रिय है। शिक्षा से जुड़े हर उस तत्व का अध्ययन किया जाता आ रहा है, जो छात्र के जीवन को प्रभावित करती है। इसी परिप्रेक्ष्य में स्वामी विवेकानंद जी के शिक्षा दर्शन का अध्ययन का अनिवार्य अंश बन पड़ता है। उनके शिक्षा संबंधी विचार भारतीय समाज को पराधीनता, संकीर्णता और अंधविश्वास से मुक्त कराने वाले थे। आश्चर्य होता है कि समाज में स्वीकृत और सम्मानित विचारधाराएं ही कुछ समय बहिष्कृत हो जाती हैं। ये विचारधाराएं जब व्यक्ति और समाज के लिए विषम बन जाती हैं तो कोई ऐसा महान व्यक्ति उभर कर आता है जो उनके विरोध में खड़ा हो जाता है। भारतीय समाज हमेशा से ही इस विषय में अग्रणी रहा है। भारतीय समाज इसका साक्षी है कि महावीर जैन, गौतम बुद्ध, कबीर, नानक, राजा राममोहन राय, अंबेडकर आदि इसी कोटि के महापुरुष हैं। इनकी तरह ही युवा अवस्था में देश और अपने लोगों के लिए अपना सर्वस्व त्याग कर स्वामी विवेकानंद युवाओं के प्रेरणा बने।

शिक्षा मानवीय समाज की विशेष उपलब्धि है। शिक्षा सामाजिक आवश्यकता है। इसने हर युग में मनुष्य को सम्यक दिशा देने का काम किया है। मनुष्य के सर्वोच्च गुण को वह संरक्षित करती है। स्वामी विवेकानंद ने इसी कारण शिक्षा को महत्व दिया और अपने गहन अवलोकन से भारतीय समाज के लिए शिक्षा को अत्यंत आवश्यक माना। स्वामी विवेकानंद ने विश्व कल्याण को सर्वोपरि माना। उनके जीवन दर्शन में अत्यंत व्यापकता है। संस्कृति के नाम पर पनपने वाली संकीर्णताओं और बंधनों का तीव्र विरोध करते हुए, उन्होंने भारतीय विचारधाराओं को नए आयाम के साथ प्रस्तुत किया है।

विवेकानंद शिक्षा के परंपरागत रूप से संतुष्ट नहीं थे। शिक्षण पद्धति, लक्ष्य और प्रक्रिया को उन्होंने बारीकी से परखा। देशाटन और वर्तमान युग की परिस्थितियों का आकलन करते हुए शिक्षा के अपने नवीन मंतव्य प्रस्तुत किए। स्वामी जी का जीवन समन्यवादी, व्यापक और प्रेरणादायक रहा है। वैसे ही उनका शिक्षा दर्शन भी अत्यंत व्यापक लक्षण को लेकर चलता है। वे धर्म को मानव कल्याण का साधन मानते हैं। व्यक्ति को कठिन संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं। स्वामी जी के अनुसार शिक्षा शिक्षा का अर्थ है, 'शिक्षा की व्याख्या शक्ति के विकास के रूप में की जा सकती है। शिक्षा मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।' अर्थात शिक्षा एक अनिवार्य आवश्यकता है।

19वीं सदी के सुधारवादी आंदोलन के समय स्वामी विवेकानंद ने जिस प्रकार शिक्षा को महत्व दिया, वह प्रगति की ओर दिशा निर्देश करने वाली थी। राष्ट्रसेवा और मानव सेवा का संकल्प लेने वाले स्वामी विवेकानंद शिक्षा संबंधी अनेक विषयों को प्रकाश में लेकर आए। वे तत्कालीन शिक्षा नीति का निर्भीकता से विरोध करते थे। उनके अनुसार, 'वर्तमान शिक्षा प्रणाली और कुछ नहीं केवल लिपिक उत्पन्न करने की एक सर्वोत्तम मशीन है। यदि इतना ही हो तो मैं अपने भाग्य के नक्षत्र को धन्यवाद दूंगा। किंतु नहीं देखा कि भारतीय मनुष्य श्रद्धा और निष्ठा से रहित होते जा रहे हैं। वे इस बात का दावा करते हैं कि गीता एक टीका मात्रा थी और वेद केवल ग्रामीण गीत थे .....हमारे शिक्षा शास्त्री हमारे बच्चों को तोता बनाई दे रहे हैं।' स्वामी जी कंठस्थ करके सीखने से अधिक व्यवहारिक ज्ञान को महत्व देते थे।

उनके शब्दों में, 'हमें अपने देश की संपूर्ण शिक्षा आध्यात्मिक तथा भौतिक, अपने हाथों में लेनी होगी और जहां तक संभव हो उसे राष्ट्रीय रूप देना होगा।" वे शिक्षा का क्षेत्र विस्तृत करना चाहते थे, जिससे कि मनुष्य का पूरा व्यक्तित्व निखरकर आ सके। व्यक्तित्व का संतुलित विकास करना, साहस, स्पष्टवादिता, विश्वास, आत्मविश्वास, निर्भीकता, मुख्य रूप से चरित्र के निर्माण पर बल देते हैं। इसलिए शिक्षा का कार्य अच्छे विचारों को उत्पन्न करना है, शिक्षक का कर्तव्य होता है कि वह केवल पाठ्यक्रम देना ही नहीं बल्कि उदात्त और कल्याणकारी विचार देना आवश्यक है।

विवेकानंद शिक्षा को एक 'सिद्धि' मानते थे। उसे मनुष्य की पूर्णता का स्रोत मानते थे। इसलिए उन्होंने शिक्षा के भी कुछ उद्देश्य निर्धारित किए। उनके अनुसार "शिक्षा का मुख्य उद्देश्य पुरुषोचित व्यक्तित्व का निर्माण करना था। "वे व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को विकसित करने वाली शिक्षा प्रणाली का समर्थन करते थे। शिक्षा के द्वारा चरित्र का निर्माण होना आवश्यक मानते थे। इसके साथ वह मानते थे कि, 'यदि शिक्षा देश प्रेम की प्रेरणा नहीं देती तो उसको राष्ट्रीय शिक्षा नहीं कहा जा सकता।' उनके साथ स्वामी जी के अनुसार मानव प्रेम, विश्व चेतना, विश्व बंधुत्व के गुणों अध्यापन किया जाना चाहिए। स्वयं की शक्तियों को अर्थात आंतरिक शक्तियों को उजागर करने का कार्य शिक्षा का है। मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, भावात्मक और व्यवसायिक विकास करना शिक्षा के मुख्य उद्देश्य हैं। स्वामी विवेकानंद ने मनुष्य के लिए उन गुणों को आवश्यक माना जो उसको संपूर्ण मानव के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं, जिनके आधार भारतीय धर्म और संस्कृति के उदात्त तत्व, भारतीय साहित्य हैं। जैसे आत्मविश्वास आत्म श्रद्धा आत्म त्याग आत्म नियंत्रण आत्मनिर्भरता, आत्मज्ञान आदि अनेक अलौकिक सद्गुणों का विकास करना शिक्षा का कार्य है। इन सबका विकास करना शिक्षा का उद्देश्य मानते हैं।

भारतीय संस्कृति में सदैव से ही शिक्षक का कार्य स्थान सर्वोच्च रहा है। जीवन और जगत के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए, मनुष्य को उसके असली पहचान देने का दायित्व शिक्षक पर होता है। इसलिए आज के युग में शिक्षा प्राप्त करने के अनेक तकनीकी साधन होते हुए, भी शिक्षक का अपना महत्व है। स्वामी विवेकानंद भी शिष्य और गुरु के मध्य के सबंध को अत्यधिक महत्व देते हैं। वे अध्यापक को सच्चरित्र, उच्च आध्यात्मिक और वैदिक उपलब्धियों वाला व्यक्ति मानते हैं। "सच्चा शिक्षक वही है, जो क्षण भर में स्वयं को हजारों व्यक्तियों में परिणत कर सके, साथ ही छात्रों के लिए कुछ तत्वों को आवश्यक मानते हैं, जैसे छात्रों को मन–वचन–कर्म से स्वयं को पूर्णतया सिद्ध बनाना है। उसे ज्ञान प्राप्ति के लिए जिज्ञासु और निरंतर प्रयासरत रहना है। उसे गुरु को ईश्वर की भांति स्वीकार करना चाहिए। लेकिन गुरु की सभी बातों को अंधविश्वास के साथ स्वीकार नहीं

करना चाहिए। उसे अपने विवेक से भी काम लेना चाहिए। गुरु और शिष्य के घनिष्ठ संबंध को आवश्यक मानते थे।

शिक्षक को कभी भी छात्र पर अधिकार या आधिपत्य जमाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। छात्रों की समस्याओं का समाधान करना चाहिए। छात्रों को उसकी प्रवृत्ति के अनुसार पढ़ाना चाहिए। छात्र को बहुत सारी बातों का ज्ञान होता है। उसको उभारने का प्रयत्न शिक्षक का कार्य है। छात्रों को पढ़ने और विषय को समझने की स्वतंत्रता देनी है, ना कि किसी तरह का दंड या अधिकार जमाना। स्वामी विवेकानंद ने शिक्षण कार्य में स्वाभाविकता एवं मनोविज्ञान को महत्वपूर्ण माना। जिसे आजकल के शिक्षण कार्य में भी इस बात पर जोर दिया जा रहा है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार धर्म की शिक्षा के बिना राष्ट्रीय शिक्षा नहीं हो सकती, क्योंकि भारतीय समाज में धर्म के अनेक सिद्धांत केंद्रित हो चुके हैं। धर्म को भारतीय जनमानस से अलग नहीं किया जा सकता। स्वामी जी धर्म को विकास और कल्याण का साधन मानते हैं। परंतु उन्होंने धर्म के सच्चे शाश्वत सिद्धांतों का समर्थन किया था। वे परंपरागत पूजा और विधि विधानों को नहीं मानते थे। उनके अनुसार धर्म की शिक्षा वहीं तक आवश्यक है, जहाँ तक वह मानव कल्याण के लिए जनता को प्रेरित कर सके। छात्रों का विकास कर सके और समाज को सुव्यवस्थित कर सके। वे मानते थे कि धर्म शिक्षा का अंतरंग आधार है। परंतु उन्होंने भारतवर्ष को धर्म का अंधानुकरण करने से बचने के लिए कहा। भारतीयों द्वारा धर्म का अनुपालन के बारे में उनका मानना था कि "हमने धर्म का भली भांति ना तो अध्ययन किया है और ना ही उसे जीवन में उतारा है। हम धार्मिक ना हो अंधविश्वासी हो गए हैं।" इसलिए आज की शिक्षण प्रक्रिया में धर्म को संकीर्णताओं से परे रखा जाना चाहिए। धार्मिक शिक्षाओं का लक्ष्य आचरण और संस्कारों के परिष्कार के लिए होना चाहिए ना कि अनुशासनहीनता या भेदभाव को बढ़ाना। धर्मों को एक दूसरे से बढ़ने का कोई होड न हो। भारत को धर्म से अधिक आवश्यकता रोटी और शिक्षा की है। इसलिए उन्होंने प्रण लिया था कि कि भारत के हर भूखे के लिए वह रोटी की खोज करेंगे। धर्म के मामले में यह कहना चाहते थे कि यदि आप ईश्वर को पाना चाहते हो तो मानव की सेवा करिए। अमरीका के धर्म संसद में उन्होंने कहा था कि मुझे अपने देश की जनता के लिए रोटी चाहिए। इस स्थिति के कारण वे कहते हैं कि "वह हमसे रोटी चाहते हैं और हम उन्हें पत्थर देते हैं, एक भूखे व्यक्ति को तत्व मीमांसा पढ़ाना उनका अपमान करना है"। इसलिए वे शिक्षा के समर्थक थे।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार पाठ्यक्रम एक ऐसा साधन है, जो शिक्षक को शिक्षण कार्य में पृष्ठभूमि देता है। पाठ्य–पुस्तक शिक्षक को शिक्षण कार्य के लिए एक पृष्ठभूमि प्रदान करता है। पाठ्यक्रम में उन अंशों को शामिल करना चाहिए। जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायता करते हो,जो उसे जीवन की कठिनतर परिस्थितियों में उसको संघर्ष करने और समस्याओं का समाधान करने में मदद करें। पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए,जो मनुष्य की लौकिक समृद्धि को विकसित करें और आध्यात्मिक रूप से परिपूर्णता प्रदान करें। उन्होंने भारत देश में धर्म शिक्षा का समर्थन किया था, परंतु किसी भी तरह से अंधभक्ति नहीं की थी। उनके अनुसार मोक्ष या साधना के मार्ग में चलकर इस संसार के अन्य विषयों की अपेक्षा करना विवेक हीनता है। मनुष्य को इसी जीवन में उच्चता को प्राप्त करना चाहिए। वे कभी भी पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता की उन्होंने निंदा नहीं की। वह भारतीय और पाश्चात्य सभ्यता के समन्वय रूप को पाठ्यक्रम में शामिल करने के समर्थक थे।" आवश्यकता

इस बात की है कि विदेशी नियंत्रण से स्वतंत्र रहकर हम अपने ज्ञान की विभिन्न शाखों का अध्ययन करें और उसके साथ अंग्रेजी भाषा और विज्ञान का भी हमें तकनीकी शिक्षा तथा उन सब वस्तुओं की आवश्यकता है, जिससे उद्योगों का विकास हो सके ताकि लोग नौकरी ना करके अपनी आजीविका के लिए पर्याप्त धन का अर्जुन कर सकें और आपत्ति के दिनों के लिए कुछ बचा भी सके।"

भारतीय समाज में सदा से ही स्त्रियों को पढ़ने का मौका कठिनाई से मिलता है। पुनर्जागरण आंदोलन के समय सावित्रीबाई फुले, ज्योतिबा फुले, एनी बेसेंट, स्वामी विवेकानंद जैसे कुछ लोगों द्वारा ही स्त्री शिक्षा को बल मिल पाया है। स्त्री शिक्षा भारतीय समाज की विशेष जरूरत थी। इसलिए स्वामी विवेकानंद ने भी इस और अपने विचार व्यक्त किया यह एक चिंता का विषय था कि स्त्रियों में भी सभी को पढ़ने का मौका नहीं मिलता था। सामान्य वर्ग की स्त्री लोग इससे वंचित थे। स्त्रियों की दुखद दशा और समाज के मनीषियों ने स्त्री शिक्षा पर कार्य किया। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि "हमारी जाति की अवनति का मुख्य कारण यह है कि हम 'शक्ति' की इन सजीव प्रतिमाओं के प्रति आदर नहीं रखते थे। स्त्रियों को उचित आधार देकर ही सभी देशों को महानता प्राप्त की है। जो देश या राष्ट्र स्त्रियों का आदर नहीं करते, वह कभी महान नहीं बन सके और न भविष्य में ही कभी हो सकेंगे। "इसीलिए उन्होंने स्त्रियों की दशा सुधारने का सबसे शक्तिशाली साधन शिक्षा को माना और उन्होंने कहा कि उनमें अनेक शक्तियां निहित हैं,उन्हें उचित ढंग से शिक्षा दी जाए तो वह देश की मूल्यवान संपत्ति बन सकती हैं और देश के उद्धार में अपना योगदान दे सकती हैं"। विवेकानंद जी के अनुसार शिक्षित माताएं होगी तो भारत में महान पुरुषों का जन्म होगा और वह सीता की तरह आदर्श पर चलकर भारतीय आदर्शों का मान रख सकेंगे। वे उन महिलाओं समर्थन नहीं करते थे जो अंग्रेज महिलाओं का अनुकरण करती थीं। विवेकानंद नारी शिक्षा और नारी स्वतंत्रता के समर्थक थे। उनका मानना था शिक्षा से वे स्वयं के भले बुरे को पहचान सकेंगी। वे कहते थे "पहले अपनी स्त्रियों को शिक्षित करो तब वह आपको बताएंगे कि उनके लिए कौन से सुधार आवश्यक है उनके मामलों में तुम बोलने वाले कौन हो।''

उनका विश्वास था कि भारतीय स्त्रियों को शिक्षा के माध्यम से स्वस्थ एवं सुखी गृहस्थ जीवन की आवश्यकताओं के अनुकूल शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। जैसे कि सिलाई कढ़ाई,पाक शास्त्र, गृह कार्य, बच्चों का पालन पोषण ऐसे विषय पढ़ने चाहिए। वास्तव में यह आज के युग के लिए सटीक नहीं बैठता। परंतु कहीं ना कहीं शुरुआत तो होनी थी। स्त्रियों के स्वास्थ्य के लिए पारिवारिक सम्मान और समाज में अपने को प्रस्तुत करने के लिए मुख्य रूप से स्त्रियों को शिक्षित होना जरूरी था। भले ही यह एक संकीर्णताओं भरी शिक्षा रही लेकिन शुरुआती दिनों में हम विवेकानंद के इस बृहतद्देश्य को सहर्ष स्वीकार कर सकते हैं।

विवेकानंद जी ने ईश्वर की सेवा और मानव की सेवा को एक माना। इसलिए वे हर उस अंश को समर्थन देते थे जो सामान्य जनता के लिए श्रेयस्कर कर रही है। उनके अंदर मानवीयता और राष्ट्रीयता की भावना भरी हुई थी। वह हमेशा कहते थे "जब तक करोड़ों लोग भूख और अज्ञानता का जीवन व्यतीत करते हैं, मैं प्रत्येक व्यक्ति को देशद्रोही समझता हूँ, जो उनके मूल्य पर शिक्षित होकर उनकी ओर किंचित भी ध्यान नहीं देता।" अर्थात् वे भारत के जनसाधारण की शिक्षा के समर्थक थे। अज्ञानता को ही पिछडेपन का कारण मानते थे। स्वामी विवेकानंद ने इतिहास, भूगोल, विज्ञान, साहित्य और धर्म की शिक्षा देना श्रेष्ठकर माना। इससे व्यवहारिक ज्ञान और आध्यात्मिक ज्ञान दोनों मिलने की संभावना रही। परंपराओं का विरोध करते हुए, सभी वर्गों के लोगों के शिक्षा

के समर्थक थे। अंग्रेजी शासन के समय जब अंग्रेजी शिक्षा का बोलबाला था तब साधारण जनता अंग्रेजी में शिक्षा पाने में असमर्थ थी। इसलिए स्वामी विवेकानंद जी ने देशी भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने का प्रस्ताव रखा। उनका विश्वास था कि संस्कृत और अंग्रेजी से वे जनता को शिक्षित नहीं कर पाएंगे। जनता को विषयों का ज्ञान उनकी भाषा में ही दिया जाना चाहिए।

साधारण की शिक्षा के विषय में स्वामी जी का मानना था की "मेरे विचार से जनसाधारण की अवहेलना करना महान राष्ट्रीय पाप और हमारे पतन का कारण है। जब तक भारत की सामान्य जनता को एक बार फिर अच्छी शिक्षा, अच्छा भोजन और अच्छी सुरक्षा नहीं प्रदान की जाएगी, तब तक अधिक–से–अधिक राजनीति भी व्यर्थ होगी। वह हमारी शिक्षा के लिए धन देते हैं, वह हमारे मंदिरों का निर्माण करते हैं पर उनके बदले में उनका ठोकरें मिलती हैं। वह हमारे दासों के समान हैं। यदि हम भारत का पुनरुत्थान चाहते हैं तो हमें उन्हें शिक्षित करना होगा। जनता को शिक्षित करने के लिए गाँव–गाँव जाकर उनके घर जाकर उन्हें शिक्षा देनी होगी, क्योंकि अगर वह विद्यालय आते हैं तो उनको रोजी रोटी के लिए साधन नहीं मिलते। अगर वे खेतों में जाते हैं तो उनके बच्चे विद्यालय नहीं जा पाते। इसलिए उन्हें आवश्यक विषयों की शिक्षा प्रदान करने के लिए घूम–घूम कर शिक्षा का कार्य करना चाहिए।

इस प्रकार स्वामी विवेकानन्द जी के शिक्षा दर्शन का मार्ग अत्यंत आदर्शों से युक्त हैं। उन्होंने देश की संस्कृति को अक्षुण्ण रखते हुए आधुनिक शिक्षा को महत्व दिया। शिक्षा को ही विकास और सुख समृद्धि का मूल साधन माना।

9177486704,
Email : raninpadma11@gmail.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 96-99

साहित्य और समाज के शुभचिंतक, मूल्य उपासक मुकेश कुमार 'ऋषि वर्मा'

डॉ. मीनू शर्मा
हिंदी सहायक अध्यापिका एवं साहित्य उपासक, श्री माधव कॉलेज ऑफ एजूकेशन एंड टेक्नोलॉजी हापुड़
देवलोक कॉलोनी निकट शांतिनिकेतन हापुड़, उत्तर प्रदेश

प्रस्तावना :-

स्वस्थ समाज स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण करता है। समाज का सुदृढ़ रूप राष्ट्र की श्रेष्ठता निर्धारित करता है, आज का बालक कल का भावी भविष्य बनेगा। श्रेष्ठ नागरिक बनकर ही वह राष्ट्र का विकास कर सकता है और शांति दूत बनकर वह आध्यात्म का पाठ जगत को पढ़ा सकता है। साहित्य की प्रासंगिकता उसके मूल्य पर पूर्णतया आश्रित होती है। साहित्य में अंतर निहित नैतिक और सकारात्मक पक्षों की ओर प्रेरित साहित्य नव दिशा की ओर समाज को मोड़ता है। वह साहित्य सूर्य समान प्रकाशित होता है जो समाज राष्ट्र और मानव मूल्यों के हित की बात करता है, यथार्थ से जुड़ा साहित्य हृदय पक्ष पर अपनी अमिट छाप छोड़ता है और समाज को प्रेरित करने में सक्षम होता है, कविताएं समाज का आईना प्रस्तुत करती हैं यथार्थ प्रस्तुत करती हैं, विद्वान जन पंक्तियों से ही वास्तविकता को सहज रूप से समझ लेते हैं। कविताओं में अपनत्व का भाव उसकी प्रासंगिकता उपयोगिता को प्रदर्शित करता है। श्री मुकेश कुमार वर्मा जी की प्रमुख काव्य पंक्तियों में यथार्थ का वर्णन किया है और संपूर्ण समाज की सच्चाई को काव्य पंक्तियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है, उनकी कविताओं की जीवंत भावनाओं को प्रस्तुत करना इस शोध शीर्षक का प्रमुख उद्देश्य है। मुकेश जी की कविताएं श्रोता और पाठक वर्ग के हृदय को स्पर्श कर आत्मीयता के दर्शन कराती है।

नारी, वसुंधरा और जीवन सम्मान के पक्षधर :-

नारी तो पूज्यनीय है, सम्मान की पात्र है, श्रद्धा की पात्र है। नारी को सुरक्षा के लिए चिंता व्यक्त करते हुए कभी मुकेश कुमार वर्मा जी ने 'कब होश में आओगे' कविता को श्रोतागण के मध्य रखा है। 'खतरे में मेरे देश की बेटियां' इस ज्वलंत तो प्रश्न को कवि ने उठाया है जीवन तो निरंतर गुजर रहा है। 'धड़कन' कविता के माध्यम से निःस्वार्थ बचपन को याद किया कवि द्वारा मैं, पर की भावना से रहित, भेदभाव की भावना से रहित वसुधैव कुटुंबकम की भावना से जुड़ने के लिए प्रेरित करते हैं। ठीक नहीं कविता हमें एकता की भावना से जोड़ती है परिवार का मुखिया पिता जो प्राणवायु के समान है संकटों में ढाल है, उनके चरणों में सारा जहां है, पिता परिवार का भगवान है। पिता के विषय में हृदयस्पर्शी भावों को कविता माध्यम से प्रस्तुत कर पिता के

वास्तविक महत्व को बताया है। वास्तव में पिता घर का मन है सम्मान है इच्छाओं को सीमित रखना प्रसन्नता के द्वार खोलता है, यहां कवि द्वारा मानव मन को स्वस्थ रखने की बात की है। जीवन जब तक है, तब तक खुश होकर जीवन को जियो और जीने दो की भावना से जुड़कर चलने को कहा है। स्वार्थ से भरे रिश्ते पर दृष्टि डालने से लेकर भौतिकता के हावी होने तक के सफर को कवि ने बड़ी ही स्पष्टता से प्रस्तुत किया है और मान्यता से जुड़ने का आग्रह किया है, द्वेष भाव को समाप्त करने की बात भी की है वसुंधरा को सार्थक कर्मों द्वारा स्वर्ग बनाने का आग्रह किया है :–

''वसुंधरा को नेक कर्मों से स्वर्ग बनाओ।
राष्ट्र हित तन मन धन अर्पण कर जाओ।
अच्छे कर्मों से जग बगिया महकाओ।
निर्भय हो जीवन सुखमय जीते जाओ।''

सद्कर्मों के साथ अपने जीवन को जियो और जीने दो की भावना को काव्य पंक्तियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। भारतीय त्योहार दीपों से सुसज्जित दीपमाला परिवार में यह त्योहार आपसी प्रेम को बढ़ावा देते हैं, परिवार मिलकर साथ रहे ऐसी श्रेष्ठ भावना को भी 'दीपोत्सव' कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया है :–

''जगमग रोशन हो घर–घर।
मिले नव आशा खील बताशा।।''

दीपोत्सव का त्योहार पावन पर्व दीपावली सुंदर पंक्तियों के माध्यम से दीपावली के त्योहार को कवि ने वरीयता दी है, संपूर्ण सृष्टि के आधार प्रभु का गुणगान कवि ने हे प्रभु रचना के माध्यम से अभिव्यक्त किया है, प्रभु द्वारा सद्बुद्धि देने का आग्रह करते हुए भटके इंसानों को राह दिखा प्रभु से ऐसा निवेदन किया और कहा कि, आपकी महिमा को कोई समझ नहीं पाया सब व्यर्थ की बातों में उलझे पड़े हैं। वास्तविकता से सब विमुख नजर आते हैं। 'सड़क सुरक्षा' पंक्तियों के माध्यम से 'जीवन रक्षा' कविता के माध्यम से कवि ने जल्दबाजी से सुरक्षा नहीं होती। इसलिए धैर्य से कार्य करो घर परिवार के तुम सहारे किसी के पिता, पति, भाई, बेटा आदि पंक्तियों के माध्यम से यातायात के नियमों को स्मरण रखने का संकेत दिया है और नियमपूर्वक वाहन चलाएं आप पर संपूर्ण परिवार निर्भर है, परिवार की आधारशिला माँ हमारी भगवान है, वह हमें बालपन से लेकर बड़े होने तक के सफर में हमारा हाथ पकड़ कर हमें समाज के वास्तविक अर्थ को समझती है। उससे परिचय कराती है, मां के बिना जीवन व्यर्थ सा प्रतीत होता है। मां ममता से परिपूर्ण प्रेम में होकर हमारा पालन पोषण करती है, पीड़ा के समय में मन को हम सर्वप्रथम याद करते हैं और मां का स्थान हमारे हृदय में सर्वोपरि है, वही हमारे दुख सुख का सहारा है कवि द्वारा मां के लिए कविता की कुछ पंक्तियां निम्नवत है :–

''मां मेरी अपने मन में बसु तुम ही को।
हृदय में भगवान बनाकर बिठाऊ तुमही को।
मेरी सांसे।
मेरी धड़कन।
सब तुम्हारी दी हुई.....।''

'आदमी स्मार्ट हो गया है' कविता के द्वारा मानव के अंदर अब अपनेपन की भावना धीरे–धीरे लुप्त हो

गई है। गांव शहर में परिवर्तित हो रहे हैं, शहरीकरण से जुड़कर लोगों के अंदर अपनेपन की भावना समाप्त होती जा रही है और स्वार्थ सिद्ध करने के लिए रिश्ता बनाते हैं। स्वार्थ ने अपनेपन की भावना को निगल लिया है। धीरे–धीरे अपनत्व की भावना समाप्त होती जा रही है।

मानव जीवन से जुड़े सभी पक्षों पर कवि ने अपनी लेखनी चलायी है। त्यौहारों के प्रति उल्लास अब निरंतर समाप्त होता जा रहा है और त्यौहारों के प्रति पहले जैसी उमंग और उत्साह अब दिखाई नहीं पड़ता अब तो बस डीजे का शोर ही सुनाई पड़ता है। कवि ने इस कविता माध्यम से अब अपनत्व के भाव में कमी को दिखाया है, जिस पर वह अपने विचारों को कुछ इस प्रकार अभिव्यक्त कर यथार्थ पक्ष को प्रस्तुत कर ज्वलन्त समस्या को दिखाया है। कटाक्ष और व्यंग्य माध्यम से मानव की वास्तविकता को कवि ने विभाग पद्धति से प्रस्तुत किया है। आज के समय में मानव निराशा और दुखी होकर आत्महत्या के रास्ते को अपनाते हैं, वह परिस्थितियों का सामना नहीं कर सकता और वह उससे बचाव के लिए पलायन करता है। और आत्महत्या करता है, जो अनुचित है, प्रभु द्वारा इतना सुंदर जीवन मिला है, और हम सभी ईश्वर की अनुपम कृति हैं, प्रभु का हमें धन्यवाद करना चाहिए की पुण्य कर्मों से हमें मानव रूप मिला है, उसका सम्मान करो और वह बनो जो समाज में आपका मान बढ़ाएं तुम्हारे जाने से जीवन पर कोई फर्क नहीं पड़ता सूरज चांद वैसे ही निकलते हैं, जैसे पहले निकलते थे, किसी पर कोई प्रभाव नहीं होगा सब कुछ दिनों की बात है। कवि द्वारा 'आत्महत्या' कविता के माध्यम से स्पष्ट बात को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। 'आया बसंत' कविता में बसंत के आगमन पर खुशियां कैसे बढ़ जाती हैं, कवि ने सुंदर पंक्तियां के माध्यम से बसंत को प्रस्तुत किया है :–

''आया बसंत छाई उमंग,
शोभा अनंत फैली तरंग
बोराई अबुआ की डाल
बदल गई गोरी की चाल.....।
कागा काको धन हरे,
कोयल काको दे,
मीठे वचन सुनाएं के मन सबका हर ले।

मीठे बोल की बात सभी मानते हैं। मृदुल कुक का स्वर किसे प्रिय नहीं होता कवि ने मृदुल कूक को इस प्रकार प्रस्तुत किया है :–

''तुम कूक उठी
मृदुल मृदुल
ये गान तुम्हारा अमर रहे।
प्रेमी जन सुन कूक तुम्हारी मगन रहे।।

कोमल सरल पंक्तियों के माध्यम से कवि ने भावों को व्यक्त किया है। रिश्तो की कीमत समय के परिवर्तन से स्वार्थ में भरकर चल रही है, रिश्ते निरंतर सिकुड़ रहे हैं और अच्छे रिश्तों की कीमत आज के समय में सब नहीं समझ पा रहे हैं, पैसा सर्वोपरि मान्यता रखने लगा है। बस दिखावे में अपना बड़प्पन मानकर स्वयं को सर्वोपरि मानता है। कर्म पथ पर आगे नहीं बढ़ना चाहता और स्वयं को समाप्त करने में लगा हुआ है। कर्म और

कर्तव्य से वह भगत नजर आ रहा है। कवि ने अपनी कविता के माध्यम से मानव को कम करने के प्रति सजग किया है और कर्तव्य पथ पर बढ़ाने को निरंतर प्रेरित कर रहा है। रिश्तो को समझो उनकी कीमत अनमोल है, कवि ने अपनी कविताओं के माध्यम से मानवीय पक्ष में सुधार करने का प्रयास किया है। जीवन कविता के माध्यम से जीवन के वास्तविक अर्थ को समझने और राग द्वेष द्वंद सबको मिटाकर आगे बढ़ने का संदेश दिया है –

''तृष्णा और छल छद्म मिटाओ।
प्रेम भाव अपने हृदय में जगाओ।।
शुष्क मन को पुष्प सा खिलाओ।
राग द्वेष से सब द्वंद भगाओ।।''

जीवन कविता के माध्यम से जीवन को परिभाषित किया है और पानी की कीमत समझने का कविता माध्यम से प्रयास किया है। 'बूंद बूंद अनमोल' कविता द्वारा पानी की कीमत बताई है :–

''नीर की कीमत समझो
व्यर्थ में इसको मत बहाओ
रे मानव तू संभल जा अमृत से कीमती है, जल.....।''

जल के अभाव में सब समाप्त हो जाएगा सबको सतर्क करने का प्रयास किया है। बिन पानी जीवन नहीं पानी है अनमोल यह समझाने का प्रयास किया है।

भारत को हम विश्व गुरु कहते थे, आज भी हम भारत को इस रूप में लाने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं। भ्रष्टाचार ऊंचाई से गिरते हुए बर्फ के गोले समान है जो निरंतर नीचे गिरता हुआ अपने आकार को बढ़ाता हुआ आगे बढ़ रहा है। कवि ने कविता माध्यम से भ्रष्टाचार पर खुलकर प्रहार किया है –

''भ्रष्टाचार बन गया शिष्टाचार
भुखमरी गरीबी का गरम बाजार
हे ! सुभाष, भगत, बिस्मिल, अशफाक
कब होगा भारत भू पर सच्चा अधिकार?''

इस कविता माध्यम से भ्रष्टाचार के सच को बताया है। आज के समय की यथार्थ को कविता माध्यम से प्रस्तुत किया है, सत्य की पुस्तकों को खोलकर रख दिया है। कवि मुकेश कुमार ऋषि वर्मा जी ने इन कविताओं के माध्यम से सत्य को धरातल पर लाकर रख दिया है। जो सराहनीय कार्य है, सत्य को स्पष्ट रूप से कह देना स्पष्टवादीजन का लक्षण है। कविता माध्यम से सत्य के प्रश्नों को, विचारणीय प्रश्नों को, उनके उत्तरों को पाठक और श्रोता के मध्य रख दिया है, जो प्रशंसनीय कार्य है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है, कि श्री मुकेश कुमार 'ऋषि वर्मा' जी की कविताएं मानव जीवन के हित में बात करती हैं और मानव हित पक्षधर साहित्य और समाज हितेषी मूल्य उपासक मुकेश कुमार 'ऋषि वर्मा' जी सकारात्मक पक्ष के पक्षधर हैं। वे हमें प्रेरित कर सजक करने में सहायक हैं, वास्तव में उनकी कविताओं का संग्रह यथार्थ चित्रण को प्रस्तुत करता है। जीवन को सार्थक बनाने के लिए कवि ने कविताओं द्वारा कविकारो और साहित्यकारों को प्रेरित और प्रभावित किया है।

मो. 7895525766

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 100-104

Study of the Emotional Intelligence of Boxing players of Haryana State and Rajasthan State

Lalit Singh Rajpoot, Researcher
Dr. Anita Ranawat, Supervisor
Tantia University, Sriganganagar, Rajasthan.

Introduction -

The game is countless physical activity, which provides freedom from stress andanxiety. It provides an area of good future and professional life for players. It couldgive players names, fame and money. Therefore, we can say, we get professionalbenefits and personal gain from games. In both ways, it benefits our body, mind andsoul. Some people play regularly for their body and brain's fitness, pleasure, etc.However, some play to get value in their life. No one can ignore its value in personaland professional life.

While the light has been thrown on the life of a successful person. It depicts that the success in terms of names, fame and money do not comeeasily. For this, a person requires passion, regularity, patience, and most importantlysome physical activities and a healthy life. And for a success, a person needs physical and mental health. The game is the best way to get involved in regular physical activities. The success of any person depends on the mental and physical energy.History tells us that only domination (fame) is the power to rule the nation or the person.

Boxing -

Boxing has become an exciting sport in today's time. Boxing is perceived and be fond of world wide. Maintenance of elite performances is a challenge in boxing. All mostall the aspect of fitness such as physical, physiological, and psychological playsimportant in achieving elite performances in boxing. Magnitude of factors influences the performance of boxing players some of them can be foreseen and can be manipulated such as diet, physical fitness, the player's mental toughness, mentalability, creativity, and brain functions.

Boxing is a Combat Sports in which two players strike punch among them. Both players wear gloves in the hands. Boxing games are played in the ring of boxing. Boxing game are played in certain

times and fixed sets. Boxing is played at varioustournaments and competitions such as Asians Games, Common wealth Games and Olympic Games. Boxing has its own world champion ship. This game is supervised bya referee. There are 3 rounds of 3 minutes for boys, between which there is 1-minute break, there are four rounds of 2 minutes for girls, and there are 3 breaks in betweenthe bouts of 1 minute.

Emotional Intelligence -

To understand Emotional intelligence first it is must to comprehend the meaning of emotions the aptitude to comprehend one's possess emotions and of additional populace and to conduct your self fittingly in poles apart situations. If we look the meaning of emotions in The Oxford's Dictionary of Psychology, we will find "Any short-range evaluative, schmaltzy, premeditated, psychosomatic state, together with repugnance, despondency, gratification, and supplementaryheart belief." Same as these stance or so-called emotions based astuteness by the assistance of which a human is able to control his feelings or manage his responses for different emotions according to the situation is called as Emotional astuteness.

Emotional intelligence is not a one day developmental factor it is a group of well arranged, lifelong learned skills and competencies to maintain a comfortable, successful and meaningful existence. If one is not aware about his/her skills then it tin can be extremely difficult for that person to know that how to improve his or her performance.

Methodology -

Researcher has used survey method to get the information of the present circumstances.

Sample -

For the study researcher has selected three hundred (N=300) boxing players from Haryana and Rajasthan state and subject aged between 18 to 28 years were selected as subjects for the study.

Data Collection -

The data will be collected with standardize tools. The data will be collected from Haryana and Rajasthan State boxing players who played district level tournaments of Boxing. Researcher collects data from various district of Haryana and Rajasthan state for raw score.

Tool -

The researchers have used standardize tool 'Emotional Intelligence Scale' made by S. K. Mangal and Shubhra Mangal (2012) for this study.

Objective -

To comparative study of the Emotional Intelligence of Boxing players of Haryana state and Rajasthan State.

Analysis of Data -

Table showing the significant difference in Emotional Intelligence of Boxing players of Haryana state and Rajasthan State.

Table – 1(Emotional Intelligence of Boxing Players)

Source of Variation	N	Mean	S.D.	Df.	t-value	Level of significance
Haryana State	150	73.29	8.83	298	1.73	NS*
Rajasthan State	150	71.53	8.83			

*Significant at 0.01& 0.05 levels

Table 1- Significant difference in Emotional Intelligence of Boxing players of Haryana state and Rajasthan State.

Description – Table 1 shows that Mean score of Emotional Intelligence of Boxing players of Haryana State and Rajasthan State are 73.29 and 71.53 with a SD values players are 8.83 and 8.83 respectively. t-value (1.73) is found to be not significant at (0.01 & 0.05) level. Hence the null hypothesis is not rejectedwhich means that there is no significant difference in Emotional Intelligence of Boxing players of Haryana State and Rajasthan State.

So the null hypothesis, "There is no significant in Emotional Intelligence of Boxing players of Haryana State and Rajasthan State" was not rejected.

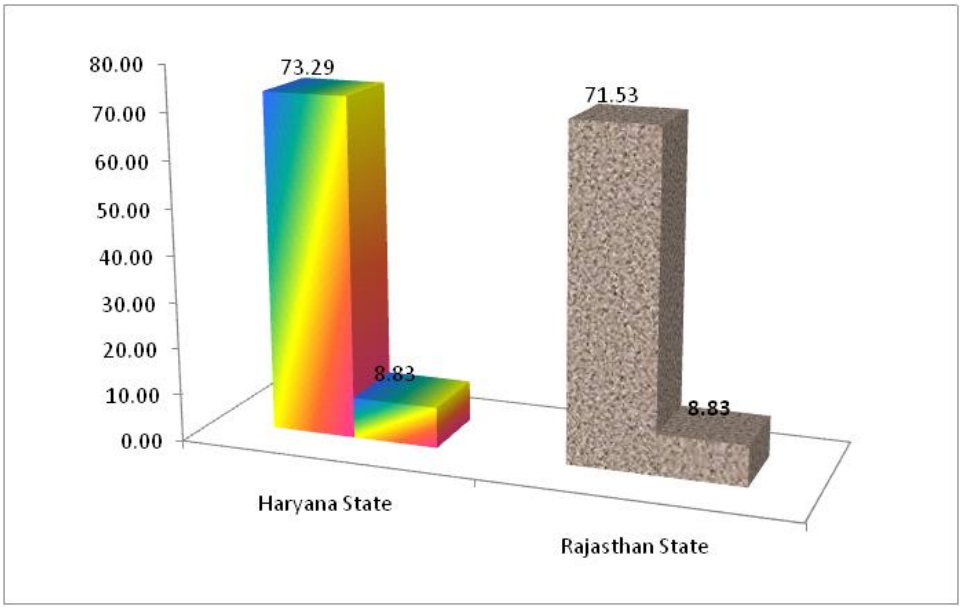

Result -

There is no significant difference in Emotional Intelligence of Boxing players of Haryana State and Rajasthan State.

Conclusion -

The current research work was undertaken into A Comparative Study of Personality, Emotional Intelligence and Motivation of Boxing Players of Haryana State & Rajasthan State of some hypothesis. Therefore it now becomes essential at this stage of the research work to see whether the hypothesis were rejected or accepted on the basis of data analyzed. In next chapter we summarized the research work.

References -

1. Adian P. Moran. (1996).The psychological of concentration in sports performance a cognitive psychology. Psychology press ,New York London.
2. Aggarwal. J.C (1975),Educational Research, New Delhi, Aryan Book Depot, 1975, P. 73.
3. Atkinson, J. W. (1981), "Studying personality in the context of an advanced motivational psychology," American Psychologist, 36, 117-128.
4. B, E. (2009). Personality theories. Belmont: cenage learning.
5. Cattell, R. B., (1990).Advances in Cattellian personality theory. In L. A. Pervin (Ed.), Handbook of personality: Theory and research. New York: Guildford.
6. Furley P, Schnuerch R, Gibbons H. (2017),The winner takes it all: Event related brain potentials reveal enhanced motivated attention toward athletes' nonverbal signals of leading. SocNeurosci. 2017 Aug;12(4):448-457. doi:10.1080/17470919.2016.1182586. Epub 2016 May 10.
7. Geake (2011). Position Statement on Motivations, Methodologies, and Practical Implications of Educational Neuroscience Research: fMRI studies of the neural correlates of creative intelligence. Education Philosophy andTheory, Volume 43, Issue 1, 43-47. DOI: 10.1111/j.1469-5812.2010.00706.x.
8. Hafeez N. (2018). Relationship of Job Performance and Emotional Intelligence between Subject Specialists at Higher Secondary Level, International Journal of Scientific & Engineering Research Volume 9, Issue 9, September-2018, ISSN 2229-5518, 1671-1694.
9. Hajihasani M. &Sim T.(2018), Marital satisfaction among girls with early marriage in Iran: emotional intelligence and religious orientation, International Journal of Adolescence and Youth, DOI: 10.1080/02673843.2018.1528167.
10. Konter E. and Yurdabakan I.(2010). Nonverbal intelligence of soccer players according to their age, gender and educational level. Procedia Social and Behavioral Sciences 2 (2010) 915–921.
11. Lawther, John .D. (1972). Sports Psychology.: Prentice – hall Inc; New Jersey.
12. Leasa M. (2014). The correlation between emotional intelligence and critical thinking skills with different learning styles in science learning. International Conference on Science and Applied Science (ICSAS),

AIP Conf. Proc. 2014, 020135-1–020135-8.

13. McAuley, E., Duncan, T., and Tammen, V. V. (1989), "Psychometric properties of the intrinsic motivation inventory in a competitive sport setting: a confirmatory factor analysis", Research Quarterly for Exercise andSport (RQES), Vol. 60(1), Pp. 48 - 58.

14. Perveen S., Malik N., Jamil F. and Atta M. (2018). Effect of Insomnia and Distress on Emotional Intelligence and Coping Strategies Among Medical College Students. APMC 2018;12(2):146-50.

15. R. Alderman. B. (1974) "Psychology in physical education and sports.

Journals -

- All port, Gordon W. (1961). Pattern and growth in personality (14 print. ed.). New York: Holt, Rinehart and Winston. ISBN 978-0030108105.
- Coalter, F. (2008) Sports-in-Development: A Monitoring and Evaluation Manual. London: UK. Agenda. Washington, DC: Centre for Global Development.
- Baranowski T, Games Health J. (2016) Feb;5(1):1-12. doi: 10.1089/g4h.2015.0026. Epub 2015 Aug.
- Barrett P, Eysenck S. B. G. (1984). The assessment of personality factors across twenty-five countries. Personality and Individual Differences.; 5:615–632.
- Bhaktaet. al (2011) The Mathematical Abilities and Personality of Undergraduate Psychology Students Relative to Other Student Groups. Psychology Teaching Review, Vol. 16 No.2 p-96-110.

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 105-108

मुकेश कुमार 'ऋषि वर्मा' के काव्य की मूल संवेदना

डॉ. दीप्ति धीर
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, हंसराज महिला महाविद्यालय, जालंधर।

मुकेश कुमार 'ऋषि वर्मा' का जन्म 1993 ई. में हुआ। वह हिन्दी के नए उभरते कवि है। उन्होंने 'आज़ादी को खोना ना', 'संघर्ष पथ', 'चुलबुली कविताएँ' नामक काव्य संग्रह हिन्दी साहित्य को भेंट किए हैं। इनकी संवेदना का दायरा सचमुच असीम है। इनकी कविताएं विभिन्न भाव बोधों से जुड़ी हुई हैं। देश, समाज एवम् सांस्कृतिक प्रेम उनके काव्य का मूल उत्स है। उनकी कविताओं में मानवता, एकता, प्रेम, प्रकृति, भ्रष्टाचार, प्रगतिशील विचार खुलकर सामने आए हैं। 'उनकी एक कविताएं मानवतावादी कविताएं हैं, हर एक पाठक के हृदय को स्पर्श करती है।'[1] उनके काव्य की मूल संवेदना इस प्रकार है–

प्रेम भाव का निरूपण : मुकेश कुमार के काव्य में प्रेम प्रमुख प्रवृत्ति है। इनके काव्य में प्रकृति प्रेम, देश प्रेम और घर वगाँव के प्रति प्रेम भाव व्यक्त किया गया है।

कवि ने 'भोर की महक' कविता में प्रकृति के प्रति प्रेम भाव प्रदर्शित किया है। कवि ने प्रकृति का आलंबन रूप में चित्रण किया है। इनके काव्य में प्रकृति के मनोरम चित्र दर्शनीय है।

"चमक रही चाँदी सी ओस मनोहर, मन को भाये सुनहरे खट्टे–मीठे बेर।"[2]

इस प्रकार प्रकृति के सुन्दर चित्र इनके काव्य में उभरे है।

इनके काव्य में देश प्रेम कई कविताओं में उजागर हुआ है। कवि यह कामना करता है कि हमारा देश विकास की ऊँचाइयों को छुए। देश में आपसी एकता व सहचर्या का भाव बढ़ता रहे। 'स्वागतम् नुतन वर्ष' कविता में वह लिखते हैं –

"राष्ट्र हमारा नित करे विकास/निश्चय हर दिन हो त्यौहार/मधुर रहे आपसी व्यवहार।"[3]

कवि के काव्य मेंघर व गाँव के प्रति प्रेम भाव प्रदर्शित हुआ है। कवि ने 'मेरा गाँव' कविता में गाँव के प्रति प्रेम भाव व्यक्त किया है। 'अपना घर' कविता में कवि को अपना घर सुख, शांति, असीम तृप्ति व आनंद की ख़ान लगता है। कवि अपने विचार इस प्रकार प्रस्तुत करता है–

"स्वर्ग से सुन्दर / प्यारा–न्यारा / अपना घर।"[4]

इसके अतिरिक्त कवि ने मातृ प्रेम, पितृ प्रेम, ईश्वरीय प्रेमतथा संस्कृति व भाषा प्रेम को भी अपने काव्य में व्यक्त किया है। काव्य में भारतीय संस्कृति के प्रति विशेष प्रेम व श्रद्धा का भाव लक्षित होता है। त्यौहार हमारी संस्कृति एवम् एकता के परिचायक है। कवि ने 'दीपावली', 'आया बसंत', 'करवाचौथ', 'दिवस आया एक नया', 'होली में', 'छठी मईया' इत्यादि कवितामें त्यौहारों के माध्यम से स्नेह व एकता का प्रसार किया है। 'लाइव शॉ'

कविता में संस्कृति के ह्रास पर कवि की चिंता दृष्टिगत होती है।

सामाजिक समस्याओं का चित्रण : कवि ने समाज में फैली गम्भीर समस्याओं को चित्रित किया है। जिसमें प्रदूषण की समस्या, बलात्कार की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या इत्यादि प्रमुख हैं।

कवि ने प्रदूषण की समस्या को 'नदियाँ' कविता में रेखांकित किया है। कवि ने स्पष्ट किया है कि नदियाँ प्रकृति का श्रृंगार बढ़ाती हैं। भारत में गंगा जैसी पवित्र नदी पूजनीय भी है। नदियाँ हमारी संस्कृति की पहचान है। किंतु लोग नदियों की महत्ता को न समझते हुए इसे दूषित करने में लगे हुए हैं। कवि के शब्दों में –

"प्रदूषण का ऐसा करतब दिखाया, नदियों को कीचड़ वाला नाला बनाया।"[5]

कवि ने बलात्कार की समस्या को 'कब होश में आओगे' कविता में चित्रित किया है। आज के युग में भी हमारे समाज में बेटियां सुरक्षित नहीं है। कवि ने इस कविता में स्पष्ट किया है कि हमारे कई नेता बलात्कारी हैं, जो समाज में सम्मानपूर्वक जीवन जी रहे हैं। जब तक इन बलात्कारियों को कड़ी सज़ा नहीं दी जाएगी तब तक साधारण परिवार की बलात्कार का शिकार हुई बेटियों के लिये मोमबत्तियां जलाकर शोक करने का कोई लाभ नहीं होगा। बेटियां समाज में असुरक्षित ही रहेगी। कवि ने बेटियों की सुरक्षा के प्रति अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहा है –

"खतरे में तो मेरे देश की बेटियाँ हैं / जो आये दिन
बनती हैं शिकार / हैवानों की, शैतानों की...।"[6]

कवि ने 'भ्रष्टाचार', 'एफ़. आई. आर., 'आपदा और अवसर', 'स्वतंत्रता दिवस' इत्यादि कविता में भारत में फैली भ्रष्टाचार की गंभीर समस्या को उजागर किया है। भ्रष्टाचार के कारण समाज में भूखमरी व गरीबी का प्रसार हो रहा है। देश के नेता ही देश को लूट रहे हैं। रक्षक ही भक्षक बन रहे है। इंसानियत दम तोड़ रही है। प्रशासन के लोग रिश्वतें ले रहे हैं। 'भ्रष्टाचार' कविता में कवि कहता है –

"भ्रष्टाचार बन गया शिष्टाचार, भूखमरी–गरीबी का गरम बाजार।"[7]

एफ़. आई. आर. कविता में कवि ने स्पष्ट किया है कि बड़े–बड़े घोटाले करने वाले नेता है, अश्लीलता फैलाने वाले अभिनेता है और लालफीताशाही रिश्वतखोर हैं। लेकिन भ्रष्टाचार फैलाने वाले इन कर्मचारियों पर एफ़. आई. आर. दर्ज नहीं होती।

"नेताओं के घोटालों पर/अभिनेताओं की अश्लीलता पर/लालफीताशाही की रिश्वतखोरी पर/खाकी की दरिंदगी पर/सरकारी कर्मचारी के आलस्य पर/क्यों नहीं होती एफ. आई. आर...।"[8]

इस प्रकार कवि ने इन समस्याओं को प्रस्तुत कर पाठक वर्ग को इनके प्रति सचेत करने का प्रयत्न किया है।

भेदभाव का विरोध – कवि देश में बढ़ रहे भेदभाव, धर्मवाद व मानवता के ह्रास पर खेद प्रकट करता है। भारत भूमि ऋषियों–मुनियों की भूमि है। यहाँ पर वेद की ऋचाएँ पढ़ी–पढ़ाई जाती है। ऐसे देश में अशांति व वैमनस्य का भाव बढ़ रहा है। कवि 'भारत देश' कविता में देशवासियों से भारत भूमि की एकता व अखण्डता को बचाए रखने की गुहार लगा रहा है –

"उठो–उठो हे! भारतवीरों निज राष्ट्र बचाओ।"[9]

रिश्तों में बदलाव – कवि ने रिश्तों में आ रहे परिवर्तन को भी अपने काव्य में अंकित किया है। अब पुराने

समय की तरह रिश्तों में प्रेम की गर्माहट नहीं रही। रिश्तों में बेगानापन बढ़ रहा है। व्यक्ति 'स्व' तक ही सीमित होकर रहना चाहता है। 'आदमी स्मार्ट हो गया' कविता में कवि कहता है –

"वो लोग और उनका अपनापन/अब नहीं रहा।"[10]

कवि ने 'मेरा गाँव' कविता में भी गाँव के बदलते वातावरण वरिश्तों पर गहरी चिंता व्यक्त की है। कवि को दुःख है कि अब गाँव का परिवेश व रिश्ते पहले जैसे नहीं है। गाँव के लोगों में जो आत्मीयता थी, वह अब कहीं लुप्त हो गई है।

"हृदय बने मशीनी दया रही न तनिक/आनलाइन रिस्तों में मिली न महक।"[11]

कवि ने स्पष्ट किया है कि रिश्तों की गरिमा समाप्त हो गई है। केवल दिखावटीपन ही रह गया है। यही कारण है कि आज व्यक्ति किसी सगे–संबंधी की मृत्यु पर भी दुःख अभिव्यक्त करने की बजाय सेल्फ़ी खींचने में लगा रहता है। उन्हें पारिवारिक सदस्य के जाने का उतना ग़म नहीं होता जितना वे दिखावा करते हैं।

"निज बाप की अंतिम यात्रा में भी/बतीसी दिखाकर लकवा मरे जैसा मुँह बनाकर।
सेल्फ़ी खींच रहा है/अब आदमी बहुत स्मार्ट हो गया है।।"[12]

प्रगतिशील विचारधारा – कवि ने अपने काव्य के माध्यम से हाशिए पर पड़े शोषित लोगों के प्रति विशेष सहानुभूति प्रकट की है। कवि का मन समाज के कमज़ोर, पीड़ित, उपेक्षित एवम् शोषित वर्गों के प्रति द्रवित है। कवि ने 'समय रहते' इत्यादि कविता में किसान वर्ग की दयनीय स्थिति को प्रस्तुत किया है। 'गूंगी आवाज़' कविता में कवि ने गरीबी की मार झेलते, जुल्म सहते, रोते–कुरलते उन लोगों के दर्द को बयान किया है जिनकी आवाज़ को सदैव ही बड़ी क्रूरता के साथ दबाया गया है। ये लोग अत्याचार सहने को विवश हैं।

"आज भी दबाई और कुचली जा रही है/उनकी आवाज़/जो जी रहे हैं हाशिए पर।"[13]

कवि ने 'आंसुओं की धार' कविता में साधारण जन के शोषण का चित्रण किया है। इस कविता में पुलिस विभाग द्वारा एक साधारण नागरिक को झूठे केस में फंसा कर उसका शोषण किया जाता है। उसे बचाने के लिए उसके परिवार वाले खेत–घर सब गिरवी रखने व कर्ज़दार बनने पर मजबूर हो जाते हैं। इसका बहुत ही मार्मिक चित्रण इस कविता में किया गया है –

"झूठे पुलिसिया केस में फसाया/कर्जदार उसे बनाया।
भ्रष्टाचार के दलदल में,/एक ग़रीब का पूरा परिवार समाया।"[14]

कवि ने 'झूठी बधाइयां' कविता में मज़दूर वर्ग को सचेत करते हुए कहा है कि यह वक्त शोषण सहने का नहीं है बल्कि शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाने का है। क्योंकि पूँजीपति अब तक मज़दूर वर्ग को झूठी बधाईयां देकर उनका शोषण करते रहे और उनके बल पर स्वयं अमीर बनते रहे।

"गिड़गिड़ाना भूलकर, हाथ जोड़ने के वजाय/अपने हाथों से पूँजीपतियों सहित नेताओं का चेहरा नोचेगा/फिर तुझे भी इंसानों की गिनती में गिना जाने लगेगा/और उसी दिन मजदूर दिवस की दी गईं बधाईयाँ /सार्थक हो जायेंगी।"[15]

इस प्रकार कवि ने शोषण न सहने व उसके विरुद्ध आवाज़ उठाने का समर्थन भी किया है।

निष्कर्ष रूप से कह सकते है कि इनका काव्य मानवीय संवेदना से ओत प्रोत है। इनका काव्य देश व संस्कृति के प्रति प्रेम भाव को उजागर करता है। इन्होंने जन साधारण के शोषण, उत्पीड़न का चित्रण किया है।

इनके काव्य में भ्रष्टाचार के विरुद्ध आक्रोश भी दृष्टिगत होता है। ये प्रगतिशील विचारधारा के समर्थक है। प्रेम व आत्मीयता का भाव इनकी मानवीय संवेदना का मूल आधार है।

संदर्भ :-

1. मानवतावादी कवि : श्री मुकेश कुमार ऋषि वर्मा (आलेख), devbhoomisamachar.com, फरवरी 10, 2024
2. मुकेश कुमार 'ऋषि वर्मा', 'भोर की महक' (कविता) पृ. १७, नरेश कुमार सिहाग (संपा.), पत्र मित्र मुकेश कुमार 'ऋषि वर्मा' की चयनित कविताएँ, विकास बुक कंपनी, दिल्ली।
3. वही, 'स्वागतम् नुतन वर्ष' (कविता), पृ.–३४
4. वही, 'अपना घर' (कविता), पृ.–२७
5. वही, 'नदियाँ' (कविता), पृ.–४०
6. वही, 'कब होश में आओगे' (कविता), पृ.–४५
7. वही, 'भ्रष्टाचार' (कविता), पृ.–१४
8. वही, 'एफ़. आई. आर.' (कविता), पृ.–२३
9. वही, 'भारत देश'' (कविता), पृ.–३३
10. वही, 'आदमी स्मार्ट हो गया' (कविता), पृ.–३०
11. वही, 'मेरा गाँव' (कविता), पृ.–१२
12. वही, 'आदमी स्मार्ट हो गया' (कविता), पृ.–३०
13. वही, 'गूंगी आवाज़' (कविता), पृ.–१५
14. वही, 'आंसूओं की धार' (कविता), पृ.–१३
15. वही, 'झूठी बधाइयां' (कविता), पृ.–६१

मो.नं. 9023030580

ईमेल आईडी – deeptidhir08@gmail.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 109-113

भारत में नगरीय शासन प्रणाली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. महेश कुमार
सहायक आचार्य (विद्या संबल) राजनीति विज्ञान, राजकीय महाविद्यालय पाटोदी।

सार :-

भारत एक लोकतांत्रिक देश है जिसमें स्थानीय शासन उसकी त्रिस्तरीय प्रशासनिक व्यवस्था का तीसरा स्तर है। विविधता में एकता वाला देश भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है, जहां नगरीय शासन प्राचीन काल से विद्यमान है। प्राचीन भारत के ऐतिहासिक स्रोत के विभिन्न कालखण्डो में नगरीय शासन का उल्लेख मिलता है। नगरीय शासन प्रणाली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अंतर्गत वैदिक काल, रामायण काल, महाभारत काल, मौर्य काल, गुप्त काल, सल्तनत काल, मुगल काल इत्यादि में नगरीय शासन का व्यवस्थित विकास हुआ था। प्रस्तुत शोध में भारत में नगरीय शासन प्रणाली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द :-

प्रशासनिक व्यवस्था, गुप्त काल, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, ब्रिटिश शासन काल, नगर पालिका, सत्ताका विकेंद्रीकरण।

परिचय :-

भारत में प्राचीन समय से ही स्थानीय स्वशासन की नगरीय व्यवस्था का इतिहास देखने को मिलता है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अध्ययन में हड़प्पा व मोहनजोदड़ो की खुदाई से प्राप्त अवशेषों से यही प्रतीत होता है कि यहां नगरों की प्रशासनिक व्यवस्था में नगरों में जो नगर पालिकाएं थी, वो सुनियोजित एवं व्यवस्थित रूप में हुआ करती थी। नगरों में चौड़ी सड़कों, बाजारों, सार्वजनिक भवनों, कार्यालय, सामुदायिक स्नानगृह तथा जल निकास प्रणाली से यह प्रमाण मिलता है कि उस समय जागरुक एवं प्रभावी नगर पालिका प्रशासन व्यवस्था विद्यमान थी।

मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक 'इंडिका' में उल्लेख किया है कि मौर्य ने अपनी राजधानी पाटलिपुत्र के लिए सुव्यवस्थित नगर प्रशासन की व्यवस्था की थी। मौर्य काल में चंद्रगुप्त मौर्य ने स्वायत शासन प्रणाली लागू कर शासन में विकेंद्रीकरण की नीति अपनाई थी। उस काल में नगर का सबसे बड़ा पदाधिकारी नागरिक कहलाता था, यह नागरिक स्थानिकों की सहायता से नगर का प्रशासन चलाता था जिससे यह प्रतीत होता है कि मौर्य

काल में नगरीय शासन प्रणाली सुव्यवस्थित थी। भारत में नगरीय शासन प्रणाली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की सुव्यवस्थित व्यवस्था का उल्लेख रामायण, महाभारत, उपनिषदों में भी मिलता है। वहां के अध्ययन से यह प्रतीत होता है कि अयोध्या व हस्तिनापुर नगरों की प्रशासनिक व्यवस्था सुनियोजित थी। भारत में नगरीय शासन प्रणाली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अध्ययन में कौटिल्य ने अपनी पुस्तक 'अर्थशास्त्र' में नगरीय समस्याओं के समाधान से संबंधित नगर प्रशासन की योजना बनाई, जिसमें नगर के महापौर को नागरिक कहा जाता था जो नगरों के दैनिक प्रशासन से संबंधित विभिन्न कार्यों को करता था। इस प्रकार कौटिल्य ने नगरीय शासन प्रणाली का व्यवस्थित उल्लेख अपनी पुस्तक में किया।

गुप्त काल में भी नगरीय स्वशासन प्रणाली मौर्य काल जैसी विद्यामान थी। इस काल में नगर प्रशासन ठोस आधार पर संगठित था। नगरीय शासन प्रणाली की पृष्ठभूमि के अंतर्गत मुगल काल में भी नगरीय शासन ज्ञात होता है। इस प्रकार सल्तनत काल में नगरीय प्रशासन विद्यामान था।

मुगल काल में अबुल फजल की कृति 'आईने ए अकबरी' में नगरीय जीवन व उसके अधिकारियों के विषय में यह कहा गया है कि नगर प्रशासन प्रमुख अर्थात कोतवाल के पद पर नियुक्त होने वाले अधिकारी को अनुभवी, ज्ञानी, विवेकशील एवं कुशल होना चाहिए जो कि वर्तमान में नगरीय सुशासन एवं उत्तरदायी जन प्रतिनिधि को प्रदर्शित करता है।

भारत में नगरीय शासन प्रणाली प्राचीन काल से देखने को मिलती है किंतु वास्तविक नगरीय स्थानीय शासन का संगठन, कार्य प्रणाली एवं विकास ब्रिटिश शासन की व्यवस्था की देन है। ब्रिटिश काल में ग्रामीण स्थानीय शासन की अपेक्षा नगरीय शासन प्रणाली की संस्थाओं के विषय पर अधिक ध्यान दिया गया। ब्रिटिश शासन काल के दौरान भारत में पूर्व में विद्यामान नगरीय शासन व्यवस्थाओं के स्वरूप में मौलिक परिवर्तन आया। अतः नगरीय शासन व्यवस्था का व्यवस्थित अध्ययन ब्रिटिश शासन काल के दौरान हुआ।

नगरीय स्थानीय प्रशासन का ब्रिटिश काल में अध्ययन के लिए मुख्य रूप से निम्न कालों में विभाजित किया जा सकता है :-

1. **प्रथम काल (1687-1881) :-** ब्रिटिश कालीन भारत में नगरीय स्थानीय शासन की शुरुआत सन 1687 से मानी जाती है, जब मद्रास (चेन्नई) में प्रथम नगर निगम की स्थापना की गई। यह ब्रिटिश कालीन भारत का प्रथम नगर निगम था, जो अस्तित्व में आया। उस समय ईस्ट इंडिया कंपनी का भारत में शासन था। अतः भारत में 1687 से ब्रिटिश काल में स्थानीय शासन संस्थाओं का आरंभ माना जाता है। मद्रास नगर निगम को लोक सेवाओं के लिए उत्तरदायी बनाया गया। भारत में नगरीय शासन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के इसी काल में सन 1726 में कोलकाता एवं मुम्बई में नगर पालिका की स्थापना की गई, जो की नगरीय शासन संस्थाओं की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।

ब्रिटिश कालीन भारत में नगरीय शासन संस्थाओं के विकास के प्रथमकाल में सन् 1773 के रेग्युलेटिंग एक्ट द्वारा प्रेसीडेंसी नगरों में 'जस्टिस ऑफ पीस' की नियुक्ति की गई, जिसका कार्य नगर की साफ-सफाई, स्वास्थ्य की देखभाल, शांति एवं सुरक्षा व्यवस्था स्थापित करना था। बाद में 1793 में पुनः इस एक्ट में कुछ परिवर्तन किया गया, जिसके तहत मद्रास, मुंबई, कोलकाता महानगरों में नगर प्रशासन की स्थापना की गई। इन शहरों में नगरीय प्रशासन स्थापित करने की शक्तियां गवर्नर जनरल को दी गई। सन 1863 में स्थानीय स्वशासन

को पुनः प्रोत्साहन मिला तथा नगर प्रशासन का विस्तार देखने को मिला। वर्ष 1870 का स्थानीय नगरीय स्वशासन के लिए बहुत महत्वपूर्ण था, इस वर्ष लॉर्ड मेयो द्वारा एक प्रस्ताव पारित कर स्थानीय स्वशासन लागू किया। नगरीय स्वशासन के लॉर्ड मेयोके प्रस्ताव में विकेंद्रीकरण का समर्थन किया गया।

2. द्वितीय काल (1882–1919) :– सन् 1880 में लार्ड रिपन भारत के वायसराय नियुक्त किए गए। स्थानीय स्वशासन की दृष्टि से रिपन का शासन काल अत्यंत महत्वपूर्ण था। भारत में स्थानीय शासन का संगठित एवं व्यवस्थित विकास लॉर्ड रिपन के शासनकाल में हुआ। सन् 1882 में लॉर्ड रिपन ने स्थानीय शासन संस्थाओं के विकास का एक प्रस्ताव तैयार किया, इस प्रस्ताव को "स्थानीय स्वायत्त शासन का मैग्नाकार्टा" कहा जाता है।

रिपन के स्थानीय स्वशासन के प्रस्ताव में यह निहित है कि– "स्वायत शासन का लक्ष्य राजनीतिक और सार्वजनिक शिक्षा की प्रगति एवं विस्तार है" इसी प्रस्ताव के कारण लॉर्ड रिपन को भारत में स्थानीय स्वशासन का जनक/जन्मदाता माना जाता है। इस प्रस्ताव को स्थानीय शासन के विकास में एक मील का पत्थर माना जाता है। रिपन के स्थानीय शासन के प्रस्ताव को कुछ विद्वानों ने एक युगांतरकारी प्रस्ताव माना। यह भारत में स्थानीय स्वशासन का आधार बना। लॉर्ड रिपन के प्रस्ताव का उद्देश्य स्थानीय संस्थाओं के माध्यम से प्रशासन को संगठित करने के साथ ही इन्हे राजनीतिक शिक्षण का साधन बनाना था।

ब्रिटिश कालीन भारत में नगरीय शासन के इस काल में सन् 1907 में रॉयल कमीशन की स्थापना की गई। आयोग ने स्थानीय स्वशासन के संपूर्ण विषय पर अपना प्रतिवेदन 1909 में प्रस्तुत किया। इस आयोग के अध्यक्ष हाब्ब हाउस थे। कमीशन की नियुक्ति भारत में सत्ता के विकेंद्रीकरण के विकास के अध्ययन के लिए की गई थी। सन् 1907 में स्थापित विकेंद्रीकरण पर रॉयल आयोग का कार्य केंद्र, प्रांत तथा इकाइयों के मध्य वित्तीय एवं प्रशासनिक संबंधों का अध्ययन करना था।

3. तृतीय काल (1919–1935) :– नगरीय संस्थाओं के विकास इस काल में सन् 1919 के अधिनियम द्वारा स्थानीय शासन के क्षेत्र में नवीन युग का आरंभ हुआ। ब्रिटिश सरकार ने उत्तरदायी सरकार की स्थापना एवं शासन में भारत के लोगों की भागीदारी बढ़ाने की उद्देश्य से भारतीय शासन अधिनियम 1919 पारित किया। इस अधिनियम द्वारा प्रांतों में द्वैध शासन प्रणाली को लागू करके उत्तरदायी शासन की दिशा में कार्य किया गया। 1919 के भारत शासन अधिनियम के अंतर्गत स्थानीय शासन का विभाग प्रांतीय सरकारों के निर्वाचित मंत्रियों को हस्तांतरित विभागों में शामिल किया गया, जिससे स्थानीय शासन का विषय भारत सरकार के नियंत्रण से मुक्त होकर पूर्ण रूप से प्रांतीय सरकारों की अधिकार सीमा में आ गया।

इस काल में स्थानीय संस्थाओं का गठन पूर्ण रूप से निर्वाचन के आधार पर होने लगा तथा इसके लिए एक निर्वाचन मंडल का विस्तार भी किया गया, जिसके कारण प्रशासकीय शक्ति जनता द्वारा निर्वाचित सदस्यों को प्राप्त हो गईं।

इस स्थिति के बाद भी इस क्षेत्र में धन की कमी, भ्रष्टाचार, पक्षपात, राजनीति हस्तक्षेप आदि के कारण कोई विशेष प्रगति नहीं हो सकी। ब्रिटिश सरकार द्वारा जिला स्तर पर जिला कलेक्टर को समस्त अधिकार दिए जाने के बावजूद भी स्थानीय संस्थाएं सफलता से कार्य नहीं कर सकी। सन् 1930 में साइमन आयोग ने स्थानीय स्वशासन की क्रियान्वित का मूल्यांकन किया एवं सुझाव दिया कि इन संस्थानों पर सरकारी नियंत्रण अधिक सुदृढ़ कर देना चाहिए।

4. चतुर्थ काल (1935–1947) :– ब्रिटिश कालीन भारत में नगरीय शासन के विकास में भारत सरकार अधिनियम 1935 का एक महत्वपूर्ण अधिनियम था, जो 1937 में लागू हुआ। इस अधिनियम के पारित होने के बाद संपूर्ण देश में प्रांतीय स्वायत्तता की स्थापना हुई, जिसके कारण नगर पालिका प्रशासन के विकास में अधिक गति देखने को मिली। इससे स्थानीय संस्थाओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। 1935 के अधिनियम द्वारा सभी प्रांतों में नगरीय संस्थाओं के सुदृढ़ लोकतंत्रीकरण के लिए मताधिकार की आयु सीमा को कम किया गया एवं संस्थाओ में सरकारी मनोनीत सदस्य की संख्या को भी कम किया गया।

इस अधिनियम में द्वैध शासन को समाप्त कर प्रांतों में लोकप्रिय सरकारों की स्थापना की गई। इस काल में स्थानीय शासन नवीन चरण में था, लेकिन सन 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हो जाने से इसका प्रत्यक्ष प्रतिकूल प्रभाव स्थानीय स्वशासन संस्थानों पर पड़ा। युद्ध के कारण इन संस्थानों पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया। अतः 1939 से 1945 तक स्थानीय शासन का विकास मंद हो गया।

स्वतंत्र भारत में नगरीय स्वशासन का विकास :–

सन् 1947 में देश ब्रिटिश सरकार की गुलामी से मुक्त हुआ। 15 अगस्त 1947 में देश की स्वतंत्रता के साथ–साथ भारत में स्थानीय शासन के इतिहास में एक नवीन युग आरंभ हुआ। 26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ। इस संविधान के अंतर्गत स्थानीय शासन को राज्य सूची का विषय घोषित किया गया। स्वतंत्र भारत में स्थानीय स्वायत शासन का जो ढांचा अपनाया गया, उसे मूल रूप से ब्रिटिश शासन की विरासत माना जा सकता है। सन 1985 में स्थापित नगरीय विकास मंत्रालय नगरीय स्वशासन के क्षेत्र में एक मील का पत्थर साबित हुआ। प्रारंभ में नगरीय स्वास्थ्य मंत्रालय की अधीन रखा गया था, 1988 में इसे सामुदायिक विकास मंत्रालय के अधीन रखा गया।

नगरीय स्थानीय शासन का संवैधानिकीकरण करने के उद्देश्य से अगस्त 1989 में राजीव गांधी द्वारा 65वा संविधान संशोधन विधेयक लोकसभा में प्रस्तुत किया गया। इस विधेयक का उद्देश्य नगर पालिका के ढांचे पर उनकी संवैधानिक स्थिति का परामर्श कर उन्हें शक्तिशाली बनाना था परंतु यह लोकसभा द्वारा पारित नहीं हो सका। इसके बाद वी. पी. सिंह के नेतृत्व में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने सितंबर 1990 में लोकसभा में पुनः संशोधित नगर पालिका विधेयक स्थापित किया गया, फिर भी यह विधेयक पास नहीं हुआ और अंत में लोकसभा विघटित होने पर यह निरस्त हो गया। अंतत्तः पी.वी. नरसिम्हा राव सरकार द्वारा सितंबर 1991 में संशोधित नगर पालिका विधायक लोकसभा में पुनरू स्थापित किया, जो कि यह 74 वा संविधान संशोधन अधिनियम के रूप में पारित हुआ और 1 जून 1993 को लागू हुआ।

निष्कर्ष :–

इस प्रकार भारत एक प्रजातांत्रिक देश है, जिसमें स्थानीय शासन प्रशासनिक व्यवस्था का तृतीय स्तर है। हड़प्पा कालीन इतिहास के अध्ययन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि नगर पालिका जैसी कोई व्यवस्था जरूर रही होगी। मनुस्मृति और महाभारत में भी शासन व्यवस्था का उल्लेख देखने को मिलता है। कौटिल्य के समय में भी नगर पालिका व्यवस्था का अस्तित्व था, स्थानीय शासन की इकाइयों का निर्वाचन स्वरूप देना, उसे करा रोपण की विस्तृत शक्तियां देना और लोकतंत्र की पाठशाला के रूप में विकसित करने का कार्य ब्रिटिश काल में ही हुआ तथा लॉर्ड रिपन ने भारत में स्थानीय स्वशासन को एक नई दिशा प्रदान की। इसी कारण रिपन को

भारत में स्थानीय शासन का जनक माना जाता है।

सन्दर्भ सूची :-

1. शर्मा, डॉ. अशोक, "भारत में स्थानीय प्रशासन" आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर 2021, पृष्ठ संख्या 18
2. माहेश्वरी, एस. आर. "भारत में स्थानीय शासन" लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशक, आगरा 2020, पृष्ठ संख्या 196
3. जोशी, प्रो.आर.पी एवं भारद्वाज, डॉ. अरूणा, "भारत में ग्रामीण एवं शहरी स्थानीय शासन" राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर 2009, पृष्ठ संख्या 1
4. निगम, एस. आर. "लोकल गवर्नमेंट" एस. चांद एंड कंपनी नई दिल्ली 1987, पृष्ठ संख्या 25
5. शर्मा, डॉ. हरिश्चंद्र "भारत में लोक प्रशासन" कॉलेज बुक डिपो, जयपुर 1998, पृष्ठ संख्या 3
6. माहेश्वरी, श्री राम एवं अग्रवाल लक्ष्मी नारायण, "लोकल गवर्नमेंट इन इंडिया" आगरा प्रेस आगरा 1984, पृष्ठ संख्या 1
7. चोपड़ा, डॉ. सरोज बाला, "स्थानीय प्रशासन" राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर 1993, पृष्ठ संख्या125

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 114-119

Study of effective method of circuit training for developing long jump athletes

Ms. Neetu Kanwar, Research Scholar
Dr. Anita Ranawat, Supervisor
Tantia University, Sriganganagar, Rajasthan.

Introduction -

When a person is a trained to perform different types of exercises in a sequence, it is called circuit training. Generally these are performed with very short rest periods in between. Multiple circuits are performed by the trainee maintaining short break between stations to condition the body and develop endurance, resistance and strength of the performer.

Circuit training is a type of workout that can be used for any sport. Usually circuit training comprises of 6 to 12 exercises to be performed with a minimum break of 15 to 30 seconds or without any break between the sets. The circuits are repeated by the performer for a specific duration or number. Gradually this period is increased.

The circuit training consists of aerobic and anaerobic exercises. Anaerobic exercises are such which are performed with weights and aerobic exercises are performed without weights. Aerobic exercises are related to the cardio system of the body.

Circuit training for beginners -

Those who are not performing any exercise and start with circuit training, it is difficult for them to initiate so they must start with light exercise without using weight exercises. They should begin with the exercise like brisk walking, jogging, sit ups and skipping. At the beginning they may exercise for 30 seconds at each station with an interval of 15 to 30 seconds and complete the circuit. They must not perform high number of circuits and start with 4 or 5 circuits initially and gradually

increase number of your circuits/ repetitions at each station after 6 weeks.

Methodology -

Researcher has used experimental method to get the information of the present circumstances.

Sample -

180 long jump athletes, 180 javelin throw athletes and 180 400 meter racers of district level were selected randomly from North Rajasthan and Haryana. They were further divided in six groups (strata) of 30-30 athletes.

Tool -

There are different methods of sports training. Regular training was provided to the first group of athletes i.e. controlled group. Continuous circuit training, interval circuit training, weight circuit training, plyometric circuit training, fartlek circuit training were provided to 2nd, 3rd, 4th, 5th and 6th group of athletes. These groups were experimental groups.

Statistical tools used in research -

Percentage was used to interpret the tabulated data. Pie Charts and bar charts were used to explain the collected performance measurements of long jump, javelin throw and 400 meter athletes. Paired T test was used to assess the significance of effect of different types of circuit training individually and collectively. Analysis of various test (ANOVA) was used to access the comparative effectiveness of various circuit training methods for long jump athletes, javelin throw athletes and 400 meter athletes. IBM SPSS 20 software has been used for the statistical test. Post Hoc test was used for further analysis of ANOVA test.

Objective -

To study of effective method of circuit training for developing long jump athletes

Analysis of Data -

Effect of continuous circuit training on long jump performance of athletes.

Second group of 30 district level long jump players were offered continuous circuit training. At the starting of research long jump measures of the athletes have been recorded and re-measured after imparting continuous circuit training of 12 weeks.

Table – 1

Pre & post continuous circuit training long jump performance of athletes

S. No.	Pre training long jump (in meter)	Post training long jump (in meter)
1	6.7	6.8
2	5.1	5.4
3	6.3	6.5
4	5.4	5.7
5	4.9	5.5
6	6.4	6.5
7	5.7	5.9
8	5.1	5.6
9	6.6	6.6
10	5.7	5.9
11	6.0	6.3
12	6.2	6.5
13	5.8	6.2
14	6.0	6.3
15	5.2	5.8
16	5.8	6.2
17	6.3	6.5
18	4.7	5.3
19	6.2	6.4
20	5.4	5.9
21	6.1	6.4
22	5.6	6.0
23	5.4	5.8
24	5.8	6.1
25	4.5	5.1
26	6.1	6.3
27	5.5	5.8
28	6.2	6.4
29	5.9	6.3
30	6.0	6.2
Avg.	5.75	6.07

Table 1- Description – It has been observed that low improvement took place in long jump of 43.33% athletes after 12 weeks of continuous circuit training while moderate improvement also occurred in long jump of 43.33% athletes. Good improvement in long jump of 13.33% athletes after 12 weeks of continuous circuit training.

Table 2

Impact of continuous circuit training on long jump performance of athletes

Improvement in long jump	Category	No. of athletes
0 to 5%	Low	13
5 to 10%	Moderate	13
10 to 15%	Good	4
15 to 20%	Very Good	0
20 to 25%	Excellent	0
Above 25%	Outstanding	0
Total		30

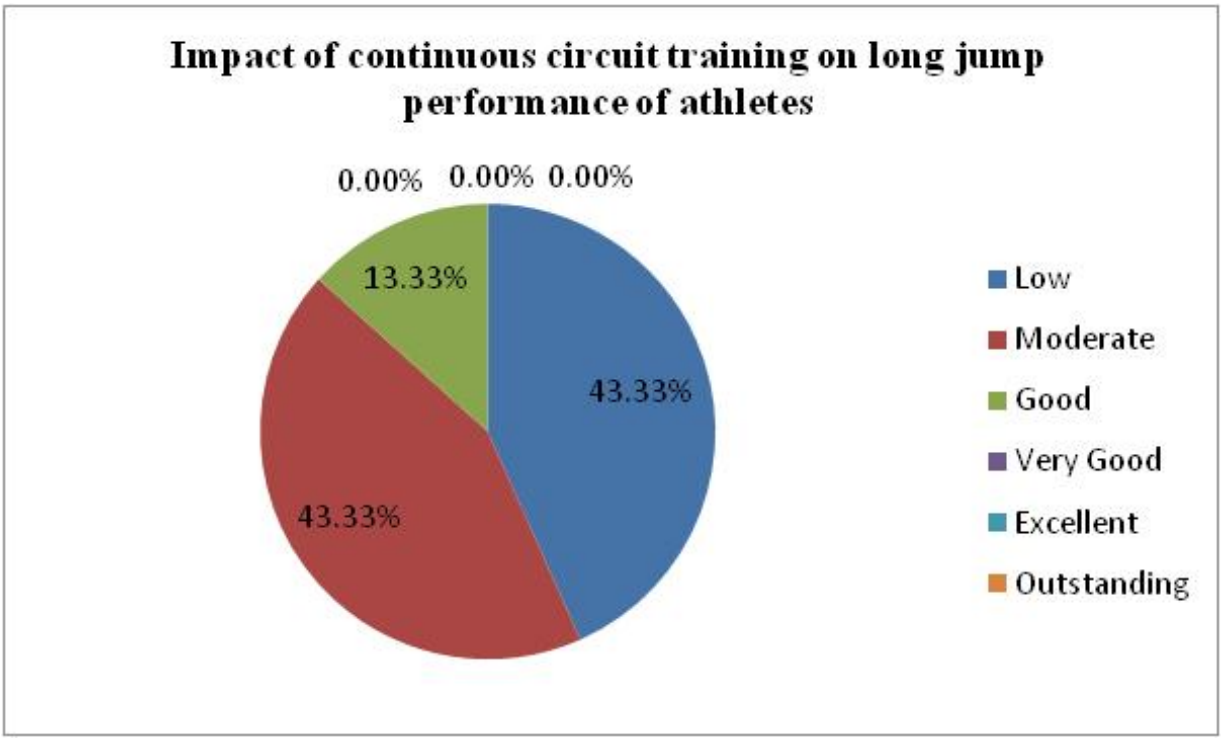

In all the average long jump distance covered by the selected 30 athletes was 5.75 meter initially which increased to 6.07 meter after 12 weeks of continuous circuit training. Thus an improvement of 5.57% happened due to continuous circuit training.

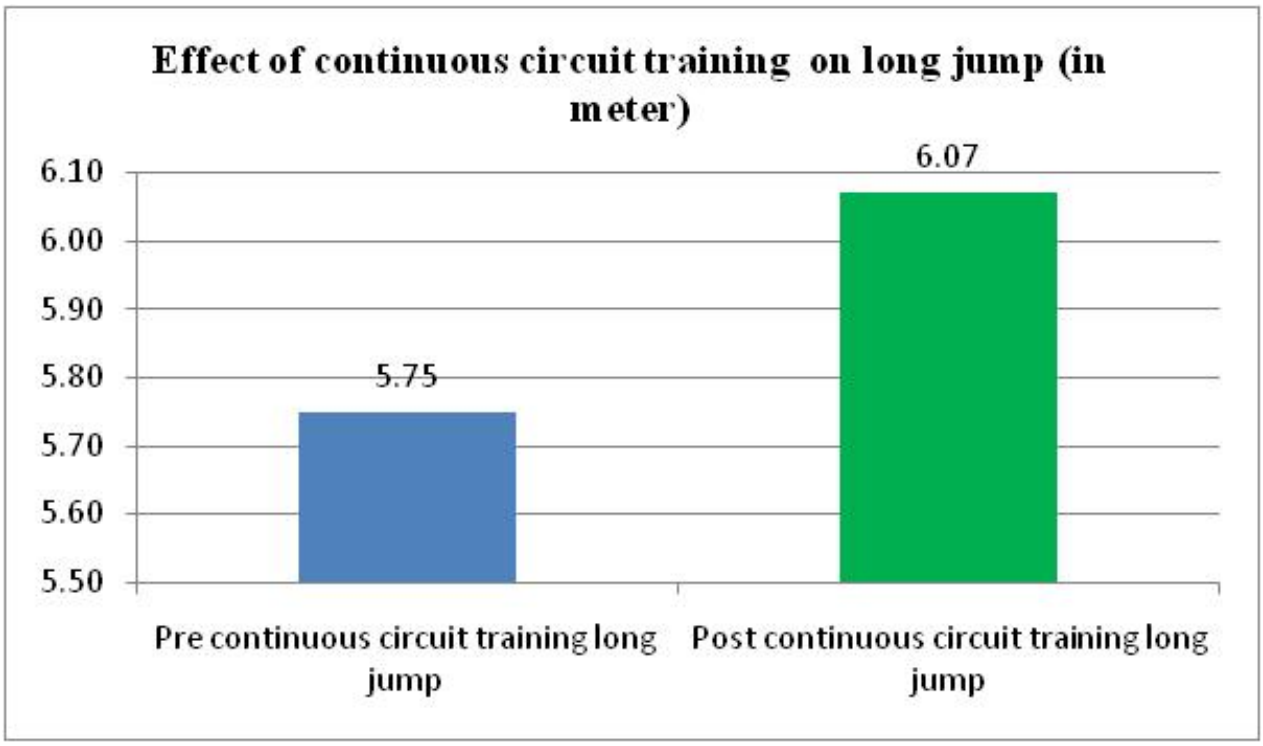

For assessing the significance of effect of continuous circuit training on long jump performance of athletes paired T test was done. The calculated T value is 11.06 which is higher than table value of 1.96; it means the effect of continuous training on long jump performance of athletes is significant.

Table 3

Significance of effect of continuous circuit training on long jump performance of athletes

Status	Mean	N	Std. Deviation	df	t	Sig. (2-tailed)
Pre continuous circuit training long jump	5.75	30	.55	29	11.06	0.00
Post continuous circuit training long jump	6.07	30	.42			

Result -

Twelve weeks of weight circuit training improved long jump performance of athletes by 5.23%. Twelve weeks of continuous circuit training improved long jump performance of athletes by 5.57%.

Conclusion -

The calculated F value 9.217 > 2.53 table value of F; it means there is significant difference among varied methods of circuit training for developing long jump athletes. Post Hoc test further

confirmed that Plyometric circuit training is significantly more effective for developing long jump athletes so second hypothesis "there is no significant difference among varied methods of circuit training for developing long jump athletes" is rejected.

References :

1. A. Quinney, R. Dewart, A. Game, G. Snydmiller, D. Warburton, G. Bell. (2008). A 26 year physiological description of a National Hockey League team. Applied Physiology Nutrition Metabolism.33: pp. 753-760.
2. Adams, K., O'Shea, J.P., O'Shea, K.l., Climstein, M. (1992). The effects of six weeks of squat, plyometric and squat-plyometric training on power production. J Appl Sport Sci Res, 6: pp. 36-41.
3. Adams, K.; O' Shea, J.P., O' Shea, K.L. and Climstein, M. (1992). The Effect of Six Weeks of Squat, Polymeric and Squat-Plyometric Training on Power Production. Journal of Applied Sports Science Research, 6 :(1) pp. 36-41.
4. Clutch, D., Wilson, C., McGown, C., Bryce, G.R. (1983). The effect of depth jumps and weight training on leg strength and vertical jump. Research Quarterly, 54: pp. 5-10.
5. D. Boning, C. Klarholz, B. Himmelsbach, M. Hutler, N. Maassen. (2007). Extracellular bicarbonate and non-bicarbonate buffering against lactic acid during and after exercise. European Journal of Applied Physiology. 100, pp. 457-467.
6. Gunga, H.C., et al. (2003). Austrian Moderate Altitude Study (AMAS 2000) - fluid shifts, erythropoiesis, and angiogenesis in patients with metabolic syndrome at moderate altitude (congruent with 1700 m). Eur J Appl Physiol. 88(6).
7. H. Andersson, T. Raastad, J. Nilsson, G. Paulsen, I. Garthe, F. Kadi. (2008).Neuromuscular fatigue and recovery in elite female soccer: effects of active recovery. Medicine and Science in Sports and Exercise. 40, pp. 372-380.
8. Safrit, Margaret J. and Terry M. Wood (1989). Measurement concepts in physical Education and Exercise Science, Illinois: Champaign. P. 76.
9. J.V.G.A Durnin, J. Womersley. (1974). Body fat assessed from total body density and its estimation from skin fold thickness: measurements on 481 men and women from 16 to 72 years. British Journal of Nutrition.32, pp. 77-97.
10. K. L. Mukharjee. (1997). Medical laboratory technology. A procedure manual for routine diagnostic tests. Vol I – III. New Delhi: Tata McGraw-Hill Publishing Company Limited.

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 120-122

सांख्य दर्शन की सृष्टि रचना में अंतःकरण का महत्व

RADHARANI RAJAK
RESEARCH SCHOLAR, DEPARTMENT OF SANSKRIT,
BINOD BIHARI MAHTO KOYALANCHAL UNIVERSITY

भूमिका :-

उत्पत्ति से आज तक मनुष्य जाति प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों को देखकर आश्चर्यचकित रहा है कि यह प्रकृति क्या है? यह जो देख रहे है हम लोग अर्थात् सूरज, चाँद, हवा, पर्वत, वृक्ष और नदियां आदि इन सभी के उत्पत्ति कैसे हुआ है? धरती पर मनुष्य जाति कौन है? इसका उत्पत्ति भी कैसे हुआ? और अन्त भी कैसे होगा? इत्यादि। इन सभी प्रश्न अपने आप मन को पुछ रहे थे। इन सभी बातों के उत्तर खोजने के लिए भारत में विभिन्न दार्शनिक संप्रदाय का उद्‌भव हुआ है। वेदों पर आधारित एवं भारतीय परम्पराओं को मानने वाले दर्शन संप्रदाय को भारतीय दर्शन संप्रदाय कहा गया है। भारतीय दर्शन संप्रदाय को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया गया है।

आस्तिक और नास्तिक :-

आस्तिक और नास्तिक के विषय में कुछ मतभेद है :-

पाणिनि सूत्र कहता है – "अस्ति नास्तिदिष्टम् मतिः"[1] अर्थात् होना जो आस्तिक और न होना जो नास्तिक है। यहां होने का अर्थ है परलोक और नही का अर्थ परलोक नही है पाणिनि के अनुसार जो परलोक में विश्वास करते है वे आस्तिक और जो परलोक में विश्वास नहीं करते वे नास्तिक है। कोई शास्त्र नास्तिक शब्द का एक अलग अर्थ में प्रयोग करते हुए कहते हैं कि ईश्वर के अस्तित्व को मानते हैं वे आस्तिक है, और जो नहीं मानते है वे नास्तिक है।

शास्त्रकार मनु कहते हैं "नास्तिक वेदनिंदकः"[2] अर्थात् वेदों की सत्ता को मानने वाले आस्तिक है और वेदों की सत्ता को न वाले नास्तिक है।

अतः भारतीय दर्शनों को साधारणतः आस्तिक और नास्तिक वर्गों में रखा जाता है। वेद के सिद्धानों को मानने वाले दर्शनों आस्तिक तथा वेद के सिद्धांतों को न मानने वाले को नास्तिक कहा जाता है। आस्तिक दर्शन छः प्रकार है जिन्हें न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त दर्शन है। और इनके विपरीत चार्वाक, बौद्ध और जैन जो की नास्तिक के वर्गो में रखा जाता है। इन छः आस्तिक दर्शनों में से अत्यन्त महत्वपूर्ण दर्शन है सांख्य दर्शन। इस दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कपिलदेव है।

अन्तःकरण शब्द का अर्थ एवं संक्षिप्त विवरण :-

अन्तःकरण शब्द दो शब्द को मिलाकर हुआ है। अंतःकरण में 'अन्तः' शब्द का अर्थ है – अन्दर, गुप्त या भीतर और 'करण' उसको कहते है जो क्रिया को सिद्धि प्रकिष्ट उपकारक हो। इस प्रकार दोनों शब्दों को मिलाकर अर्थ बना – आंतरिक साधन जो क्रिया की सिद्धि में अत्यन्त उपकारक हो। दर्शन शास्त्र में करण शब्द का प्रयोग आध्यात्मिक रूप में हुआ है। करण के दो प्रकार है। एक ब्रह्म और दूसरा अंतः। ब्रह्म करण दश है। सांख्यकारिका के अनुसार पांच ज्ञानेंद्रिया अर्थात् चक्षु, श्रोत, घ्राण, रसना और त्वचा एवं पांच कर्मेंद्रिया अर्थात् वाक, पाणि, पाद, वायु और उपस्थ है। दूसरा करण अन्तःकरण है। बुद्धि, अहंकार और मन इन तीनों को अन्तःकरण कहते है।

सांख्यकारिका में कहा गया है :–

करणं त्रयोदशदशविधम् तदाहरणधारण प्रकाशकरम्।
कार्यं च तस्य दशधाहार्यं धार्यं प्रकाश्यञ्च।[3]

अर्थात् करण के तेरह प्रकार है। ये आहरण, धारण तथा प्रकाश करने वाले है। उसके आहार्य, धार्य तथा प्रकाश इन तीनों कार्य दस–दस प्रकार होते है। पंच ज्ञानेंद्रिय के कार्यों का व्यापार है प्रकाश तथा पंच कर्मेंद्रिय के व्यापार है आहरण एवं तीनों अन्तरू करण के व्यापार है धारण। वाह्य और अंतरूकरण के विषय भेद में वोला गया है :–

अन्तःकरणं त्रिविधं दशधा बाह्यं त्रयस्य विषयाख्यं।
साम्प्रतकालं बाह्यं, त्रिकालमाभ्यन्तरं करणं।[4]

अर्थात् बुद्धि, मन और अहंकार ये तीन अंतःइन्द्रियॉ है। ये अंतःकरण है क्योंकि वे शरीर में रहते हैं और अन्दर की दुःख, आनन्द प्राप्ति करते हुए स्वीकार करते है। और दुसरी तरफ बाह्य करण समुह आंतरिक नियोजन का विषय प्रदान करते है। मन बाहरी दुनिया की वस्तुओं को सीधे कल्पना करने में असमर्थ है, जब आंखे वस्तुओं को सामने लाती है तव आंख उसके बारे में सोचना शुरू कर देती है। इसलिए दोनों का रिस्ता घर–घर का जैसा है। अतः बुद्धि, अहंकार और मन ये तीन अंतःकारणों का अपना–अपना लक्षण ही व्यापार है। बुद्धि का अध्यावसाय या निश्चय है– 'अध्यावसायो बुद्धि'[5], अहंकार का अभिमान– 'अभिमानोहंकारः'[6], और मन का संकल्प करना है – 'उभयात्मकमत्र मनः संकल्पम्'।[7]

सृष्टि रचना में महत्व :–

सांख्य दर्शन की सृष्टि रचना में मुख्य 23 तत्व है। इन 23 तत्व से अत्यंत महत्वपूर्ण है प्रकृति और पुरुष। प्रकृति के यथार्थ स्वरूप का दर्शन करने के लिए अर्थात् पुरूष को अपवर्ग प्रदान करने के लिऐ प्रकृति और पुरुष का संयोग होता है। इसके बाद प्रकृति की पहली विकृति या परिणाम महत या बुद्धि है। सभी सांसारिक वस्तुओं का स्रोत होने के कारण इसे महत कहा जाता है। व्यक्ति के अन्दर महानता की स्थिति को बुद्धि कहा जाता है। प्रकृति के सत्वगुणों से महत या बुद्धि उत्पन्न होती है। बुद्धि स्वयं भी अभिव्यक्त होती है तथा अन्य वस्तुओं को भी अभिव्यक्त करती है। बुद्धि के दो पहलु होते है– सात्विक बुद्धि और तामसिक बुद्धि। सात्विक बुद्धि के लक्षण है – धर्म, ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्य एवं तामसिक बुद्धि के लक्षण है – अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य और अऐश्वर्य। बुद्धि प्रकृति के परिणाम होने के कारण जड़ है। अतः चेतन पुरुष से भिन्न है। लेकिन सत्वप्रधान होने ने कारण, बुद्धि दर्पण की तरह स्वच्छ होते है, इसलिए जब पुरूष की चेतना बुद्धि में प्रतिविम्वित होती है, तो बुद्धि स्वयं

को चेतन मानती है।

महत या बुद्धि विकार या परिणाम है – अहंकार। सत्व, रज और तम के अनुसार अहंकार तीन प्रकार का हो सकता है। सत्व गुण की अधिकता होने पर सात्विक अहंकार, रजोगुण अधिक होने से राजस अहंकार एवं तमोगुण अधिक होने से तामस अहंकार होते है। सात्विक अहंकार से मन, पंच ज्ञानेंद्रीया और पंच कर्मेंद्रिया उत्पन्न होती है। पंच ज्ञानेंद्रिया है– आंख, कान, नाक, जीहा और त्वचा। पंच कर्मेंद्रिया है– वाक्, पानि, पाद वायु, उपस्थ। तमस अहंकार से उत्पन्न होता है पंच तन्मात्र या पंच महाभुत। पंच तन्मात्र है– रूप तन्मात्र, रस तन्मात्र, गंध तन्मात्र, स्पर्श तन्मात्र और शब्द तन्मात्र। ये सभी अत्यन्त सूक्ष्म होने के कारण प्रत्यक्ष ज्ञान का विषय नहीं है। राजस अहंकार कुछ उत्पन्न नहीं करता है, लेकिन सात्विक और तमस अहंकार की अभिव्यक्ति में मदद जरूर करते है। अन्त में पंच तन्मात्र से पंच भूत अर्थात् क्षिति, अप, तेज, मरूत और व्योम उत्पन्न होते है। इसी पंच भूत से संसार का समस्त ज्ञान और उपभोक्ता वस्तुओं उत्पन्न होते है।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार उपरोक्त सांख्यानुसार सृष्टि रचना में क्रम बनता है। सांख्य की सृष्टि रचना में आज भी अंतःकरण अत्यन्त प्रभावी है। बुद्धि अहंकार और मन ये तीनों अंतःकरण अपना अलग–अलग अध्यवसाय, अहंकार का अभिमान और संकल्प रूप व्यापार करते है। इन तीनों मिलकर जीवन धारण रूप व्यापार करते है। सांख्य दर्शन के 25 तत्वों की उत्पन्न महत्वपूर्ण से बताया गया है। इन 25 तत्वों में प्रकृति और पुरूष मुख्य है। यह स्पष्ट कर दिया गया है कि पंच वायु या प्राणों का धारण अर्थात् धरती पर जीवन धारण तीनों अंतःकारणों के द्वारा मिलित रूप से किया जाए। अतः सृष्टि रचना में अंतःकरण अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

सन्दर्भ सूची :-

1. पाणिनि सूत्र – 4/4/30
2. मनुसंहिता – 2/11
3. सांख्यकारिका – 32
4. वहीं – 33
5. वहीं, 23
6. वहीं, 24
7. वहीं, 27

सन्दर्भ ग्रंथों की सूची :-

1. सांख्य दर्शनम, कपिल प्रणीत, संपादक, पाण्डेय जनार्दन शास्त्री, मोतीलाल बनारसी दास, संस्करण 1989
2. सांख्यकारिका, ईश्वर कृष्णा विरचित, व्याख्याकार चतुर्वेदी ब्रजमोहन नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, संस्करण – 2006
3. भारतीय दर्शन की समीक्षात्माक रूपरेखा पाठक, राममूर्ति अभिमुन्य प्रकाशन, इलाहाबाद संस्करण 2004
4. सांख्य दर्शन का इतिहास – शास्त्री आचार्य उदयवीर, विजय कुमार गोविंदराम हासानन्द, दिल्ली संस्करण 2002
5. भारतीय दर्शन – दीपककुमार बागची प्रगतिशील प्रकाशक 1997

VILL – SIMULBERA
POST – GHAGARJURI, P-S – PURULIA (M.F), DIST – PURULIA, STATE – WEST BENGAL
PHONE – 8597230448, GMAIL – radharanirak@gmail.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
Vol. 12, Issue 1-2
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
पृष्ठ : 123-127

'रश्मिरथी' में दलित-विमर्श

बी. वी. एन. उमा गायत्री
शोधार्थी, हिंदी विभाग, कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय, कलबुरगी, कर्नाटक।

शोध-सार :-

समाज में कोई व्यक्ति कितना सम्मान–योग्य है इसका मूल्यांकन करने की कसौटी उसके जन्म, कुल की श्रेष्ठता, धर्म, लिंग, जाति आदि से निर्धारित नहीं होती अपितु उसके उत्कृष्ट मानवीय मूल्यों एवं तेजस्वी प्रज्ञा और प्रतिभा से परिचालित होती है। यही धारणा सभी अस्मितामूलक विमर्शों के मूल में है। इनमें स्त्री–विमर्श, दलित–विमर्श, आदिवासी–विमर्श, किन्नर–विमर्श, किसान–विमर्श आदि आते हैं। हमारे समाज में जन्म के आधार पर व्यक्ति की श्रेष्ठता का निर्धारण करना सदियों से विद्यमान रहा है। इसी के विरोध में ये विमर्श आवाज़ उठाते हैं। प्रस्तुत शोध–आलेख में दलित–विमर्श को चिंतन का केंद्र बनाया गया है। दरअसल 'दलित' शब्द का अर्थ है– जिसका दलन हुआ हो। दलन से तात्पर्य है कुचलना। सदियों से जिनके हकों को कुचलकर उनका शोषण उच्च वर्ग कहलाने वाले लोगों द्वारा किया जा रहा था उनका विद्रोह ही दलित–आंदोलन बनके उभरा। दलित–विमर्श आज के युग का एक ज्वलंत मुद्दा है। डॉ. भीम्राव अंबेडकर का जीवन संघर्ष आज के दलित–साहित्य का वैचारिक आधार है। इस लेख में रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित 'रश्मिरथी' खंडकाव्य की, दलित–विमर्श की दृष्टी से, आलोचना प्रस्तुत की जा रही है।

बीज-शब्द :-

'दलित–आंदोलन', 'दलित–विमर्श', 'अस्मितामूलक–विमर्श', 'खंडकाव्य', 'सूतपुत्र', 'कवच–कुण्डल', 'एकाग्नि'।

प्रस्तावना :-

आधुनिक हिंदी साहित्य में आलोचना विधा की शुरुआत भारतेंदु युग से मानी जाती है और भारतेंदु युग से इक्कीसवी सदी तक आते–आते इसके स्वरूप में अनेकों बदलाव हुए हैं। जब समाज में नई क्रांति जगी और आज तक जो मनुष्य समाज के हाशिये में था उसको केंद्र में लाकर उसके मानवीय हकों की मांग होने लगी, हाशिये के जनसमुदाय के अस्तित्व को भी पर्याप्त सम्मान देने की बात उठने लगी तब साहित्य में भी इसकी झलक दिखने लगी। इन जनसमुदायों के हितों और हकों के स्वर में रचनाएँ होने लगी। इनकी ज़िंदगियों में हो रहे अन्याय, दमन आदि का ज्वलंत और मार्मिक चित्रण होने लगा। साहित्य में विमर्श की इसी शाखा को अस्मितामूलक–विमर्श कहा गया।

मगर कोई भी आंदोलन सहसा जन्म नहीं लेता और खतम नहीं हो जाता। वह कालांतर में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहता ही है, बस किसी विशेष युग में वह केंद्र में आकर एक आंदोलन का स्वरूप ले लेता है।

इसी तरह हिंदी साहित्य में 20वी शताब्दी के अंतिम दशकों और 21वी शताब्दी के शुरुआती दौर में दलित–विमर्श अपने चरम पर है मगर इससे पूर्व भी दलित–विमर्श हिंदी साहित्य में हमेशा से रहा है। भक्ति काल के कबीर, रैदास आदि जैसे कवि इसके उदाहरण हैं। इस लेख में रामधारी सिंह दिंकर द्वारा रचित एवं 1952 ई. में प्रकाशित खंडकाव्य 'रश्मिरथी' की समीक्षा प्रस्तुत है जिसमें कवि द्वारा महाभारत के कर्ण के करुणामयी जीवन के माध्यम से दलित–विमर्श और मानवतावाद की स्थापना करने की ओर प्रयास किए गए।

आमुख :-

छायावाद के पीठ और प्रगतिवाद के द्वार पर खड़े राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिंकर स्वभाव से राष्ट्र–प्रेमी थे और वह रचनाकर्म में भी भारतीयता के कवि थे। उनके साहित्य में देश की चेतना भरपूर थी। इसलिए उन्हें राष्ट्रकवि कहा गया। उन्होंने वीर रस प्रधान ओजस्वी रचनाएँ की हैं। उन्होंने साहित्य के गद्य और पद्य दोनों विधाओं में अपनी कलम चलाई। उनकी कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं– 'कुरुक्षेत्र', 'ऊर्वशी', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'रश्मिरथी' आदि। दिनकर में राष्ट्रवाद के साथ–साथ दलित–मुक्ति चेतना का भी स्वर है। 'रश्मिरथी' इसका प्रमाण है। वास्तव में उनके काव्य का स्वर अन्याय के प्रति आक्रोश और न्यायपरक उत्तम मानव मूल्यों की स्थापना करने का है। इस आक्रोश की अभिव्यक्ति के लिए दिनकर को एक ऐसे नायक की तलाश थी जो उदात्त चरित्र–संपन्न होने के साथ–साथ अनिवार्यतः पराक्रमी हो। महाभारत के कर्ण में उन्हें यह मानसकल्पित नायक प्राप्त हुआ। स्वयं दिनकर इसके बारे में कहते हैं–

"कर्णचरित्र का उद्धार एक तरह से नई मानवता की स्थापना का ही प्रयास है।"

'रश्मिरथी' सात सर्गों का एक खंडकाव्य है। इसमें दिनकर ने कर्ण के चरित्र के सभी पक्षों को बखूबी उजागर किया है, चाहे वह वीरता हो, दानशीलता हो, मित्रता हो या नैतिकता। संघर्ष कर्ण के जीवन का एक अटूट हिस्सा रहा है। 'रश्मिरथी' में दिनकर ने कर्ण को महाभारत के पात्र से ऊपर उठाकर नैतिकता और विश्वसनीयता की नई भूमि पर खड़ा कर उसे गौरव से विभूषित कर दिया है। इस काव्य में स्वयं श्रीकृष्ण कर्ण के बारे में कहते हैं–

"तू कुरुपति का ही नहीं प्राण,
नरता का है भूषण महान।"

'रश्मिरथी' में दलित–विमर्श की संपूर्णता में समीक्षा करने के क्रम में यहाँ इसके सात सर्गों की विषयवस्तु की संक्षिप्त व्याख्या करते हुए संदर्भानुसार समीक्षा प्रस्तुत है।

प्रथम सर्ग में पाण्डवों और कौरवों के शिक्षाकाल के पूर्ण होने के पश्चात आचार्य द्रोण और कृपाचार्य द्वारा समस्त कुल के सामने उनके द्वारा अर्जित अस्त्र–शस्त्र विद्या के प्रदर्शन के लिए एक मंच तैयार किया जाता है। इस प्रदर्शन में एक तरफ आचार्य अपने शिष्यों के हुनर को देखकर फूले नहीं समा पा रहे थे और दूसरी तरफ कुंती, गांधारी, धृतराष्ट्र आदि कुल के सदस्य अपने बच्चों के पराक्रम को देखकर आनंदमयी हो रहे थे। इस प्रदर्शन के अंत में द्रोणाचार्य और कृपाचार्य द्वारा अर्जुन को जाति का सर्वश्रेष्ठ धनुर्धारी घोषित किया गया। उसी समय एक ओजस्वी युवक इस फैसले को चुनौती देने के लिए धनुष लेकर वहाँ पहुंचता है और आचार्यों से विनती करता है कि उसे अर्जुन के साथ समर करके खुद की प्रतिभा को दर्शाने की आज्ञा प्रदान करें। यहीं वीर–शूर युवक सूर्य के समान कांतिपूर्ण कर्ण थे। मगर कर्ण द्वारा अपने परिचय में अपने कुल का उल्लेख न करने के

कारण उसे आचार्यों से स्वीकृति नहीं मिलती। विद्याप्रदर्शन में कुल के महत्व को तुच्छ मानते हुए अपने हुनर पर विश्वास के साथ दृढ़ता पूर्वक खड़े कर्ण की वयक्तिकता के उद्घोष के स्वर को शमित करने का पुनः प्रयास कृपाचार्य द्वारा जातीय परिचय की आड में होता है तो कर्ण इसके जवाब में कहते हैं–

"जाति–जाति रटते, जिनकी पूँजी केवल पाषण्ड,
मैं क्या जानु जाति? जाति है मेरे भुजदण्ड।
————————————
पढ़ो उसे जो झलक रहा है मुझमें तेज प्रकाश,
मेरे रोम–रोम में अंकित है मेरा इतिहास।"

जाति और कुल के नाम पर दलितों को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखने के मानस पर यें भीषण प्रहार करते हैं। इस संदर्भ में वें जातिवाद के विरोध में बोलने वाले पात्र को भी उजागर करते हैं। भरी सभा में जब कर्ण को इस प्रकार जाति के नाम पर अपमानित किया जा रहा था, और उसकी विद्या को कोई मोल नहीं दिया जा रहा था तब अर्जुन के समान धनुर्धारी के प्राप्त होने से खुश दुर्योधन कर्ण की हिमायत करता है और कहता है–

"मूल जानना बड़ा कठिन है नदियों का, वीरों का,
धनुष छोड़कर और गोत्र क्या होता रणधीरों का?
पाते हैं सम्मान तपोबल से भूतल पर शूर,
जाति–जाति का शोर मचाते केवल कायर क्रूर।"

दुर्योधन जब देखता है कि उन सब महारथियों के समान कर्ण का क्षत्रिय न होने के कारण ही उसकी उपेक्षा की जा रही है तो वह अंगराज का राजमुकुट कर्ण के सर पर धर देता है और उसे भी अब क्षत्रिय घोषित कर देता है।

द्वितीय सर्ग में दिनकर कर्ण का परशुराम से विद्याबोध लेने और कर्ण को परशुराम से मिले श्राप का वर्णन करते हैं। वास्तव में कथा इस प्रकार है कि कर्ण सर्वप्रथम शिक्षा के लिए द्रोणाचार्य से ही निवेदन करते हैं मगर सूतपुत्र (शूद्र जाति का) होने के कारण मात्र से कर्ण को द्रोणाचार्य यह अवसर नहीं देते। उस काल में सूतपुत्र शिक्षा से वंचित होते थे। इसी कारण शिक्षित होने की पावन इच्छा से कर्ण को परशुराम के आश्रम में उनसे ब्राह्मण होने का असत्य कहकर विद्या सीखने जाना पड़ता है। वहाँ जब एक दिन किसी घटना के कारण परशुराम को कर्ण के झूठ का आभास हो जाता है तब वें कर्ण को ये श्राप देते हैं कि अत्यावश्यक समय में कर्ण अपनी विद्या भूल जाएंगे। इस प्रकार दूसरा सर्ग भी दलितों के शिक्षाधिकार के विषय को लेकर है। उनकी स्थिति ऐसी हो गई थी कि सत्य कहकर विद्या सीख नहीं सकते और असत्य कहकर सीखी हुई विद्या को आचरण में नहीं ला सकते।

तृतीय सर्ग से महाभारत के युद्ध से संबंधित घटनाओं का वर्णन होता है। तृतीय सर्ग कृष्ण–कर्ण संवाद का है। इसमें श्रीकृष्ण शांति–प्रस्ताव लेकर कुरुसभा में जाते हैं और निराश होकर वापस लौटते हैं। लौटते समय वें शांति के लिए एक अंतिम प्रयास के रूप में कर्ण से बात करते हैं और उन्हें कहते हैं कि वह वास्तव में सूतपुत्र नहीं अपितु स्वयं पाण्डवों का अग्रज है। उनकी जननी कुंती हैं। श्रीकृष्ण यह जानते थे कि युद्ध के लिए दुर्योधन

अगर इतना आकुल है तो वह कर्ण के शौर्य के दम पर ही है। अतः वें कर्ण को उनका जन्म रहस्य बताकर उनके सामने कौरवों का पक्ष छोड़ पाण्डवों की तरफ आ जाने का प्रस्ताव रखते हैं और कर्ण को पाण्डवाग्रज होने के नाते राजा होने का लालच भी देते हैं। मगर इसके उत्तर में कर्ण कुल वैभव, धन–संपत्ति के आगे मैत्री और नैतिक मूल्यों को चुनते हैं। कर्ण कहते हैं कि आज तो आपने कह दिया कि मैं वास्तव में कुलीन पाण्डवों का अग्रज हूँ और इसलिए दल बदल लेने पर बहुत कुछ पा सकता हूँ, मगर हे केशव! मैं ऐसा करने से ऐसा कुछ खो दूंगा जो इन सारी धन–दौलतों से भी मूल्यवान है। मैं अपनी कीर्ति खो दुंगा। जब पूरी दुनिया जाति व कुल के नाम पर मेरा अपमान कर रही थी तब दुर्योधन ही वह प्राण–मित्र रहा जिसने मुझे राजा का दर्जा, सम्मान और जीवन दिया था। अब जब उस मित्र पर संकट छाया है तो में किसी प्रकार की मोह–माया में फँसकर उसका हाथ छोड़ नहीं सकता। श्रीकृष्ण के इस प्रस्ताव के जवाब में कर्ण कहते हैं–

"कुरुराज्य चाहता मैं कब हूँ?
साम्राज्य चाहता मैं कब हूँ?
क्या नहीं आपने भी जाना?
मुझको न आज तक पहचाना?
जीवन का मूल समझता हूँ,
धन को मैं धूल समझता हूँ।"

इसमें कवि ने एक तरफ तो कुलीन वर्ग के अवसरवाद की कुटिलता को उद्घाटित किया है और दूसरी तरफ कर्ण के माध्यम से कुल–गोत्र की मोह–माया को मानवता के विस्तृत फलक के सामने तुच्छ और नैतिकता के विरुद्ध सिद्ध किया है।

चतुर्थ सर्ग कर्ण की दानवीरता का आख्यान है। इसमें युद्ध के निश्चित हो जाने पर श्रीकृष्ण के कहने से देवेंद्र संध्या समय में कर्ण के पास ब्राह्मण के वेश में कुछ ऐसा दान मांगने आते हैं जिसे देना कर्ण के लिए जीते जी मरने के समान था। इंद्र कर्ण से उनके कवच–कुण्डल मांगते हैं। कर्ण ब्राह्मण के वेश में आए इंद्र को पहचान जाते हैं और इस मांग के पीछे का कारण भी भाँप लेते हैं। मगर सब जानते हुए भी दानवीर कर्ण स्वार्थरहित होकर यह दान दे देते हैं। इस संदर्भ में कर्ण कहते हैं–

"जीवन देकर जय खरीदना, जग में यही चलन है,
विजय–दान करता न प्राण को रखकर कोई जन है,
मगर प्राण रखकर प्रण अपना आज पालता हूँ मैं,
पूर्णाहुति के लिए विजय का हवन डालता हूँ मैं।"

कर्ण की इस वीरता से इंद्र का भी हृदय परिवर्तित हो जाता है और वें कर्ण को एकाग्नि (अग्नि अस्त्र जिसका प्रयोग एक ही बार किया जा सकता है) देने के लिए विवश हो जाते हैं।

पंचम सर्ग भी युद्ध से पूर्व का है। यह कुंती–कर्ण संवाद का सर्ग है। कुंती भी इंद्र की तरह ये जानकर संध्या के समय कर्ण से कुछ मांगने जाती है कि उस समय दानवीर कर्ण उनकी मांग को ठुकरा नहीं सकते। कुंती भी अपनी तरफ से युद्ध को रोकने का प्रयास करती हैं और कर्ण से अपनी जननी होने का ऋण मांग लेती हैं। वह भी कर्ण को पाण्डवों के साथ आ जाने को कहती है और अपने पुत्रों का जीवन कर्ण से मांगती हैं। कर्ण

इसके जवाब में उनके प्रस्ताव को पूरी तरह स्वीकार तो नही करते मगर अपने प्रण को रखते हुए अपनी मातृमूति को एक वचन अवश्य देते हैं। कर्ण कुंती का अब तक सब जानते हुए और देखते हुए भी उसे न अपनाने पर क्रोध प्रकट करते हुए कहते हैं कि कुंती पंच पाण्डवों की ही माँ हैं और हमेशा यही रहेंगी। यह कहते हुए ये वचन देते हैं कि कुंती युद्ध के पश्चात भी निश्चित रूप से पांच पुत्रों की माता रहेंगी क्यों कि या तो कर्ण के हाथों अर्जुन की मृत्यु होगी या अर्जुन के हाथों कर्ण की मृत्यु होगी। इस प्रकार कर्ण कुंती को भी खाली हाथ नहीं भेजते, उनको उनके पांचों पुत्रों के जीवन का आश्वासन देकर ही भेजते हैं।

षष्ठ और सप्तम सर्ग दोनों युद्ध भूमि की घटनाओं के विषय पर रची गई हैं। इनमें भीष्म पितामह की करुणामयी मृत्यु, मृत्यु शय्या पर भीष्म और कर्ण का संवाद, युद्ध में कर्ण की विभीषिका और कर्ण का मजबूरी में इंद्र द्वारा प्राप्त एकाग्नि, जिसे कर्ण ने अर्जुन के लिए संभालकर रखा था, उसका प्रयोग कहीं और कर देने की परिस्थिति का उल्लेख है जिसने लगभग युद्ध के परिणाम को सुनिश्चित कर दिया था। इसके पश्चात कर्णार्जुन का भीषण युद्ध और अंत के क्षणों में छल से अर्जुन के हाथों कर्ण के मारे जाने की करुणामयी गाथा सुनाई गई है।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार देखा जा सकता है कि कर्ण के माध्यम से दिनकर जी ने दलित–चिंतन किया। उसके अंतर्गत न केवल स्थूल रूप से दृष्टिगोचर होने वाले दलितों के पास शिक्षा का अधिकार न होने का विरोध है अपितु गहराई में एक शूद्र जाति का माने जाने वाले व्यक्ति के जीवन में आने वाली चुनौतियों को भी उजागर किया है। दुनिया लगातार अपने छल–कपट या संकीर्ण मानसिकता से कर्ण के प्रति अन्याय करती रही और कर्ण सब कुछ जानते और पहचानते हुए भी नैतिकता का पथ न छोड़ते हुए एक उत्कृष्ट मनुष्य का कर्तव्य निभाते रहें। इस प्रकार कर्ण के जीवन का सूर्य अस्त हो गया परंतु उसकी प्रभा का तूर्य अनंत काल तक अमर रह गया। कवि दिनकर ने कर्ण–चरित्र के उद्धार के माध्यम से नवीन जीवन–मूल्यों की स्थापना को लक्ष्य बनाया है। इन्सानियत के इतने ज्वलंत मुद्दे उठाने के कारण ही यह रचना हर काल में किसी न किसी वजह से केंद्र में आ जाती है और अत्यंत प्रासंगिक लगने लगती है। किसी भी विमर्श का अंतिम लक्ष्य सभी के लिए समान अधिकारों की प्राप्ति कर परिणाम स्वरूप एक मानवतावादी और नैतिक मूल्यों से युक्त समाज की रचना करना ही है। दिनकर ने भी इस काव्य में दलित–विमर्श से शुरुआत कर अंत में इन्हीं जीवन मूल्यों को स्थापित किया है।

संदर्भ :-

1. 'रश्मिरथी'– रामधारी सिन्ह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन, 2009, पृ. सं. 10
2. 'रश्मिरथी'– रामधारी सिन्ह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन, 2009, पृ. सं. 60
3. 'रश्मिरथी'– रामधारी सिन्ह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन, 2009, पृ. सं. 19, 20
4. 'रश्मिरथी'– रामधारी सिन्ह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन, 2009, पृ. सं. 20
5. 'रश्मिरथी'– रामधारी सिन्ह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन, 2009, पृ. सं. 56
6. 'रश्मिरथी'– रामधारी सिन्ह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन, 2009, पृ. सं. 74, 75

ई. मेल– umagayathri395@gmail.com, मो. नं.– 9493589200

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 128-130

वैश्विक परिप्रेक्ष में भारतीय भाषाएँ और नई शिक्षा नीति

प्रा. समद जमादार, सहायक प्राध्यापक
डॉ. डी. वाय. पाटील कला, वाणिज्य और विज्ञान महिला महाविद्यालय पिंपरी, पुणे दृ 411018 (महाराष्ट्र)

शिक्षा का विषय हो, चाहे भारतीय भाषाओं का विषय से या अनुसंधान का विषय हो चाहे रोजगार का प्रश्न हो या सामाजिक न्याय का : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इन सब बातों का उल्लेख करते हुए इसका हल निकाला हुआ है।

देश के प्रधानमंत्री और शिक्षामंत्री के मार्गदर्शन के अनुसार उनके मार्गदर्शन में तैयार की गई नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक महत्वपूर्ण निर्णय है जिसमें भारतीय शिक्षा और उसके भविष्य के राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय भाषा की संभावनाएँ उसमें उल्लिखित है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का विजन यह रहा है कि, सभी स्तरों के छात्रों को उच्चतर गुणवत्ता शिक्षा उपलब्ध कराना, भारत को वैश्विक ज्ञान के जरिए महाशक्तिशाली बनाना और समाज में सुधार लाना ही इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मूल उद्देश्य रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारतीय भाषाओं का भविष्य :-

जब एक ही प्रदेश में विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले लोग रहते हैं तो उसे बहुभाषिक प्रदेश करते हैं। बहुभाषिकतावाद यह भारतीय अस्मिता का अभिन्न अंग माना जाता है। भारत एक बहुभाषी देश है जहाँ हर क्षेत्र के लोग अपनी–अपनी मातृभाषा में वार्तालाप करते है। इस संदर्भ में लिखा जाता है, कि "सन 1971 की जनगणना के अनुसार हमारे देश में 1652 भाषाओं की पहचान की गई है और उन्हें पाँच विभिन्न भाषा परिवारों के तहत बाँटा गया है। प्रिंट मीडिया में 87 से ज्यादा भाषाएँ प्रयुक्त होती है, रेडियो में 71 भाषाएँ और प्रशासन के स्तर पर 13 विभिन्न भाषाएँ प्रयुक्त होती है। इन भाषाओं में से केवल 47 भाषाएँ स्कुल और पठन–पाठन के माध्यम के रूप में प्रयोग की जाती है।"[1]

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएँ शामिल हैं। ज्यादातर बाहरी क्षेत्रों में हमें बहुभाषिक लोग मिलते हैं। अपने इस बहुभाषी भारत देश में सामाजिक सौहार्दता तभी संभव हो सकती है जब लोग एक दूसरे की भाषा और संस्कृति को सम्मान देंगे। ज्ञान के बिना इस प्रकार का सम्मान संभाव ही नही हो सकता। अज्ञानता ही भय, घृणा और असहिष्णूता को जन्म देती है और राष्ट्रीय अस्मिता को बिगाड़ने का कार्य करती है। प्रत्येक राज्य में एक वर्चस्व प्राप्त भाषा का बनना अनिवार्य है। इससे समाज में एकता प्रस्थापित हो सकती है। बहुभाषिकता एक सज्ञानात्मक विकास और शैक्षिक संप्राप्ति में सकारात्मक जुड़ाव बनाती है। इसलिए यह जरूरी है कि, पाठशालाओं में बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जाए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत "बहुभाषिकता और अध्ययन अध्यापन के कार्य में भाषा की शक्ति को प्रोत्साहन देना यह सिद्धांत लागू है।"[2]

इस सिद्धांत को देखा जाए तो स्कुली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक में भारतीय भाषाओं के अध्ययन के साथ–साथ भारतीय भाषाओं में अध्यापन पर बल दिया गया है। उसी के अनुसार इसी क्रम में एक और महत्वपूर्ण बात है कि, 'जहाँ तक संभव हो, कम से कम ग्रेड 5 तक लेकिन बेहतर यह होगा कि वह ग्रेड 8 और उससे आगे तक भी हो शिक्षा का माध्यम, घर की भाषा/मातृभाषा/स्थानिय भाषा/क्षेत्रीय भाषा होगी।"[3]

युनेस्को रिपोर्ट 2008 के अनुसार और शैक्षिक मनोविज्ञान के अनुसार मातृभाषा में सिखना आसान होता है क्योंकि इसमें बोलना और जानना अत्यंत सहज और शिघ्र होता है। मातृभाषा या स्थानिय भाषा में बच्चा चिजों को जल्दी समझता है बल्कि अन्य भाषाओं में उसे रटना पड़ता है। इसी कारण अमेरिका, कोरिया, जर्मनी, जापान, फ्रान्स, इटली, इंग्लैंड, चीन आदि विकसित देशों में स्कूल की शिक्षा यह स्थानिय भाषा या मातृभाषा में ही होती है। इन देशों में देखा जाए तो आमतौर पर उस देश की अपनी एक भाषा होती है। शिक्षा के माध्यम के रूप में इन भाषा के महत्व और आम जनता की भाषायी परिस्थिति को समझते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी इसके बारे में अपना नियम बनाते हुए दिखाई देती है। इसलिए अधिक से अधिक डिग्री पाठ्यक्रमों को भारतीय भाषाओं अथवा द्विभाषा के रूप में पढ़ाए जाने की सिफारिश राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 देती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के चौदहवें अध्याय उच्चतर शिक्षा में समता और समावेश में स्पष्ट उल्लेख है– "भारतीय भाषाओं और द्विभाषी रूप से पढ़ाए जाने वाले अधिक डिग्री पाठ्यक्रम विकसित करना।"[4]

आज उच्चतर शिक्षा लेते समय भारतीय भाषाएँ कितनी महत्वपूर्ण है इस बात को स्पष्ट करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय कलाओं, संस्कृति और भाषाओं का संवर्धन करते हुए कहा गया है कि– "मातृभाषा/स्थानीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में इस्तेमाल करने और इन कार्यक्रमों को द्विभाषा के रूप में चलाने के लिए निजी प्रशिक्षण संस्थानों को भी प्रोत्साहित किया जाएगा और उन्हें बढ़ावा दिया जाएगा।"[5]

इन प्रावधानों को कार्यान्वयन की दिशा में लाने के संदर्भ में शिक्षा मंत्री डॉ० पोखरियाल की अध्यक्षता में एक बैठक हुई और उसके बाद यह घोषणा की गई कि, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) जैसे कुछ संस्थानों में शैक्षिक वर्ष 2021–22 से अपनी मातृभाषा में इंजिनियरिंग के पाठयक्रम की पढाई शुरु, कराई जाएगी। उसी तरह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार आईआईटी – जेईई मुख्य परीक्षा 2021 में हिंदी और अंग्रेजी के अलावा अन्य नौ क्षेत्रीय भाषाओं में यह परीक्षा आयोजित की गई। उसी तरह राष्ट्रीय पात्रता प्रवेश परीक्षा NEET 2020 यानी मेडिकल प्रवेश परीक्षा अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य 10 भारतीय भाषाओं में ली गई और उसके बाद यह परीक्षा 10 भाषाओं में विगत वर्ष तक लगातार चलती रही।

आज भारतीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा के लिए विभिन्न भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता की शिक्षण सामग्री – लिखित और दृश्य–श्रव्य की सामग्री की आवश्यकता होगी। उसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रावधान है कि "सर्वसाधारण को विभिन्न भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में उच्चतर गुणवत्ता वाली अधिगम सामग्री और अन्य महत्वपूर्ण लिखित एवं मौखिक सामग्री उपलब्ध हो सके। इसके लिए एक इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन एंड इंटरप्रिटेशन (आईआईटी) की स्थापना की जायेगी।"[6]

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इस विषय की गंभीरता को समझते हुए सरकार की ओर से इंस्टीट्यूट ऑफ

ट्रांसलेशन एंड इंटरप्रिटेशन (आईआईटी) की स्थापना की गई।

भारत के संविधान की आठवी अनुसूची में उल्लिखित है– "प्रत्येक भाषा के लिए अकादमी स्थापित की जायेगी जिनमें हर भाषा से श्रेष्ठ विद्वान एवं मुल रूप से वह भाषा बोलनेवाले लोग शामिल रहेंगे।"[7]

भारत के संविधान की आठवी अनुसूची में उल्लेख किया है कि, आम जनता के सर्वश्रेष्ठ सुझाओं को भी इसमें लिया जाए या और जब संभव हो साझे शब्दों को अंगीकृत करने का प्रयास किया जाएगा। यह शब्दकोश व्यापक रूप से प्रसारित किए जाएंगे ताकि उन्हें पत्रकारिता, शिक्षा, बातचीत में या लेखन में इस्तेमाल किए जाएँगे और वह किताब के रूप में और ऑनलाईन भी उपलब्ध होंगे। अनुसूची 8 की भाषाओं के लिए इन अकादमियों केंद्र सरकार द्वारा राज्यसरकारों के साथ परामर्श करके स्थापित किया जाएगा। इस प्रकार एक व्यापक पैमाने पर बोली जाने वाली अन्य भारतीय भाषाओं की अकादमी स्थापित करने का कार्य भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा किया गया।

निष्कर्षतः यह कहना चाहूँगा कि इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के जरिए भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार आएगा और शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता भी बनी रहेगी। सामान्य व्यक्ति तक शिक्षा पहुँच जाएगी और भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्तिशाली बनाकर एक जिवंत और न्यायसंगत ज्ञान समाज में बदलने के लिए यह शिक्षा नीति उपयुक्त रही है और रहेगी। छात्रों में भारतीय होने का गर्व न केवल विचारों में बल्कि उनके बुद्धी, कार्य और व्यवहारों में उभरकर आना चाहिए। जो मानव अधिकार भारतीय लोगों को मिला है उसमें विकास, जीवनयापन तथा वैश्विक कल्याण के लिए यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सही मायने में लाभदायक रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली. द्वारा प्रकाशित। प्रथम संस्करण – जून 2009, पृष्ठ क्र. 20
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, मानव संसाधन विकास (शिक्षा) मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ – 7
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, मानव संसाधन विकास (शिक्षा) मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ –19
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, मानव संसाधन विकास (शिक्षा) मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ – 67
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, मानव संसाधन विकास (शिक्षा) मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ – 89
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, मानव संसाधन विकास (शिक्षा) मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ – 89, 90
7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, मानव संसाधन विकास (शिक्षा) मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ – 91

दूरभाष क्र. 9881612937

इमेल– samadjamadar455@gmail.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 131-135

Unveiling the Enigma : Exploring Sarat Chandra Chattopadhyay's Lalu

Bikramjit Sen
Author & Ex. Assistant Professor, Akal University, Bathinda.

ABSTRACT :

Sarat Chandra Chattopadhyay, one of the most celebrated Indian novelists of the 20th century, left an indelible mark on literature with his profound understanding of human emotions and societal intricacies. While many of his works have been extensively studied, one of his lesser-explored characters, Lalu, demands closer attention. This research article delves into the nuanced portrayal of Lalu, unravelling the layers of complexity woven into this character by Chattopadhyay. Through an interdisciplinary analysis, the research aims to shed light on Lalu's significance in the broader context of Chattopadhyay's literary universe.

INTRODUCTION :

Sarat Chandra Chattopadhyay's literary prowess is well acknowledged, with works like "Devdas", "Parineeta", and "Pather Dabi" etching his name in the annals of Indian literature.

Sarat Chandra Chattopadhyay, a luminary in the realm of Indian literature, stands immortalized for his poignant exploration of the human condition and societal intricacies. While his more subjective works have been subject to extensive analysis, the character of Lalu, woven into the fabric of some of Chattopadhyay's lesser-known narratives, remains shrouded in relative obscurity. This research embarks on an intellectual journey to unravel the enigma that is Lalu, examining the nuanced portrayal of this character and its implications within the broader canvas of Chattopadhyay's literary oeuvre.

In the vast tapestry of Chattopadhyay's creations, Lalu emerges as a character of profound significance, navigating the crosscurrents of societal hierarchies, interpersonal relationships, and the human spirit's indomitable resilience.

As we delve into the pages of "Dena Paona," "Nishkriti," and "Palli Samaj," Lalu becomes a prism through which the author refracts the harsh realities of his contemporary society. Through an interdisciplinary lens, this research aims to shed light on the multifaceted nature of Lalu, discerning

the symbolic dimensions, and uncovering the layers of complexity that render him an enduring figure within the literary legacy of Sarat Chandra Chattopadhyay.

This exploration not only seeks to elevate the scholarly discourse on Chattopadhyay's less-explored character but also endeavors to illuminate the relevance of Lalu's portrayal in the context of contemporary socio-cultural dynamics.

LALU IN DIFFERENT WORKS OF CHATTOPADHYAY :

Lalu makes an appearance in several of Chattopadhyay's works, including "Dena Paona", "Nishkriti," and "Palli Samaj."

While not always the central character, Lalu's presence shapes the narrative trajectory.

Dena Paona : In 'Dena Paona', Chattopadhyay introduces Lalu as a character deeply entwined in the socio-economic fabric of rural Bengal. As a member of the working class, Lalu embodies the struggles of the common man, providing Chattopadhyay with a canvas to explore themes of exploitation and class divide. Lalu's journey becomes a microcosm of the broader societal challenges faced by the downtrodden, and his character acts as a catalyst for the author to unravel the complexities of rural life.

Nishkriti : 'Nishkriti' sees Lalu's character take on new dimensions as he grapples with personal relationships and societal expectations. Chattopadhyay delves into Lalu's familial bonds, portraying the intricate dynamics of love and sacrifice. Lalu, though confronting his challenges, becomes a pillar of strength for those around him, illustrating Chattopadhyay's exploration of the resilience of the human spirit amidst adversity. The character of Lalu, now deeply entrenched in the emotional landscape, adds layers to the narrative, creating a more nuanced portrayal.

Palli Samaj : In 'Palli Samaj,' Chattopadhyay further evolves Lalu's character to explore the intersections of caste and societal norms. Lalu, often situated at the margins, becomes a symbolic representation of the struggles faced by the lower strata of society. Chattopadhyay employs Lalu as a vehicle to critique prevailing caste hierarchies and sheds light on the exploitation faced by those on the fringes. Lalu's journey in 'Palli Samaj' reflects Chattopadhyay's astute observations on the societal injustices prevalent during his time.

The Symbolic Dimensions : Across these works, Lalu transcends the realm of a mere character and assumes a symbolic significance. He becomes the embodiment of the voiceless masses, navigating societal challenges with resilience and determination. Chattopadhyay strategically uses Lalu to represent the collective struggles against oppression and injustice, turning him into an allegorical figure that resonates beyond the confines of the novels.

Lalu in Interpersonal Relationships : Lalu's interactions within familial, romantic, and

platonic relationships offer a rich terrain for Chattopadhyay's exploration of human emotions. Whether navigating the complexities of love, sacrifice, or betrayal, Lalu serves as a conduit for the author to paint intricate portraits of the human psyche. These relationships, layered with emotional depth, contribute to the universality of Lalu's character, making him relatable to readers across different socio-cultural contexts.

In essence, Lalu's journey through Chattopadhyay's various works unfolds as a tapestry of societal reflections, emotional resonances, and symbolic explorations. Chattopadhyay masterfully crafts Lalu into a character whose significance extends far beyond the pages of individual novels, inviting readers to contemplate the timeless themes embedded in the complexities of Lalu's existence.

SOCIETAL REFLECTIONS THROUGH LALU IN SARAT CHANDRA'S WORKS :

Sarat Chandra Chattopadhyay's literary canvas often served as a mirror to the societal nuances of his time, and the character of Lalu emerges as a poignant reflection of the broader social landscape. Lalu, frequently placed within the lower echelons of society, becomes a microcosm through which Chattopadhyay critiques prevailing caste hierarchies, economic disparities, and the exploitation faced by the marginalized.

In works such as 'Dena Paona' and 'Palli Samaj,' Lalu's character embodies the struggles of a common man, providing Chattopadhyay with a vehicle to shed light on the societal injustices prevalent in rural Bengal. Through Lalu's experiences, the readers are confronted with the harsh realities of class divide and economic exploitation, prompting introspection on the systematic challenges faced by the underprivileged.

Lalu, as a symbolic representation of the voiceless masses, allows Chattopadhyay to articulate his observations on the societal norms and prejudices of his time. The character catalyzes the author to unravel the complexities of social stratification, bringing to the forefront issues that were often relegated to the periphery of mainstream discourse.

Chattopadhyay's astute portrayal of Lalu enables readers to witness the intricate intersections of societal expectations and individual aspirations. Lalu becomes a conduit for exploring the collective struggles against oppression, making his character a powerful instrument in Chattopadhyay's broader commentary on the need for societal reform.

LALU'S RELATIONSHIPS AND EMOTIONAL RESONANCE :

Lalu, a character in Sarat Chandra Chattopadhyay's works navigates intricate emotional landscapes. Lalu's interpersonal relationships are imbued with emotional depth. Whether entangled in familial bonds, romantic relationships, or friendships, Lalu becomes a canvas for Chattopadhyay to paint poignant portraits of love, sacrifice, or betrayal. Through Lalu, the author delves into the

complexities of the human psyche and human emotions, creating a character whose emotional resonance contributes to the universal appeal of Chattopadhyay's narratives.

THE SYMBOLISM OF LALU IN SARAT CHANDRA'S WORKS :

Beyond being a flesh-and-blood character, Lalu assumes symbolic significance in Chattopadhyay's oeuvre. Lalu, a character crafted by Sarat Chandra Chattopadhyay, transcends the boundaries of a mere individual and assumes profound symbolic significance. Chattopadhyay strategically utilizes Lalu as an allegorical figure, representing the voiceless masses, resilience in the face of adversity, and the collective quest for justice in an unjust world. Lalu becomes a symbol that resonates beyond the pages of the novels, embodying the enduring spirit of human struggles against societal injustices. In this symbolic metamorphosis, Lalu transforms into a timeless emblem, weaving layers of meaning into the rich tapestry of Sarat Chandra's literary legacy.

SARAT CHANDRA'S LALU : RELEVANCE IN CONTEMPORARY CONTEXT :

The character of Lalu, crafted by Sarat Chandra Chattopadhyay, resonates remarkably in the contemporary landscape. Lalu, emblematic of the marginalized and downtrodden, serves as a symbolic reflection of enduring societal challenges. Chattopadhyay's exploration of issues such as economic inequality, exploitation, and the quest for justice through Lalu's narrative transcends temporal boundaries, offering insights that remain pertinent today. Lalu becomes a timeless voice, urging contemporary society to confront its disparities, fostering empathy, and inspiring a renewed commitment to social equity and justice.

CONCLUSION :

The journey through "Dena Paona," "Nishkriti," and "Palli Samaj" has revealed Lalu as a microcosm of societal reflections, embodying the harsh realities of class divides, economic disparities, and the exploitation faced by the marginalized. Chattopadhyay strategically crafted Lalu not just as an individual but as a vessel through which he could critique societal norms and advocate for reform.

Lalu's significance extends beyond the socio-economic landscape; he becomes a symbol, resonating with the voiceless masses and embodying the undying spirit of resilience against adversity. Through intricate relationships, whether familial or romantic, Lalu's character achieves emotional resonance, capturing the universal essence of human struggles and triumphs.

Chattopadhyay's keen observations on societal injustices, economic disparities, and the quest for justice find echoes in the persistent challenges faced by society today. Lalu's narrative transcends temporal boundaries, urging us to reflect on the enduring nature of these issues and compelling us to confront and address them in our own time.

In essence, the exploration of Sarat Chandra Chattopadhyay's Lalu has been a journey through layers of complexity, symbolism, and emotional depth. It serves as an invitation to delve deeper into Chattopadhyay's lesser-explored characters, recognizing their timeless significance and allowing them to enrich our understanding of literature, society, and the human experience. The enigma of Lalu, once unveiled, becomes not only a reflection of the past but a guidepost for navigating the challenges and nuances of our present and future.

REFERENCES :

1. Youth Affairz. "Sharat Lalu." Youth Affairz, https://www.youthaffairz.in/sharat-lalu1.html.
2. "Lalu | Sarat Chandra Chattopadhyay." YouTube, uploaded by Mir Afsar Ali, 6 Jan. 2024, www.youtube.com/watch?v=jBCwqXvwzAc.

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 136-141

महिला आत्मकथाकारों का संघर्ष

प्रियंका पाठक
शोधार्थी–हिन्दी विभाग, बरकतुल्ला विश्वविद्यालय भोपाल।

शोध सारांश :-

आज महिलाओं को संघर्ष का पर्याय माना जा सकता हैं। जीवन से जुड़े प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं के संघर्ष की कहानी देखी जा सकती है। चाहे वह पारिवारिक स्तर हो अथवा सामाजिक स्तर। अपनी आत्मकथा के माध्यम से एक स्त्री अपने संघर्षो की कहानी एक–कर समाज के सामने लाती है। एक स्त्री के लिए आत्मकथा अर्थात उसकी वह अनकही कहानी जो सभी के सामने होते हुए भी किसी को पता नही होती । व्यक्तिगत स्तर से लेकर समाकजिक स्तर के सभी स्थानों पर एक महिला जाने कितनी समस्याओं से जूझ रही होती है। आत्मकथा में वह अपने जीवन में आए संघर्ष हर उस क्षणको विस्तार से कहती है जो समाज के समक्ष एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत हो सकें।

बीज शब्द :- आत्मकथा, स्त्री जीवन, संघर्ष, शोषण, मानसिक विकृति, पुरूष वर्ग, पिंजरे की उड़ान, साहस, मानसिक पीड़ा, स्वतंत्रता।

आत्मकथा यानी अंदर बाहर झांकने की खिड़की।

आत्मकथा की परिभाषा को व्यक्त करते हुए मैत्रेयी पुष्पा अपनी आत्मकथा 'कस्तुरी कुंड़ल बसै' में लिखती है :–

''हर आत्मकथा एक उपन्यास है और हर उपन्यास एक आत्मकथा। दोनो के बीच सामान्य सूत्र फिक्शन है।'' कस्तुरी कुंडल बसे मैत्रेयी पुष्पा (कवर पेज)

आत्मकथा में संघर्ष की परिभाषा को व्यक्त करते हुये रमणिका गुप्ता की आत्मकथा 'हादसे' के 'आत्मकथा के अनेक पाठ' की भूमिका को राजेन्द्र यादव कुछ इस तरह से व्यक्त करते है– ''दुर्दम्य और दुर्धुर्ष! रमणिका गुप्ता की इस आत्मकथा को पढ़ते हुए दो ही शब्द बार–बार दिमाग में आते है। अगर इसे कोई दूसरा नाम दिया जा सकता है तो वह है अपराजेय संघर्ष–कथा।''

महिलाएं अनेक क्षेत्रों में संघर्ष करती रही, कभी परिवार में कभी समाज में कभी राजनीति में कभी शिक्षा में, लेकिन आत्मकथा लेखन में 20वीं सदी के अंत में आत्मकथा लेखन पुरजोर तरीके से सामने आया। स्त्रियों को संघर्ष की जो आदत गर्भ में लग गई थी। उसे साहित्य की विधा आत्मकथा के माध्यम से समग्र समाज के सामने लाने में अब उनको संकोच नही हो रहा था। इसी दौर में कुछ प्रमुख महिला आत्मकथाकार उभर कर सामने आयी है। जैसे, मैत्रेयी पुष्पा रमणिका गुप्ता, कृष्णा अग्निहोत्री, चन्द्रकिरण सोनरेक्सा, मन्नू भंड़ारी आदि।

अपनी अनेक जरूरतों को पूरा करने के लिए स्त्री संघर्ष ही तो करती आई है। वह संघर्ष न केवल सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक है । बल्कि अनेक और क्षेत्रों में वह संघर्ष करती रही है। अकेली रह रही स्त्री को भी भोग्या समझकर कुछ मानसिक विकृति वाले पुरूष स्त्रियों पर अपना अधिकार जमाना चाहते है लेकिन वह शायद यह भूल जाते है कि स्त्री कोई भोग की वस्तु नहीं है। कृष्णा अग्निहोत्री जी कहती है कि औरत किसे कहते है यह समझना पुरूष प्रधान देश के पुरूषों के लिए अति आवश्यक है :–

''जिसे हम आम औरत कहते है
वह देश की इज्जत है।
पर वह महसूस करने लगे है कि
उसके लिये उपन्यास कहानियॉ कोई नई
संभावना नहीं पैदा कर रहे।
उसे अपनी लड़ाई अपने तरीके से करनी है
उस आदमी के विरूद्ध।''

एक स्त्री क्या चाहती है कि मुश्किल समय में कोई उसका हाथ थाम ले उसकी मदद के लिए आगे आए लेकिन कुछ मनचले इसी मदद को स्त्री से संबंध बनाकर करना चाहते है। उस भीड़ से अपने को बचाए रखना किसी युद्व से कम नहीं है।

''जो उसके जीवन की अर्थक्ति तोड़ता है जो केवल शब्दों से उसे संभालता है। मेरे इतिहास में संघर्ष के नतीजे है। इस इतिहास से भरे लेखन में कुछ रिश्ते है। मैं जानती हूॅ कि मेरे शव को सैंकडों हमदर्दी देंगे, पर मैं जब मर गई , तब मेरी पीठ पर पडे कोड़े व नाखूनी–पंजे का दर्द भी चला गया। पर उसका अहसास तो जीवन पर्यन्त मैंने भोगा हैं।''

आगे वह अपनी आत्मकथा में लिखती है कि ''वास्तव में मेरा यही अनुभव है कि पुरूष स्त्री देह के आकर्षण या उसके लगाव के बिना मित्र रूप में किसी जरूरतमंद स्त्री का सहयोगी नहीं होता, न उसे मदद करने में पहल करता है।''

स्त्री के साथ हुए विश्वासघातों की संघर्ष भी कुछ कम नही है, चाहे व साहित्यकार हो चाहे एक आम स्त्री ही क्यों न हो संघर्ष करना तो जैसे वह किस्मत में लिखवा के लेके आई है। इसी संदर्भ में कृष्णा अग्निहोत्री जी कहती है कि उनके साथ भी जगह–जगह विश्वासघात हुए। समाज के द्वारा परिवार के द्वारा साहित्यिक सरकारों के द्वारा अपनी रचनाओं को प्रकाशित कराने के लिए भी उनको संघर्ष की लम्बी पंक्तियों में खड़ा रहना पड़ता है बावजूद इसके उनका नाम नहीं आता।

कृष्णा अग्निहोत्री एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में हमारे सामने आई है, आज डिजिटल का युग है छोटे–छोटे लोग दो–चार पंक्तियॉ लिखकर उसे सोशल मिड़िया जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्वीटर पर लिखकर पोस्ट कर देते है, और अपने आप को कवि या लेखक समझने लगते है, लेकिन एक दौर वह भी था जब इन्हीं रचनाओं को प्रकाशित कराने कि लिये लेखक लेखिकाओं को लम्बी कतार में खड़ा होना पड़ता था। कोई सम्पादक अगर किसी लेखक की रचना को छाप देता था तो कोई भरोसा नहीं कि आमुख लेखक का नाम भी सही रहे, नाम परिर्वतन कोई बड़ी बात नहीं थी। इन्हीं सब का शिकार हुई कृष्णा अग्निहोत्री ने वह आगे अपनी

आत्मकथा में लिखती है कि :–

''टूटती भी तभी हूँ जब मुझे छपने में या मेरा नाम जानबूझकर हटाने में कोई अग्रणी होता है। तूलिका सम्मान मिला तो समाचार निष्पक्ष रूप से छपना चाहिए। पर इन्दौर की कुछ धनी महिला पत्रकार निर्मला मुराड़िया को निर्ममता तो देखे कि वे स्वंय के समाचार पत्र में स्वंय की फोटो छाप स्वंय के उस लेखक को हाइलाईट करती है जो उतना बड़ा है नहीं। जब देश की पत्रकारिता ही तटस्थ न रहे, पक्षपाती हो जायें, स्थानीय समाचार लेने वाले चाय–नाश्ते पर बिके, अपनों, –अपनों का बोलबाला हो तो, जेनुइन और समसायिक लेखक को कौन छापेगा। व उसे पढ़ने की आदत भी किसी को होगी इसलिए स्थानीय नीतियॉ दुख देती ही है। हाल ही में मुझे तीन सम्मान मिले परंतु स्थानीय पेपरों में समाचार नहीं छपा।''

स्त्रियो का संघर्ष भ्रूण से लेकर कब्र तक चलता रहता है। भारतीय संस्कृति में स्त्री को पुरूष को अर्द्धागिनी माना जाता है। लेकिन यह कितना चरितार्थ होता है। यह सर्वविदित है। अर्द्धांगिनी बनकर रह गई है। स्त्रियों के संघर्ष को कोई नहीं समझता है। आजकल कुछ महिलाओं को अपनी इच्छा से परिधान पहनने, घूमने–फिरने की, खाने–पीने की आजादी मिल गई है। उसी में वह खुश है लेकिन क्या इतने में खुश हुआ जा सकता है। सही मायने में जो खुशी तब मिलेगी जब आप के घरवाले घर के सभी फैसलों में आपको शामिल करें। फैसलो में शामिल करना तो दूर यहां स्त्री को मरता देख पति को दया नहीं आती।

''कुऍं में धकेल पत्नी के तड़पने का वीडियो बनाता रहा पति। पति ने पत्नि को कुए में फेंक दिया। फिर रस्सी लटका दी, जिससे वह डूबे नहीं तडपती रहें। इसका 40 सेकेंड़ का विडियों बनाकर ससुराल भेज दिया।''

पिंजरे की मैना चंद्रकिरण सोनरैक्सा की आत्मकथा है। जिसमें उन्होंने अपनी पचहत्तर साल के लेखन काल का बड़ी आत्मीयता के साथ चित्रण किया है। 1931 ई. में ग्यारह वर्ष की किशोरावस्था में दलित लड़के के विषय में लिखी रचना 'अछूत' कलकत्ते के मासिक 'विजय' नाम की पत्रिका में प्रकाशित हुई। यह इनकी कथा–यात्रा का प्रथम सोपान था। आजादी के पूर्व स्त्रियों की स्वतंत्रता उनका दामपत्य जीवन एवं शिक्षा की व्यवस्था की क्या दशा थी इसका बहुत ही मार्मिक चित्रण लेखिका ने इस आत्मकथा में किया है। साथ ही अपने शंकालु पति क्रांतिचन्द सोनरेक्सा की अव्यहवारिकता, उग्रता, और कठोरता को बड़े साहस के साथ उकेरा है। पत्नी के लिए लेखन का अवकाश प्राप्त करने की चिन्ता पति ने कभी नहीं की। मातृ–पितृ विहीन चन्द्रकिरण के ब्याह की जिम्मेदारी। बडे भाई के कंधो पर थी। एक बार उनके मित्र मित्तल साहब ब्याह का एक प्रस्ताव लेकर आये। उन्होंने तीस–इकत्तीस की उम्र वाले कवि हरिवंश राय बच्चन का जिक्र किया जिनकी पहली पत्नी गुजर चुकी थी। भाई ने इस रिश्ते को अस्वीकार कर दिया। अपने दामपत्य जीवन का आंकलन करते हुये चन्द्रकिरण ने लिखा है– ''हमारे बीच कभी ऐसा तालमेल नहीं रहा जिसके परिणामस्वरूप जिन्दगी किन्हीं मायनों में शेक्सपियर त्रासदी बनकर रह गयी।''

ऐसी स्थिति में न केवल चंद्रकिरण सोनरेक्सा के जीवन में बल्कि हमारे समाज में रह रही प्रत्येक महिला के साथ यह स्थिति बनी रहती है। प्रत्येक महिला के जीवन में संघर्षो का पुल बना है। जिसको पार करना अब प्रत्येक महिला सीख चुकी है।

ममता कालिया ने 'पिंजरे की मैना' को एक ऐसी साहसी स्त्री की शक्ति गाथा कहा है– जिसमें पुरूष के काम क्रोध, मद, लोभ, मोह को अपने धैर्य और धृति से विदित किया। अगर पुरूष ने उसे पिंजरे में ड़ाला तो

वह पिंजरे समेत उड़ना सीख गई। सामाजिक दृष्टि, स्पष्टवादिता और सत्यकथन के कारण यह आत्मकथा मर्मस्पर्शी बन सकी।''

औरतों को अपने नाम के लिए भी अनेक संघर्ष करने पड़ते है। जब एक लड़की विवाह बंधन के उपरांत पीहर से ससुराल आती है। तो उसका स्वंय का नाम वजूद सब उससे छीन लिया जाता है उसका सरनेम तक उससे छीन लिया जाता है जिस नाम और सरनेम के साथ वह पली बढ़ी है। आधी उम्र के बाद पिता द्वारा दिया गया नाम और पहचान पति के नाम और सरनेम में परिर्वतित हो जाता है।

स्त्री के समर्पण को लोग उसकी कमजोरी बना लेते हैं। लेकिन उन्हीं कमजोरियों को वह अब अपनी शक्ति बना चुकी है। इसके लिये उसको बहुत संघर्ष करना पड़ा है।

अपनी आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द' में सुशीला टाकभौरे जी लिखती है–

''यदि मेरे जीवन में इतने आक्रोश के क्षण नहीं आते तो शायद मैं अपनी ऐसी रचनाएं नही लिख पाती, यह आक्रोश मेर साथ हुई हिंसा का परिणाम था। मानसिक और शारीरिक पीड़ा पहुँचाकर मुझे इतना तड़पा दिया जाता कि मेरी भावनाओं का लावा फूट पड़ता।''

वह खुद तो सशक्त हुई महिला जाग्रति के कार्यक्रमों के माध्यम से उन महिलाओं को जाग्रत करती थी जो अपने अधिकार को जानती ही नहीं थी। उनको यह बताती थी कि आप को साहसी विद्रोही बनना होगा तभी आपको आपका अधिकार मिलेगा ,मागना नही छीनना होगा।

मध्यप्रदेश के भानपुरा गॉव में जन्मी मन्नू भंड़ारी अपनी आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में जीवन के उतार–चढ़ाव का भरपूर समावेश है मन्नू जी ने राजेन्द्र यादव से लेखन को आगे बढ़ाने के ही लिए विवाह किया था। लेकिन उनको क्या पता था कि पुरूष प्रधान देश में ये उनका भ्रम था। यह हालात न केवल मन्नु जी का बल्कि हमारे आपके समाज में आप के अगल–बगल भी देखने को मिल जाऍगे। बतौर एक लेखक अपनी लेखन के माध्यम से उसको कैनवास पर उकेर देता है। और एक आम इंसान अपने अंदर ही समेटे रहता है, घुटता रहता है। मन्नु जी आपकी आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में स्पष्टीकरण में लिखती है कि ''लेखन के कारण ही हमने विवाह किया था.....हम पति पत्नी बने थे। उस समय मुझे लगता था कि राजेन्द्र से विवाह करते ही लेखन के लिए तो जैसे राजमार्ग खुल जायेगा और उस समय यही मेरा एकमात्र काम था। उस समय कैसे में यह सब भूल गई कि शादी करते ही मेरे व्यक्तित्व के दो हिस्से हो जायेंगे लेखक और पत्नी। इसमें कोई संदेह नहीं कि मेरे लेखकीय व्यक्ति को राजेन्द्र ने जरूर प्रेरित और प्रोत्साहित किया इनके.....साथ मिलनेवाला साहित्यिक वातावरण, होने वाली गप्प, गोष्ठियॉ मेरे बहुत बड़े प्रेरणा–स्त्रोत भी रहें। लेकिन मेरे व्यक्तित्व का पत्नी रूप? इस पर राजेन्द्र निरन्तर जो और जैसे प्रहार करते रहे, इसका परिणाम तो मेरे लेखन ने ही भोगा।''

इन महिला आत्मकथाकारों की आत्मकथा के माध्यम से अनेक महिलाओं को बल मिला है अपनी बात को अपने समाज परिवार में रखने का हौसला मिला है। संघर्ष को महिलाऍ अपनी सहेली मान चुकी है। संघर्ष से डरती नहीं डटकर सामना करती है। इन्हीं संघर्षों से जूझती हुए महिलाऍ विभिन्न क्षेत्रों में अपना परचम लहरा रही है। हर असंभव से लगने वाले काम को संभव बनाना उनके लिये छोटी सी बात हो गई है। घर–परिवार बच्चे पति सबका ध्यान रखते हुए नौकरी करना आसान काम नही है लेकिन फिर भी वह घर परिवार का ध्यान रखते हुए भी प्रशासनिक जिम्मेदारी भी संभाल रही है।

सामंती परिवार में जन्मी रमणिका गुप्ता का परिवार सामंती तो था साथ ही आधुनिकता को भी अपनाने वाला भी था। फिर भी लड़कियों को सिर ढककर चलना आवश्यक था लेकिन रमणिका जी ने इसका विरोध किया। जिस भी काम के लिए उनको मना किया जाता उसको वह अवश्य ही करती थी। एक दिन घूमने जाते वक्त मॉ ने उन्हें सिर ढ़ककर साथ चलने को कहा। वह नहीं मानी तो मां ने भी अल्टीमेटम दे दिया–''सर नही ढ़कना तो हमसे या तो बीस कदम आगे चलो या बीस कदम पीछे ताकि लोग न जाने कि तुम हमारे साथ हो।'' उस दिन से बीस कदम आगे चलना शुरू कर दिया। तभी से उन्हें विद्रोही का रूतबा मिल गया और हर समय उन्हें रोका जाने लगा। पर उन्होंने अपनी जिद नहीं छोड़ी। स्त्रियों की अपने प्रति मानसिकता कुछ अलग ही थी, इज्जत के डर से महिलाएँ अपने ऊपर कुछ अत्याचारों का विरोध नहीं कर पाती थी। ये सोच कर की कौन इन अत्याचारियों के मुँह लगे। और इसी से उनका मनोबल बढ़ता था। लेकिन इसका विरोध रमणिका जी प्रबल रूप में करती है। वह हर ऐसे अत्याचार का विरोध करती है। उन्होंने अपने स्त्री होने के यर्थाथ को स्वीकार करते हुये संघर्ष की अपनी कमजोरियों को उन्होंने स्त्री की कमजोरी न मानकर मनुष्य मात्र की स्वाभाविक प्रवृत्तियों व कमजोरियों से जोड़ा। उनके संघर्ष और हाजिर जवाबी का एक उदाहरण यह है–

''एक दिन एक सज्जन दनदनाते हुये मेरे कमरे में आए फिर इधर–उधर ताक कर बड़े हितैषी बनकर धीमे से बोले–––'' सुना है आपके पति ने आपको तलाक दे दिया है।''

मैं भी मुस्कुराती हुई उसी लहजे में बोली– ''जी हॉ ! उन्होंने तलाक देते वक्त आप ही से शादी करने की राय दी थी क्या आप तैयार है?''

वह सज्जन ऐसे बिदके जैसे बिच्छू काटने पर बैल। वे यह कहते हुए उठ गये–''गजब की ढीट औरत है।''

'कस्तुरी कुंडल बसै' में कस्तुरी जो कि मैत्रेयी पुष्पा की मॉ है। स्वतंत्रता के पहले यह दुस्साहस करना आज के परिवेश की स्त्रियों के लिए एक सीख है। अब भी हमारे समाज में अनेक लड़कियॉ है जिनकी मर्जी जाने बिना एक गाय की तरह जिस खुंटे से बॉध दे वह बॅध जाती है। लेकिन परिवार के लोगो से अपनी पसंद ना पसंद की बात नहीं करती ।परन्तु कस्तुरी इसका दुस्साहस करती है–

''मैं ब्याह नहीं करूंगी।''

सोलह वर्षीय लड़की ने धीमे से कहा था, जिसे मॉ ही सुन सके। कहॉ सोचा था कि उसकी यह बात ऑगन के बीच ऐसे गुंजेगी कि घर की दींवारे हिलने लगें।''

निष्कर्ष रूप में यह कह सकते है कि आज की महिला सशक्त हो गयी है। अपनी बात को बताने के लिए आजाद है। एक समय ऐसा था कि उनको शिकंजे के अंदर रहना पड़ता था। लेकिन आज वह शिकंजे के दर्द के बाहर निकल गई है। इसके लिए उनको शिकंजे को तोड़ना पड़ा है।

संदर्भ :–

1. मैत्रेयी पुष्पा, कस्तुरी कुंडल बसै, राजकमल प्रा0लि0, 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली–110002, 2002, कवर पेज।
2. रमणिका गुप्ता, हादसे, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड़, जी–17 जगतपुरी दिल्ली –110051, 2005, आत्मकथा के अनेक पाठ पेज. 7

3. कृष्णा अग्निहोत्री, और....,और....., औरत, सामयिक बुक्स, 3320–21 जटवाड़ा, दरियागंज, एन.एस.मार्ग, नई दिल्ली–110002–2010 पेज नं.–50
4. कृष्णा अग्निहोत्री, और....,और....., औरत, सामयिक बुक्स, 3320–21 जटवाड़ा, दरियागंज, एन.एस.मार्ग, नई दिल्ली–110002–2010 पेज नं.–50
5. कृष्णा अग्निहोत्री, और....,और....., औरत, सामयिक बुक्स, 3320–21 जटवाड़ा, दरियागंज, एन.एस.मार्ग, नई दिल्ली–110002–2010 पेज नं.–50
6. कृष्णा अग्निहोत्री, और....,और....., औरत, सामयिक बुक्स, 3320–21 जटवाड़ा, दरियागंज, एन.एस.मार्ग, नई दिल्ली–110002–2010 पेज नं.–119
7. दैनिक भास्कर छिंदवाड़ा म0प्र0 गुरूवार 7 सितंबर 2023 पेज 03
8. डॉ. रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी का गघ–साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी–221001 (उ.प्र.) भाारत 2022, पेज. 528
9. डॉ. रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी का गघ–साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी–221001 (उ.प्र.) भारत 2022, पेज. 528
10. हंस पत्रिका नवंबर 2009 पेज 38
11. मैत्रेयी पुष्पा, कस्तुरी कुंडल बसै, राजकमल प्रा0लि0, 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली–110002, 2002, पेज नं.–10
12. रमणिका गुप्ता, हादसे, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड़, जी–17 जगतपुरी दिल्ली 110051, 2005 पेज–18
13. रमणिका गुप्ता, हादसे, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड़, जी–17 जगतपुरी दिल्ली 110051, 2005 पेज–267
14. मैत्रेयी पुष्पा, कस्तुरी कुंडल बसै, राजकमल प्रा0लि0, 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली–110002, 2002, पेज नं.–9

priyankapathak517@gmail.com
Mob. 9755533262

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 12, Issue 1-2
पृष्ठ : 142-135

आध्यात्मिक बुद्धि एवं शैक्षिक नेतृत्व

डॉ. अर्चना श्रीवास्तव,
आचार्य (प्रोफेसर), बी.सी.जी. शिक्षा महाविद्यालय देवास (म.प्र.)
डॉ. अक्षय कुमार आचार्य,
प्राचार्य, श्री उमा कन्या महाविद्यालय, हाटपीपल्या जिला देवास (म.प्र.)

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्ताभ्यात्मानमात्मना।
जाहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्।।43।।

श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय – 3

श्रीमद् भगवद्गीता के अध्याय–3 के 43 वें श्लोक के अनुसार श्रीकृष्ण जी अर्जुन से कहते है कि "हे अर्जुन! अपने आपको भौतिक इन्द्रियों, मन तथा बुद्धि से परे जानकर और मन को आध्यात्मिक बुद्धि से स्थिर करके आध्यात्मिक शक्ति द्वारा इस काम रूपी दुर्जेय शत्रु को जीतो।" भौतिक जीवन में मनुष्य काम तथा प्रकृति पर प्रभुत्व पाने की इच्छा से प्रभावित होता है। प्रभुत्व तथा इन्द्रियतृप्ति की इच्छाएँ बद्धजीव की परम शत्रु है, किन्तु आध्यात्मिक बुद्धि से मनुष्य इन्द्रियों, मन तथा बुद्धि पर नियंत्रण रख सकता है। आध्यात्मिक बुद्धि सामान्य या तार्किक बुद्धि तथा भावात्मक या संवेगात्मक बुद्धि का समन्वय है। केन डोनेल (Donnell, 1997) के अनुसार "आध्यात्मिक बुद्धि के साथ तार्किक बुद्धि (IQ) तथा भावात्मक बुद्धि (EQ) दोनों का समन्वय है। तार्किक बुद्धि अंकों, सूत्रों तथा विचारों के साथ अर्न्तक्रिया में मदद करती है, भावात्मक बुद्धि व्यक्तियों के साथ अर्न्तक्रिया में मदद करती है, वहीं आध्यात्मिक संतुलन बनाये रखने में मदद करती है।" आध्यात्मिक बुद्धि बौद्धिकता का उच्चतर पक्ष है जो आत्मा के गुणों एवं क्षमताओं, शुद्धता, खुलापन, सम्पूर्णता, विनम्रता, दयालुता, उदारता, सृजनात्मकता तथा शांति के रूप में सक्रिय होती है। मानव जीवन कौशल तथा कार्य कौशल की विस्तृतता एवं सुधार से संबंधि गहन अर्थों तथा उद्देश्यों की संवेदना का परिणाम ही आध्यात्मिक बुद्धि है। आध्यात्मिक बुद्धि आन्तरिक आत्मिक गुणों का चिन्तन, क्रिया तथा अभिवृत्ति के रूप में प्रदर्शित होती है। आध्यात्मिक बुद्धि को आध्यात्मिक गुणांक (Spiritual Quotient - SQ) के रूप में प्रकट किया जा सकता है। आध्यात्मिक गुणांक को बौद्धिक गुणांक तथा भावात्मक गुणांक के संदर्भ में उपस्थिति स्तर के साथ संयोजित करते हुए निम्नांकित समीकरण से विश्लेषित किया जा सकता है –

$$SQ = P\,(IQ + EQ)$$

उपरोक्त समीकरण में P व्यक्ति की उपस्थिति को प्रदर्शित करता है। उपस्थिति से अभिप्राय व्यक्ति की विशिष्ट जागरूकता है जो व्यक्ति के आस–पास के वातावरण के प्रति स्पष्टता को प्रकट करती है। आध्यात्मिक

बुद्धि महत्वपूर्ण व्यक्तिगत स्त्रोत है क्योंकि इसे आत्मा नियंत्रित करती है जो व्यक्ति के अहं की तुलना में बेहतर कार्य करती है। एक अध्ययन के अनुसार आध्यात्मिक बुद्धि के साथ व्यक्ति समस्याओं के समाधान के लिए आध्यात्मिक स्त्रोतों का प्रयोग करने में सक्षम हो जाता है (इमोस, 1997)। स्टीड एवं स्टीड (Stead and Stead, 2014) के अनुसार "संगठनों को निरन्तर विकास केन्द्रित सामरिक आध्यात्मिक क्षमताओं की आवश्यकता है तथा इसका मुख्य कारण है रणनीतिक अपूर्व मूलभूत योग्यता के साथ उनके संगठन का नेतृत्व करने वाले प्रबंधक का विकास करना।" एक अध्ययन के अनुसार – आध्यात्मिक योग्यता में अन्य तथ्यों के साथ आध्यात्मिक बुद्धि भी सम्मिलित होती है जो नेतृत्व बुद्धि का एक तत्व है (रोन्थी, 2006, 2013)।

नेतृत्व वास्तव में जीवन के लिए एक दर्शन है। वास्तविक बुद्धिमान व्यक्ति का लक्ष्य उनके व्यवसाय में केवल नेतृत्व करना नहीं है बल्कि उनके भीतर जीवन जीना है। टीम कोच अपनी खेल टीक का नेतृत्व करता है, नेता समुदाय का नेतृत्व करता है, शिक्षक अपनी कक्षा का नेतृत्व करता है, संस्था प्रमुख अपनी संस्था का नेतृत्व करता है। यह सभी अपने अन्तःकरण से प्रारम्भ करते है, अपने स्वअनुशासन द्वारा स्वयं को पहचानकर नेतृत्व करते है। वे ऐसा समझते है कि जिन्दगी का सार नेतृत्व है। नेतृत्व के विचार में मानवीयता एवं वैज्ञानिकता समाहित है। नेतृत्व के मानवीय पक्ष के अन्तर्गत परिस्थितियों को समझ कर इसके अनुरूप समूह लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु सदस्यों के व्यवहारों को प्रभावित करने का कौशल मौजूद होता है वहीं वैज्ञानिक पक्ष के अन्तर्गत 'क्या करना है', यह जानने के अतिरिक्त 'कब', 'कहाँ', 'कैसे' करना है इसका ज्ञान भी इसमें सम्मिलित है। कभी–कभी परिस्थितियों के मापन एवं क्रियाओं की पूर्णता हेतु नेतृत्व नियमबद्ध, स्पष्ट एवं तर्कसंगत हो जाता है और कभी–कभी भावनात्मक रूप भी धारण कर लेता है क्योंकि मानव प्रकृति भावनाओं से अछूती नहीं रह सकती। अतः नेतृत्व वह सामाजिक अवधारणा है जो अंतःप्रक्रियात्मक विशेषताओं एवं गुणों पर बल देती है। जहाँ तार्किक बुद्धि, भावात्मक बुद्धि का समन्वय आध्यात्मिक बुद्धि के रूप में आध्यात्मिक नेतृत्व को प्रदर्शित करता है।

फेयरहोम (1996, 1998) ने इसी संदर्भ में आध्यात्मिक नेतृत्व प्रक्रिया प्रतिमान (2000) प्रस्तुत किया। इनका मानना है कि यह उपागम नेता और उसके अधिनस्थों की क्षमताओं, योग्यताओं, आवश्यकताओं एवं रूचियों के साथ संगठन के उद्देश्यों को भी सम्मिलित करता है। इनके अनुसार आध्यात्मिक नेतृत्व सम्पूर्ण एवं गतिशील है। यह मानव अन्तःक्रियात्मक सिद्धान्त पर केन्द्रित है जो समूह के साथ व्यक्तिगत उन्नति के लिए भी कार्य करता है। फेयरहोम (2000) का आध्यात्मिक नेतृत्व प्रक्रिया प्रतिमान इस प्रकार है –

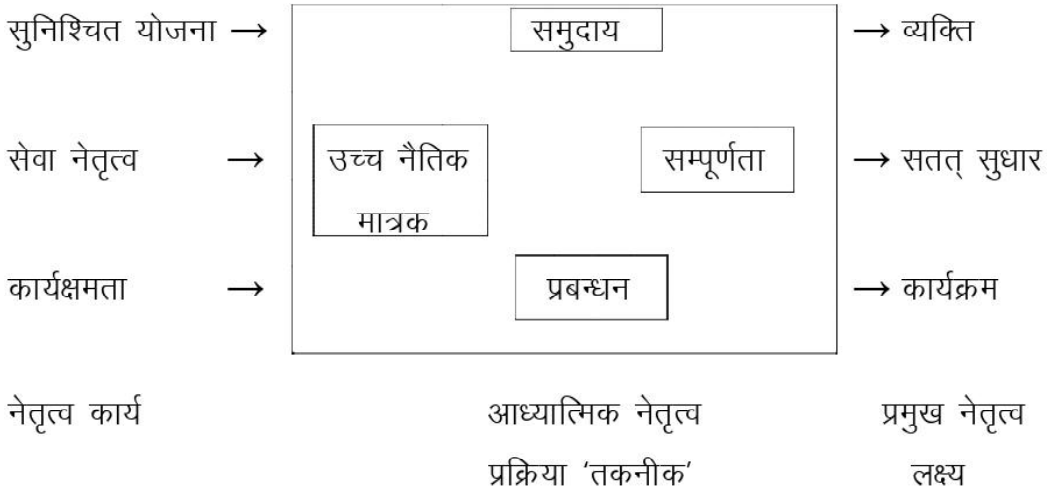

फेयरहोम के प्रतिमान के विश्लेषण से आध्यात्मिक बुद्धि व नेतृत्व की समन्वयता स्पष्ट होती है। प्रतिमान के विश्लेषण से 8 मुख्य बिन्दु सार रूप में स्पष्ट होते है जो इस प्रकार हैं –

1. नेतृत्वकर्ता संगठन के साथ समुदाय सम्पूर्णता के साथ संबंधित रहता है।
2. नेतृत्वकर्ता आध्यात्मिक गुणों, शुद्धता, खुलापन, सम्पूर्णता, विनम्रता, दयालुता, उदारता, सृजनात्मकता तथा शांति के साथ नेतृत्व करता है।
3. नेतृत्वकर्ता आध्यात्मिक क्षमता का प्रदर्शन विश्वास एवं शक्ति के संतुलन के रूप में करता है।
4. नेतृत्वकर्ता संगठनात्मक स्वास्थ्य का व्यवस्थापन करते समय अधिनस्थ सदस्यों की क्षमता निर्माण द्वारा अपना उच्चतम सामर्थ्य अभिव्यक्त करने में मदद करता है।
5. नेतृत्वकर्ता सकारात्मक स्वीकृति, प्रेम, नैतिकता एवं सम्पूर्णता के साथ समूह के लिए उत्कृष्टता के मानक निर्धारित करता है।
6. नेतृत्वकर्ता पहले सेवक, बाद में अधिकारी होता है। इसकी कार्यशैली अपने अधिनस्थ कार्य करने वाले व्यक्तियों की स्वतंत्रता पर केन्द्रित रहती है।
7. नेतृत्व व्यक्तिगत मूल्यों के साथ स्व को परे करते हुए आपसी सम्बन्धों का सम्मान के साथ जीवन जीने की एक प्रक्रिया है।
8. नेतृत्व संगठन के अधिनस्थ अनुसरणकर्ताओं के साथ संगठन व शक्ति का विवरण है।
9. आध्यात्मिक नेतृत्व में दूरदर्शिता, संवेदनशीलता तथा प्रतिबद्धता सम्मिलित है।

फेयरहोम का आध्यात्मिक नेतृत्व प्रक्रिया प्रतिमान शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रभावी है। शैक्षिक संस्थान के उत्थान के साथ समाज का उत्थान समाहित है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में नेतृत्वकर्ता का उत्तरदायित्व बहुत अधिक जटिल एवं महत्वपूर्ण होता है। इस प्रतिमान में नेतृत्वकर्ता में आध्यात्मिक गुणों की प्रधानता देखी जाती है जिसके अन्तर्गत चेतना के उच्च स्तर को अनुभव करने की क्षमता के साथ स्वयं के लक्ष्य एवं उद्देश्य की स्पष्टता भी होती है। इस तरह के नेतृत्वकर्ता विद्यालय के प्रबंधन, नियोजन, क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन हेतु सुनिश्चित योजना बनाकर शैक्षिक गुणवत्ता वृद्धि में सहायक रहते है। इनमें स्पष्ट दृष्टि एवं मूल्य नेतृत्व होने के कारण संस्थागत प्रबंधन में नीति निर्धारण प्रभावी रहता है। इस प्रतिमान का नेतृत्व लक्ष्य व्यक्ति होता है। अतः उनकी विभिन्नताओं को स्वीकारते हुए योजना का क्रियान्वयन सम्पूर्णता के साथ किया जाता है। संस्थागत प्रबंधन सतत् क्रिया है जिसमें किसी भी समस्या या परिस्थिति में पीछे जाकर उसका विस्तृत अध्ययन कर पुनः योजना तैयार करनी होती है। इस तरह सतत् सुधार होने से विकास कार्यों में निरन्तरता बनी रहती है। मानवीयता गुणों में सहानुभूति तथा 'साथ की भावना' पायी जाती है जो शिक्षा में मानवीय संसाधनों के प्रभावी उपयोग में सहायक होती है।

इस प्रतिमान में नेतृत्वकर्ता अपने समूह के कार्य के ज्ञान के साथ विश्वसनीय शैक्षिक प्रोत्साहन में भी सहायक होता है। एक विश्वासयुक्त कार्यस्थल संस्कृति उसके न्याय एवं स्पष्टता से पहचानी जाती है। योजना निर्माण में वैश्विक संदर्भ के साथ संवेदनशीलता एवं सकारात्मकता नेतृत्वकर्ता की विशिष्ट जागरूकता को प्रदर्शित करती है। वर्तमान समय की आवश्यकता है कि शैक्षिक प्रबंधन में प्रत्येक सदस्य की क्षमताओं, योग्यताओं, रूचियों तथा आवश्यकताओं को ध्यान रखते हुए दूरदर्शी योजना तैयार कर क्रियान्वित की जाये जो आने वाली

पीढ़ी में वैश्विक समझ के साथ उच्च नैतिक मानक व अखण्डता के विकास में सहायक हो।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. जैन, पी. सी. (2010), संगठनात्मक व्यवहार, जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, ISBN : 978-81-7137-754-1
2. मेहता, दीपा (2015), शैक्षिक प्रबंधन, दिल्ली : पी. एच. ई. लर्निंग प्रायवेट लिमिटेड, ISBN : 978-81-203-5106-6
3. Gibson, Alaster Raymond (2011). Spirituality in principal leadership and its influence on teacher and teaching Ph.D. (Edu.) The University of Waikata.
4. Goleman, Deniel (2013). Focus : The hidden driver of excellence, London : Bloombury Publishing. ISBN : 10987654321.
5. Robbins, SP, Judge TA and Sanghi, S (2009). Organizational Behaviour, South Asia : Darling Kindersley. ISBN - 81-317-2121-6.
6. Sharma, Robin (2010). Leadership wisdom Mumbai : Jaico Publication. ISBN 81-7992-231-6.
7. Singh, Awdhesh (2016). Practising Spiritual Intelligence, Mumbai; Wisdom Tree.

निवास–137 विद्या नगर सांवेर रोड़ उज्जैन।

मो.न. 9424553351, व्हाट्सअप न. 9669053351

ई–मेल आईडी–archanashri27@gmail.com

व्हाट्सअप नं.– 9807363679, मो. न.– 8839083227

ई–मेल आईडी– drakshaykumaracharya2024@gmail.com

संगम Impact Factor : 6.632
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
Vol. 12, Issue 1-2
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
पृष्ठ : 146-147

अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में भाषा के विविध रूप

सुरेश कुमार
शोधार्थी, बी.आर. अम्बेडकर ओपन विश्वविद्यालय हैदराबाद, तेलंगाना–500033

अब्दुल बिस्मिल्लाह जी के कथा साहित्य की भाषा में पर्याप्त वैविध्य दृष्टिगत होता है। हमारे देश में अनेक जातियों का मेल है। अतः यहाँ विविध भाषाएँ बोली जाती है। इसलिए किसी भी साहित्यकार के कथा–साहित्य में भाषा की विविधता मिलना स्वाभाविक ही है। बिस्मिल्लाह जी भाषा के सन्दर्भ में भी यही बात लागू होती है। उनके कथा–साहित्य में भाषा के विविध रूप पाये जाते हैं। उन्होंने अपनी अनेक कहानियों तथा उपन्यासों में स्वाभाविक शब्दो का प्रयोग किया है। बिस्मिल्लाहजी द्वारा लिखित 'जहरबाद' उपन्यास की भाषा सरस एवं स्वाभाविक है। यथा– 'अम्माँ सुबह–सुबह उठती, झिरियाँ से पानी लाकर बर्तन माँजती, खाना बनाती और टोपरे में किराने के चन्द सामान सजाकर कभी धमन गाँव कभी बिंजौरा और कभी जोगी टिकरिया के लिए निकल जाती। इस बदली हुई स्थिति से अब्बा को सुकून हो गया था।'[1]

बिस्मिल्लाहजी ने अपने उपन्यासों तथा कहानियों में मिश्रित भाषा का प्रयोग किया है। यहां 'समर शेष है' उपन्यास का उदाहरण दृष्टव्य है जिसमें उन्होंने उर्दू मिश्रित भाषा का प्रयोग किया है। 'तंत्र–मंत्र के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। यह सब बेवकूफ बनाने की चीजें हैं। फिर मुहब्बत जैसी चीज को लेकर बहुत संजीदा नहीं होना चाहिए। इसमें पूरी जिन्दगी साली खराब हो जाती है। हमी को देखों, तबाह हो गए कि नहीं आखिर. ... ।'[2]

बिस्मिल्लाहजी ने अंग्रेजी मिश्रित भाषा का प्रयोग अपने कथा साहित्य में किया है। यहाँ 'झीनी झीनी बीनी चदरियाँ' उपन्यास का उदाहरण देना उचित है– 'मऊ की ओर जाने वाली पॅसेन्जर ट्रेन एक घण्टा लेट है। मतीन अलईपुर स्टेशन के प्लेटफार्म पर अपना झोला लिए इधर–उधर टहल रहा है। उसके अन्तर मन में धौकनी जैसी कोई चीज चल रही है। स्टेशन की दीवारों पर तरह–तरह के पोस्टर लगे हुए हैं।'[3]

इसी तरह अंग्रेजी मिश्रित भाषा उदाहरण देखिए जो उन्होंने अपनी 'तलाक के बाद' कहानी में प्रयोग किया है– 'डक्टराइन के पति चूँकि होम्योपैथी की दवाइयाँ बाँटते हैं, इसलिए यह डाक्टराइन हो गई हैं। दरअसल इनके पति अरबी में पी एच. डी. कर रहे हैं। सुपरवाइजर से मतभेद होने के कारण थीसिस मंजूर नहीं हो सकी। ऐसी स्थिति में होम्योपैथी का पत्राचार पाठ्यक्रम पूरा करके वे डॉक्टर हो गए।'[4]

बिस्मिल्लाहजी के कथा–साहित्य में क्लिष्ट भाषा का प्रयोग भी हुआ है, लेकिन ऐसी भाषा के कम ही उदाहरण मिलते हैं। 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास का एक अंश दृष्टव्य है– 'यण् संधि एक जटिल संधि है। इसका सूत्र जाणते हो? नहीं। तुम्हारे अज्ञान का कारण मैं समझता हूँ। खैर सुनो, इको यणचि। अर्थात इकः स्थाने यण्

स्वादचि। समझे? नहीं? इसे समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि 'इक' क्या है और 'यण' क्या है? तो सुनो। शंकर भगवान के डमरू से निकली हुई ध्वनियों के आधार पर पाणिनी महाराज ने अष्टाध्यायी के मूल सूत्र की रचना की है इसे माहेश्वरी सूत्र कहते हैं।'[5]

बिस्मिल्लाहजी ने अपने कथा साहित्य में लोकभाषा का प्रयोग यथोचित रूप में किया है। इस भाषा का आधार ग्राम्य शब्दावली होती है। कथा–साहित्य में यह भाषा ग्रामीण कथावस्तु एवं पात्रों द्वारा प्रस्तुत की जाती है। बिस्मिल्लाह द्वारा लिखित 'झीनी झीनी बीनी चदरिया' नामक उपन्यास की बुनकरों की लोकभाषा का उदाहरण देखिए– 'इ सोसाइटी– फीसाइटी से का होइए म्याँ?

मतीन का दिमाग खराब हो गोवा है अऊर कुछ नाँही?'6

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि बिस्मिल्लाह जी के कथा–साहित्य की भाषा में जो विविधता दृष्टिगत होती है वह उन्हें समकालीन लेखकों में महत्वपूर्ण कथाकार के रूप में स्थान प्रदान करती है। उनकी भाषा पात्रों और कथानक के अनुरूप है। उनकी भाषा में भावात्मकता, चित्रात्मकता, प्रवाहात्मकता, विम्बात्मकता, प्रतीकात्मकता, अलंकारिकता, पात्रानुकूलता आदि अनेक गुण दृष्टिगत होते हैं। उन्होंने बनारस के बुनकरों की अपनी बोली का भी यथोचित प्रयोग किया है। इस कारण उपन्यास में स्वाभाविकता आयी है। वह क्षेत्र–विशेष के चित्रण को सफलतापूर्वक चित्रित करती है। इसके अलावा विस्मिल्लाहजी ने समाज के विविध पात्रों के अनुसार भाषा का प्रयोग किया है। उनके कथा–साहित्य में तत्सम, अंग्रेजी, उर्दु के शब्दों का पात्रानुगार प्रयोग हुआ है। उन्होंने भाषा को स्वाभाविकता तथा प्रभावशालिता प्रदान करने के लिए मुहावरों तथा कहावतों का यथोचित प्रयोग किया है। उनकी भाषा की विशेषता को लेकर–वीरेन्द्र यादव लिखते हैं– 'अब्दुल बिस्मिल्लाह ग्राम्य मुहावरे और देहात शब्दावली का प्रयोग आँचलिकता के रंग के लिए न करके यथार्थ की प्रामाणिकता के लिए करते हैं, शायद यही कारण है कि वे स्थानिकता का अतिक्रमण करते हुए राष्ट्रीय वृत्तांत की रचना करते हैं।' यादव जी का कथन उचित है उनकी भाषा राष्ट्रीयः वृतांत को व्यक्त करती हैं। उनमें समाज के अनेक पक्षों ओर पात्रों का यथार्थ चित्रण मिलता हैं।

संदर्भ सूची :-

1. अब्दुल बिश्मिलाह – जहरबाद– पृष्ठ–9–10
2. अब्दुल बिश्मिलाह –समर शेष हैं–पृष्ठ–116
3. अब्दुल बिश्मिलाह –झीनी झीनी बीनी चदरिया –पृष्ठ 119–110
4. अब्दुल बिश्मिलाह –कितने सवाल –पृष्ठ–15
5. अब्दुल बिश्मिलाह – मुखड़ा क्या देखे–पृष्ठ–105
6. अब्दुल बिश्मिलाह – झीनी झीनी बीनी चदरिया –पृष्ठ –69–70

skshastri2@gmail.com

PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

नाम	:	श्री हरविन्द्र कमल चौधरी
शिक्षा	:	एम.ए.
अभिरूचि	:	कविता, गजल, कहानियाँ तथा चित्रकला।
सम्प्रति	:	पूर्व मुख्य सम्पादक, सगंम, मासिक हिन्दी पत्रिका, पटियाला (पंजाब), भिवानी (हरियाणा)
गतिविधियां	:	1. आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर विभिन्न प्रसारण। 2. चित्रकला वन मैन शो का आयोजन तथा अनेक चित्रकला प्रर्दशनियों में सहभागिता।
सम्पर्क	:	म. न. 30- ई. पी.आर.टी.सी. कालोनी, माडल टाऊन, पटियाला (पंजाब) 147001

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गीना देवी शोध संस्थान के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्ज, भिवानी से छपवाकर सम्पादकीय कार्यालय 6-एच 30, जवाहर नगर, श्रीगंगानगर, राजस्थान-335001 से वितरित की।

ISSN 2321:8037